आत्मोद्धार ।

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर-सीरीज अंक १०।

आत्मोद्धार।

(डा० बुकर टी. वाशिंगटनका आत्मचरित।)

"दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्।"

—वेणीसंहार।
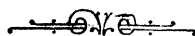
अनुवादक—

श्रीयुत पं० लक्ष्मण नारायण गर्दे, काशी।
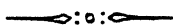
प्रकाशक—

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,

हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई।
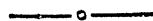
प्रथमावृत्ति } पौष १९७१। { मूल्य १) पक्की जिल्दका १।)

" स्त्रियाँ, बालक और शूद्र राष्ट्रवृक्षके मूल हैं। इन सबकी शिक्षा और पालन पोषणकी ओर भारतवर्षमें कोई ध्यान नहीं देता ! जो उच्चश्रेणीके लोग हैं वे बहुत हुआ तो इस राष्ट्र-वृक्षके फल कहे जा सकते हैं।

वृक्ष पर फल लदे हुए रखनेमें ही सब समय नष्ट करना ठीक नहीं। जड़ोंको देखो और उनमें भरपूर खाद और पानी दो। गरीब लोक, स्त्रियाँ और बालक ही सत्यका डंका पीटेंगे। यथार्थ राष्ट्रोद्धार सष्ट्रकी गरीब (दुर्बल) जड़ोंसे ही हुआ करता है।"

(२)

" सब दानोंमें विद्यादान श्रेष्ठ है। यदि किसीको आप एक रोज़ भोजन देंगे तो दूसरे रोज़ उसे फिर भूख लगेगी ! परन्तु उसीको यदि आप कोई हुनर सिखा देंगे तो सारे जन्मके लिए उसके दानापानीका प्रबन्ध हो जायगा। वह हुनर, कला या विद्या ऐसी होनी चाहिए कि उसका जीवन सफल हो जाय। सभ्य भिक्षुक बने रहनेकी अपेक्षा जूते बनानेकासा कोई रोज़गार कर लेना अधिक अच्छा है !"

(३)

" जहाँ उद्योगकी प्रतिष्ठा नहीं वहाँ अवनति और विनाश वास करते हैं ! वहाँ कलाकौशलकी भी मट्टी पलीद होती है। पर जहाँ उद्योगकी प्रतिष्ठा होती है वहाँ जीवन (चैतन्य) और ज्ञान वास करते हैं; वहाँ कलाकौशलकी वृद्धि होती है।

देशके भूखों मरनेवाले नारायणों और मेहनत मजदूरी करनेवाले विष्णुओंको पूजो ! निर्धन हिन्दू विद्यार्थियोंको कलाकौशल प्राप्त करनेके लिए अमेरिका भेजो। वे वहाँसे सीखकर जब भारतवर्षमें आवेंगे तो लोगोंको अपने बल पर खड़े होनेकी शिक्षा देंगे और उससे सैकड़ों, नहीं, हजारों रोटीके मोहताज़ोंकी जानें बच जायँगी।"

(४)

" अपने गाँवकी चमारिनों–भंगिनोंको पढ़ानेमें क्या तुम्हें लज्जा आती है या डर लगता है ? अगर ऐसा ही है तो धिक्कार है तुम्हारी रीति-रस्मों पर और नीतिमत्ता पर !"

—स्वामी रामतीर्थ।

प्रकाशकका निवेदन।

इस समय जैनसमाजमें शिक्षाप्रचारका आन्दोलन खूब हो रहा है और उसका फल यह हुआ है कि प्रतिवर्ष नई नई शिक्षा-संस्थायें स्थापित होती जाती हैं और समाजके धनाढ्य पुरुष इस काममें लाखों रुपयोंकी रकमें देने लगे हैं। यह बहुत ही संतोषकी बात है; परन्तु हम देखते हैं कि अभी तक जैनसमाज अपनी शिक्षाका मार्ग निश्चित नहीं कर सका है। इस कारण उसकी संस्थायें यथेष्ट फलोंको नहीं दे रहीं हैं। अभी तक वे ऐसे दो चार फल भी तैयार नहीं कर सकी हैं कि जिन्हें देखकर हमारा शिक्षासम्बन्धी आन्दोलन कुछ आगे बढ़े और लोगोंके उत्साहको स्थिर रख सके। न अभी तक संस्थाओंमें अच्छे काम करनेवाले हैं, न उनकी भीतरी व्यवस्था अच्छी है और न उनकी जैसी चाहिए वैसी प्रगति हो रही है।

यह देखकर हमने इस अपूर्व ग्रन्थको जैनसमाजमें बहुलताके साथ फैलानेकी आवश्यकता समझी और इस लिए यद्यपि यह केवल ' हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर-सीरीज ' में निकालनेके लिए तैयार कराया गया था तथापि इसे जैनहितैषीके उपहारमें भी दे डालनेका निश्चय किया और तदनुसार आज यह हितैषीके पाठकोंके समक्ष उपस्थित किया जाता

है। हमें विश्वास है कि यदि इसे संस्थाओंके संचालक, प्रचारक, कार्य-कर्त्ता, विद्यार्थी, द्रव्यदाता, लेखक, निरीक्षक आदि पढ़ेंगे और अच्छी तरह विचार करेंगे तो उन्हें और नहीं तो कमसे कम यह अवश्य मालूम हो जायगा कि आदर्शसंस्थायें किन्हें कहते हैं, वे कैसे चलाई जा सकती हैं और उनकी उन्नति किस मार्गसे होती है और यदि वे इतना जान गये तो अवश्य ही एक दिन वह आयगा जब जैनी भी टस्केजी या हैम्पटन जैसी संस्थाओंके स्थापित करनेमें समर्थ हो सकेंगे।

यद्यपि यह कोई धर्मग्रन्थ नहीं है तथापि हम अपने पाठकोंसे प्रार्थना करते हैं कि वे इसे एक बार धर्मग्रन्थ ही समझकर आदिसे अन्ततक पढ़ जायँ। हम विश्वास दिलाते हैं कि उन्हें इससे किसी धर्मग्रन्थके स्वाध्यायकी अपेक्षा कम लाभ न होगा। इसपुरुषके चरितसे हमें स्वाल-म्बनका मार्ग सूझ पड़ेगा, परिश्रमका महत्त्व मालूम होगा, परोपकारी जीवनकी श्रेष्ठता विदित होगी, कठिनाइयोंको रोंधते हुए जानेका बल प्राप्त होगा और वर्तमान समयके अनेक कठिन प्रश्न हल हो जावेंगे।

अन्तमें पाठकोंसे यह विवेदन है कि वे इस ग्रन्थको आप पढ़ें, अपने मित्रों पड़ोसियों सम्बन्धियोंको पढ़नेके लिए देवें और जिस तरह हो इसके ज्ञानका विस्तार करनेका प्रयत्न करें। यदि इस निवेदन पर ध्यान दिया गया और इससे हमारा शिक्षापथ कुछ प्रशस्त हुआ तो हम अपने परिश्रमको और अर्थव्ययको सफल समझेंगे।

चन्दावाड़ी, बम्बई
पौषकृष्णा एकादशी १९७१।

नाथूराम प्रेमी।

प्रस्तावना ।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।

—गीता ।

भारतवर्षमें इस आत्मावलंबन और आत्मोद्धारकी अमोघ शिक्षाका प्रचार होनेकी इस समय अत्यन्त आवश्यकता है। नैराश्य और अज्ञानके घोर अन्धकारमें उन्नतिके साधन टटोलनेवाले भारतवर्षको इस समय आत्मावलंबन और आत्मोद्धारकी शिक्षाका कोई ज्वलन्त दृष्टान्त जितना उपयोगी होगा उतना उपयोगी कोई तात्त्विक विवेचन अथवा कोई कपोलकल्पित वर्णन नहीं हो सकता। इस लिए आत्मोद्धारकी प्रत्यक्ष प्रतिमा बुकर टी. वाशिंगटनका उन्हीके शब्दोंमें लिखा हुआ आत्मचरित आज हम अपने ३३ करोड़ भाइयोंको बड़ी प्रीति प्रसन्नता और आशासे भेंट करते हैं।

इस आत्मोद्धारके मननसे मालूम होगा कि क्योंकर दासत्वके पंकमें धँसी हुई एक निर्द्धन और निःसहाय जाति संसारमें अपना सिर ऊपर उठा सकती है, क्यों कर कोई अन्धकारमें छिपा हुआ अनाथ और अबल मनुष्य यश और पुरुषार्थ लाभ कर सकता है, और क्यों कर कोई जाति कुसंस्कार, वर्णाभिमान और विजाति विद्वेषके अति दुर्गम पर्वतोंको लाँघकर आत्मोद्धारके वैकुंठ धाममें पहुँच सकती है। जब आपको मालूम होगा कि एक टूटीफूटी झोपड़ीमें पैदा हुआ एक गुलाम बालक आज उस टस्केजी-विद्यालयका मुख्य प्रिन्सिपल है जो अमेरिकामें एक आदर्श विद्यालय है और जिसे देखनेके लिए जाना अमेरिकाके प्रेसिडेंट भी अपना कर्तव्य समझते हैं, जब आपको मालूम होगा कि जिस समय गुलामीसे छुटकारा पाने पर नीग्रो जाति 'कर्तव्यविमूढ़' हो रही थी और उसे कोई मार्ग नहीं

दिखाई देता था उस समय उसी होनहार बालकने अपनी जातिके मुख्य मुख्य प्रश्नोंको अपने आचरणसे हल कर दिया, जब आपको मालूम होगा कि उसी अदने बालकने नीग्रो जातिके विषयमें गोरे अमेरिकनोंके कुसंस्कार हटाकर अपनी जातिकी प्रतिष्ठा बढ़ाई है, जब आपको मालूम होगा कि उसी असहाय बालकने अपने गुरुकी आज्ञापालनका व्रत निबाह कर अपने रोटीके मोहताज भाइयोंके दानापानीका और उनमें धर्म और नीतिके प्रचारका पूरा प्रबन्ध कर दिया है, तब क्या आप लोग भी उन्हीं तत्त्वों पर अपने देशकी परिस्थितिके अनुसार आत्मोद्धारके लिए कटिबद्ध न होंगे ?

इस समय हमारे देशकी बड़ी ही अनिश्चित अवस्था है। हमारे सामने कितने ही वर्षोंसे राजजाति और प्रजाजाति, हिन्दू और मुसलमान, श्रेष्ठ वर्ण और अन्त्यज जाति, आदिके बड़े बिकट प्रश्न हल करनेके लिए पड़े हुए हैं ! इस आत्मोद्धारसे, हमारा विश्वास है कि हम लोगोंको इन प्रश्नोंके सुलझानेमें बड़ी भारी सहायता मिलेगी। महात्मा बुकर टी. वाशिंगटनने अमेरिकामें नीग्रो जाति और अमेरिकन गोरोंकी जातिका प्रश्न सुलझाया है इसलिए उनके चरितसे हमारे देशवासियोंको भी अवश्य शिक्षा प्राप्त होगी। वाशिंगटन अपनी भीतरी अवस्थाको सुधारकर योग्य बननेको ही देशोन्नतिका मूल (First observe and then desire) समझते हैं। हम लोगोंको भी इस समय इसी तत्त्वका अवलंबन करना है। अभीतक हम लोग अपनी शिक्षाप्रणाली निश्चित नहीं कर सके हैं। शिक्षातत्त्वका 'श्रीगणेश' भी हम लोगोंको सीखना है। हमारे जितने आन्दोलन होते हैं वे प्रायः अनिश्चित उद्देश्यसे हुआ करते हैं। आत्मोद्धारसे यह शिक्षा मिलती है कि पहले अपनी आवश्यकताओंको देखो और बालकोंको ऐसी शिक्षा दो कि उन आवश्यकताओंकी पूर्त्ति हो। इसीको स्वाभाविक शिक्षा कहते हैं। यही शिक्षा फलवती होती है। आन्दोलन भी स्वाभाविक होनें चाहिए। दूसरोंकी देखादेखी अथवा अपना हौसला मिटानेके लिए कोई आन्दोलन करना या सभा सोसायटी कायम करना बिलकुल अस्वाभाविक और निरर्थक है। देशके अभावोंको जानकर उनकी स्वाभाविक उपायसे पूर्त्ति करना ही आन्दोलनका मूल होना चाहिए। महात्मा वाशिंगटनका व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन इसी प्रकार स्वाभाविक होनेसे संसारके लिए कल्याणकारी

हुआ है। उस जीवनसे हम लोग शिक्षा ग्रहण करें तो हमारे देशमें भी ऐसे अनेक वाशिंगटन उत्पन्न हो सकते हैं।

महात्मा वाशिंगटनने अपना जीवनचरित आप * ही लिखा है जिससे उनके आचारविचारोंके परिचयके साथ उनके शब्दोंका भी आनन्द मिलता है। अँगरेजीमें उस आत्मचरितका नाम है, 'दासत्वसे उत्थान–Up From Slavery'। हमने इसके मराठी अनुवादसे यह हिन्दी अनुवाद किया है। मराठी अनुवाद 'आत्मोद्धार'के नामसे प्रसिद्ध है और 'मनोरंजन कार्यालय' बम्बईसे प्रकाशित हुआ है। लेखक श्रीयुत नागेश वासुदेव गुणाजी बी. ए. एल एल. बी. ने वाशिंगटन महाशय तथा तत्रस्थ अन्य सज्जनोंसे पत्रव्यवहार करके उनके चरितसंबंधी बहुतसी बातें संग्रह की हैं और इसलिए हमने अपने पाठकोंको उनके परिश्रमोंके परिपक्व फलका ही यह हिन्दी आस्वाद कराना उचित समझा। भूमिका, उपोद्घात और परिशिष्ट भी गुणाजी महाशयके लेखोंके अनुवाद हैं और इन सबके लिए हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। 'मनोरंजन कार्यालय'के स्वामी और सुलेखक श्रीयुत काशीनाथ रघुनाथ मित्रको भी अनेक धन्यवाद हैं जिन्होंने मराठी 'आत्मोद्धार'को प्रकाशित कर उसे हिन्दीमें प्रकाशित करनेका मार्ग विशेष सुगम कर दिया।

जब हम इस पुस्तकको लिखने बैठे तब हमारे सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि यह आत्मचरित अपनी ओरसे वाशिंगटनका एक जीवनचरित बना कर लिखा जाय या ज्योंका त्यों ही आप लोगोंकी सेवामें उपस्थित किया जाय। बहुत सोचने विचारने पर हमें आत्मचरित आत्मचरितके ही रूपमें पाठकोंको भेंट करना उचित मालूम हुआ और ऐसा ही किया गया।

अन्तमें हम हिन्दीग्रन्थरत्नाकर–कार्यालयके सुयोग्य संचालक श्रीयुत महाशय

* वाशिंगटनसे उनके कई मित्रोंने आग्रह किया कि आप अपना जीवन चरित लिखें; पर इस पर वे यही उत्तर दिया करते थे कि मैंने ऐसा कौनसा कार्य किया है जो अपना जीवनचरित लिखूँ। अन्तमें जब उनकी कन्या पोर्शियाने उनसे बार बार प्रार्थना की और जब वह उनसे लिखनेके लिए प्रतिदिन आग्रह करने लगी तब उन्होंने अपने परिवारकी जानकारीके लिए यह आत्मचरित लिखा। परन्तु इससे लाभ सबका हुआ है।

आत्मोद्धार-

नाथूरामजी प्रेमीको हार्दिक धन्यवाद देना चाहते हैं जिनकी कृपासे हम इस चरितको लिखनेका सौभाग्य प्राप्त कर सके हैं। पुस्तक बहुत शीघ्रतासे लिखी गई है, इसलिए कापी प्रेसमें भेजनेसे पहले प्रेमीजीको उसमें वारंवार संशोधन करने पड़े हैं और यह कार्य इतनी योग्यताके साथ हुआ है कि यहाँ हमसे यह बात प्रकट किये बिना नहीं रहा जाता कि अनुवादकी उत्तमताका सारा यश प्रेमीजीको है।

अब अपने पाठकोंसे यह प्रार्थना करनी है कि पुस्तकको वे हंसक्षीरन्यायसे पढ़ें और गुणोंको ग्रहण कर दोष मेरे जिम्मे करें। ॐ तत्सदब्रह्मार्पणमस्तु।

काशी, पौषकृष्णा सप्तमी
संवत् १९७१।

विनीत—
लक्ष्मण नारायण गर्दे।

भूमिका ।

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।'

—गीता ।

इस संसारमें ज्ञानके सदृश पवित्र और कोई वस्तु नहीं । जिस देशमें ज्ञान और शिक्षा अच्छे ढंगसे और परमार्थबुद्धिसे दी जाती है, उस देशके ऐश्वर्यमें कभी किसी बातकी कमी नहीं पड़ती । प्राचीन समयमें शिक्षा और ज्ञानदानके कार्यमें भारतवर्ष बहुत ही प्रसिद्ध था । अध्ययन और अध्यापन ब्राह्मणोंका—द्विजमात्रका प्रधान कर्तव्य था और इस पवित्र कर्तव्यके पालनमें ब्राह्मणोंने अपना जीवन अर्पण कर दिया था । विद्यार्थी गुरुगृह अथवा आश्रममें रहकर विद्यार्जन किया करते थे और गुरु उन्हें निःस्वार्थ भावसे और मन लगाकर पढ़ाते थे । ये गुरु बड़े बड़े मुनि होते थे और 'कुलपति' नामसे पुकारे जाते थे । गुरुके परिवार तथा विद्यार्थियोंका सब खर्च राजामहाराजाओं तथा धनवान् वैश्योंके दिये हुए दानोंसे चलता था । बड़े बड़े मुनियोंके आश्रम उस समयके विश्वविद्यालय या विद्यापीठ ही थे । उदाहरणार्थ, यजुर्वेद शतपथ-ब्राह्मण और तदन्तर्गत बृहदारण्यकोपनिषद्से मालूम होता है कि जनकराजाके गुरु महर्षि याज्ञवल्क्यका एक महान् विद्यापीठ था और उसमें अनेक विद्यार्थी पढ़ते थे । इसे संसारका एक बड़ा भारी सौभाग्य ही समझना चाहिए जो अध्ययन अध्यापनका पवित्र कर्तव्य पालन करनेवाले याज्ञवल्क्य जैसे ज्ञानी पुरुष इस पृथ्वीतल पर कभी कभी अवतीर्ण हो जाते हैं । इस समय नये जगत्में—या अमेरिकामें ज्ञानार्जन और ज्ञानदानके कार्यमें याज्ञवल्क्यके समान, बल्कि, उनसे भी कुछ बढ़कर एक महात्मा जीवित हैं । उनका नाम है डाक्टर बुकर टी. वाशिंगटन ।

वाशिंगटन ! वाशिंगटनका नाम लेते ही हमारे हृदयमें बड़ी बड़ी उदार भावनायें लहराने लगती हैं । कुछ पाठक प्रश्न करेंगे कि क्या ये वे ही वाशिंगटन हैं जो बचपनसे सत्यप्रीति, स्वदेशाभिमान, स्वार्थत्याग, निरभिमान आदि गुणोंसे

युक्त थे और जिन्होंने अमेरिका देशकी दासत्वश्रृंखला तोड़ डाली थी । किन्तु जब उन्हें मालूम होगा कि उन वाशिंगटनसे इन वाशिंगटनका कोई संबंध नहीं है; ये गोरे नहीं किन्तु काले नीग्रो या हबशी हैं तब संभव है कि वे नाक भौं सिकोड़ने लगें । परन्तु ऐसे पाठकोंसे हमारी प्रार्थना है कि वे इतने अधीर न हो जायँ । यदि वे इन वाशिंगटनके चरितको पढ़ लेंगे तो उन्हें मालूम होगा कि यह चरित भी स्वातंत्र्यदाता वाशिंगटनके चरितके समान, बल्कि उससे भी अधिक मनोरंजक, सात्विक और बोधप्रद है ।

आत्मचरितका महत्त्व ।

आत्मचरितका महत्त्व दो बातों पर अवलम्बित रहता है,—एक तो उस चरितके नायक पर और दूसरे उस नायकके कामों या पराक्रमों पर । वाशिंगटनके इस आत्मचरितमें उक्त दोनों बातें मौजूद हैं, अर्थात् जैसे महात्मा वाशिंगटन हैं वैसे ही उनके कार्य भी हैं। व्यक्ति और उसके कार्य दोनों ही महत्त्वके हैं । इस कारण यह आत्मचरित बहुत ही उत्तम और अनुकरणीय है । वाशिंगटन एक अदना गुलाम था; परन्तु वह अपनी करणीसे रंकका राव—नरका नारायण बन गया है ! इसमें सन्देह नहीं कि उसकी इस आत्मोन्नतिका वृत्तान्त बहुत ही शिक्षाप्रद होगा ।

आत्मचरितसे शिक्षा ।

डाक्टर वाशिंगटनका जीवनवृत्तान्त अनेक प्रकारसे अद्वितीय है । दासत्वमें तो उनका जन्म हुआ । उन्हें अपने बापदादाओंका कुछ भी हाल मालूम नहीं। ऐसे घोर अन्धकारमें उन्होंने उन्नति आरंभ की और आगे बढ़ते बढ़ते अब वे अपनी जातिके नेता और मानवजातिके कल्याणकर्ता बने हुए हैं ! उनका पुरुषार्थ, उनकी सत्यप्रीति, उनका सादापन, अपनी जाति और देशकी सेवामें उनका अनुराग, अमेरिकाके नीग्रोलोगोंकी आधिभौतिक और नैतिक दशाके सुधारके लिए उनके परिश्रम, उनका स्वार्थत्याग, उनका सुस्वभाव, आदि सब बातोंका चित्ताकर्षक वर्णन इस आत्मचरितमें आगया है । यह आत्मचरित सबके लिए, विशेषतः भारतवासियोंके लिए बहुत ही उपयोगी है । यह बतलायगा कि प्रतिकूल परिस्थितिमें अपने समाज और देशका हित किसतरह किया जासकता है ।

वाशिंगटनका संक्षिप्त चरित ।

वाशिंगटनके जीवन और उनके जीवनके प्रधान कार्योंका वर्णन बहुत थोड़ेमें

किया जा सकता है। उनका बचपन गुलामीमें बीता। जिस समय गुलाम स्वाधीन हुए उस समय वे बालक थे। बचपनमें भी अपने परिवारकी जीविकाके लिए उन्हें मेहनत मज़दूरी करनी पड़ती थी। उनका सौतेला बाप उन पर प्यार नहीं करता था। उनके बापका यह ख़याल था कि यह मेहनत मज़दूरी करके कमानेवाला लड़का है-इसका समय लिखने पढ़नेमें नष्ट न होना चाहिए। शिक्षा प्राप्त करनेमें उनकी माता और उनका भाई उनके साथ सहानुभूति रखते थे। शिक्षाके लिए उन्हें अनेक कष्ट और संकट झेलने पड़े। यथार्थमें, नीग्रोजातिके उत्तम नेता तैयार करनेके लिए स्थापित हुए हैम्पटन-विद्यालयमें ही उन्हें शिक्षा मिली। हैम्पटनकी पढ़ाई समाप्त होने पर उन्होंने दो तीन वर्ष यहाँ वहाँ पढ़ानेमें बिताये, और तब उन्हें टस्केजीमें आकर पाठशाला खोलनेका कार्य सोंपा गया। यहींसे उनके जीवनका प्रधान कार्य आरंभ हुआ। टस्केजी-विद्यालय जबसे खुला है तबसे उसकी दिनदूनी रातचौगुनी उन्नति हो रही है। वाशिंगटन अब भी उस विद्यालयके मुख्य प्रिन्सिपल हैं। 'नीग्रो कृषक-महासभा' और 'नीग्रो राष्ट्रीय उद्यमसभा' भी उन्होंने स्थापित की हैं। इन सब संस्थाओंकी बहुत अच्छी दशा होनेसे दक्षिणके नीग्रो लोग अपनी उन्नति बड़ी शीघ्रतासे कर रहे हैं।

हैम्पटन-विद्यालय।

वाशिंगटनके जीवनक्रमका रहस्य समझनेके लिए हैम्पटन-विद्यालयके विषयमें एक दो बातें बतला देना बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि वाशिंगटन उसी विद्यालयके एक विद्यार्थी थे और उन्होंने उसी विद्यालयके संस्थापक जनरल आर्मस्ट्रांगका ही अनुकरण किया है। सिविल वार (१८६० से १८६५) समाप्त होने पर काले और गोरे लोगोंके बीच समझौता करनेके लिए संयुक्त राज्यकी सरकारने जनरल आर्मस्ट्रांगको नियुक्त किया था। उस समय अर्थात् सन् १८६८ में उन्होंने यह विद्यालय स्थापित किया। जिनके पास खानेको अन्न नहीं, जिनकी कोई परवरिश करनेवाला नहीं, जिन्होंने कोई ऐसा हुनर भी नहीं सीखा जिससे अपना गुजारा कर सकें, और जिनकी अवस्था दिनपरदिन खराब होती जाती है, ऐसे हजारों नीग्रो-परिवारोंको देखकर जनरल आर्मस्ट्रांगको बड़ा दुःख हुआ। स्वतंत्रताके कारण जो नई सृष्टि बन गई थी उसका सामना करनेकी सामर्थ्य इन परिवारोंमें नहीं थी। उनके गुलामाबादकी झोपड़ियाँ जाती रहीं, गुलामाबाद

उजाड़ हो गये, और उनके लिए कोई मामूली काम भी न रह गया। ऐसे विकट समयमें जनरल आर्मस्ट्रांगने अपनी रोटी कमानेमें भी असमर्थ हुई नीग्रो जातिको ऊपर उठानेका संकल्प किया, और अमेरिकन मिशनरी-सोसायटियोंकी सहायतासे हैम्पटनमें एक शिल्पशाला खोल दी। इसमें आरंभमें केवल दो सहकारी शिक्षक और कुल पंद्रह विद्यार्थी थे। किन्तु अब इस समय (१९१३) उस विद्यालयमें १६०० के ऊपर विद्यार्थी और २०० शिक्षक तथा दूसरे कर्मचारी हैं। संस्थाकी १४० इमारतें और ११०० एकड़ भूमिकी सम्पत्ति है। विद्यालयके कार्यके विषयमें जे. डब्ल्यू. चर्च नामक एक सज्जन लिखते हैं कि "हैम्पटनमें कोई काम अधूरा नहीं होता है। जब इस विद्यालयमें कोई नीग्रो युवक भरती होता है तब वह भली भाँति जानता है कि यहाँ लगातार चार साल परिश्रम करना होगा। निस्सन्देह इस बातकी सब प्रकारसे चेष्टा की जाती है कि इस परिश्रमका भार विद्यार्थियोंको भारी न मालूम हो, बल्कि, वे उसे आनन्दसे झेल लें। इसके साथ ही इस बातकी भी पूरी चेष्टा की जाती है कि विद्यार्थी परिश्रम और पवित्र आचरणका महत्त्व भली भाँति समझ जायँ।" नीग्रो जातिमें आलस्य और अज्ञान ये दो महादुर्गुण वंशपरंपरासे चले आते थे। हैम्पटन-विद्यालयने नीग्रोजातिको इन दुर्गुणोंसे मुक्त करनेका बड़ा प्रयत्न किया है और इस प्रयत्नमें उसने सफलता भी पाई है।

कार्यप्रणाली और सिद्धान्त।

यहाँ यह बतलानेकी कोई आवश्यकता नहीं है कि हैम्पटनने इस कार्यमें किस प्रणाली और किन सिद्धान्तोंका अवलंबन किया है। क्योंकि वाशिंगटनने भी उसीकी प्रणाली और सिद्धान्तोंका अवलंबन किया है और उनका वर्णन आगे आनेवाला है। यहाँ इतना ही बतला देना काफी होगा कि इस संस्थाने पिछड़ी हुई नीग्रो जातिके बालकोंमें जो नवीन गुणोंके बीज बोनेका यत्न किया है उसमें सामाजिक संस्थाओंके मूलभूत सिद्धान्तों और अत्यन्त स्वाभाविक उपायोंका ही अवलंबन किया गया है।

वाशिंगटनकी परिस्थिति।

जिस समय वाशिंगटन टस्केजीमें पाठशाला खोलनेके लिए गये उस समय पाठशालाके लिए कोई भवन नहीं था; पर वहाँ ऐसे युवा और वृद्ध नीग्रो अनेक थे जो शिक्षा प्राप्त करनेके लिए तरस रहे थे। टस्केजीमें गोरोंकी शिक्षाके लिए

कई प्रबन्ध थे; परन्तु उनसे नीग्रोजातिको कोई लाभ न होता था। सन्तोषकी बात केवल यही थी कि वहाँके गोरों और नीग्रोओंमें मेल था, और इसके अतिरिक्त अलबामा राज्यकी प्रबन्धकारिणी सभाने नीग्रो-विद्यालयके लिए वार्षिक दो हज़ार डालर देना स्वीकार कर लिया था। पर इसमें भी यह शर्त थी कि यह रकम सिवा अध्यापकोंको वेतन देनेके और किसी काममें खर्च न की जाय। नीग्रो लोगोंमें उस समय बड़ा उत्साह था और उससे वाशिंगटनने पूरा लाभ उठाया।

नीग्रो लोगोंकी तत्कालीन अवस्था।

जिस देश या समाजमें काम करना होता है उस देश या समाजका रत्ती रत्ती हाल जानना ही सफलताका मूलमंत्र है। इसी लिए वाशिंगटनने स्वयं भ्रमण करके अपना कार्यक्षेत्र देख डाला और अपने भावी विद्यार्थियोंकी दशा अपनी आँखों देख ली। आसपासके गाँव खेड़ोंकी यह दशा थी कि लोग एक ही कोठरीवाली पुरानी झोपड़ीमें रहा करते थे। उनमें स्वच्छता तो नाममात्रके लिए भी न थी। ऐसे गन्दे लोग थे कि रोज़ दाँत साफ़ करना भी न जानते थे। स्नान तो कभी दश पाँच दिनमें एकाध बार कर लिया करते थे! अपनी आवश्यकताओंकी ओर ध्यान न देकर पियानो और घड़ी जैसी विलासवस्तुओंको मोल लिया करते थे। और मजा यह कि इन वस्तुओंका अच्छी तरह उपयोग करना भी वे जानते न थे! ऐसी जमीन बहुत होने पर भी कि जहाँ सब प्रकारके अन्न पैदा हो सकते हैं, वे सिर्फ़ कपासकी ही खेती करते और उसीसे बड़ी ज़िल्लतके साथ अपना गुजारा करते थे। खेतीके नये नये ढंग उन्हें मालूम न थे। घरगिरस्तीका ढंग भी वे नहीं जानते थे। जो लोग थोड़ासा लिख पढ़ लेते थे वे बड़ी बड़ी नौकरियाँ पानेकी चेष्टा करते थे। काहिल और बदचलन लोग बेखटके यह मान लेते थे कि ईश्वरने हमें प्रेरणा की है और फिर धर्मोपदेशका काम प्रारंभ कर दिया करते थे!

प्रारंभ।

यह सब दशा देखकर वाशिंगटनको बड़ी दया आई और उन्होंने मेथाडिस्ट संप्रदायके एक गिरजेके समीप एक झोपड़ीमें पाठशाला खोल दी। इसमें अकेले वाशिंगटन ही अध्यापक थे और पंद्रह बालक तथा पंद्रह बालिकायें

मिलाकर तीस विद्यार्थी थे । इन विद्यार्थियोंको गणितके सिद्धान्त और व्याकरणके नियम कंठ थे; पर इनसे क्या काम लिया जाता है यह किसीको मालूम न था । शारीरिक परिश्रम करना वे अपनी शानके खिलाफ समझते थे ।

वार्शिंगटनकी सहधर्मिणियोंका सहधर्म ।

पाठशाला आरंभ होने पर डेढ़ महीनेके भीतर ही वार्शिंगटनकी सहायताके लिए मिस डेविड्सन आगई । वार्शिंगटनकी प्रथम पत्नीका देहान्त होने पर इनका वार्शिंगटनसे विवाह हो गया । वार्शिंगटनके कुल तीन विवाह हुए, और तीनों सहधर्मिणियोंने विद्यालयकी उन्नति करनेमें वार्शिंगटनके हाथ बटाये । यह एक ध्यानमें रखनेकी बात है कि जो नीग्रो जाति बहुत पिछड़ी हुई है उसके पास भी, किसी समय उन्नतिके धुराधारी होनेका अभिमान रखनेवाले भारतवासियोंसे, कहीं अधिक साधन हैं । सामाजिक तथा शिक्षाविषयक बातोंमें उन्होंने जो जो काम उठाये हैं उनमें उनकी स्त्रियाँ भी योग देती हैं । हम लोग इस संयोगसे अबतक वञ्चित हैं । वार्शिंगटनको, आगे चलकर अनेक सहायक मिले और उनका विद्यालय इस समय केवल नीग्रो अध्यापक और अध्यापिकाओं द्वारा ही चल रहा है ।

शिक्षाविषयक सिद्धान्त ।

उस समय दक्षिणके राज्योंमें फ़ी सदी ८५ नीग्रो खेती पर ही अपनी जीविका चलाते थे । इस लिए वार्शिंगटनने पहला सिद्धान्त यह निश्चित किया कि शिक्षाका ऐसा फल न हो कि विद्यार्थी खेतीसे प्रेम करना छोड़ दें । दूसरी बात यह थी कि प्रत्येक विद्यार्थी कोई न कोई कला या हुनर जान जाय और वह उद्योग, मितव्यय तथा सुव्यवस्थाका प्रेमी बन जाय, अर्थात् उसमें इतनी योग्यता आ जाय कि विद्यालयसे निकलने पर वह सुखसे अपना उदर निर्वाह कर सके । तीसरी बात यह थी कि विद्यार्थियोंको ऐसी शिक्षा मिले कि खेती बारीके काममें वे एक नवीन जीवन डाल दें और जिन लोगोंके साथ उन्हें जीवन व्यतीत करना है उनकी मानसिक, नैतिक और धार्मिक उन्नति भी कर सकें ।

आरंभ कैसे किया गया ?

कोई उद्देश्य निश्चित करना एक बात है, और उस पर अमल करना बिलकुल

दूसरी बात है। आरंभमें, अपने उद्देश्यको कार्यमें परिणत करनेके लिए वाशिंगटनके पास कोई साधन नहीं था। ज़मीनका एक टुकड़ा भी उनके पल्ले नहीं था। परन्तु परमात्माने उन्हें एक मौका दिया और उस मौके पर उन्होंने अपने प्रयत्नमें कोई कसर नहीं की। टस्केजीसे एक मील फासले पर एक पुरानी और उजाड़ जगह बिकनेको हुई। वह जगह खरीदनेके लिए हैम्पटन-विद्यालयके कोषाध्यक्षने वाशिंगटनको कीमतकी आधी रकम (२५० डालर) कर्ज़ दी। उसी जगहकी एक पुरानी कोठरी, अस्तबल और मुर्गीखानेमें पाठशाला आरंभ की गई। विद्यार्थियोंने लाचार होकर वहाँकी मरम्मतका काम किया। खेतीके लिए जगह तैयार करते वक्त भी विद्यार्थी राजी नहीं थे। अभी उन्होंने शारीरिक परिश्रमका महत्त्व नहीं जाना था। पर जब हमारे चरितनायक स्वयं कुदाली लेकर ज़मीन खोदने लगे तब विद्यार्थी भी उनकी मदद करनेके लिए आ पहुँचे। शायद उन विद्यार्थियोंको यह मालूम नहीं था कि एक कमरेमें झाड़ू देकर ही वाशिंगटन हैम्पटन-विद्यालयमें भरती हुए थे और इसीलिए उन्हें परिश्रमके महत्त्वका पाठ उनसे लेना पड़ा।

हम लोगोंकी पंगु अवस्था।

हम लोगोंको यह अमूल्य पाठ (परिश्रमका महत्त्व) अभी लेना ही है। हम लोगोंने न जाने कहाँसे यह समझ रक्खा है कि परिश्रम करना महज़ छोटी जातवालोंका काम है। इसी कारणसे हम लोगोंमेंसे हिलने डोलनेकी सामर्थ्यका लोप हो गया है। बिना नौकरके हमारा काम नहीं चलता। अगर कहीं नौकर न हो तो ऐसा जान पड़ता है कि हम जंगलमें लाकर छोड़ दिये गये हैं—हमारी बड़ी फजीहत होती है। हमारे यहाँकी एक ऐसी पाठशालामें कि जिसका मुख्य उद्देश ही विद्यार्थियोंको स्वावलंबी बनाना था, धोतियाँ धोनेके लिए एक धोबी रक्खा गया था! विद्यार्थी नहानेके लिए नदी पर जाते और नहाकर धोती बिना धोये ही ले आया करते थे। अनुसन्धान करने पर मालूम हुआ कि विद्यार्थियोंके मातापिता और अभिभावक नहीं चाहते थे कि हमारे बालक विद्यालयमें रहते हुए कोई काम करें और इसीलिए यह तमाशा हुआ करता था। वे यही चाहते थे कि हमारे बालकोंके दिमाग़ (मस्तक) तो ज्ञानसे भर दिये जायँ; पर शरीरके और सब अंग, काम कराकर मज़बूत न बनाये जायँ!

वे नहीं जानते थे कि यदि शरीरके और सब पुर्जे दुरुस्त न हुए—मददगार अच्छे न हुए तो अकेला दिमाग बेचारा क्या कर सकता है ?

हम लोगोंकी प्राचीन शिक्षाप्रणाली।

प्राचीन समयमें हम लोगोंकी शिक्षाप्रणाली ऐसी नहीं थी। गुरुकुलमें जब विद्यार्थी पढ़ने जाते थे तब हाथमें समिधा (होमकी लकड़ी) लेकर जाया करते थे, और गुरु जो जो काम बतलाते थे उन्हें करनेके लिए तैयार रहते थे। इसी प्रकारके नम्रभावसे राजपुत्र तक—श्रीकृष्णभगवान् तक—विद्याभ्यासके लिए गुरुके समीप जाते थे। छान्दोग्य उपनिषद्में एक कथा आती है कि जब सत्यकाम जाबाल गुरुके आश्रममें पढ़ने गया तब गुरुजीने उसे कुछ गौएँ दीं और कहा कि जबतक इनकी एक हज़ार गौएँ न हो जायँ तबतक जंगलमें ही रहो—मेरे पास न आओ। सत्यकाम कई वर्ष जंगलमें रहा और वहाँ उसने प्रकृतिसे बहुतसी बातें सीखीं। गौओंकी संख्या जब एक सहस्रसे अधिक हो गई तब वायुने वृषभरूप धारण करके उससे कहा कि " अब तुम गुरुके पास जाओ। " गुरुकुलमें आते ही गुरुजी उससे बोले, " बेटा, तू तो अब ब्रह्मज्ञानी प्रतीत होता है, यह ज्ञान तुझे किसने बतलाया ? " सत्यकामने उत्तर दिया, " मुझे यह शिक्षा मनुष्यकोटिसे भिन्न प्राणियोंने दी है। पर, महाराज, अब मुझ पर आप अनुग्रह कीजिए और मुझे शिक्षा देकर पूर्ण कीजिए। " तब गुरुजीने उस पर अनुग्रह करके उसे पूर्ण ज्ञानी बना दिया। परिश्रमकी महत्ता और निसर्ग या प्रकृतिकी शिक्षा, यथार्थ शिक्षाके ये दो मुख्य अंग हैं। इंग्लेंडमें भी इसी ढंगसे शिक्षा दी जाती है। वहाँ बड़े बड़े सरदारों और अमीर उमराओंके बालकोंको केवल अपने ही लिए नहीं, बल्कि दूसरोंके लिए भी विद्यालयमें काम करना पड़ता है। उनके घरोंमें नौकर चाकरोंकी कमी नहीं; पर विद्यालयमें उन्हें अकेले ही आना पड़ता है और छात्रावासमें सबके समान रहना पड़ता है। अमेरिकामें गरीब विद्यार्थियोंको अपनी पढ़ाई और भोजनका खर्च चला सकनेके लिए कुछ छोटे मोटे काम करनेको दे दिये जाते हैं। इन कामोंसे उन्हें जो धन मिलता है उससे वे अपना सब खर्च चला लेते हैं। अस्तु। यहाँ हम लोगोंने कुछ ऐसी दशा उत्पन्न कर ली है कि अमीरोंके लड़के शारीरिक परिश्रम करना नहीं चाहते और साधारण श्रेणीके लोग खेती बारीसे भागते हैं। अब समय आगया है कि

हम लोग यथार्थ शिक्षाकी उचित मीमांसा करके अपने बालकबालिकाओंको पुरुषार्थी बनानेका प्रयत्न करें। वाशिंगटनने जिस समय नीग्रो लोगोंमें शिक्षाप्रचारका प्रयत्न आरंभ किया उस समय जो दोष सुशिक्षित नीग्रोओंमें वर्तमान थे वे ही आज हम सुशिक्षित भारतवासियोंमें भी दिखलाई देते हैं। इस दृष्टिसे हम लोगोंके लिए वाशिंगटनका चरित बहुत ही उपयोगी है।

महान् कार्योंमें आध्यात्मिक सहायता।

वाशिंगटनको पाठशालाके लिए भूमि तो मिल ही चुकी थी। अब उनका दूसरा काम कर्ज़ अदा करना था। इसके लिए उन्होंने स्वयं घूम घूम कर और मेले तमाशे खड़े करके रकम जुटानेका प्रयत्न किया। बड़ी तकलीफ़में उनके दिन कटे—रातको नींद भी हराम हो गई; पर अन्तमें वे सफलमनोरथ हुए! इस कार्यमें उन्हें और उनके सहकारियोंको कुछ ऐसे आध्यात्मिक सिद्धान्तोंका ज्ञान हो गया कि जिनसे वे अपना भावी कार्य करनेमें समर्थ हुए। उच्च और पवित्र कार्योंमें विघ्न होते ही हैं; परन्तु इन विघ्नोंमें परमात्माका यही अभिप्राय मालूम होता है कि जो लोग सज्जन हैं वे श्रद्धा, सहिष्णुता और अध्यवसायकी परीक्षामें उत्तीर्ण होकर अपने उठाये हुए कार्यको पूर्ण करें। जितने अधिक बिघ्न होते हैं, कार्यमें उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त होती है। क्योंकि विघ्नबाधाओंसे सज्जनोंमें सुवर्णके समान अधिक तेजस्विता,और कार्यक्षमता उत्पन्न होती है। संकटोंसे जूझते हुए यदि कुछ लोग खेत रह जाते हैं तो कोई परवा नहीं; क्योंकि निर्बल मनुष्य ईश्वरका पवित्र कार्य करनेके अधिकारी नहीं। यह सिद्धान्त वाशिंगटनके चरितमें भली भाँति दृग्गोचर होता है। घोर चिन्ताके दिनोंने ही उन्हें यश प्राप्त कराया है। उन्हींसे उन्हें निजसे परमात्मा पर अधिक श्रद्धा करनेकी शिक्षा मिली। परिणाम अथवा कर्मफलकी कोई इच्छा मनमें न रख कर अपना काम किये जाना ही मनुष्यका धर्म है।

‘ कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। ’

—भगवद्गीता।

इस सिद्धान्तको उन्होंने कार्यमें परिणत किया। उन्होंने एक और महत्सिद्धान्त यह जाना कि सारी मनुष्यजातिको—अपने शत्रुओंको भी मित्रके समान प्यार करना चाहिए। उन्होंने इस बातका अनुभव किया कि किसीसे बैर करना

आप ही अपनेको नीचे गिराना है । इस लिए जिसे उन्नति करनी है उसका धर्म है कि वह किसीसे बैर न करे । इस उच्च कर्मयोगमें अपना व्यक्तित्व तक भूल जानेवाले महात्मा वाशिंगटनने अपनी निष्काम सेवासे संसारको कृतज्ञ बना लिया है ।

विद्यालयकी उन्नतिका मार्ग ।

विद्यार्थियोंको यह सिखलाया गया कि बड़े दिनोंकी छुट्टियोंमें धर्म-तत्त्वोंको आचरणमें किस प्रकार लाना चाहिए और ईश्वरके लिए अर्थात् दीन दरिद्रोंको सुखी करनेके लिए किस प्रकारके काम करना चाहिए । सबसे पहले कृषिकर्म आरंभ किया गया; क्योंकि वाशिंगटनका यह विद्यालय क्या था, एक छोटासा उपनिवेश बन गया था, और 'सर्वारम्भास्तण्डुलाः प्रस्थमूलाः' के न्यायसे सबसे पहले उदरनिर्वाहके लिए अन्न उत्पन्न करनेकी आवश्यकता थी । सच पूछिए तो टस्केजीके सभी काम और धन्धे स्वाभाविक और उचित मार्गसे जारी किये गये हैं । कुछ काम तो इसीलिए शुरू किये गये हैं कि विद्यालयके अनाथ और निर्धन विद्यार्थी अपनी पढ़ाई और भोजनका खर्च चला सकें । इसके बाद एक विशाल भवन बनवाना निश्चय हुआ । वाशिंगटन पर सभी लोगोंका पूरा विश्वास था और इसलिए एक गोरे व्यापारीने बिना माँगे भवनके लिए जितनी लकड़ी चाहिए देना स्वीकार कर लिया । पर वाशिंगटनने यह सोचा कि जबतक अपने पास काफ़ी रकम न जमा हो जाय तबतक इससे लकड़ी ले लेना ठीक नहीं; इसलिए उन्होंने चन्दा उगाहनेका प्रयत्न आरंभ किया और मिस डेविड्सन चन्देके लिए उत्तर प्रान्तमें भ्रमण करने गईं । ऐसे समय जब कि धन प्राप्त करनेके सब उपाय किये जाचुके और कहींसे भी धन मिलनेकी आशा न रही, अकस्मात् एक स्थानसे अपने आप सहायता मिल गई । वाशिंगटनके जीवनमें इस प्रकारकी अनेक घटनायें हुई हैं । इन सबमें परमात्माका 'अघटितघटनापटुत्व' दिखलाई देता है । बोस्टनकी दो उदार महिलायें बराबर उनकी सहायता करती रहीं । भवनके विषयमें विशेष रूपसे स्मरण करनेकी बात यह है कि विद्यार्थियोंने स्वयं अपने हाथों उसकी नींव खोदी थी । तब तक विद्यार्थियोंका यह ख़याल बना हुआ था कि हम लोग यहाँ पढ़ने आते हैं, न कि मजदूरी करने । परन्तु वाशिंगटनने इस शिकायतकी कोई परवा नहीं की । इस प्रकार विद्यार्थियोंको फिर दूसरी बार स्वावलंबनकी शिक्षा दी गई ।

भारतवासियोंके लिए शिक्षा; परिश्रमकी महत्ता और उससे प्रेम ।

हम लोग न जाने कब यह जानेंगे कि परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना चाहिए! इस समय हमारे समाजमें इतना स्वार्थ और आलस्य घुसा हुआ है कि अगर कोई देखभाल करनेवाला नहीं होता है तो हम लोग कोई भी काम अच्छी तरह नहीं करते हैं! इसी कारण साम्पत्तिक दृष्टिसे यूरोपियन अथवा अमेरिकन मज़दूरोंकी अपेक्षा भारतीय मज़दूरोंका मूल्य बहुत ही कम है । उन देशोंमें मज़दूरी अधिक देनी पड़ती है; पर काम भी अच्छा होता है; और यहाँ मज़दूरी कम लगने पर भी उक्त दुर्गुणोंके कारण अन्तमें वह अधिक ही हो जाती है । यही कारण है कि देशी रजवाड़ोंमें यूरोपियन नौकर और देशी कारखानोंमें यूरोपियन मैनेजर रक्खे जाते हैं । शिक्षासे हम लोग इस दोषको तो समझने लगे हैं; पर हमें यह नहीं सिखलाया गया कि यह दोष कैसे दूर किया जा सकता है । सीखें भी कैसे? परिश्रमकी महत्ता समझकर उससे प्रेम करना सिखलानेके लिए हमारे देशमें हैम्पटन या टस्केजी-विद्यालय जैसी संस्थायें कहाँ हैं?

प्रकृतिके अनुकरणमें वाशिंगटनकी दृढता ।

वाशिंगटनके कार्यसे बहुत लोग नाखुश थे; परन्तु किसीकी परवा न करके उन्होंने प्रकृतिका ही अनुकरण किया । वे जानते थे कि आरंभमें भूलें होंगी; परन्तु उन्हें यह भी मालूम था कि इन्हीं भूलोंसे अनुभव और ज्ञान भी प्राप्त होगा । टस्केजीमें जब ईंटोंका कारखाना जारी किया गया उस समय वाशिंगटनको उस विषयमें कुछ भी जानकारी न थी । उन्होंने तीन बार प्रयत्न किया और तीनों बार उनका काम बिगड़ गया । चौथे बारके लिए उनके पास पैसे ही न रहे! अन्तमें अपनी घड़ी रेहन रखकर उन्होंने फिर पजावा लगाया और इस बार उन्हें कामयाबी हासिल हुई । इस काममें उनकी घड़ी चली गई; पर यह देखिए कि उससे उनको कितनी बड़ी शिक्षा प्राप्त हुई! अब वही ईंटोंका कारख़ाना इतनी तरक्की पर है कि एक मौसिममें विद्यार्थियोंने बारह लाख ऐसी बढ़ियाँ ईंटें तैयार कीं जो किसी भी बाज़ारमें कट जातीं! यह एक ऐसी बढ़ियाँ घटना है जो हिन्दीकी दूसरी या तीसरी पुस्तकमें ' फिर कोशिश करो ' इस शीर्ष-

कके साथ छप जानी चाहिए। सन् १९०१ में टस्केजीमें ४० भवन थे जिनमेंसे ३६ केवल विद्यार्थियों द्वारा बने हुए थे। इस समय संयुक्त राज्यके दक्षिण प्रान्तमें ऐसे अनेक विद्यार्थी फैले हुए हैं जो भवन बनानेमें कुशल और शिल्पशास्त्रमें प्रवीण हैं। टस्केजीके विद्यार्थी और अध्यापक बिना किसीकी सहायताके अथवा बाहरसे कोई भी मसाला लिये बिना स्वयं चाहे जैसा भवन तैयार कर सकते हैं। नींव खोदनेके कामसे लेकर भवन तैयार होने पर उसमें बिजलीकी रोशनी लगानेतकके सब काम वे अपने हाथों कर लेते हैं। इसी प्रकार विद्यालय तथा उसकी कृषिशाखाके लिए जिन जिन चीज़ोंकी आवश्यकता होती है वे सब विद्यार्थियों द्वारा ही तैयार होती हैं और ऐसी कुछ चीजें बाज़ारमें बिकनेके लिए भी भेजी जाती हैं। इस प्रकार धीरे धीरे और स्वाभाविक क्रमसे विद्यालयकी उन्नति हुई है। इस समय इस विद्यालयमें चालीस प्रकारके व्यवसाय सिखलाये जाते हैं।

धनसंग्रह कैसे हुआ?

यों तो सभी संस्थाओंमें धनकी आवश्यकता होती है; परन्तु जब कोई विद्यालय चलाना होता है तब उसके लिए सबसे पहले धनकी ही चिन्ता आ घेरती है। अब देखिए कि वाशिंगटनने इसके लिए क्या क्या उपाय किये। घोर निराशा होने पर अकस्मात मिली हुई सहायताका विषय ऊपर लिख ही चुके हैं। जनरल आर्मस्ट्रांगके अधीन एक विद्यालय था ही और उस विद्यालयके लिए भी धनकी बड़ी भारी आवश्यकता थी; तो भी जनरल महाशय वाशिंगटन-को अपने साथ उत्तर प्रान्तमें ले गये और वहाँ उन्हें बड़े बड़े लोगोंसे मिलाकर उन्होंने टस्केजी–विद्यालयको धन दिलानेमें बड़ी सहायता की। क्या इस देशमें भी कोई संस्था दूसरी संस्थाकी इस प्रकारसे सहायता करती है? क्या इस प्रकारकी स्वावलंबी संस्थायें यहाँ भी वर्तमान हैं? दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि जनरल आर्मस्ट्रांग या हैम्पटन–विद्यालयने वाशिंगटन या टस्केजी-विद्यालयको केवल मार्ग दिखला दिया था; पर उस मार्ग पर चल कर अपना उद्देश्य पूरा करनेका काम वाशिंगटनने ही किया। स्वावलंबी पुरुषोंको इतनी ही सहायता आवश्यक होती है और इतनी ही उन्हें दी जानी चाहिए। भगवद्गीतामें जो तीन प्रकारके दान बतलाये गये हैं उनमेंसे,

अमेरिकन लोग प्रायः सात्विक दान किया करते हैं। कभी कभी गुप्त दान भी दिये जाते हैं; पर वहाँ बिना देश, काल और पात्रकी परीक्षा किये कोई भी दाता दान नहीं देता। इस प्रकारके समझदार और सात्विक दाताओंके कारण ही वाशिंगटनको धन संग्रह करनेमें विशेष कष्ट नहीं उठाने पड़े। संस्थायें सुप्रसिद्धि और सर्वप्रियता कैसे सम्पादन कर सकती हैं इसके लिए वाशिंगटनने अपने अनुभवसे कुछ सिद्धान्त स्थिर किये हैं जो नीचे दिये जाते हैं:—

(१) सर्वसाधारणको और सब प्रकारकी संस्थाओंको अपने कार्यकी खबर कर दो परन्तु यह दीनतासे नहीं, गौरवके साथ करो। अपने कार्यके विषयमें जो कुछ बतलाना हो वह एक तरतीबके साथ पर साफ़ साफ़ बतलाओ।

(२) परिणामके विषयमें निश्चिन्त रहो।

(३) संस्थाकी भीतरी कार्यवाही जितनी ही स्वच्छ, पवित्र और उपयुक्त होगी उतनी ही लोग उसकी सहायता करेंगे।

(४) जिस तरह धनवानोंके पास जाते हो उसी प्रकार निर्धनोंके पास भी सहायता माँगनेके लिए जाना चाहिए। सच्ची सहानुभूति और सहृदयता प्रकट करनेवाले सैकड़ों लोगोंकी छोटी छोटी रकमोंसे ही बड़े बड़े परोपकारके कार्य हुआ करते हैं।

(५) धन संग्रह करते समय धन देनेवालोंसे सहानुभूति और सत्परामर्श भी प्राप्त करनेकी चेष्टा करते रहना चाहिए।

इन सिद्धान्तोंकी सत्यताके कितने ही प्रमाण इस पुस्तकके बारहवें परिच्छेदमें आ गये हैं। उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़नेसे परोपकारमें ही जीवन व्यतीत करनेवाले पाठकोंको अनेक लाभ होंगे।

नीग्रो लोगोंकी राजकीय परिस्थितिके विषयमें विचार न करनेका कारण।

अपनी जातिकी राजकीय परिस्थितिके विषयमें वाशिंगटनने बड़ी बुद्धिमानी और चालाकीसे भरी हुई बातें कही हैं। परन्तु वाशिंगटनने अपने जातिभाइयोंकी साम्पत्तिक और शिक्षासम्बन्धी उन्नतिके लिए ही अपना जीवन अर्पण कर दिया है; इसलिए, चलिए हम राजकीय बातोंका विचार छोड़कर फिर विद्यालयकी ओर चलें।

विद्यालयकी उन्नति।

सन् १८८१ में अर्थात् विद्यालयके आरंभिक कालमें सौ एकड़ जमीन, तीन भवन, एक अध्यापक और कुल तीस विद्यार्थी थे। अब (१९१२ में) १०६ भवन, २३५० एकड़ जमीन, १५०० चौपाये, और गाड़ी, सग्गड़ तथा खेतीके औजार वगैरह सब असबाब मिलाकर १२,९५,२१३.१७५ डालरकी सम्पत्ति है। विद्यालयकी सारी मिलकियत, स्थायी फण्डको मिलाकर ३४१६,८६१.२८ डालरकी है। विद्यालयके अध्यापकों और अन्य कर्मचारियोंकी संख्या १८० के ऊपर है, और रजिष्टरमें १६४५ विद्यार्थियोंके नाम दर्ज हैं जिनमें १०६७ बालक और ५७८ बालिकायें हैं। ये विद्यार्थी ३४ राज्यों और प्रदेशोंसे तथा १९ विदेशोंसे आये हुए हैं। २३५० एकड़ जमीनमेंसे १००० एकड़में खेती होती है। विद्यालयके चौपायोंके लिए जितने चारेकी आवश्यकता होती है उसे विद्यालयका कृषिविभाग ही उत्पन्न कर लेता है। इस विभागके विद्यार्थियोंको खेतीके औज़ार, खेतीकी नवीन पद्धति और साधारण कृषिकर्मकी अच्छी शिक्षा दी जाती है।

विद्यालयमें मानसिक और साहित्यिक शिक्षाके साथ साथ ४० व्यवसायोंका सप्रयोग ज्ञान कराया जाता है। कृषि और कृषिसंबंधी दूसरे कार्यों पर बहुत अधिक ज़ोर दिया जाता है। प्रत्येक व्यवसाय या धन्धा इस तरह सिखला दिया जाता है कि विद्यालयसे निकलते ही विद्यार्थियोंको काम मिल जानेमें कोई कठिनाई नहीं पड़ती। विद्यार्थी इतने तैयार हो जाते हैं कि वे और लोगोंको साहित्य और व्यवसायकी शिक्षा अच्छी तरह दे सकते हैं। जिन विद्यार्थियोंमें मानसिक शिक्षा प्राप्त करनेकी सामर्थ्य नहीं होती उन्हें रातकी पाठशालामें पढ़ाया जाता है। वे दिनभर काम धन्धा करते हैं और आगे पढ़नेके लिए धन जमा कर रखते हैं। इस विषयमें बालक और बालिकायें दोनोंके लिए एकसा ही प्रबन्ध किया गया है।

विद्यालय एक समाज या संस्था है।

हैम्पटन-विद्यालयकी रिपोर्टके निम्नलिखित वाक्य टस्केजी-विद्यालय पर भी भली भाँति घटते हैं।—"विद्यालय एक बड़ा समाज या संस्था है। वह अपने सब अभावोंकी पूर्ति स्वयं करता है, और उसके नानाविध औद्योगिक तथा कृषिसंबंधी प्रयत्नोंके कारण और लोगोंसे उसका संबंध हो जाता है। विद्यार्थियोंके छात्रावास, शयनागर, भजनमन्दिर, भंडारगृह, कारखाने, प्रयोग—

शाला, खेत, विद्यालय-भवन आदि सामानोंसे पाठशाला एक बड़ी संस्था या बसती मालूम होती है, और यहाँ विद्यार्थी अनेक वस्तुयें तैयार करते हैं,-खेत जोतते हैं, रसोई बनाते हैं, भजन करते हैं, खेलते और आराम करते हैं । इस संस्थाके संचालकोंके सामने सदा यही एक प्रश्न उपस्थित रहता है कि विद्यार्थियोंको काम करते हुए किस प्रकार शिक्षा दी जाय और उनकी दिनचर्या तथा कार्य-कलापसे किस प्रकार उनकी मानसिक और नैतिक उन्नति की जाय । ”

विद्यालय एक तरहका साँचा है ।

विद्यालयमें दो प्रकारके विद्यार्थी होते हैं:— १ शिल्पशाखामें प्रवेश करनेकी तैयारी करनेवाले, और २ शिल्पशिक्षा समाप्त करके साहित्यका अध्ययन करनेवाले । गरीब विद्यार्थियोंको दिनमें शिल्पशिक्षाके लिए काम करना पड़ता है और रातको साहित्यका अभ्यास करना पड़ता है । ऐसा प्रबन्ध होनेसे उन्हें शिल्पशिक्षाके लिए बहुत समय मिलता है । इन दोनों प्रकारकी शिक्षाओंसे विद्यार्थियोंमें नैतिक गुणोंकी वृद्धि होती है, उनके स्वभावमें विशेष दृढता आती है और वे अधिक कार्यक्षम होते हैं । शिक्षा देनेमें ये चार उद्देश्य सामने रहते हैं:— १ संसारको जिन वस्तुओंकी आवश्यकता है उन वस्तुओंको विद्यार्थी तैयार कर सकें, २ विद्यालयके ग्रेज्युएटोंमें इतनी कुशलता, योग्यता और नीतिमत्ता हो कि वे पुरुषार्थके साथ सुखसे अपना उदर निर्वाह कर सकें, ३ विद्यार्थी परिश्रमकी महत्ताको भली भाँति जान जायँ और परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना सीखें और ४ उन विद्यार्थियोंमें देशसेवा करनेकी इच्छा उत्पन्न हो । इस प्रकार विद्यालय एक तरहका साँचा है जिसमेंसे कच्चे विद्यार्थी सुसंस्कृत गृहस्थ होकर बाहर निकलते हैं ।

परिश्रमकी शिक्षामें सुगमता ।

विद्यार्थियोंको परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना सिखलानेको आरंभमें जो प्रयत्न किये गये थे उनका उल्लेख ऊपर आ ही चुका है; परन्तु अब तो वहाँ परिश्रम करना परंपराकी एक रीति ही हो गई है । जो नये विद्यार्थी भरती होने आते हैं वे देखते हैं कि सैकड़ों विद्यार्थी बड़े आनन्दसे खेतों पर और कारखानोंमें शारीरिक परिश्रम कर रहे हैं और यह देखकर वे भी काममें भिड़ जाते हैं । इस प्रकार पुराने विद्यार्थियोंसे नये विद्यार्थी आप ही परिश्रमकी दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं । इसका परिणाम समाज पर भी होता है और इससे जातिकी उन्नतिमें बड़ी सहायता होती है ।

विद्यालयके विशेष कार्य ।

शिल्पशिक्षा और कृषिशिक्षाके साथ साथ व्यापारी ढंग—व्यवहारचातुर्य भी सिखलाया जाता है । विद्यालयमें शिल्पशिक्षाकी अनेक शाखायें होनेसे इस प्रकारकी शिक्षा देनेके लिए बहुत सुभीते हैं । उत्तम अध्यापक भी निर्माण किये जाते हैं । इस कामके लिए खास तौर पर छोटे बच्चोंका एक बड़ा क्लास रक्खा गया है । बाहरी लोगोंको भी इस विद्यालयके कार्य करनेका ढंग सिखलानेके लिए छुट्टियोंके दिनोंमें एक विशेष क्लास खोल दिया जाता है जिससे अनेक अध्यापक और प्रौढ विद्यार्थी लाभ उठाते हैं ।

परिणाम ।

विद्यालयकी शिक्षाका बड़ाभारी और टिकाऊ परिणाम यह हुआ है कि इस विद्यालयके ग्रेज्युएटोंकी रहनसहन, घरगिरस्तीका ढंग, उद्यमप्रियता और स्वच्छता देखकर समाजके सब प्रकारके लोग उनका अनुकरण कर बहुत सुखी और सभ्य बनते जाते हैं। इस विद्यालयके ग्रेज्युएट (स्त्रियाँ और पुरुष दोनों) उत्तर प्रान्तकी बड़ी बड़ी तनख्वाहें और आरामकी नौकरियोंको छोड़कर अपने समाजकी सेवाके लिए मामूली वेतन पर दक्षिण प्रान्तमें ही रहते हैं । इससे उनका स्वार्थ-त्याग प्रकट होता है ।

आत्मविश्वासका एक दृष्टान्त ।

जब वाशिंगटन यूरोपमें थे तब उनके पुत्र बेकर वाशिंगटनने उनके पास जो पत्र भेजा था उससे इस बातका पता लगता है कि विद्यालयके विद्यार्थियोंमें कहाँतक आत्मविश्वास उत्पन्न किया जाता है । बेकरने वाशिंगटनको लिखा था—"पूज्य पिताजी ! आप यहाँसे चलते समय मुझसे कह गये थे कि मैं दिनमें छः घंटे अपने काममें लगा रहूँ और शेषसमयमें चाहे जो करूँ; परन्तु मुझे अपना काम इतना पसन्द है कि मैं दिनभर इसी काममें लगा रहना चाहता हूँ । मैं जब दूसरे विद्यालयमें पढ़ने जाऊँगा तब वहाँका खर्च चलानेके लिए धनकी जरूरत होगी । सो उसके लिए मैं अभीसे धन इकट्ठा कर रखता हूँ । "

अपने ही पुरुषार्थसे संसारमें प्रसिद्ध होनेवाले मातापिताकी सन्तान यदि अपनी ही कमाईके भरोसे विद्या लाभ करे तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं ! क्या हम भी अपने धनी और निर्धन देशवासियोंमें ऐसा ओज और उत्साह उत्पन्न

कर सकते हैं? हमारे देशके विद्यार्थियोंको चाहिए कि वे बेकरके इस दृष्टान्तको सदैव अपने सामने रक्खें।

रचना और प्रबन्ध।

अब चलिए इस विद्यालयकी रचना और प्रबन्धको देखें। विद्यालयकी सारी मिलकियत पंचोंकी एक कमेटीके अधिकारमें है। पंच वे ही लोग हैं जो नीग्रो जातिके प्रतिनिधि माने जाते हैं और जिन्होंने विद्यालयकी सहायता करनेमें कोई बात उठा नहीं रक्खी है। इन्हीं पंचों द्वारा मिलकियतका सारा प्रबन्ध होता है। विद्यालयकी जितनी शाखायें हैं उतने ही उनके प्रधान या मुख्य अधिकारी हैं और इन प्रधानोंकी एक प्रबन्धकारिणी सभा है जिसके सप्ताहमें दो बार अधिवेशन होते हैं। इसी सभाद्वारा विद्यालयके नियमादि बनते हैं। आयव्ययका विचार करनेवाली एक अलग कमेटी है जिसमें छः सदस्य या मेम्बर रहते हैं। इसका अधिवेशन सप्ताहमें एक बार होता है और इस अधिवेशनमें साप्ताहिक खर्च मंजूर किया जाता है। इसके अतिरिक्त महीनेमें एक बार अथवा आवश्यकता पड़ने पर अनेक बार, सब शिक्षकोंकी साधारण सभा हुआ करती है। इस सभामें शिक्षक शिक्षासंबंधी अनुभवों और अभावोंकी चर्चा करते हैं। इससे शिक्षासंबंधी कार्यमें दिनोंदिन उन्नति होती जाती है। इन सबके अतिरिक्त विद्यालयके भिन्न भिन्न विभागोंकी भिन्न भिन्न सभायें भी हैं जिनके अधिवेशन सदा ही हुआ करते हैं।

वाशिंगटनकी कार्यपद्धति।

पर टस्केजी-विद्यालयकी जान अगर पूछिए तो वाशिंगटन ही हैं। इन्हें विद्यालयमें काम करना पड़ता है और विद्यालयकी सहायताके लिए बाहर घूमना भी पड़ता है। वाशिंगटन कहीं भी रहें उन्हें विद्यालयकी दैनिक रिपोर्ट मिला करती है। उनके चतुर सेक्रेटरी और अन्य कर्मचारी उनकी सहायताके लिए तत्पर रहते हैं। उनकी पत्नी भी विद्यालयके कार्यमें उनकी यथेष्ट सहायता करती हैं। विद्यालयके दोष ढूँढ़ निकालनेके लिए वाशिंगटन सदा ही बहुत उत्सुक रहते हैं। वे बड़े स्नेहके साथ विद्यार्थियोंसे बातें करते हैं और बातों ही बातोंमें विद्यालयके संबंधमें उनकी सम्मतियाँ लेकर दोष मालूम कर लेते हैं। पूर्ण और निर्दोष उन्नतिके लिए यह ढंग बहुत ही उपयोगी है। दोष मालूम हो जानेसे उन्हें दूर करनेका प्रयत्न किया

जा सकता है। यदि आँख मूँद कर काम करते गये और दोष बिलकुल देख न पड़े तो सारा काम ही बिगड़ जानेका डर रहता है। जिस विद्यालयका यह उद्देश्य है कि विद्यार्थी विद्यालाभ कर अपने समाजकी सेवा करें और संभव हुआ तो उसकी उन्नति भी करें, उस विद्यालयको समाजकी अत्यन्त आवश्यकताओंके अनुरूप अपने शिक्षाक्रममें हेरफेर करना ही पड़ेगा और इस प्रकारका हेरफेर करना ही यथार्थमें शिक्षा देना है। शिक्षाहीसे प्रपंच और परमार्थके पुरुषार्थ प्राप्त होते हैं, शिक्षाहीसे अपने कर्त्तव्याकर्त्तव्यका विचार सूझता है और शिक्षासे ही अपने समाजकी यथायोग्य सेवा करते बनती है। टस्केजी-विद्यालयके विद्यार्थी और अध्यापक दोनों ही विद्यालयको अपना समझते हैं और विद्यालयके धार्मिक तथा परमार्थिक कार्योंमें वाशिंगटनकी तनमनधनसे सहायता करते हैं। अपना सर्वस्व विद्यालयकी सेवामें अर्पण कर देनेवाले वाशिंगटनको खेल या मनोरंजनके लिए कभी समय नहीं मिलता! वाशिंगटन पहले अपने नित्य कर्मसे निपट लेते हैं और तब किसी नये काममें हाथ लगाते हैं। कामके बोझसे दबना वे नहीं जानते; कामहीको अपने काबूमें कर लेते हैं। काम यदि अपने अधीन हो जाता है तो उससे मनकी प्रसन्नता बढ़ती और आत्मिक बल प्राप्त होता है। कर्मयोगकी इस पद्धतिसे शरीरमें फुर्ती आती है, मनका उत्साह बढ़ता है और आत्मा सन्तुष्ट होता है। तब कृत्रिम ओषधियोंकी कोई आवश्यकता नहीं रहती। अन्तरात्मा ही तो कल्पतरु है; उससे क्या नहीं मिल सकता?

दूसरे सामाजिक कार्य।

टस्केजी-विद्यालयके साथ ही साथ दो संस्थायें और चलती हैं—१ नीग्रो कृषक महासभा, और २ नीग्रो राष्ट्रीय उद्यम सभा। इन दोनोंका उद्देश्य यही है कि नीग्रो जातिकी साम्पत्तिक, मानसिक और नैतिक उन्नति हो। इन दो महासभाओंकी कितनी ही शाखायें फैल गई हैं जिनसे बनिज-ब्योपार और कृषिकर्मकी बराबर उन्नति होती जा रही है। वाशिंगटनने यह समझ लिया है कि संसार उत्तम वस्तुओंकी क़दर करता है—उन वस्तुओंको पैदा करने वालोंका रूपरंग नहीं देखता। एक खेतमें साधारणतः जितना अनाज पैदा होता है उससे चौगुना अनाज पैदा करनेवाला मनुष्य अवश्य ही संसारका सम्मान भाजन होगा। उसी प्रकारसे जिसने चित्रकला या और किसी कलामें निपुणता प्राप्त कर ली है संसारमें उसकी प्रतिष्ठा हुए बिना न रहेगी। इस लिए

इस जीवनसंग्राममें यह आवश्यक है कि प्रत्येक जातिके लोग अपनी शक्तिभर समाजके काममें आनेकी चेष्टा करें। समाज तभी उनका आदर करेगा। यदि किसी पिछड़ी हुई जातिमें शिक्षाका प्रचार हो ले और उसकी नैतिक तथा भौतिक उन्नति हो जाय तो फिर उसे राजकीय अधिकार मिलना कोई बड़ी बात नहीं है।

हिन्दुओंके आक्षेप।

यहाँ तक वाशिंगटन और उनके कार्योंका वर्णन हुआ। अब यह विचार करना चाहिए कि हम लोग यहाँ अपने समाजमें वाशिंगटनके ढंगसे कोई काम कर सकते हैं या नहीं। कुछ लोग इस विषयमें यह आक्षेप करेंगे कि, "हम हिन्दुओंकी सभ्यता अत्यन्त प्राचीन है। नीग्रो लोग तो अभी अभी अज्ञानके अन्धकारसे बाहर आये हैं और अभी उन्हें तो प्रपंचकी छोटी छोटी बातें तक सीखनी हैं। हम लोगोंकी अवस्था बिलकुल भिन्न है। वाशिंगटन और उनके जैसे हैम्पटनी विचारके लोग शिल्पशिक्षाको ही सब कुछ माने बैठे हैं; परन्तु जिस जातिमें प्रचंड बुद्धिसम्पन्न पुरुष उत्पन्न हो सकते हैं उस जातिके लिए इस शिक्षासे काम न चलेगा। यहाँ तो मानसिक शिक्षाकी ही प्रधानता होनी चाहिए।"

आक्षेपोंका विचार।

यह सच है कि किसी समय हमारी जाति बहुत ही उन्नत थी, परन्तु अब हमारी उन्नति रुकी हुई है। यदि हम लोग फिर ऊपर उठना चाहें तो हमें पहले उन्नतिके मूलतत्त्वोंका विचार करना चाहिए। यदि यह प्रमाणित हो जाय कि उन्हीं तत्त्वों पर नीग्रो जाति अपनी उन्नति कर रही है तो क्या कारण है कि हम लोग भी उसी मार्ग पर न चलें? सत्यको स्वीकार करना सत्यान्वेषियोंका धर्म है। पहले हमें इस बातका विचार करना चाहिए कि नीग्रो लोग क्या कर रहे हैं। वे लोग इस समय यह चेष्टा कर रहे हैं कि नीग्रो जातिमें पुरुषार्थी स्त्रीपुरुष उत्पन्न हों, उनका प्रत्येक कार्य धर्म और ईश्वरभावसे प्रेरित हो, उनमें उच्च प्रकारकी नीतिमत्ता हो, उनका आचरण अत्यन्त शुद्ध हो, वे पुरुषार्थके साथ अपना जीवन निर्वाह करें, आत्मविश्वासके साथ अपने समाजकी सेवा करें, अपने मातापिताओं तथा सरकारके आज्ञापालक हों, उनमें चातुर्य, दक्षता, आत्मसंयम, सहिष्णुता आदि गुणोंका उत्तम विकास हो और वे परिश्रमके लिए ही परिश्रम करना सीखें। भला बतलाइए तो कि ये गुण किस समाजके लिए

आवश्यक नहीं हैं ? इन गुणोंका समुदाय ही सनातन सत्य है और इस सत्यका सर्वत्र सम्मान है। इन गुणोंकी प्राप्तिके लिए वाशिंगटनने निसर्ग (प्रकृति) का ही अनुकरण किया है। उन्होंने विद्यालय क्या स्थापन किया है अपने अभावोंकी स्वयं पूर्ति करनेवाला एक समाज ही खड़ा कर दिया है। आरंभमें उन्हें बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं; पर अब सब काम घड़ीके काँटोंकी तरह बराबर हो रहे हैं। इस विद्यालयने समाजकी शकल बदल दी है। यदि भारतवर्षके किसी विद्यालयका कोई विद्यार्थी जंगलमें ले जाकर छोड़ दिया जाय तो वह भूख प्यासके मारे मर जाय; परन्तु उसी स्थान पर टस्केजी या हेम्पटनका विद्यार्थी छोड़ दिया जाय तो वह वहाँ राबिन्सन क्रूसोकी तरह एक नई बस्ती कायम कर देगा! हमारे देशमें सारा दारोमदार मानसिक शिक्षा पर ही रहता है; परन्तु हाथपैर और नाककान ही अगर ढीले पड़ गये हों तो मन बेचारा दौड़ लगाकर क्या करेगा? शरीरके सारे ही अंगोंका विकास होना चाहिए। इतने दिनों बाद अब कहीं यहाँ वालोंको इस सिद्धान्तका पता लगा है और अब किसी किसी विद्यालयमें हाथकाम (Manual Training) की शिक्षा आरंभ की गई है। पर यथार्थ शिक्षा मकानमें नहीं बल्कि मैदानहीमें मिलती है और इसी लिए खेतों पर काम करनेवाले और इमारतें बनानेवाले बालक हाथकाम या शिल्पकी कक्षाओंमें शिक्षा पाये हुए विद्यार्थियोंसे कहीं बढ़कर पुरुषार्थी होते हैं। भारतवर्षकी आबादीके मुकाबलेमें हमारे बुद्धिमान् या लिखे पढ़े लोगोंकी संख्या बहुत ही थोड़ी है। किसानों और कारीगरोंकी संख्या ही विशेष है। सैकड़ा ८० आदमी तो कोरे किसान ही हैं। इनकी शिक्षाका क्या प्रबन्ध किया गया है? जिन्हें हम लिखे पढ़े या बुद्धिमान कहते हैं उनकी ही क्या दशा है? उन्होंने तो क्लर्कीकी ही शिक्षा पाई है। इस शिक्षासे क्या सारी जाति उन्नत हो जायगी? हम तो यह कहते हैं कि हैम्पटन अथवा टस्केजीकेसे विद्यालय इस देशमें स्थान स्थान पर स्थापित हो जायँ और उनमें उच्च प्रकारकी मानसिक शिक्षाका भी प्रबन्ध हो। देहातोंमें रहकर देहातियोंकी दशा सुधारनेवाले उत्साही और स्वार्थत्यागी ग्रेज्युएट इस देशमें कहाँ है? हमने माना कि ऐसे उत्साही और स्वार्थत्यागी ग्रेज्युएट मिल जायँगे, तो भी यह पूछना है कि क्या इन ग्रेज्युएटोंमें इतनी योग्यता है कि वे किसानोंकी दशा सुधार सकें? हम लोगोंको तो देहातोंमें और शहरोंके कारीगरोंमें ही काम करना

है। इन लोगोंके लड़कोंको हमारे ग्रेज्युएट नहीं सिखला सकते। यही तो मुश्किल है। उच्चशिक्षाके विषयमें यहाँ विचार करनेकी अवश्यकता नहीं; शिक्षाविभागके अधिकारी उसमें उचित हेरफेर कर ही रहे हैं; परन्तु आरंभिक शिक्षामें—हाई स्कूलोंमें कुछ भी आवश्यक हेरफेर होता नहीं दीखता। समाजकी आवश्यकता ही तो शिक्षाकी कसौटी है। आजकल स्कूलोंमें जो शिक्षा दी जाती है उससे हमारे समाजका कुछ भी काम नहीं निकलता। आरंभिक शिक्षाक्रममें एक भी ऐसी शिक्षा नहीं दी जाती जिससे विद्यार्थी अपने बल पर खड़ा हो या अपने समाजकी कुछ सेवा कर सके। यदि आप लोगोंको उत्तम अध्यापकों, उपदेशकों, शिल्पियों और कृषकोंकी आवश्यकता है तो उनके लिए उनके कामोंमें निपुण करनेवाले विद्यालय स्थापित कीजिए। यहाँ हैम्पटन और टस्केजी विद्यालयकी कार्यपद्धति शुरू कर देनेकी कितनी आवश्यकता है सो सब पाठकोंको मालूम ही होगया होगा। भारतसन्तानोंको शिक्षादान देनेकी जिन स्त्री पुरुषों पर जिम्मेदारी है उन्हें हैम्पटन और टस्केजी-विद्यालयकी कार्यपद्धति और उनके सिद्धान्तोंको, यहाँकी अवश्यकताओंके अनुरूप उचित हेरफेरके साथ, सदा अपने सामने रखना चाहिए।

तीव्र बुद्धिसम्पन्न पुरुषोंकी संख्या बहुत ही थोड़ी हुआ करती है। ऐसे पुरुषोंको उनकी उन्नतिके उपाय भी नहीं बतलाने पड़ते। हर्बर्ट स्पेन्सरने विश्वविद्यालयमें जाकर कब पढ़ा था? कोई यह नहीं कहता कि विद्यार्थियोंको उच्च शिक्षा न दी जानी चाहिए। जो उच्च शिक्षा पानेके अधिकारी हों, वे अवश्य उद्योग करें—उन्हें कोई नहीं रोकता; परन्तु आजकलकी तरह ऐरे गैरे लोग भी उसमें दखल न दिया करें तो अच्छा हो।

हमें क्या करना चाहिए?

क्या हम लोग भी अपने देशमें हैम्पटन या टस्केजीके समान विद्यालय स्थापित नहीं कर सकते? आरंभमें कठिनाइयाँ उठानी पड़ेंगी इसमें सन्देह नहीं। स्वयं वाशिंगटन और उनके गुरु जनरल आर्मस्ट्रांगको भी बड़ी बड़ी कठिनाइयोंसे सामना करना पड़ा था। परन्तु दृढ़निश्चयी मनुष्योंके मार्गसे पर्वतप्राय कठिनाइयाँ भी हट जाती हैं! भारतवर्षमें दयालु अँगरेज़ सरकारकी छत्रछायामें शिक्षाप्रचारके लिए हम लोगोंको अनेक सुवि-

धायें मिल सकती हैं । स्वयं सरकार भी विद्यादानका बहुत कुछ प्रयत्न कर रही है । यदि हमारे विद्वान् भाई इस कार्यमें योग दें तो शिक्षा-प्रचारके कार्यमें बड़ी भारी सहायता होगी । इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस कार्यमें उन्हें अपना जीवन अर्पण कर देना होगा । टस्केजी-विद्यालयके समान ही काम आरंभ किया जाय और उसके साथ शिल्पसंबंधी और मानसिक शिक्षा भी देनेका प्रबन्ध हो । काम धीरे धीरे करना ही अच्छा होता है । हाँ, एक साथ ही बहुत बड़ी रकम जमा हो गई और काम करनेवाले भी मिल गये तो बात दूसरी है । खेतीसे आरंभ हो और खेतीके साथ बढ़ई और लुहारका भी काम सिखलाया जाय । कारखाना एकदम बढ़ा देना ठीक नहीं । पहले सीनापिरोना और कातना बुनना आदि छोटे छोटे काम हाथमें लिये जायँ और फिर ईंटोंका या और कोई ऐसा ही कारखाना शुरू कर दिया जाय । कामका पूरा ढंग एकाएक नहीं बँध सकता; क्योंकि जहाँ जैसी परिस्थिति हो वहाँ वैसा ढंग स्वीकार करना पड़ेगा । परन्तु खेतीका काम सभी जगह शुरू किया जा सकता है । पढ़ाई और भोजनके खर्चका प्रबन्ध हैम्पटनकासा होना चाहिए । विद्यालयका खर्च चलानेके लिए पहले तो अपने आसपास ही और फिर दूरदूरतक घूम कर चन्दा उगाहनेका काम करना चाहिए । सबसे पहले योग्य अध्यापक मिलनेकी कठिनाई है, परन्तु ढूँढ़ने पर ऐसे अध्यापक मिल जायँगे । विद्यालयके संचालक यदि स्वयं विद्यालयके भिन्न भिन्न विभागोंको न चला सकें तो कोई परवा नहीं; पर उन्हें कमसे कम चलानेका ढंग अवश्य मालूम हो ।

उक्त प्रयत्नका परिणाम ।

समाजपर इस शिक्षाका बहुत ही अच्छा परिणाम होगा । इस विद्यालयसे जो विद्यार्थी बाहर निकलेंगे वे आजकलकी तरह रट्टू तोते न होंगे; उन्हें इस बातका ज्ञान रहेगा कि समाजको किस प्रकार मिलाना होता है और कैसे उसका साथ देना होता है । तात्पर्य, ऐसे विद्यालयसे निकले हुए विद्यार्थी समाजके वास्तविक नेता होंगे ।

स्त्रीशिक्षा ।

स्त्रीशिक्षाके विषयमें हम लोगोंकी विचारपद्धति उनसे भिन्न होगी; क्योंकि हमारी

परिस्थिति उनकी परिस्थितिसे भिन्न है। स्त्रियोंके लिए हम लोगोंको अलग पाठ-शालायें खोलनी होंगी और उनमें इस प्रकारकी शिक्षा देनी होगी कि हमारी बहनें आदर्शमातायें बन सकें। हेम्पटन और टस्केजीके समान उन्हें भी गृहव्यवस्था, पाक-शास्त्र, शिशुपालन आदिकी शिक्षा दी जानी चाहिए। यहाँ पुरुषोंके बराबर स्त्रियोंको भी शिल्पशिक्षा देनेकी आवश्यकता नहीं। जो स्त्रियाँ आजन्म कुमारिका व्रत धारण करें अथवा जो विधवा हों उन्हें कुछ शिल्पशिक्षा अवश्य मिलनी चाहिए; और इस समयकी आवश्यकतासे तो यही उचित मालूम होता है कि उन्हें अध्या-पिका और दाईका कार्य विशेषतासे सिखलाया जाय।

धार्मिक शिक्षण।

हिन्दू बालक बालिकाओंको धार्मिक शिक्षाकी कितनी आवश्यकता है सो किसीसे छिपा नहीं है। परन्तु धार्मिक शिक्षा केवल बातूनी न हो, बल्कि उससे आचरण शुद्ध होना चाहिए। धार्मिक शिक्षासे तो सब प्रकारकी उन्नति होनी चाहिए। बाहरी आडंबर या विधिविशेषकी प्रधानता बिलकुल न रहे। विद्यालयके संचालक जो आचार बतला देंगे उनके अनुसार विद्यालयमें सब किसीका आचरण होना चाहिए; क्योंकि सभी आचार एक ही तत्त्वकी प्राप्ति कराते हैं। असल बात तो यह है कि स्वयं अध्यापकोंको धर्मके वास्तविक धर्मके अनुकूल अपना आचरण बनाना चाहिए। दूसरे संप्रदायोंके या मतोंके विषयमें सहिष्णुता होनी चाहिए। विद्यालयमें सभी मत और पन्थके लोग होंगे; इसलिए औपचारिक बातोंमें सबको अपने अपने सम्प्रदायके आचार माननेकी स्वतंत्रता रहे; परन्तु जिन मुख्य तत्त्वोंके विषयमें सब धर्मसंप्रदायोंकी एक राय है उन तत्त्वोंके आचरणमें सबके लिए एक ही नियम होना चाहिए। ऐहिक शिक्षामें जो लोग तैयार हुए हैं उनके लिए यह बात जितनी कठिन मालूम होती है वास्तवमें उतनी नहीं है। जो कुछ कठिनता इसमें दिखाई देती है वह कार्य आरंभ होते ही नष्ट हो जायगी।

अन्तिम प्रार्थना।

शिक्षादानसे देशसेवा करनेका प्रण करनेवालोंके मनमें ऊपरके तत्त्व और सिद्धान्त जितने ही बैठ जायँगे उतना ही डाक्टर बुकर टी. वाशिंगटनके चरित और कार्यावलीका पाठकोंको परिचय करा देनेका प्रयत्न सफल होगा।

हमारे देशके सर्व साधारण जनोंमें अज्ञान फैल रहा है और उन्हें शिक्षित करनेकी बड़ी आवश्यकता है। ब्रह्मचारियों और सन्यासियोंसे हमारी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि आप अपनी मुक्तिका विचार तो करते ही हैं; पर अब अपने अनजान भाइयोंको भी ऊपर उठानेका विचार करें। क्या हमारे त्यागी ब्रह्मचारी और सन्यासी प्राचीन ऋषिमुनियोंकी तरह इस प्रश्नका विचार करेंगे ? क्या फिर एक बार इस देशमें शिक्षा और ज्ञानका सर्वत्र प्रचार होगा ? अब हम लोगोंके सामने यही प्रश्न है कि हम लोग अपने देशको पहलेकी तरह अथवा उससे अधिक वैभवशाली करेंगे, या दिन दिन अवनतिके पंकमें ही धँसते जायँगे ? इसमें सन्देह नहीं कि प्राचीन गौरव-गरिमाकी बड़ी बड़ी बातें बहुत सुहावनी होती हैं; पर उन बातोंको सुनकर यदि हममें समाजकी उन्नतिके लिए फिर उद्योग करनेकी प्रेरणा नहीं हो तो उनका होना न होना बराबर है। भारतवर्षमें आध्यात्मिक स्वार्थत्यागकी कमी नहीं है; पर वही स्वार्थत्याग जब कर्मयोगके मार्गसे प्रवाहित होने लग जायगा तब भारतके भविष्यके विषयमें किसीको भी निराश होनेका कारण नहीं। काम शुरू हो गया है। स्वतंत्र विश्वविद्यालयका प्रयत्न हो रहा है; उसके बड़े बड़े उद्देश्य हैं। यह ठीक है; परन्तु हम लोगोंको भी छोटे छोटे कामोंसे अपना प्रयत्न आरंभ कर देना चाहिए। स्थान स्थान पर ज्ञानदीप प्रज्वालित कर लोगोंको इस योग्य बना देना चाहिए कि वे भावी विश्वविद्यालयके ज्ञानतेजसे तेजस्वी हों। देहातोंमें और छोटे छोटे कसबोंमें शिक्षादानके प्रयत्न आरंभ कर देनेका यही समय है।

अन्तमें उस सच्चिदानन्द परमात्मासे प्रार्थना है कि अज्ञानदास्यसे अपनी सन्तानोंको मुक्त करनेके प्रयत्नमें भारतवासी सफलमनोरथ हों, और वाशिंगटन आर्मस्ट्रांग जैसे नररत्न तथा वाशिंगटनकी माता, उनकी तीनों सहधर्मिणियाँ, मिस मेरी मैकी, मिसेस रफनर जैसे रमणीरत्न इस रत्नगर्भा भारतवसुन्धरा पर भी अवतीर्ण हों।

उपोद्घात ।

गुलामीका संक्षिप्त परिचय ।

* " If slavery is not wrong, nothing is wrong ! "

—*Abraham Lincon.*

सत्रहवीं शताब्दिके आरम्भमें यूरोपियन लोग यूरोपके भिन्न भिन्न भागोंसे अमेरिकामें आकर बसने लगे। उस समय अमेरिका बिलकुल जंगली प्रदेश था, इस लिए जंगलोंको साफ़ करने तथा अन्य कामोंके लिए मज़दूरोंकी बड़ी आवश्यकता प्रतीत होने लगी। अमेरिकामें बहुतसी ज़मीन पाकर, यूरोपसे आये हुए लोग, वहाँके ज़मींदार बन गये; पर मज़दूरोंके बिना उनका काम रुक गया। इस मौक़े पर पोर्तुगीजोंने अपना हाथ गरम करनेके लिए आफ्रिकाके नीग्रो या हबशियोंको जहाज़ों पर लाद लाद करके लाना और उन्हें अमेरिकामें बेचना आरंभ किया। आगे चलकर यह व्यापार धीरे धीरे अँगरेज़ोंके हाथ आ गया। हरसाल हज़ारों निरपराध मनुष्य भेड़-बकरियोंकी तरह बिकने लगे! नई दुनियामें या अमेरिकामें भावी विपत्तिका बीज इसी समय बोया गया।

सन् १७६५ के लगभग अँगरेज़ोंसे कुछ करोंके मामलेमें अमेरिकन औपनिवेशिकोंका मन-मोटाव हो गया और आगे चलकर यह झगड़ा इतना बढ़ा कि दोनोंमें भयंकर युद्ध छिड़नेके लक्षण दिखाई देने लगे। एडमंड बर्क और लार्ड चैथम (विलीयम पिट) ने बहुत कोशिश की कि युद्ध न हो; पर कोई नतीजा न हुआ और अन्तमें युद्ध छिड़ ही गया। आठ वर्ष 'तू तू, मैं मैं' में बीते और आख़िर सन् १७७५ में

* अगर गुलामी पाप नहीं है तो पाप फिर कुछ है ही नहीं।

—अब्राहम लिंकन।

युद्धका 'मारू बाजा' भी बज उठा। एक ही वर्ष बाद अर्थात् १७७६ में फिलाडेलफियाकी कांग्रेसने स्वतंत्रताका घोषणापत्र (The Declaration of iudependence) प्रकाशित कर दिया। इसके पश्चात् सात आठ वर्ष तक दोनोंमें घोर युद्ध हुआ और सन् १७८३ में वरसोलिसकी सन्धिके अनुसार अमेरिकाके तेरह राज्य स्वाधीन हो गये।

इस प्रकार अनेक क्लेशोंको सहकर, धन और रक्तको न्योछावर कर अमेरिकनोंने यह साबित कर दिया कि 'प्रत्येक मनुष्य ईश्वरके न्यायसे स्वतंत्र है।' इससे संसारमें बड़ा भारी आन्दोलन मच गया। परन्तु एक बातमें अमेरिकनोंने बड़ी भूल की। प्रत्येक मनुष्यकी स्वतंत्रताका सिद्धान्त वे केवल गोरोंके लिए ही मानने लगे! नीग्रो या हबशियोंको वे मनुष्य नहीं समझते थे और उन्हें स्वतंत्रता देनेसे भी इनकार करते थे! प्रायः सभी गोरे अमेरिकन नीग्रो लोगोंको अपनी सम्पत्ति समझते थे और काम भी उनसे इसी समझके अनुसार लेते थे! सुनते हैं कि अमेरिकाके पहले प्रेसिडेंट जार्ज वाशिंगटनके पास भी कुछ गुलाम थे!

अँगरेज़ोंको धीरे धीरे गुलामीमें बड़ा अन्याय दीखने लगा और वे इस अन्यायसे मुक्त होनेकी चेष्टा करने लगे। गुलामीका व्यापार रानी एलिज़ाबेथके शासनकालमें आरंभ हुआ था। तीसरे जार्जके शासनकालके आरंभमें वह बहुत ही बढ़ गया था। कहते हैं कि उस समय अँगरेज़ी जहाज़ोंके द्वारा हरसाल पचास पचास हज़ार हबशी गुलाम बनाकर लाये जाते थे! धीरे धीरे लोगोंके कानोंतक ये बातें पहुँचने लगीं कि ये हबशी आफ्रिकामें किस तरह पकड़े जाते हैं, जहाज़ोंमें किसतरह भेड़-बकरियोंकी नाईं भरे जाते हैं, उन पर कैसे कैसे अत्याचार किये जाते हैं और एटलांटिक-महासागरसे वेस्ट इंडीज़ और अमेरिकामें लाये जाकर वे किस तरह बेचे जाते हैं। इन बातोंका सुनकर लोगोंके रोंगटे खड़े हो जाते थे।

गुलामी बन्द करनेके लिए विलियम विलबर फोर्स नामक एक सज्जनने बड़ा उद्योग किया। इस संबंधमें उन्होंने सन् १७८८ में

पार्लियामेंटके सामने एक सूचना भी उपस्थित की; पर गुलामोंका व्यापार करनेवालोंके विरोधसे वह सूचना स्वीकृत न हुई। किन्तु इससे विलबर फोर्स निराश न हुए; वे अपने उद्योगमें बराबर लगे रहे। सन् १८०६ में मि० फाक्सके प्रस्ताव करने पर गुलामोंका व्यापार तो बन्द हो गया; पर उस समय अँगरेज़ी राज्यमें आठ लाख गुलाम बाक़ी रह गये। अन्तमें सन् १८३३ में पार्लियामेंटने एक नियम बना कर सारे गुलामोंको स्वतंत्र कर दिया और इस तरह मि० विलबर फोर्सके प्रयत्नोंकी सफलता हुई। इस काममें उन्होंने लगातार ४५ वर्ष परिश्रम किया और अन्तमें गुलामोंकी स्वाधीनताका नियम बन जाने पर, अर्थात् अपने जीवनका महत्कार्य कर चुकने पर, चौथे ही रोज़—७५ वर्षकी अवस्थामें—मि० विलबरफोर्स परलोक सिधार गये! अँगरेज़ी राज्यमें गुलामी न रहने देनेका प्रायः सारा यश इन्हींको है।

चलिए, अब अमेरिकाके गुलामोंका इतिहास देखें। सबसे पहले टामस पेन नामक एक उदारचरित महात्माने ८ मार्च सन् १७७५ के दिन गुलामीके विरुद्ध अपना एक लेख प्रकाशित किया। इसके महीने, सवा महीने बाद, ता० १२ एप्रिल सन् १७७५ के दिन गुलामी मेटनेका उद्योग करनेवाली पहली सभा स्थापित हुई। इसके बाद टामस पेन तथा अन्य कई सज्जनोंके उद्योगसे ता० २ नवंबर सन् १७७९ के रोज़ पेन्सिलवानिया राज्यमें—जहाँ कि छः हज़ार गुलाम थे—गुलामीको नाजायज़ बतलानेवाला क़ायदा पास हो गया। इसके बाद सन् १८८३ में, अमेरिकाके स्वाधीन हो जाने पर जार्ज वाशिंगटन, टामस जेफरसन और अलेकजांडर हैमिल्टन आदि सज्जनोंने अमेरिकाकी जो स्वतंत्र शासन-प्रणाली निश्चित की, उसकी मुख्य बातें ये थीं:—सब मनुष्य समान और स्वतंत्र हैं, सबके समान अधिकार हैं, कोई किसीका अधिकार नहीं छीन सकता। परंतु जबतक अमेरिकामें गुलामीकी प्रथा बनी रही तबतक इन सिद्धान्तोंका पूर्णरूपसे पालन नहीं हुआ।

*उत्तरके राज्योंने तो गुलामीको अन्याय समझकर गुलामोंको स्वतंत्र कर दिया; परन्तु दक्षिणके राज्योंने अपने गुलामोंको नहीं छोड़ा। इतना ही नहीं वे यह भी कहने लगे कि यदि हम लोगोंको गुलाम रखनेका अधिकार न दिया जायगा तो हम लोग यूनियन राज्यमें ही सम्मिलत न होंगे। समय बड़ा बिकट था; देशमें एकता बनाये रखनेकी बड़ी आवश्यकता थी; इस लिए दाक्षिणी राज्यों पर गुलाम छोड़ देनेके लिए, बहुत ज़ोर नहीं दिया जा सकता था। उत्तरके राज्य यह सोचकर चुप रह गये कि कुछ समय बाद दक्षिणी राज्य आप ही अपना अन्याय समझ कर गुलामोंको छोड़ देंगे। उत्तर प्रान्तके राज्योंमें शीत अधिक पड़ता था; इस लिए उन्हें खेती वग़ैरहके कामोंके लिए गुलामोंसे भी अधिक योग्य मज़दूरोंकी आवश्यकता थी और इसी लिए गुलामोंकी स्वाधीनतासे उनकी कोई हानि न हुई। परन्तु दक्षिणी राज्योंकी दशा इससे बिलकुल विपरीत थी। वहाँ गरमी अधिक पड़ती थी और इस लिए बिना गुलामोंकी मददके खेतीका काम अच्छा नहीं हो सकता था। खेतों पर दोपहरकी झलाती हुई धूपमें एक ओवर-सियरके हाथ नीचे सैकड़ों नीग्रो गुलाम लगातार पसीना बहाया करते थे और गोरे मालिक अपनी हवेलियोंमें आरामसे पड़े रहते थे। यही कारण था कि दक्षिणी लोग गुलामीकी प्रथा बन्द करनेके विरुद्ध थे। सन् १८०५ में डोमिंगो प्रदेशके गुलामोंको बहुत ही कष्ट दिये गये। उस समय टासस पेनने प्रेसिडेंट जेफरसनके पास कई प्रार्थनापत्र और चिट्ठियाँ भेजीं; पर उससे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। सन् १८०९ में टामस पेनका देहान्त हो गया। कहते हैं कि उनकी उत्तरक्रियाके समय अपनी जातिकी ओरसे कृतज्ञता प्रकट करनेके लिए, दो नीग्रो उपास्थित हुए थे।

---

* अमेरिकाके नकशे पर इलिनाइस राज्यके नीचे एक आड़ी रेखा खींचने पर संयुक्त राज्यके जो दो टुकड़े हो जाते हैं उनमेंसे ऊपरके हिस्सेमें गुलामी नहीं थी और नीचेके हिस्सेमें अर्थात् दक्षिणमें थी। उत्तरके लोग गुलामीके विरुद्ध थे और दक्षिणके लोग पक्षमें थे।

उपोद्घात।

ईश्वरके राज्यमें सत्य कभी दबा नहीं रह सकता; अन्तमें उसकी जय होती ही है ! गुलामीको मेट देनेकी चेष्टा करनेवाले टामस पेनका तो देहान्त हो गया, पर उसी वर्ष गुलामीको सदाके लिए ज़मीनके अन्दर गाड़ देनेवाले महात्मा अब्राहम लिंकनका जन्म हुआ। एक बड़े ही दरिद्र घरमें इनका जन्म हुआ था। जब अब्राहम कुछ बड़े हुए तब उनकी योग्यता, सावधानता और पुरुषार्थ देखकर ओफट नामके एक व्यापारीने उन्हें अपना सहकारी बनाकर स्प्रिंगफील्डसे न्यूआरलीन्समें अपनी दूकान पर बुलवा लिया। न्यूआरलीन्स पहुँच कर अब्राहमने गुलामीका भयंकर दृश्य देखा। वहाँ गुलामोंका एक बड़ा भारी बाज़ार लगा करता था। अब्राहमने वहीं पहले पहल अपनी आँखों देखा कि झुंडके झुंड गुलाम बेड़ियाँ पहनाकर एक कतारमें खड़े किये जाते हैं और कोड़ोंकी मार मारकर उनकी पीठसे रक्तके फव्वारे उड़ाये जाते हैं ! और लोगोंको तो यह दृश्य देखनेकी आदत पड़ गई थी, इस लिए उन पर कुछ असर न होता था; पर अब्राहमके हृदयमें इससे बड़ी भारी चोट लगी। उस समय या उसके बाद भी मुँहसे एक शब्द भी उन्होंने इस विषयका नहीं निकाला; पर वे मन ही मन चिन्ता करते रहे। उस समय उनका अन्तःकरण पिघल गया और उनकी छातीमें गुलामीका काँटा चुभ गया जो गुलामीका सत्यानाश होने तक वहाँसे न निकला। गुलामी मेट देनेका उन्होंने संकल्प किया और ईश्वरकी कृपासे वह संकल्प पूरा भी हुआ !

सन् १८३० के लगभग विलियम लायड गैरिसन नामक एक सुप्रसिद्ध सज्जनने सेंटलुई नगरसे ‘स्वातंत्र्यदाता (Liberator)’ नामका एक समाचारपत्र निकलना आरंभ किया। उसका उद्देश्य गुलामीके अन्यायोंको सर्वसाधारण पर प्रकट करना था। परन्तु एक दिन कुछ गुंडोंने उसके आफिसमें घुसकर गैरिसन तथा कुछ नौकरों पर आक्रमण किया और उनमेंसे कुछको तो मार ही डाला !

इस प्रकारकी, बल्कि, इससे भी अधिक भयंकर घटनायें मिसेस एच. बी. स्टो नामकी एक विदुषीने देखीं और सुनीं। उनका हृदय बहुत दयालु और कोमल था। गुलामों पर जो अत्याचार होते थे उन्हें वे सह न सकती थीं; परन्तु वे बहुत दिनों तक यह सोच कर चुप रहीं कि ज्यों ज्यों लोगोंमें सुधार और ज्ञानका प्रचार होगा त्यों त्यों यह अन्याय कम होता जायगा; और अन्तमें बिलकुल मिट जायगा। किन्तु जब सन् १८५० में, भागे हुए गुलामोंको गिरफ्तार करके ले आनेका कानून बनानेकी चेष्टा होने लगी, धर्मकी ध्वजा उड़ानेवाले पादरी लोग भी लोगोंको उपदेश देने लगे कि मालिकके अत्याचारोंसे दुखी होकर भागे हुए गुलामोंको पकड़वा देना धर्म है, और उत्तरी राज्योंके बड़े बड़े दयालु और प्रतिष्ठित लोग भी गुलामोंको पकड़वा देनेके बारेमें धर्मशास्त्रोंके वचन संग्रह करने लगे, तब उस मनस्विनी महिलाको बहुत ही आश्चर्य और दुःख हुआ। अब उनसे चुप न रहा गया। उन्होंने गुलामीका असल रूप प्रकट करनेके लिए अपनी देखी और सुनी हुई बातोंके आधार पर 'टाम चाचाकी झोपड़ी (Uncle Tom's cabin)' नामक एक बहुत ही सुन्दर ग्रन्थ लिखा। गुलामोंको दिनभर खेतों पर किस प्रकार जी-तोड़ परिश्रम करना पड़ता था, ज़रा सी भूल होने पर भी ओवरसियर लोग कैसे निष्ठुरताके साथ चाबुकोंसे मार कर उनसे काम लेते थे, यदि वह ओवरसियर नीग्रो ही हुआ तो वह भी 'जातका बैरी जात'के न्यायसे अपने भाइयोंको कितना दुःख देता था, रातको भरपेट भोजन [illegible] किस प्रकार एक छोटीसी झोपड़ीमें गुलाम लोग ठूँस दिये जाते, पति-पत्नी, भाई-बहन और मा-बेटेको धनके लालचसे जुदा मालिकोंको हाथ बेचकर उनकी कैसी दुर्दशा की जाती थी, स्त्रियोंको नानाप्रकारके कष्ट देकर किस प्रकार उनका सतीत्व नष्ट जाता था, असह्य दुःखसे दुखी होकर भागे हुए गुलामोंके पीछे लालचसे किस प्रकार शिकारी कुत्ते और बदमाश लोग छोड़े जाते थे, हाथ पैर जंजीरोंसे बाँधकर बाज़ारमें बेचनेके लिए ले जाते समय

उन्हें किस बेरहमीसे मारा जाता था; और इन सब अन्यायोंका, पादरी लोग बाइबलके आधारसे कैसे समर्थन करते थे, इत्यादि हृदयविदारक शरीरके रोंगटे खड़े करनेवाले और अन्तःकरणको पिघलादेनेवाले दृश्योंका सत्य और यथार्थ वर्णन इस ग्रन्थमें किया गया है। इस ग्रन्थने हजारों अमेरिकन लोगोंके पाषाण-हृदयोंमें दयाका सोता बहा दिया और गुलामीका विरोध चारों ओर फैला दिया। गुलामीके अन्यायों और उसके असली रूपको जो लोग देखना चाहें वे इस ग्रन्थको अवश्य पढ़ें।

इस आन्दोलनका यह परिणाम हुआ कि देशमें दो प्रबल दल तैयार हो गये। एक दलका कहना था कि गुलामोंको छोड़ देना चाहिए और दूसरा दल कहता था कि उन्हें स्वाधीन कर देना ठीक नहीं, वे वर्तमान दशामें ही सुखी हैं। ये दोनों दल आपसमें बहुत दिनों तक झगड़ते रहे। सन् १८५६ के बाद अमेरिकाकी दशा और भी नाजुक हो चली। उस समय देश पर आनेवाली विपद्को दूर करनेमें समर्थ एक महापुरुष प्रेसिडेंट चुना गया। ये वे ही अब्राहम लिंकन थे जिनका उल्लेख पहले किया जा चुका है।

अमेरिकन लोगोंको अपने पूर्वसंचित पापोंको धो डालनेकी बड़ी आवश्यकता थी। सन् १८६० में गुलामोंको स्वतंत्रता देनेके लिए तथा अन्य कारणोंसे दक्षिण और उत्तरके राज्योंमें युद्ध (Civil war) छिड़ गया जो चार पाँच वर्षों तक जारी रहा। महात्मा लिंकनने इस बातकी प्राणपणसे चेष्टा की कि बिना युद्ध किये ही यह झगड़ा निपट [illegible] और युद्धसे अमेरिकाके दो टुकड़े न हों; परन्तु बिना युद्धके झ[illegible]ड़ा निपटनेकी कोई सूरत ही न दिखाई दी! तब सन् १८६१ में प्रेसि-[illegible] लिंकनने युद्धके लिए ५ लाख स्वयंसैनिकोंकी सेना चाही।* दक्षिणके [illegible]यियोंने बलवेका झंडा खड़ा कर दिया। सन् १८६२ के अप्रेल मासमें

---

* अमेरिकामें स्थायी सेना (Standing army) नहीं रक्खी जाती। [illegible] पर जब कोई विपद् आती है तब प्रेसिडेंट सर्व साधारणसे स्वयंसैनिक माँगते हैं और उस समय जो लड़नेमें समर्थ होते हैं वे देशके झंडेके नीचे आ खड़े होते हैं।

गुलामी बन्द करनेका क़ायदा बना दिया गया। आरंभमें बलवाइयोंने एक दो लड़ाईयाँ जीतीं और इससे उत्साहित होकर वे राजधानी वाशिंगटन पर चढ़ जानेका विचार करने लगे। तब प्रेसिडेंट लिंकनने और भी सैन्य संग्रह करके विद्रोहियोंको दबानेका प्रयत्न किया। युलिसीस एस. ग्रेंट नामक एक चतुर सेनापतिके मिलने पर युद्धका रंग पलटा और बलवाइयोंका बल घटने लगा। निदान सितंबर सन् १८६२ में प्रेसिडेंट लिंकनने घोषित कर दिया कि, "आगामी वर्षप्रतिपदासे (१ जनवरी १८६३ से) गुलामी सदाके लिए मिट जायगी।" उसी वर्ष दिसंबरकी ३ री तारीखको उन्होंने यह भी घोषित किया कि "विपक्षके जो लोग हथियार रख देंगे और कानूनके पाबन्द होकर देशकी रक्षा करनेका वचन देंगे उनके अपराध क्षमा किये जायँगे।" युद्ध हो रहा था, तो भी १८६३ की १ ली जनवरीको दास्यविमोचनका घोषणापत्र प्रकाशित किया गया। इस समय बलवाइयोंका ज़ोर घट गया था, तो भी लड़ाई ज़ारी थी। इसी समय प्रेसिडेंट लिंकनका शासनकाल पूरा हो गया। परन्तु सन् १८६५ के मार्च महीनेमें वे फिर प्रेसिडेंट चुन लिये गये। ९ वीं अप्रेलको बलवाइयोंके सेनापति जनरल लीने प्रेसिडेंट लिंकनकी शरण ली और बलवेका अन्त हो गया। युद्धमें दोनों दलके लाखों आदमी काम आये, और करोड़ों रुपयोंकी आहुति हो गई, तब कहीं गुलामीका अन्त हुआ! इसतरह कोई तीस चालीस लाख मनुष्योंको स्वतंत्रता मिली। सब लोग महात्मा लिंकनका यश गाने लगे। स्वाधीन हुए निग्रो लोग तो उन्हें साक्षात् ईश्वर ही मानने लगे!

इस तरह देशका संकट निवारण करके और अनेक महत्त्वपूर्ण कार्योंका सम्पादन करके प्रेसिडेंट लिंकन जिस समय दोनों दलोंमें मेल करानेका प्रयत्न कर रहे थे उसी समय १४ अप्रेलको फोर्ड थिएटरमें एक हत्यारने गोली मारकर उनका अन्त कर दिया। इस प्रकार इस काममें महात्मा लिंकनका भी बलिदान हो गया!

आत्मोद्धार।

पहला परिच्छेद।

दासानुदास।

मैं एक नीग्रो जातिका गुलाम था। वर्जीनियाके फ्रैंकलिन परगनेमें रहनेवाले एक गुलाम-खान्दानमें मैं पैदा हुआ। कब और किस खास जगह पर, सो मुझे याद नहीं; पर इतना याद आता है कि हेलूसफोर्डकी सड़क पर डाकघरके पास ही कहीं मेरा जन्मस्थान है। मैं यह जिक्र १८५८ या ५९ का कर रहा हूँ। जन्मका महीना या तारीख स्मरण नहीं। हाँ, बचपनकी कुछ बातें याद आती हैं—वह खेत जहाँ मैं काम करता था और वे झोपड़ियाँ मेरी आँखोंके सामने आजाती हैं।

मैं बड़ी ही ज़िल्लत (दुर्दशा) में पला हूँ। मेरे मालिक तो ख़ैर, और मालिकोंसे नेक और दयालु थे; पर आख़िर गुलामी ही तो थी। १४+१६ वर्गफुटकी एक कोठरीमें मैं पैदा हुआ। वहीं अपनी मा, भाई और बहिनके साथ रहा करता था। बड़ी कठिनाईसे दिन कटते थे। कुछ दिनों बाद अमेरिकनोंमें गृह-विवाद उठा और उसमें गुलामजातिको स्वाधीनता मिली। तबसे हम लोग स्वाधीन हुए।

मुझे अपने पुरखाओंका कुछ भी हाल मालूम नहीं; क्योंकि वह समय ही ऐसा था जब गुलामोंको अपने इतिहासकी ज़रूरत ही न जान

पड़ती थी। हाँ, लोगोंकी बातें सुन कर मैंने यह अटकल लगाया था कि हम लोग आफ्रिकाके रहनेवाले हैं। जो लोग वहाँसे हमें ले आये उन्होंने राहमें जहाजों पर हम लोगोंको अनेक कष्ट दिये। मेरे बाप कौन थे सो भी मुझे मालूम नहीं। उनका नाम तक मुझे नहीं बतलाया गया। यह तो मैं अटकलसे जान गया हूँ कि वे एक श्वेताङ्ग थे और उन्होंने मेरी मा पर मुग्ध हो उसे खरीद लिया था। तबसे वे मेरे और मेरी माके कर्ता धर्ता विधाता हुए। वे पासहीकी बसतीमें रहते थे। खैर, वे कोई हों, उन्होंने मेरे लिए कुछ भी नहीं किया था। पर मैं उन्हें दोष नहीं लगाता; क्योंकि ऐसे पिता उस गुलामीके युगमें एक दो नहीं, सैकड़ों हजारों थे।

हम लोगोंकी झोपड़ीमें खाली हमी लोग नहीं रहते थे। उसमें बसतीके सब गुलामोंकी रसोई भी बनती थी। रसोई बनानेका काम मेरी माके सुपुर्द था। घर बड़ा पुराना और गन्दा था। दीवारोंमें कई सूराख हो गये थे जिनमेंसे रोशनी आती थी और शीतकालमें ठंढी ठंढी हवा भी। झोपड़ीके दरवाजे बहुत छोटे थे और उनमें कई दरारें पड़ गई थीं। झोपड़ीके एक कोनेमें एक बड़ा भारी सूराख था जिसमेंसे बिल्लियाँ आया जाया करती थीं। सिविल-वार (युद्ध) शुरू होनेसे पहले वर्जीनियाकी हरेक हवेली और झोपड़ीमें ऐसा ही एक न एक 'बिड़ाल-बिल' रहा करता था। हम लोगोंके यहाँ तो ऐसे छः सात सूराख थे। खैर, आगे चलिए। फर्श मिट्टीका था। जाड़ेके दिनोंमें उसके बीचवाले गड्हेमें शकरकंदका गोदाम रहा करता था। इस गोदामको मैं कभी न भूलूँगा। धरने उठानेमें वहाँ मुझे बहुधा दो चार शकरकंद मिल जाया करते थे और उन्हें भून कर मैं बड़े चावसे खाया करता था। रसोईका पूरा सरंजाम न था। खुले चूल्होंपर रसोई पकानी पड़ती थी और जैसे जाड़ेके दिनोंमें सर्दीके मारे बदन ठिठुर जाता था वैसे ही गरमीके दिनोंमें आगके तापसे जी छटपटा जाता था।

मेरे बचपनके जीवनमें और दूसरे गुलामोंके जीवनमें कुछ भेद न था। मेरी मा मुझको या मेरे भाईबहिनको दिनमें तो देखने सुननेका समय पाती ही न थी; रातको सब काम कर चुकनेके बाद और सबेरे सरकारी काममें हाथ लगानेसे पहले वह हम लोगोंके लिए समय निकालती थी। उस समयकी मुझे याद आती है। जब, मेरी मा दोपहर रात बीतने पर हम लोगोंको जगा कर मुर्गीका मांस खिला दिया करती थी। वह कहाँसे लाती थी सो मुझे कुछ मालूम नहीं; हो सकता है कि मालिककी पशुशालासे ले आती हो। आप लोग इस कामको चोरी कहेंगे, मैं भी, अगर अब कोई ऐसा काम करे तो चोरी ही कहूँगा; पर जिस वक्तका हाल मैं कह रहा हूँ उस वक्तको और उन कारणोंको देखते हुए इसे कोई चोरी साबित नहीं कर सकता। गुलामीमें तो ऐसा ही हुआ करता है। स्वाधीनताकी जबतक घोषणा नहीं हुई थी तबतक, मुझे याद नहीं आता कि हम लोग एक दिन भी कभी बिछौने पर लेटे हों। हम तीनों भाई बहिन मैले कुचैले चिथड़ों पर रात काटते थे।

आज कल कुछ लोग मेरे बचपनके खेल कूदकी बातें सुनना चाहते हैं। पर खेलकूद किस चिड़ियाका नाम है यह भी मुझे बचपनमें मालूम नहीं हुआ। जबसे होशमें हुआ तबसे अबतक काम ही काम करते बीता है। पर मैं समझता हूँ कि अगर बचपनमें मैं खेलने पाता तो इस वक्त बहुत कुछ काम कर सकता। अस्तु; मेरा समय विशेष करके आँगनमें झाडू देना, पानी भरना और उसे खेत पर पहुँचाना, सप्ताहमें एक बार चक्कीमें पिसानेके लिए अनाज ले जाना,—आदि कामोंमें ही बीतता था। इस अनाज ढोनेके कामसे तो मेरी नस नस ढीली हो जाती थी। चक्की वहाँसे तीन मील पर थी और अनाजके थैले घोड़े पर लाद कर ले जाना पड़ता था। यदि राहमें किसी एक तर-

फ़का वजन ज्यादा होकर थैले खिसक पड़ते तो मेरी नानी मर जाती और मैं भी उनके साथ धम्मसे नीचे गिर पड़ता। मैं अकेला तो इस लायंक था नहीं कि उन्हें उठा कर फिर घोड़ेकी पीठ पर लाद देता। लाचार नीचे बैठ कर रोने लगता। निदान जब कोई मुसाफिर आ-निकलता तब उसकी मददसे उन्हें उठा कर राह तै करता था। ऐसी ऐसी मुसीबतोंसे कभी कभी घर आनेमें बहुत अबेर हो जाती थी। राहमें बड़े घने जङ्गल पड़ते थे। उन जंगलोंमें, मैंने सुना था कि नौकरी छोड़ कर भागे हुए फौजी गोरे छिपे रहते हैं और अकेला पाने पर नीग्रो लड़कोंके कान काट लेते हैं! और अबेर करके घर आनेसे लात जूता और गालियाँ मिलती थीं।

गुलामीमें मैंने स्कूली तालीम (शिक्षा) कुछ भी नहीं पाई। हाँ, मैं अपने मालिककी लड़कीका पोथी-पत्रा लेकर स्कूलके फाटक तक कई बार गया हूँ। वहाँ लड़के लड़कियोंको पढ़ाईमें मगन देखकर मेरे मनमें तरह तरहकी उमंगें उठती थीं और दिल चाहता था कि मैं भी इसी तरह लिखना पढ़ना सीख लूँ। मुझे इसीमें स्वर्गसुख मालूम होता था!

मुझे बहुत दिनोंतक यह बात मालूम भी नहीं थी कि हम लोग खरीदे हुए गुलाम हैं और न मुझे यही मालूम था कि हम लोगोंकी स्वाधीनताके लिए देशभरमें आन्दोलन हो रहा है। एक दिन सबेरे जागकर देखता हूँ कि मेरी मा हम लोगोंके सामने, घुटने टेककर भगवान्से प्रार्थना कर रही है,—"हे दीनबन्धो! सेनापति लिंकन और उसके सिपाहियोंकी जय हो। हे भगवन्! हे पतितपावन! हम लोगोंको इस गुलामीसे छुड़ाओ। हे दीनानाथ! हम दीनोंका उद्धार करो।" मेरे जातिबन्धुओंको काला अक्षर भैंस बराबर था; तो भी उन्हें अपनी हालत बखूबी मालूम थी और उस दासत्वपंकसे उठानेके लिए जो

आन्दोलन हो रहे थे उनका भी रत्ती रत्ती हाल उन्हें मालूम था। जबसे गैरिसन, लैबजॉय तथा अन्यान्य सज्जनोंने गुलामोंको स्वतंत्र करनेका बीड़ा उठाया तबसे दाक्षिणके गुलाम उनके आन्दोलनकी बातें कानमें तेल डाल कर सुना करते थे। जब सिविल वार शुरू हुआ तब मैं बहुत छोटा था। पर अपनी मासे तथा और लोगोंसे उसकी बातें सुना करता था। गुलामोंकी बसतीमें ऐसा एक भी गुलाम न था जिसे आजादी या स्वतंत्रताकी लड़ाईका हाल पेश्तरसे न मालूम हुआ हो। गुलामोंके लिए कोई भी बात हो जाती तो उसकी खबर बिजलीकी तेज़ीसे कानों कानों सब लोगोंमें फैल जाती थी।

हम लोग रेल-स्टेशनसे दूर थे। कोई समाचारपत्र भी हम लोगोंके पास न आता था। आसपास कोई बड़ा शहर भी न था। ऐसी हालतमें, जब लिंकन संयुक्त राज्यकी प्रेसिडेंटीके लिए उम्मेदवार हुए, हमारी बसतीके गुलामोंको इस विषयकी बड़ी पेचीली बातोंका भी पूरा पूरा ज्ञान था। उत्तर और दक्षिणमें युद्ध छिड़ जाने पर हम लोग बखूबी जान गये थे कि युद्धका प्रधान कारण हम लोगोंकी गुलामी ही है। मेरे जातिभाइयोंको विश्वास हो गया था कि अगर उत्तरवाले जीत गये तो हम लोगोंकी बेड़ी टूट जायँगीं। उत्तरकी हरेक जीत और दक्षिणकी हरेक हारकी ओर हम लोगोंकी आँखें लगी हुई थीं। युद्धके सब समाचार हम लोगोंको मालूम हो जाते थे। कभी कभी तो गोरे मालिकों-से पहले ही नीग्रो गुलाम उन्हें जान लेते थे। इसका कारण यह था कि नीग्रो चपरासी ही डाकघरसे गोरे मालिकोंकी चिट्ठियाँ ले आया करता था। डाकघर बसतीसे करीब ३ मील फासिले पर था और सप्ताहमें एक या दो बार चिठियाँ आया करती थीं। डाक आनेपर बहुतसे गोरे डाकघरमें जमा होते थे और वहाँ ताज़े समाचारोंकी चर्चा किया करते थे। नीग्रो चपरासी उनकी बातोंसे खबरें छान लेता और

राहमें जो गुलाम भाई उसे मिलते उन्हें, बतला देता था। इस तरह युद्धकी खबरें मालिकसे पहले गुलामोंको मालूम हो जाती थीं।

मेरे बचपनमें या जवानीमें ऐसा एक भी दिन मुझे याद नहीं आता जब परिवारके सब लोग एकत्र भोजन करने बैठे हों, या ईश्वरकी प्रार्थना करते हों, या हम सभोंने सन्तोषके साथ भोजन ही किया हो। वर्जीनियाके गाँवोंमें और अन्यत्र भी जैसे गूँगे जानवर चरते फिरते हैं, और जहाँ जो मिल जाता है, खा लेते हैं, वैसा ही हम लोगोंके भी खाने पीनेका ढंग था। कभी एकाध रोटीका टुकड़ा मिल गया तो कभी कच्चे गोश्तका, कभी एकाध बार दूध नसीब हुआ तो दूसरी बार कुछ आलूहीं खाके रह गये! मेज़ या काँटा चम्मच तो कुछ था नहीं—कुछ लोग मेज़के बजाय अपने घुटनोंपर टीनकी थाली रख कर खाया करते थे!

मैं जब बड़ा हुआ तब मालिकोंके भोजनके समय मुझे पंखा झलकर मक्खियोंको हटाना पड़ता था। गोरे लोग प्रायः युद्ध और गुलामोंकी स्वाधीनता पर ही चर्चा किया करते थे। और मैं इन बातोंको बड़े चावसे सुना करता था। एक बार मैंने अपने मालिकोंको 'जिञ्जर केक' नामक पक्वान्न खाते देखा। देखते ही मेरे मुँहसे लार टपक पड़ी और मैंने अपने मनमें ठान लिया कि स्वाधीन होने पर ऐसा माल भर-पेट ज़रूर खाऊँगा।

जब लड़ाई बढ़ चली तब गोरोंको खाना मिलना मुश्किल हो गया। उन्हें चाय, काफ़ी, चीनी और तरह तरहकी चीज़ें खानेकी आदत पड़ी हुई थी और ये आती थीं दूर देशसे। लड़ाई छिड़ने पर इनका आना रुक गया। गोरे बड़ी विपदमें पड़े। गुलामोंको इतनी तकलीफ़ नहीं हुई, उन्हें सिर्फ़ एक रोटीका टुकड़ा और सूअरका गोश्त मिलने-से काम था जो वहीं गाँवमें मिल जाता था। दूसरेका मुँह ताकने-

की ज़रूरत न थी। पर गोरे मालिकोंकी दुर्दशा देखी नहीं जाती थी। उन्हें चायके लिए चीनी न मिलनेसे मैले गुड़से ही काम निकालना पड़ता था। बादको यह गुड़ भी मिलना दुश्वार हो गया। तब वे बिना मीठा डाले चाय पीने लगे। अन्तको जब असल चाय भी नसीब न हुई तब वे लोग फरूही या भुना हुआ चिउड़ा या ऐसे ही किसी अन्नका चूर्ण लेकर काम चलाने लगे।

मैंने ज़िन्दगीमें पहले पहल जो जूता पहना वह काठका था। उसके ऊपरी भागमें कुछ चमड़ा ज़रूर लगा था। पर वह बहुत ही खुरदरा था। उसके पहननेसे पाँवोंमें बड़ी तकलीफ़ होती थी; लेकिन यह काठका जूता भी गनीमत समझिए। गुलामीमें जो कुरता पहिनना पड़ता था उसकी याद आनेसे अब भी रोंगटे खड़े हो आते हैं। मैं समझता हूँ, दाँत पकड़ कर उखाड़ डालनेसे, या नागफनीके काँटे बदनमें चुभनेसे जो तकलीफ़ होती है उससे कम तकलीफ़ इस कुरतेके पहननेमें न थी। वर्जीनियाके गुलामोंको खूब मोटे खुरदरे टाटका कुरता पहननेको मिलता था। नये कोरे कुरतेमें टाटके उठे हुए इतने काँटे रहते थे कि उनसे बड़ी ही वेदना होती थी। मेरा बदन मुलायम था—उस कुरतेको पहनना मेरे लिए बड़ी भारी मुसीबत थी। पर किया क्या जाता? पहनना हुआ तो उसी टाटके कुरतेको पहनो, नहीं तो, नंगे रहो। मैं कहता हूँ कि अगर पहनना-न-पहनना भी मेरी मर्जी पर छोड़ दिया जाता तो कोई बात नहीं थी; मैं नंगा रहना ही पसन्द करता! पर यह भी मेरे हाथमें न था। नंगे रहनेकी तो मनाई थी। मेरा बड़ा भाई जॉन मुझ पर रहम खा जाता और नया कुरता खुद कुछ दिन स्वयं पहनकर मुलायम होने पर मुझे पहननेको देता था। मेरे बचपनकी ज़िन्दगी इन्हीं कपड़ोंमें बीती है।

इन बातोंसे आप लोग सोचेंगे कि गुलाम अपने गोरे मालिकोंसे बड़ा

बैर रखते होंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे मालिक हम लोगोंको गुलाम बनाये रखना चाहते थे और इसी लिए वे उत्तरवालोंसे लड़ रहे थे। परन्तु हम लोगोंमें और जहाँ जहाँ गुलामोंसे अच्छा सुलूक किया गया है, यह बैरभाव बिलकुल न था। हम लोग जानते थे कि अगर इन लोगोंकी जीत रही तो हम लोगोंको गुलामी ही करनी पड़ेगी; तो भी हम लोगोंने कभी उनसे बैर नहीं किया। हम लोग उनके सुखसे सुखी और दुःखसे दुखी रहते थे। हम लोगोंके हृदयमें उनके लिए बड़ी सहानुभूति थी। लड़ाईमें मेरा जवान मालिक मार्स बिली मारा गया और उसके घरके दो आदमी घायल हुए। जब यह खबर हम लोगोंने सुनी तब, उसके घरवालोंको जो दुःख हुआ उसका कहना ही क्या है, पर हम लोगोंको भी कुछ कम दुःख नहीं हुआ। हम लोगोंमेंसे कुछने उसकी सेवा शुश्रूषा की थी और कुछ उसके लँगोटिया यार थे। इस लिए उसकी मृत्युसे हम लोगोंको जो दुःख हुआ वह केवल दिखौआ न था। जब घायल जवान घर लाये गये तब हम लोग जी जानसे उनकी सेवा टहल करने लगे। कितनोंने रात रात जागकर उनकी सेवा की। यह स्नेह और यह दिली दर्द हम लोगोंकी उदार और सरल प्रकृतिका ही फल था। जब हमारे मालिक रणभूमिमें जाते तब गुलाम ही उनके गृह और परिवारकी रक्षा करते थे। मालिकके घर रातको सो रहनेके लिए जिस किसीका चुनाव होता वह समझता कि यह मेरा अहो भाग्य है। यदि कोई दुष्ट, युवती अथवा वृद्धा स्त्रियोंको कष्ट देने आ जाता तो बिना गुलामोंको मारे उसकी राह साफ़ न होती थी। क्या गुलामीमें और क्या आज़ादीमें, मेरे भाइयों-ने कभी विश्वासघात नहीं किया। कमसे कम ऐसे उदाहरण बहुत ही विरले मिलेंगे। इसके विपरीत घायल, असहाय, अनाथ मालिकों और उनके बालबच्चोंकी हरतरहसे मदद करनेवाले गुलामोंके दृष्टान्त

अनेक हैं। उनकी इज्ज़त और हुर्मत, जान और मालकी, जब काम पड़ा है, इन्होंने रक्षा की है। जिनके पास धन नहीं था, उन्हें धन दिया है। गोरे लड़कोंको तालीम दिलानेके लिए गाँठके पैसे खुले हाथ ख़र्चे किये हैं। एक साहूकारका लड़का शराबखोरीसे बिलकुल तबाह हो गया था। उसकी तबाही इन्होंने हर तरहसे दूर की। इतना ही नहीं; गुलामी-के दिनोंमें इन्होंने अपने मालिकोंसे जो वादे किये थे, उन्हें भी पूरा करके छोड़ा। एक उदाहरण मुझे याद आता है। वह गुलाम मुझे ओविओ शहरमें मिला था। उसने गुलामीके दिनोंमें अपने मालिकसे वादा किया था कि हर साल अमुक रकम अदा करके मैं स्वाधीन हो जाऊँगा। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि स्वाधीनताकी घोषणा होने पर यह गुलाम भी स्वाधीन हो चुका, अब उसे गुलामीका वादा पूरा करनेकी ज़रू-रत ही क्या थी? पर उसने वादेके अनुसार मालिकको कौड़ी कौड़ी सूदतक चुका दिया! मैंने उससे कहा कि "जब तुम स्वाधीन हो चुके तब फिर ऐसा करनेकी क्या ज़रूरत थी?" इस पर उसने जबाब दिया कि "कानूनके अनुसार तो कोई ज़रूरत नहीं थी; पर मैंने अपने मालिकसे **वादा** किया था और उसे पूरा करना मेरा **धर्म** था। अबतक मैंने ऐसा कोई वादा नहीं किया जिसे पूरा न किया हो।" उसका मन गवाही देता था कि वह अपने वचनको जबतक पूरा न करेगा तबतक, वह स्वाधीनताका आनन्द न ले सकेगा।

आप कहेंगे, तो क्या नीग्रो लोग स्वाधीनता नहीं चाहते थे? क्या गुलामीकी जंजीरसे उनका इतना नेह हो गया था? नहीं, ऐसा नामर्द आदमी मैंने एक भी न देखा।

जो बदनसीब आदमी या जाति गुलामीकी बेड़ियोंमें जकड़ गई है उस पर, मुझे रहम आता है। पर अपनी जातिकी गुलामीके विषयमें मैंने दक्षिणी गोरोंसे बैर रखना बहुत दिनोंसे छोड़ दिया है। गुलामी

जो चल पड़ी वह, किसी खास समाजने नहीं चलाई। बहुत अरसे तक तो सरकार ही इसका समर्थन करती रही थी। रेपब्लिककी सामाजिक और आर्थिक दशासे यह दासता जकड़ गई थी, इस लिए इसको एकाएक अलग कर देनेका काम देशके लिए कुछ सहज न था। और कुसंस्कार तथा जातिद्वेषको अलग रख कर यदि हम असली हालत पर विचार करते हैं तो यह स्वीकार करना पड़ता है कि यद्यपि गुलामी सुनीति और दयालुताकी हत्या करनेवाली है; तो भी इस देशमें रहनेवाले करोड़ों नीग्रो संसारके किसी भी देशके उतने लोगोंसे अधिक बुद्धिमान्, नीतिमान्, होनहार और धार्म्मिक हैं। यह बात सही है कि हर साल सैकड़ों नीग्रो, जो या जिनके पूर्वज इस देशमें गुलामी करते थे, अब अपनी जन्मभूमिके लोगोंको अज्ञानकी खाईसे ऊपर उठानेके लिए उपदेशक बन कर आफ्रिका लौट रहे हैं; पर मेरे कहनेका मतलब यह नहीं है कि गुलामीकी प्रथा अच्छी है। कभी नहीं, मैं उसे ज़रा भी पसन्द नहीं करता। हम लोग खूब अच्छी तरहसे जानते हैं कि यहाँ गुलामीका जो रिवाज़ चला वह कुछ हमारी भलाईके लिए नहीं था। असल बात यह थी कि हम लोगोंको गुलामीमें सड़ाकर इस देशवाले मालामाल होना चाहते थे। पर ईश्वर कीचड़से भी कैसे कमल पैदा करता है यह दिखलानेके लिए मैंने ये बातें कहीं। जब मुझसे लोग पूछते हैं, ‘ तुम इस महागरीबी, कुसंस्कार और अज्ञानराशिमें रहकर अपनी जातिके भविष्यकी क्योंकर आशा रखते हो ? ’ तब मैं गुलामीकी जंजीरमें बंधी हुई नीग्रो जाति और उसके उद्धारकी याद दिलाता हूँ और कहता हूँ कि ईश्वर हमारे साथ है।

जबसे मैं कुछ समझने बूझने लगा हूँ तबसे, मैं जानता हूँ कि गुलामीमें मेरे भाइयोंके साथ जैसी निठुरता की गई वैसे उसके खट्टे फल गोरोंको भी चखने पड़े हैं। गुलामोंका काम था, मिहनत करना और

गोरोंका, मौज उड़ाना। इसका फल यह हुआ कि गोरोंसे आत्मविश्वास और कर्तब जाता रहा। मेरे मालिकके कई लड़के और लड़कियाँ थीं। पर उनमेंसे एकने भी कोई ऐसा काम या धन्धा नहीं सीखा जिससे कुछ आमदनी हो। लड़कियोंको इतना भी नहीं आता था कि वे रसोई बना लें, या कुछ लिख पढ़ सकें,अथवा घरका ही सब प्रबन्ध करें। यह सब काम गुलाम करते थे। बसतीके बाग बगीचोंके सुधारमें गुलामोंका कोई हिस्सा नहीं था; और वे अज्ञानी थे इसलिए यह समझनेका उनके लिए और कोई साधन ही न था कि अपने काम व्यवस्थित पद्धतिसे और अच्छीतरह क्योंकर किये जा सकते हैं। इसका फल यह हुआ कि बाग़-बगीचोंकी देख भाल ठीक ठीक न होती थी। चहारदीवारें बिलकुल बेमरम्मत थीं, दरवाजोंके कब्जे ढीले पड़ गये थे, खिड़कियोंके कपाट फट गये थे। चारों ओर जमीन गीली हो रही थी और घरके आँगनमें भी घास और बरसाती पौधे उग आये थे। बसतीमें अन्नकी कमी नहीं थी—गुलाम—मालिक दोनोंको भरपूर अन्न मिलता था; पर इन्तजाम कुछ भी नहीं। इससे फिज़ूल खर्च तो बहुत होता था पर भोजनमें न शोभा थी और न आनन्द। स्वाधीनता मिलने पर गुलाम और मालिक दोनों एक ही लियाकतके हुए। हाँ, हैसियत गोरोंकी बड़ी थी; क्योंकि उन्हें किताबी इल्मके अलावे ज़मीन पर मालकियत भी हासिल थी। पर और सब बातोंमें दोनों ही बराबर हुए। गोरे मालिक और उनके लड़के अपने बल पर कोई व्यवसाय कर नहीं सकते थे और शारीरिक परिश्रम करना तो अपनी शानके खिलाफ समझते थे। गुलाम, अलबत्ता कुछ हुनर रखते थे और मिहनतसे उनकी शानमें भी कसर न आती थी। हाँ, कुछ लोग मिहनतसे ज़रूर भागते थे।

अन्तको युद्ध समाप्त होने पर स्वाधीनताका सुदिन उदय हुआ। हम सब गुलामोंके लिए यह महापर्वके समान अत्यन्त पवित्र दिन

और उदासी छा गई। कुछ लोगोंको तो यह स्वाधीनताका बोझ अन्दाज़से भी भारी मालूम हुआ। गुलामोंमें बहुतसे ७०।८० वर्षके बूढ़े थे। उनके जीवनका उत्तम अंश तो बीत ही चुका था। रहनेको कोई घर मिल जाना तो कठिन नहीं था; पर उन्हें कमा खानेमें बड़ा सन्देह था। इसलिए स्वाधीनताने उनके सामने एक बड़ा पेचीला मामला पेश कर दिया। अपने पुराने मालिक और उनके परिवारसे उनका बड़ा स्नेह हो गया था। इस स्नेहको तोड़ना ही उन्हें बहुत अखरने लगा। कुछ लोगोंने गुलामी करते करते पचास पचास साठ साठ वर्ष बिताये थे; ऐसे लोग अपने मालिकसे कब नाता तोड़ सकते थे ? उन्हें तो अपने मालिकके घरका रास्ता ही मालूम था। बूढ़े गुलाम धीरे धीरे एक एक करके अपने मालिकोंके यहाँ जा जाकर उन्हींसे इस बातकी सलाह लेने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

दूसरा परिच्छेद ।

शैशव ।

स्वतंत्रता मिलनेपर बसतीके सब गुलामोंकी यह राय हुई कि अब दो बातें करनी चाहिए;—

१. हम लोगोंको अब अपना अपना नाम बदल डालना चाहिए ।

२. हम लोग स्वाधीन हुए सही, पर एक बार इसकी जाँच कर लेनी चाहिए और इस लिए यह ज़रूरी है कि हम कुछ दिनों तक अपनी पुरानी जगह छोड़ दें ।

इन दो बातों पर हम सबकी राय एक हुई और करीब करीब सारे दाक्षिणके गुलामोंकी यही राय थी ।

गुलामीके दिनोंमें हम लोग अपने नामोंके साथ अपने मालिकका नाम भी लिया करते थे या यों कहिए कि मालिकका नाम हम लोगोंका उपनाम या 'अल्ल' हुआ करता था । अब न जाने क्यों, सब लोगोंने यह सोचा कि यह अल्ल उड़ा देना चाहिए । बहुतसे लोगोंने ऐसा किया भी और एक नया उपनाम धारण कर लिया । गुलामीके दिनोंमें हम लोग एकहरे नामसे ही पुकारे जाते थे; जैसे जान, सुसान इत्यादि । कभी कभी गोरे मालिकके नामके साथ भी पुकारे जाते थे, पर वह भी इस तरह कि किसी स्वाधीन मनुष्यको कभी अच्छा न लगे—जान हचर या हचरका जान । पर अगर जान या सुसान किसी गोरेका नाम हुआ तो सिर्फ़ जान या सुसान कहना बेइज्जती समझी जाती थी । इस लिए हम लोगोंने अपने नामोंको और सुडौल बना लिया; जैसे जानका हुआ जान एस् लिंकन अथवा सुसानका जान एस् सुसान ।

उपनामके पहले जो एस् आया है उसका, कुछ मतलब नहीं है; काले लोगोंने उसे यों ही अल्लके तौर पर धारण कर लिया है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, स्वाधीनताकी जाँचके लिए बहुतसे लोगोंने पुरानी बसती कुछ दिनोंके लिए छोड़ दी। कुछ कालके पश्चात् बूढ़े गुलामोंमेंसे बहुतेरे फिर अपने पुराने स्थानों पर आ गये और अपने पुराने मालिकोंसे लिखापढ़ी करके फिर उसी बसतीमें रहने लगे। मेरी माका पति याने मेरे भाई जानका बाप और मेरा सौतेला बाप किसी दूसरे मालिकका गुलाम था। वह हम लोगोंकी बसतीमें कभी एकाध बार आ जाता था। मुझे जहाँतक स्मरण है, वह बड़े दिनोंकी छुट्टियोंमें आया करता था। जब सिविल वार शुरू हुआ तब, वह संयुक्त सैन्यके पीछे पीछे कुछ काल चलकर वेस्ट वर्जीनिया-की नई रियासतमें भाग आया। स्वाधीनताकी घोषणा होने पर उसने मेरी माको वेस्ट वर्जीनियाके कनावा वैलीमें आ जानेके लिए कह-ला भेजा। उस समय वर्जीनियासे वेस्ट वर्जीनियामें जाना ज़रा टेढ़ी खीर थी—राहमें कितने ही पहाड़ थे और रास्ता बड़ा बीहड़ था। जो कुछ कपड़े लत्ते और असबाब हम लोगोंके पास था वह सब तो एक गाड़ीमें भर दिया गया; पर लड़कोंको पैदल ही सैकड़ों मील सफ़र करनी पड़ी! अबतक, मेरा ख्याल है कि हम लोगोंकी बसतीसे कोई भी इतनी दूर नहीं गया था। इस लिए यह लंबी सफ़र हमलोगोंके जीवनमें एक बड़ी भारी घटना थी। चलते वक्त हम लोगोंको बड़ा दुःख हुआ; क्योंकि इतने दिन जिन लोगोंका साथ था उन्हें छोड़ना पड़ा। हम लोग बसती छोड़ कर गये सही, पर अपने गोरे मालिक-को कभी न भूले। जबतक वे जीते थे तबतक बराबर उनके घरवालोंसे चिट्ठीपत्री किया करते थे और उसके बाद भी जान पहचान बनी रही। हम लोग कई सप्ताह सफ़र करते रहे और मार्गमें ही ईंधन जला-

कर रसोई बना लेते थे। एक रोज़की याद आती है कि सफ़र करते हुए हम लोगोंने लकड़ीका एक पुराना झोपड़ा देखा; वह निर्जन था। मेरी माने उसीके अन्दर रसोईके लिए चूल्हा तैयार किया। यह विचार था कि खा पी करके रातको वहीं आराम करेंगे, और फिर सबेरे चल पड़ेंगे। मा चूल्हा बालने बैठ गई; हम लोग ज़रा दूर थे। इतनेहीमें ऊपर चिमनीसे कोई डेढ़ गज़का एक लंबा साँप नीचे आ गिरा और फूत्कार करता हुआ सरपट भागा। यह देख कर हम लोग घबराये और फौरन वहाँसे चल पड़े। इस तरह बचते बचाते हम लोग माल्डन नामके गाँवमें आ पहुँचे। यह गाँव चार्लस्टनसे, जो इस रियासतकी राजधानी है, पाँच मील पर है।

उस समय वेस्ट वर्जीनियाके उस हिस्सेमें नमककी खानें खोदी जाती थीं और यह माल्डन गाँव नमककी भाट्टियोंसे चौतर्फा घिरा हुआ था। मेरे सौतेले बापको इन्ही भाट्टियोंमेंसे एक भट्टी पर काम मिल गया था और उसने हम लोगोंके रहनेके लिए एक कोठरी ले रक्खी थी। हम लोगोंका यह नया घर पुराने घरसे किसी कद्र अच्छा नहीं था। एक बातमें तो वह और भी बुरा था। पुराना घर अच्छा तो नहीं था; पर इतना ज़रूर था कि वहाँ स्वच्छ वायु मिलती थी। और यहाँ यह हाल था कि चारों तरफ़ आदमियोंसे ठसाठस भरी हुई झोपड़ियाँ थीं और बीचमें हम लोग। सफ़ाईका भी कोई बन्दोबस्त न था—इतना कूड़ा-करकट और मैला-सैला जमा होता था कि नाक दबाते दबाते नाकमें दम आ जाता। हम लोगोंके पड़ोसमें कुछ काले लोग भी थे और कंगाल, अपढ़ गोरे भी थे। शराबखोरी, जुआचोरी, बातबतंगड़, लड़ाई झगड़े और नीच ब्योहार अकसर देखनेमें आते थे। आसपास जितने लोग रहते थे, बल्कि यह कहना चाहिए कि उस बसतीके प्रायः सभी लोग उन नमककी खानोंसे कोई न कोई ताल्लुक रखते ही

थे। मैं अभी बच्चोंमें ही गिना जाता था, तो भी मेरे बापने मुझे और मेरे भाईको नमककी भट्टीमें काम करने भेज दिया। बड़े सबेरे चार बजे मुझे काम पर डँट जाना पड़ता था।

नमककी खानमें काम करते समय मैं पुस्तकी विद्याकी एक बात सीखा। नमक भरनेवाले जब पीपेंमें नमक भर चुकते तब उन पर एक खास नंबर डाल दिया जाता था। मेरे सौतेले बापके हिस्से अठारह-का अंक आया था। रोज़ जब काम खतम हो जाता तब, एक अफ़सर आकर सबके पीपों पर उनके नंबर (जिसका जो नंबर हुआ) डाल दिया करता था। अपने बापके पीपों पर अठारहका अंक बराबर देखते देखते मैं उसे पहचानने लगा। और कोई अक्षर या अंक मुझे नहीं आता था; पर अठारह (18) लिखना मैं सीख गया था।

जबसे मैंने होश संभाले हैं तबसे मेरी यह इच्छा रही कि किसी तरह लिखना पढ़ना सीख जाऊँ। बचपनमें ही मैंने यह निश्चय किया था कि और चाहे कुछ भी मुझसे न बन पड़े, पर इतना तो कमसे कम ज़रूर करूँगा कि छोटी मोटी किताबें और समाचारपत्र पढ़नेके योग्य हो जाऊँगा। जब वेस्ट वर्जीनियामें आकर हम लोग रहने लगे और किसी कदर गुजारेका भी प्रबन्ध हो गया तब, मैंने मासे कहा कि "मुझे कहींसे एक पुस्तक ला दे।" वह वेब्स्टरकी 'ब्ल्यू-ब्लैक–स्पेलिंगबुक' नामकी एक किताब ले आई। इसमें 'Aa, Ba, Ca, Da,' (आ, बा, का, डा,) इत्यादि अर्थरहित (बेमतलब) शब्द थे। यह पुस्तक वह कहाँसे और कैसे ले आई सो मुझे मालूम नहीं। बिलकुल पहली किताब यही मेरे हाथ लगी और मैं झटपट इसे पढ़ जानेकी कोशिश करने लगा। मैंने किसीके मुँह सुना था कि सबसे पहले वर्णमाला सीखनी पड़ती है। इस लिए अपनी बुद्धिके अनुसार मैं वर्णमाला सीखनेका प्रयत्न करने लगा। कोई

सिखानेवाला तो था नहीं; क्योंकि मेरे आसपास जितने मेरे भाई लोग थे वे ' लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर ' ही थे और गोरे, जो लिखे पढ़े थे उनके पास फटकने तकका मुझे साहस न होता था। खैर, किसी तरहसे हो मैं एक दो सप्ताहोंमें वर्णमाला सीख गया। मेरी माने मुझे इस काममें बड़ी मदद दी; क्यों कि वह चाहती थी कि मैं लिख पढ़ जाऊँ, यद्यपि वह स्वयं कुछ लिख पढ़ नहीं सकती थी। वह बड़ी चतुर थी और इसलिए हर मौके पर उसने हम लोगोंकी हरतरहसे रक्षा की। सचमुच, अगर मैंने इस ज़िन्दगीमें कोई अच्छा काम किया है तो, वह अपनी माकी ही बदौलत।

जब मैं शिक्षा प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहा था, उस समय एक काले याने मेरी जातके ही एक लड़केसे मेरी जान पहचान हो गई। इसने आविओमें शिक्षा पाई थी और अब यह माल्डनमें आ गया था। जब मेरे और भाइयोंको यह खबर लगी कि यह लिखा पढ़ा भी है तब उन्होंने एक समाचारपत्र मँगवाया और शामको सब लोग उसे घेर कर उससे वह पत्र पढ़वाने लगे। स्त्री–पुरुष सब उस लड़केसे प्रसन्न थे। मुझे तो यह पड़ी थी कि कब मैं इसके बराबर लिख पढ़ जाऊँ ! मैं बिलकुल अधीर हो उठा था। मेरा यह ख्याल हो गया कि इस लड़केके बराबर कोई सुखी नहीं और वैसा ही सुखी बननेकी मेरी कोशिश जारी थी।

अब हमारे जातभाई भी शिक्षाका महत्त्व समझने लगे और इस बातका प्रयत्न करने लगे कि काले लड़कोंके लिए भी एक पाठशाला बन जाय। इस पर बड़ा आन्दोलन हुआ; क्योंकि वर्जीनियामें नीग्रो लड़कोंकी पाठशाला एक बिलकुल नई बात थी। बड़ा बिकट प्रश्न यह था कि शिक्षक कहाँसे लाया जाय। वही एक लड़का था जिसे लोग लिखा पढ़ा समझते थे; पर वह लड़का ही था, इस लिए उसे शिक्षक बनाने-

बड़े सबेरे उठकर भट्टी पर नौ बजेतक काम करता, और दो पहरको पाठशालासे छुट्टी मिलने पर काम पर आ जाता और फिर दो घंटे भट्टीका काम करता था।

भट्टीसे पाठशाला कुछ फासले पर थी। पाठशाला नौ बजे खुल जाती थी और मैं नौ बजेतक भट्टी पर ही रहता था। इससे पाठशालामें पहुँ-चनेसे पहले ही वहाँ पढ़ाई शुरू हो जाती थी। यह असुविधा दूर करने-के लिए मैंने एक ऐसा काम किया जिसके लिए लोग मुझे दोष लगा-वेंगे; पर जो कुछ हुआ उसे बिना कहे मुझसे रहा नहीं जाता। सच बातका बड़ा बल है। बात छिपानेसे शायद ही कभी किसीको लाभ होता होगा। भट्टीके आफिसमें एक घड़ी थी। इसी घड़ीके हिसाबसे सैकड़ों नहीं, इससे भी ज़ियादा लोग अपना अपना काम शुरू और बन्द करते थे। मैंने यह सोचा कि ८॥ वाली सुई अगर मैं ९ पर हटा दूँ तो मैं समय पर स्कूलमें जा सकूँगा। बस मैं रोज सबेरे ऐसा ही करने लगा। धीरे धीरे मैनेजरको इस बातका सन्देह हुआ कि कोई लड़का घड़ीमें हाथ लगाता है। जब ऐसा सन्देह हुआ तब उन्होंने घड़ी वहाँसे हटा कर एक सन्दूकमें रख दी और उसमें ताला लगा दिया। खैर, मैंने यह काम सिर्फ़ इसलिए किया था कि मैं वक्त पर स्कूलमें पहुँच सकूँ—इसलिए नहीं कि और लोगोंको इससे कुछ असु-बिधा हो।

पहले पहल जब मैं पाठशालामें जाने लगा तब दो अड़चनें मेरे सामने आईं। एक तो यह कि सब लड़के सादी या खड़ी टोपी पहन कर पाठशालामें आते थे और मेरे पास तो टोपी ही नहीं थी। जबतक मैं स्कूलमें नहीं गया था तबतक, मुझे टोपीकी ज़रूरत ही नजर न आई। पर अब और लड़कोंकी पोशाक देख कर मैं भी बेचैन हो गया। अपनी मासे कहा; पर जैसी टोपियाँ उस वक्त नीग्रो लोग पह-नते थे वैसी टोपी खरीदनेके लिए उसके पास दाम नहीं थे। पर उस

वक्त उसने दिलासा देकर मुझे सन्तुष्ट कर दिया। कुछ दिनों बाद उसने एक खुरदरे कपड़ेके दो टुकडोंको जोड़ कर एक टोपी सीं दी। इस तरह मुझे सबसे पहली टोपी मिली और उस पर मुझे बड़ा फ़ख्र (अभिमान) हुआ!

इस टोपीके मामलेमें मेरी माने मुझे जो एक बात सिखला दी उसे मैं कभी न भूला; और जहाँ तक मुझसे बन पड़ा है उसे दूसरोंको भी सिखलानेकी चेष्टा की है। जब जब इस घटनाका स्मरण आता है तब तब मुझे इस बातका बड़ा अभिमान होता है कि जो चीज़ हमारे पास नहीं है उसे साफ़ साफ़ 'नहीं' कह देने और बतला देनेकी दृढ़ता मेरी मामें थी। बहुतसे लोगोंके पास उस वक्तके फैशनकी टोपियाँ खरीदनेके लिए दाम नहीं थे; पर कर्ज़ करके उन्होंने उन टोपियोंको खरीदा था। पर मेरी माने जिस चीज़को खरीदनेके लिए उसके पास दाम नहीं थे उसके लिए कभी कर्ज़ नहीं किया। इसके बाद मैंने कई बार सादी और खड़ी टोपियाँ खरीदीं; परन्तु जो अभिमान मुझे माताकी दी हुई उस दो टुकड़ोंकी टोपी पर है वह और किसी टोपी पर नहीं। मेरे जिन जिन साथियोंने फैशनवाली टोपी पहनी, और घरकी बनी हुई टोपी पहनने पर मेरी हँसी उड़ाई उनमेंसे बहुतेरोंको आगे चलकर जेलकी हवा खानी पड़ी, और मुझे अब बड़े दुःखसे कहना पड़ता है कि उनमेंसे बहुतेरोंको किसी भी तरहकी टोपी खरीदनेकी शक्ति नहीं रह गई है।

दूसरी अड़चन नामके बारेमें थी। बचपनसे लोग मुझे 'बुकर' कहकर पुकारते थे। पाठशालामें मैं जबतक भरती नहीं हुआ था तबतक, मुझे और एक नाम धारण करनेकी आवश्यकता भी न जान पड़ी थी। किन्तु जब पाठशालामें हाजिरी हुई और मैंने सुना कि किसीके दो नाम हैं और किसी किसीके तीन तीन तब मैं सोचने लगा कि मेरा तो एक ही नाम है और जब मास्तर साहब मुझसे

मेरे दो नाम पूछेंगे तब मैं क्या जवाब दूँगा। आखिर जब नाम लिखानेका वक्त आया तब मुझे एक तद्बीर सूझी और मेरा विश्वास हो गया कि यह मौका मैं अवश्य मार लूँगा। जब मास्टर साहबने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है, तो मैंने शान्तचित्तसे उत्तर दिया– 'बुकर वाशिंगटन'। मानो इसी नामसे लोग मुझे हमेशा पुकारते हैं। और आगे मेरा यही नाम प्रसिद्ध हुआ। कुछ दिनों बाद मुझे यह भी मालूम हुआ कि मेरी माने मेरा नाम 'बुकर टेलीफेरो' रक्खा था। यह दूसरा नाम अबतक क्यों गुम रहा सो मुझे मालूम नहीं। पर जैसे ही मुझे खबर लगी कि मेरा दूसरा नाम टेलीफेरो है, वैसे ही, मैं उसे चलाने लगा और इस तरह मेरा पूरा नाम 'बुकर टेलीफेरो वाशिंगटन' हुआ। मैं समझता हूँ कि ऐसे इने गिने ही लोग होंगे जिन्हें मेरी तरह अपना नाम आप रखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ हो।

कई बार मेरे मनमें यह विचार उठा है कि अगर मैं किसी बड़े खान्दानमें पैदा होता तो बड़ी बहार आती; पर अगर सचमुच ही कहीं मैं किसी अमीरका लड़का होता तो अपने पुरुषार्थको भूलकर मैं शाही ठाठके दलदलमें ही धँस जाता। कुछ वर्ष पहले मैंने यह निश्चय किया कि मैं किसी बड़े घरानेका अभिमान नहीं कर सका तो क्या हुआ?–मैं स्वयं कुछ ऐसे सत्कार्य करूँगा जिन पर मेरे लड़के फ़क्र करें और, और भी बड़े काम करनेके लिए उत्साहित हों।

नीग्रो लोगोंके विषयमें किसीको बिना समझे बूझे एकाएक अपनी राय खिलाफ़ न कर लेना चाहिए। नीग्रो लोगोंको जिन मुसीबतों, नाउम्मेदियों और तरह तरहकी मोहमायाओंसे सामना करना पड़ता है उन्हें वे ही जानते हैं–और लोगोंको उसका अन्दाज़ भी नहीं। जब कोई गोरा किसी कामको उठा लेता है तब, यह मान लिया जाता है कि वह ज़रूर कामयाब होगा। पर नीग्रोकी दशा इसके बिलकुल विप-

रीत है। अगर कोई नीग्रो-बच्चा किसी काममें कामयाब होता है तो लोग दाँतों उँगली दबाते हैं और कहते हैं कि इसने यह काम कैसे कर लिया ? तात्पर्य यह है कि नीग्रो जाति ही बदनाम है।

किसी व्यक्ति या जातिकी उन्नतिमें कुलीनता भी बड़ी सहायक होती है। नीग्रो लोगोंसे और कुलीनतासे अब तक कोई सरोकार न था। नीग्रो लोगोंको अपना इतिहास मालूम नहीं—उनके बापदादा कौन थे, उन्होंने क्या पुरुषार्थ किया इत्यादि बातें, उन्होंने अपने कानोंसे कभी सुनीं तक नहीं। ऐसी हालतमें यह कैसे संभव है कि गोरोंकी तरह उन्हें भी अपने कुलका अभिमान हो। बहुतसे लोग इस बातको भूल जाते हैं और नीग्रो युवकोंकी चालचलन पर दृष्टि रखकर उनकी और गोरोंकी उन्नतिका मुकाबला किया करते हैं। अब मेरा ही उदाहरण लीजिए। मेरी नानी या दादी कौन थी, मैं नहीं जानता। मेरे चचा, मामा, फुआ, फूफी, चचेरे भाई और चचेरी बहनें थीं; पर वे सब इस वक्त कहाँ हैं और क्या करते हैं इसकी, मुझे खबर तक नहीं है। नीग्रो लोगोंका तो यह हाल है। गोरोंकी हालत इससे कहीं अच्छी है। जीवनमें अगर नाकामयाबी हुई तो उन्हें इस बातका डर रहता है कि ऐसा होनेसे कुलकीर्तिमें कलंकका टीका लग जायगा, और अकेली यही एक बात उन्हें बुरे कर्मोंके करनेसे बारबार बचाती है। अपने कुलका इतिहास कैसे कैसे सत्कार्योंसे भरा हुआ है और ऐसे अच्छे कुलमें हमने जन्म पाया है, ये विचार प्रयत्नशील पुरुषोंके मार्गकी बाधायें दूर करनेमें बड़ी मदद देते हैं।

दिनका बहुत थोड़ा समय मैं स्कूलमें दे सकता था और मेरी हाज़िरी भी वक्त पर न होने पाती थी। कुछ ही दिनों बाद मेरा दिनका स्कूल जाना बन्द हो गया, और सारा समय फिर काम करनेमें बीतने लगा। मैं फिर नाइट (रात) स्कूलमें भरती हुआ। सच पूछिए तो दिनमें काम कर

चुकने पर रातकी पढ़ाईसे ही मुझे जो कुछ शिक्षा प्राप्त हुई सो हुई । मैंने बहुत कोशिश की कि कोई अच्छे मास्टर मिलें; पर अच्छे मास्टरका मिलना बड़ा ही मुश्किल था । कभी कभी तो यहाँ तक नौबत आई है कि रातको पढ़ानेवाले कोई मास्टर मिले भी, तो उनके इल्मकी पहुँच मेरे ही जितनी देख, मुझे ऐसी नाउम्मेदी हुआ करती थी कि कुछ कह नहीं सकता । कई बार मुझे रातका सबक सुनानेके लिए मीलों दौड़ जाना पड़ता था । पर मुझे अध्यवसायमें दृढ़ विश्वास था । बीसों बार मुझे ऐसी निराशा और उदासी हुई कि जिसकी हद नहीं; पर मैंने कभी अपने इस निश्चयको टलने न दिया कि चाहे कुछ भी हो, मैं शिक्षा अवश्य प्राप्त करूँगा ।

जब हम लोग वेस्ट वर्जीनियामें आये तब बड़ी ही गरीबीमें दिन बिताते थे । पर इस हालतमें भी मेरी माने एक अनाथ बालकको अपने यहाँ रख लिया । ठीक वही मसल हुई कि " आप मियां माँगते द्वार खड़े दरवेश ! " आगे चल कर हम लोगोंने इसका नाम जेम्स बी. वाशिंगटन रक्खा । जबसे हमारे यहाँ वह आया तबसे परिवारका ही एक आदमी होकर रहने लगा ।

कुछ दिन नमककी भट्टी पर काम करनेके बाद मुझे एक कोयलेकी खानमें काम करना पड़ा । उस खानसे कलके लिए कोयला जुटाया जाता था । खानमें काम करनेसे मैं बहुत डरता था । इस कामसे तन्दुरुस्ती बिलकुल खराब हो जाती है । दिन भर काम करते करते इतना मैल बदन पर जम जाता था कि वह सहजमें साफ़ न हो सकता था । इसके सिवाय खानसे कोयले खोदे जानेका स्थान एक मील दूर था—सुरंगके अंधेरेमें एक मील चलने पर तो कोयलेसे भेंट होती थी । वहाँ कोयलेकी कई गुफायें थीं जिनको पहचानना बड़ा कठिन था । इसलिए अँधेरेमें बहुत भटकना पड़ता था । राह अकसर

भूल जाती थी और तब मेरी छाती धड़धड़ाने लगती और कहीं चिराग भी गुल हो गया और मेरे पास दियासलाई भी न हुई तो मेरे देवता ही कूच कर जाते। जब तक कोई आदमी चिराग लेकर वहाँ न आता तबतक उस अंधेरी भूलभुलैयासे मेरा छुटकारा न होने पाता था। मौत तो हर दम सिर पर सवार रहती थी। कभी कभी कोयलेकी चट्टान धँस जानेसे बहुतोंकी जान जाती थी। कभी सुरंगकी बारूद समयके पहले ही भभक उठनेसे बहुतेरे लोग बेमौत मर जाते थे।

उन दिनों अच्छे अच्छे होनहार बालक खानों पर काम करनेके लिए भेज दिये जाते थे; पर उनकी शिक्षाका कोई प्रबन्ध न किया जाता था और प्रायः इसका ऐसा बुरा परिणाम होता था कि जो लड़के बचपन-से ही खानोंका काम करते थे वे खानोंका ही काम करने लायक रह जाते थे—न उनके शरीरकी कभी उन्नति होती और न मनकी ही। वे खानके ही आदी हो जाते और उनकी सारी जिन्दगी इसी काममें बीतती थी।

उस समय और उसके बाद युवा होने पर मैं प्रायः गोरे लड़कोंकी मनोवृत्तियों और महत्त्वाकांक्षाओंको मन-ही-मन समझनेकी कोशिश किया करता था और देखता था कि उनकी उन्नतिके लिए कोई कार्य-क्षेत्र रुका नहीं है और वे जो चाहें विचार सकते हैं जो चाहें कर सकते हैं। वे कांग्रेसके सभासद हो सकते थे, किसी प्रदेशके गवर्नर हो सकते थे, बिशप (मुख्य पादरी) हो सकते थे और संयुक्तराज्यके कर्ता धर्ता भी हो सकते थे। और यह सब उनके जन्म और वर्णकी बदौलत था। इनसे मैं ईर्ष्या किया करता था और सोचता था कि अगर मैं भी इनकी तरह एक गोरा लड़का होता तो बहुत अच्छा होता। उस हालतमें मैं क्या क्या करता, बिलकुल नीचेसे आरंभ कर किस तरह सबसे ऊँचे स्थान पर पहुँच जाता इन बातोंको मैं अकसर सोचा करता था।

पर जैसे जैसे मेरी उम्र बढ़ती गई वैसे वैसे गोरे लड़कोंकी तरह होनेकी इच्छा कम होने लगी। मैं अब जानने लगा कि किसी मनुष्यके यशका मूल्य इस बातसे नहीं कूता जा सकता कि उसने अपने जीवनमें कौनसा पद प्राप्त कर लिया है; किन्तु यश प्राप्त करनेके मार्गमें उसने कितनी विघ्नबाधाओंसे लड़झगड़कर उन्हें पददलित कर डाला है, इसीसे उसके यशका मूल्य ठहराया जा सकता है। अर्थात् जिसने अपनी ज़िन्दगीमें जितनी ही अधिक विघ्नबाधाओंसे डट कर सामना किया हो उसे उतना ही अधिक पुरुषार्थी समझना चाहिए। इस दृष्टिसे विचार करने पर मेरा यह निश्चय होता है कि एक नीग्रो होना ही संसार-यात्रामें विजय पानेके लिए सबसे अच्छा स्थान है। नीग्रो जाति किसीको प्यारी नहीं, इस लिए जीवनके आरंभसे ही विघ्नबाधाओंको हटानेका काम नीग्रो बालक पर आ पड़ता है, अर्थात् उसकी विजययात्रा जन्मसे ही आरंभ होती है। नीग्रो युवाओंको विख्यात होनेके लिए गोरे युवकोंसे बहुत अधिक प्रयत्न करने पड़ते हैं, इसमें सन्देह नहीं; पर इस कठिन और असाधारण विकट मार्गसे जानेवाले नीग्रो युवाओंमें जो आत्मबल, आत्मविश्वास और योग्यता आ जाती है वह सुगमतासे अपने गौर वर्णकी बदौलत ही बड़प्पन पानेवालोंमें कदापि नहीं आ सकती; और इस लिए नीग्रो होना भी एक बड़ा भारी लाभ है।

चाहे जिस दृष्टिसे देखा जाय, दूसरी किसी भी उच्च जातिका मनुष्य होनेकी अपेक्षा, जिस जातिमें मैं पैदा हुआ हूँ उसी जातिका मैं एक मनुष्य रहूँ, अब मुझे यही इष्ट जान पड़ता है। मुझे यह सुन कर बड़ा दुःख हुआ है कि एक विशिष्ट जातिके कुछ लोगोंने राष्ट्रीय अधिकारका दावा किया है। इन लोगों पर मुझे बड़ी दया आती है; क्योंकि उच्च जाति या वर्ण होनेसे क्या होता है ? जब तक योग्यता न हो तब तक, उन्नति हो ही नहीं सकती, और मेरा यह विश्वास है कि किसीका वर्ण चाहे कैसा ही

हो, अत्यन्त हीन जातिमें भी क्यों न पैदा हुआ हो वह अपनी योग्यतासे अवश्य आगे निकल जायगा। योग्यता और श्रेष्ठता—फिर वह किसी रंगके चमड़ेमें हो—अन्तमें पहचानी जाती है और उसीका बोलबाला होता है। यह सनातन नियम है और सारे संसारमें इसका अमल होता है। अत्याचारसे इस समय जो जातियाँ पीड़ित हैं, अन्तमें उनकी विजय होगी। इस सनातन सिद्धान्त पर भरोसा करके उन्हें धीरताके साथ अपना बल और योग्यता बढ़ानेकी चेष्टा करनी चाहिए। मैं यह इस लिए नहीं कहता कि आप लोग मेरी ओर देखें, बल्कि मैं चाहता हूँ कि मुझे जिस जातिमें पैदा होने पर फ़ख़ (गर्व) है उस जातिकी ओर आप ज़रा ध्यान दें।

तीसरा परिच्छेद ।

शिक्षाके लिए प्रयत्न ।

एक रोज़ मैं कोयलेकी खानमें काम कर रहा था और थोड़ी दूर पर दो मज़दूर कुछ बातचीत कर रहे थे। उससे मुझे पता लगा कि काले नीग्रो लोगोंके लिए एक बड़ा भारी स्कूल खुलनेवाला है। एक छोटीसी पाठशाला तो हमारे गाँवमें भी थी; पर एक बड़ा स्कूल या कालेज खुलनेका समाचार यह पहला ही सुना गया।

कोयलेकी खानमें ये बातें हो रही थीं, अर्थात् उन मज़दूरोंको यह मालूम नहीं था कि उनकी बातें एक तीसरा आदमी भी सुन रहा है। अँधेरेमें किसको दिखाई दे ? मैं और भी पास आ गया और उनकी बातें सुनने लगा। मैंने एकको दूसरेसे यह कहते हुए सुना कि स्कूल स्थापित हो चुका है और यही नहीं, बल्कि चतुर विद्यार्थी कुछ काम करके अपने उदरनिर्वाहका भी प्रबन्ध कर सकते हैं और इसके साथ उन्हें कोई धन्धा भी सिखाया जानेवाला है।

वे उस स्कूलकी ज्यों ज्यों कैफियत बयान करने लगे त्यों त्यों, मेरी यह धारणा होती चली कि अगर संसारमें कोई महत्त्वका स्थान है तो वह स्कूल ही है ! उस स्कूलका नाम भी मैंने सुना और मन-ही-मन कहा कि हैम्पटन नार्मल एण्ड एग्रिकलचरल इन्स्टिट्यूट (यह स्कूलका नाम था) में जो आनन्द है वह स्वर्गके सुखको भी मात करता है ! मैं अभी यह नहीं जानता था कि यह स्कूल कहाँ है, यहाँसे कितनी दूर है, और वहाँ कैसे कोई जा सकता है; तो भी मैंने तुरत वहाँ जाना ठान लिया। एक हैम्पटनकी धुन ही मुझ पर सवार हो गई। रात दिन मैं वहींके स्वप्न देखने लगा।

कुछ महीने और मैं खानमें काम करता रहा। इसी बीच मैंने सुना कि नमककी भट्टी और कोयलेकी खानके मालिक जनरल लेविस रफनरके यहाँ (घर पर) एक जगह खाली हुई है। जनरल रफनरकी पत्नी उत्तर अमेरिकाके वरमाँट स्थानकी रहनेवाली थीं और उनका नाम वायोला रफनर था। उनके बारेमें यह बात मशहूर थी कि वे अपने मातहतके लड़कोंसे बड़ा कड़ा ब्योहार रखती हैं। यह कड़ाई देखकर दो तीन महीनेसे ज़ियादा कोई नौकर वहाँ टिकता न था। सब लोग इसी एक सबबसे उनकी नौकरी छोड़ दिया करते थे। मैंने सोचा कि कोयलेकी खानमें काम करनेसे तो वहाँ काम करना कुछ आसान ज़रूर होगा; इसलिए उनके यहाँ नौकरी करना मैंने ठान लिया; और मेरी माने भी उस जगहके लिए मेरी तरफसे कोशिश की। मैं पाँच डॉलर * मासिक वेतन पर वहाँ नियत किया गया।

रफनर बीबीकी कड़ाईके बारेमें मैं इतना सुन चुका था कि उन्हें मिलते मुझे डर लगता था; और जब मैं उनके सामने आया तब तो मेरी देहमें कँपकँपी ही भर गई। तो भी कुछ सप्ताह काम कर चुकने पर उनका मुझे अच्छी तरह परिचय हो गया। सबसे पहले मैंने यह जाना कि हरेक चीज़ साफ़ और सुथरी रखनी चाहिए और सब काम ठिकानेसे और ढंगके साथ होने चाहिए; उसी तरह हर काम ईमान और सफ़ाईके साथ होना चाहिए; तब तो वे प्रसन्न रहती हैं, और नहीं तो, उनका दिमाग़ बिगड़ जाता है। वे चाहती थीं कि कोई बेगारी या टालमटोल न करे, घरकी चीज़ें बे-करीनें रक्खी न हों; तात्पर्य, सचाई और सफ़ाईको वे बहुत पसन्द करती थीं। और उनकी यह पसन्दगी कुछ बुरी न थी।

हैम्पटनको जानेसे पहले, मैंने कबतक रफनर बीबीके यहाँ काम

* एक डॉलर=तीन रुपये।

किया सो मुझे ठीक याद नहीं; तो भी मैं समझता हूँ कि साल डेढ़ साल मैंने उनके साथ बिताया होगा। यह तो मैं कई बार कह चुका हूँ और फिर भी कहता हूँ कि रफनर बीबीके यहाँ मैंने जो तालीम पाई वह ज़िन्दगी भर मेरे काम आई। अब भी अगर मैं कहीं काग़ज़-के टुकड़ोंको फैले हुए देखता हूँ तो झट बटोर लेता हूँ; आँगनमें कूड़ा करकट देखता हूँ तो चट उसे साफ़ करता हूँ; छड़दीवारके छड़ अगर निकल पड़े हों तो फौरन उन्हें जहाँके तहाँ लगा देता हूँ। गन्दी जग-होंको मैं देख नहीं सकता, बे-बटनका कोट मुझे अच्छा नहीं लगता, किसीके कपड़े पर अगर तेलके धब्बे पड़े हुए देखता हूँ तो मेरा जी मच-लाता है और मैं लोगोंको ये बातें मौके मौके पर बतला भी देता हूँ।

शुरू शुरूमें मैं रफनर बीबीसे डरता था, पर वह समय भी जल्दी आ गया जब, मैं उन्हें अपना एक परम हितू समझने लगा। जब उन्हें भी मुझ पर विश्वास हो गया तब, वे मुझे बहुत प्यार करने लगीं। जाड़ेके मौसिममें उन्होंने मुझे एक घंटे भर स्कूलमें जाकर पढ़नेकी इज़ा-ज़त दे दी। पर मैंने ज़ियादातर रातहीको पढ़ा। पढ़ानेके लिए कुछ रुपये खर्च करनेसे कोई न कोई मास्टर मिल जाते थे। रफनर बीबी मुझे शिक्षा पानेके लिए बराबर उत्साहित करती थीं। उनके यहाँ रहते हुए ही मैंने अपनी पहली लाइब्रेरी जुटाना शुरू किया। एक लकड़ीका सन्दूक मुझे मिल गया; उसके एक तरफ़का हिस्सा मैंने काट डाला और उसीकी चिप्पियाँ बना कर उस सन्दूकमें लगा दीं। अब जो कोई पुस्तक मुझे मिलती उसे मैं इसीमें रखने लगा, और इसीको मैं अपनी लाइब्रेरी कहा करता था।

इस तरह पर रफनर बीबीके यहाँ बड़े आनन्दसे दिन कटते थे। तो भी हैम्पटन जानेकी धुन अब भी सवार थी। हैम्पटन किस तरफ़ है और वहाँ जानेमें कितना खर्च लगेगा सो भी मुझे मालूम नहीं था। पर

१८७२ की बरसातमें मैंने वहाँ जानेकी चेष्टा की। इस कार्यमें सिवा मेरी माताके, और किसीकी भी मेरे साथ सहानुभूति न थी। मेरी माको भी थोड़ी देरके लिए मेरा यह प्रयत्न मृगजलका पीछा करना ही जान पड़ा। वह कुछ दुखित भी हुई; पर कोई न कोई सूरत निकाल कर मैंने उससे जानेकी आज्ञा ले ली। अबतक मैंने जो कुछ कमाई की थी उसमेंसे कुछ ही डालर मेरे पास रह गये थे, बाकी सब मेरे बापने और परिवारके और लोगोंने खर्च कर डाले थे। अब मुझे कपड़े खरीदने थे; राहका खर्च चलाना था; और पास तो कुछ ही रुपये थे। मेरे भाई जानने भर सक मेरी मदत की; पर वह कोई बड़ी भारी मदद नहीं थी। एक तो उसे खानमें बहुत वेतन मिलता नहीं था, और जो कुछ मिलता था, वह घरमें खर्च हो जाता था।

मैं जब हैम्पटन जानेकी तैयारी करने लगा तब बूढ़े नीग्रो लोगोंने बड़ी ममता दिखाई और ऐसा प्यार किया कि मैं गद्गद हो गया। इन लोगोंकी जवानी गुलामीमें बीती थी; इन्हें यह आशा नहीं थी कि हमारी जातिका कोई होनहार युवक छात्रालयमें पढ़नेके लिए जायगा। इन बूढ़े लोगोंमेंसे किसीने मुझे निकल (ढाई आने), किसीने पाव डालर (बारह आने) और किसीने रूमाल भेंट किया।

निदान वह दिन भी उदय हुआ और मैंने हैम्पटनके लिए प्रस्थान किया। जितने कपड़े मिल गये उतने एक थैलेमें भर लिये। इन दिनों मेरी माकी तबियत एकाएक खराब हो चली थी और वह दिनोंदिन कमज़ोर होती जाती थी। मुझे इस बातकी आशा न रही कि मैं उससे फिर मिल सकूँगा और इस कारण इस मातृवियोगसे मुझे दुःसह दुःख हुआ; परन्तु उसने बड़ी धीरतासे इस प्रसंगको झेल लिया। उन दिनों वेस्ट वर्जीनियासे ईस्ट वर्जीनिया तक बराबर रेलगाड़ीका रास्ता नहीं था। कुछ दूर रेलगाड़ी थी और बाकी सफ़र डाककी शिकरमसे तै करनी पड़ती थी।

माल्डनसे हैम्पटन अनुमान ५०० मील है । घरसे रवाना हुए अभी बहुत देर नहीं हुई थी । इतनेमें मुझे यह मालूम हुआ कि मेरे पास हैम्पटन तकका काफ़ी किराया नहीं है । राहमें जो एक घटना हो गई उसे तो मैं कभी न भूलूँगा । एक दिन दो पहरके वक्त एक पुरानी शिकरममें सवार हो मैं एक पहाड़ी रास्तेसे जा रहा था । शाम होते ही वह गाड़ी एक मामूली होटलके पास ठहर गई । उस गाड़ीमें, मेरे सिवाय और सब मुसफ़िर गोरे थे । मैंने समझा कि शिकरमके मुसाफिरोंके लिए ही यह होटल बना है । चमड़ेके रंगसे कितना उलट फेर हो जाता है, इसका मैंने विचार नहीं किया था । और सब मुसाफ़िरोंके टिकनेका जब प्रबन्ध हो गया और भोजनकी भी तैयारी हुई तब, मैं चुपकेसे वहाँके मैनेजरके पास गया । भोजन या आरामके खातिर एक पैसा भी मेरे पास नहीं था जो, मैं दे सक्ता पर किसी न किसी सूरतसे मैं मैनेजरको खुश करना चाहता था । बात यह थी कि इस मौसिममें वर्जीनियाके पहाड़ोंपर बड़ी ठंड पड़ती है, और इस लिए रातको ठंडसे बचने और आरामके लिए कोई ठिकाना मिलना ज़रूरी था । मैनेजरने मुझे देखकर ही—बिना कुछ पूछताँछ किए ही कोरा जबाब सुना दिया कि ' जाओ, तुम्हारे लिए यहाँ जगह नहीं है ! " अपने शरीरके रंगका मतलब समझनेका मेरे लिए यह पहला ही मौका था ! इधर उधर टहल कर मैंने बदनमें कुछ गरमी पैदा की, और किसी तरह वह रात बिताई । हैम्पटन जानेकी धुनमें मुझे उस होटलवालेसे बैर करनेका या असंतुष्ट होनेका वक्त ही न मिला ।

कुछ राह पैदल चला और कुछ गाड़ीवानकी दयासे गाड़ी पर सवार हो चला; और इस तरह बहुत दिनों बाद वर्जीनियाके रिचमंड शहरमें आ पहुँचा । यहाँसे अब हैम्पटन ८२ मील था । आधी रात-का वक्त था; मार्गके परिश्रमसे शरीरकी नस नस ढीली हो गई थी; भूखकी ज्वाला पेटमें धधक रही थी; और ऐसे समय रिचमंड नगरमें

पहुँचा । आज तक मैंने कोई बड़ा शहर नहीं देखा था और इससे मेरी मुसीबत और भी बढ़ी । मेरे पास खर्चके लिए एक दमड़ी भी न थी; किसीसे जान न पहचान; शहरके रास्ते भी कभी आँखों न देखे थे । कहाँ जाऊँ, क्या करूँ, कुछ समझमें न आता था । कई लोगोंसे मैंने गिड़गिड़ाकर कहा, ‘ भाई ! कहीं रहनेका ठिकाना हो तो बताओ;’ पर बिना दामके कोई बात न करता था और दामके नाम मेरे पास एक फूटी कौड़ी भी न थी ! लाचार मैं राहमें ही चहलकदमी करने लगा । कई दूकानें मुझे देख पड़ीं । वहाँ खानेकी चीजें रक्खी हुई थीं और इस ढंगसे रक्खी थीं कि मन खानेको दौड़ जाय । उन चीजोंमेंसे मुझे उस समय अगर कोई एक भी भर पेट खानेको मिलती तो, आगे मुझे जो कुछ मिलनेवाला था वह सब दे देनेके लिए मैं तैयार हो जाता! परन्तु उस वक्त मुझे कुछ भी खानेको न मिला !

आधी रातके बाद भी बहुत देर तक शायद मैं वहाँ टहलता ही रहा । आखिर मैं इतना थक गया कि फिर एक कदम चलना मुश्किल हो गया । मैं थका, माँदा, भूखा, सब कुछ हुआ; पर एक बात नहीं हुई—मैंने हिम्मत न हारी ! टहलते टहलते मैं एक चबूतरेके पास आया और वहाँ कुछ ठहर गया । इधर उधर एक बार नजर दौड़ाकर कि कोई मुझे देखता तो नहीं है, मैं उस चबूतरेके नीचे आ गया, और कपड़ोंके थैलेको सिरहाने रख कर वहीं लेट गया । लोगोंके पैरोंकी आहट मुझे रात भर सुनाई देती रही । दूसरे दिन सबेरे बदनमें कुछ फुरती मालूम हुई; पर बहुत दिन हुए थे कि मैंने पेट भर खाया नहीं था जिससे बहुत तेज भूख लगी । जब पौ फटी और साफ़ साफ़ दिखने लगा तब, मैंने इधर उधर देखा तो पास ही एक बड़ा जहाज़ दिखाई दिया। उस परसे लोहा उतारा जा रहा था । मैं फ़ौरन उस जहाज़की तरफ़ चल पड़ा और खाना कमानेकी गरज़से जहाज़के कप्तानके पास जा कर

लोहा उतारनेकी इजाज़त माँगने लगा। उस गोरे दयालु कप्तानने मुझ पर रहम खाके इजाज़त देदी। भोजनके योग्य दाम कमानेके लिए मुझे बहुत देर तक काम करना पड़ा, और अब मुझे याद आता है कि उस वक्त जो भोजन मैंने किया उसका मज़ा ही कुछ और था!

मेरे कामसे कप्तान साहब इतने सन्तुष्ट हुए कि उन्होंने मुझसे कहा, 'अगर तुम चाहो तो, रोज़ काम किया करो और अपनी मजदूरी ले जाया करो।' यह काम मिलनेसे मैं भी खुश हुआ। कुछ दिन वहीं काम करता रहा। जो मज़दूरी मिलती उससे भोजनका खर्च चलाता था—पास कुछ जमा न कर सका। मैं हर बातमें किफ़ायत किया करता था जिससे शीघ्र ही हेम्पटन जा सकूँ। मेरे सोनेका ठिकाना वही चबूतरा था जहाँ पहले दिन सोया था। आगे कई वर्ष बाद रिचमंडके काले नीग्रो लोगोंने मेरा बड़ा स्वागत किया। स्वागतके लिए, दो हज़ार लोग इकट्ठे हुए थे, और स्वागतका स्थान उसी पुराने चबूतरेके पास ही था। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि लोगोंने हृदयसे और बड़े प्रेमसे मेरा स्वागत किया; पर मेरा मन उस वक्त भी उसी चबूतरे-वाली-पटरीहीकी तरफ़ दौड़ता था कि जहाँ पहले पहल मुझे पनाह मिली थी।

हैम्पटनको जाने योग्य राहखर्च जमा होते ही मैंने पहले उस दयालु गोरे कप्तानको धन्यवाद दिया और फिर हैम्पटनकी राह ली। राहमें कोई ऐसी वारदाद नहीं हुई जिसका उल्लेख किया जाय; मैं सही सलामत हैम्पटन जा पहुँचा, इस समय मेरे पास सिर्फ़ ५० सेंट (२५ आने) बचे थे और इसी रकमसे मैंने अपनी पढ़ाई शुरू की। हैम्पटनकी सफ़रमें कई बातें ऐसी कष्टप्रद हुईं कि जिनकी मुझे अबतक याद है; पर जब मैंने हैम्पटनमें आकर उस विद्यालयभवनके दर्शन किए तब मैंने समझा कि आज मेरे सब परिश्रम और कष्ट सफल हुए। विद्यालयके दर्शनसे मुझ पर जो असर

पड़ा उसका अन्दाज़ अगर विद्यालय बनानेके लिए दान देनेवाले लोग कर सकें तो, मैं समझता हूं कि वे ऐसे दान देनेमें और भी उत्साहित होंगे।

विद्यालयको देखकर मैंने सोचा कि दुनियामें यही सबसे बड़ी और सुन्दर हवेली है इसके दर्शनसे मुझमें नवीन चैतन्य भर गया। यहाँसे मेरा नया जीवन आरम्भ हुआ। अब मेरे लिए जीवनका अर्थ भी नया हो गया। मेरे लिए वह स्वर्ग ही बन गया और मैंने यह निश्चय किया कि संसारका उपकार करनेकी योग्यता प्राप्त करनेमें यहाँसे जो कुछ मिल सकता है उसे लेनेमें, मैं कोई बात उठा न रक्खूँगा।

हैम्पटनके विद्यालयमें पहुँच कर, मैं वहाँकी मुख्य अध्यापिकाके पास गया और उनसे मैंने प्रार्थना की कि मुझे किसी दर्जेमें भरती कर लीजिए। बहुत दिनोंसे न मुझे अच्छा खाना मिला था, न मैं कपड़े ही बदल सका था; नहाने तककी सुबिधा नहीं हुई थी। ऐसी हालतमें मैं उनके पास गया और उनके चेहरेसे ही मालूम किया कि मुझे भरती करनेके बारेमें उनके मनमें कोई निश्चय नहीं होता है। मन-ही-मन मैंने यह भी विचार किया कि अगर ये मुझे कोई आवारा लड़का समझती हों तो कोई ताज्जुब नहीं। कुछ देरतक उन्होंने मुझे न यह बतलाया कि मैं तुम्हें भरती किये लेती हूँ और न यही कि तुम भरती नहीं किये जाओगे—दोनोंमें से एक भी नहीं। मैं उनके पीछे पीछे चल कर उन्हें यह दिखलानेकी कोशिश, अपनी शक्तिभर कर रहा था कि मुझमें कहाँतक योग्यता है। बीचहीमें जब मैंने और विद्यार्थियोंको भरती करते हुए देखा तब मुझे बहुत ही दुःख हुआ; क्योंकि मुझे इस बातका दृढ़ विश्वास था कि अगर मुझे अपनी लियाकृत दिखलानेका मौका दिया जाय तो मैं इन लड़कोंसे किसी बातमें कम न रहूँगा।

कुछ घंटे बाद मुख्य अध्यापिकाने मुझसे कहा, "पासका कमरा झाड़ू दे

कर साफ़ करना होगा, झाड़ू लो और कूड़ा निकालकर बाहर फेंक दो।"
अब मैंने समझा कि यह मौका आया। मुझे अबतक कोई ऐसी आज्ञा नहीं मिली जिससे, मुझे इतना आनन्द हुआ हो! कूड़ा बटोर कर फेंक देनेका काम मैं बड़ी खूबीके साथ करता था–रफ़नर बीबीके यहाँ मुझे यह तालीम मिल चुकी थी।

मैंने उस रेसिटेशनरूममें–सबक सुनानेके कमरेमें–तीन बार झाड़ू दी। अनन्तर धूल झाड़नेका कपड़ा लेकर मैंने उस कमरेको तीन चार बार साफ़ किया। इसके अलावे हरेक चीज़को उठा कर उसके नीचेका गर्द दूर किया और कोने अतरे तकसे सब कमरा साफ और सुथरा करके रख दिया। कमरा साफ़ करनेके मेरे कामसे मुख्य अध्यापिका यदि प्रसन्न हुईं तो मेरी राह साफ़ होनेकी मुझे आशा थी, और अगर अप्रसन्न हुईं तो मैंने सोचा कि मेरे लिए कोई सहारा न रह जायगा। खैर, मैंने अध्यापिकासे जाकर कहा कि कमरा साफ़ कर चुका। वे उत्तर अमेरिकाकी रहनेवाली थीं और जानती थीं कि कहाँ कूड़ा जमा हुआ करता है। उन्होंने कमरेमें आकर फर्श और आलोंको देखा। फिर उन्होंने अपना रूमाल निकाल कर उसे खंभे, मेज़ और बेंच पर रगड़ा। फ़र्श या किसी लकड़ीकी चीज़ पर जब उन्हें एक भी कण धूलका नज़र न आया तब उन्होंने शान्त चित्तसे कहा, "मैं समझती हूँ कि तुम इस पाठशालामें भरती होनेके योग्य हो।"

बस, हो चुका मेरा काम! संसारके भाग्यशाली पुरुषोंमें मैं भी भरती हो गया! मेरा जीवन आज सफल हुआ! उस कमरेको झाड़ू देकर साफ़ करना, मेरे लिए, कालेजकी प्रवेशपरीक्षा थी और मेरा विश्वास है कि हारवर्ड अथवा येल विश्वविद्यालयकी प्रवेशपरीक्षा पास करनेवाले किसी युवकको मेरे जैसा आनन्द न हुआ होगा। इसके बाद मैंने कई परीक्षायें पास कीं, पर मैं यही समझता हूँ कि उन सब परीक्षाओंमें यही उत्तम हुई।

हैम्पटनके विद्यालयमें प्रवेश करते समय मुझे जो अनुभव हुआ उसे, मैंने यहाँ प्रकट किया है। ऐसा अनुभव शायद बिरलोंको ही प्राप्त हुआ होगा; परन्तु उस वक्त मुझे जिन कठिनाइयोंसे सामना करना पड़ा था वैसी कठिनाइयोसे मैं समझता हूँ कि बहुतोंको सामना करना पड़ा होगा—हैम्पटनके तथा दूसरे विद्यालयोंमें भरती होनेवाले सैकड़ों विद्यार्थियोंने मेरी ही जैसी कठिनाइयाँ भोगी होंगी। चाहे जो हो, उस समय शिक्षा प्राप्त करनेके लिए हमारी जातिके बहुतसे युवकोंने रकम कसी थी।

हैम्पटन विद्यालयसे उत्तीर्ण होनेमें उस कमरेकी सफ़ाईने मेरी बड़ी मदद की। मुख्य अध्यापिका मिस मेरी एफ. मैकींने मुझे दरवानकी जगह पर मुकर्रर किया और मैं बड़ी खुशीसे उस जगह पर तैनात हुआ; क्योंकि उस जगह पर काम करके मैं अपने भोजन लायक़ कमा सकता था। इस काममें मिहनत तो बहुत थी और कष्ट भी अनेक थे तो भी मैंने यह काम छोड़ा नहीं। मुझे कई कमरोंकी निगरानी करनी पड़ती थी और रातको कई घंटे इस कामको करनेके बाद आग सुलगाने और अपना सबक़ याद करनेके लिए सबेरे चार बजे फिर उठना पड़ता था। जबतक मैं हैम्पटनमें था तब तक और उसके बाद भी मुख्य अध्यापिका मिस मेरी एफ. मैकींने समय पड़ने पर मेरी बड़ी सहायता की है। उनकी सलाहसे मेरी हिम्मत बढ़ती थी और उनकी बातोंसे मुझमें बल आ जाता था।

हैम्पटन-विद्यालयके दर्शनसे मुझ पर कैसा अच्छा परिणाम हुआ उसका वर्णन तो मैं कर ही चुका हूँ; परन्तु जिसने मुझ पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और स्थिरस्थायी परिणाम किया उस पुरुषके विषयमें मैंने अबतक कुछ भी ज़िक्र नहीं किया। जिसकी मुलाकातको मैं एक बड़ी इज्जत समझता हूँ, वह एक अत्यन्त उदार और महात्मा पुरुष था। अब उसका स्वर्गवास हो गया है; पर उसकी आत्मा मेरे हृदयमन्दिरमें

विराज रही है और उसका नाम जनरल एस्. सी. आर्मस्ट्रांग, मेरी जिह्वाको अब भी पवित्र कर रहा है ।

मैं इस बातमें अपना सौभाग्य समझता हूँ कि यूरोप और अमेरिकाके सैकड़ों सच्छील पुरुषोंसे मेरी मुलाकात हुई; पर यह बात कहनेमें मैं ज़रा भी नहीं हिचकता कि मैंने अबतक जनरल आर्मस्ट्रांगका कोई नमूना न देखा । गुलामोंकी यमपुरी और कोयलेकी खानसे बचकर आये हुए मुझ जैसे नातजुर्बेकार (अनुभवहीन) को जनरल आर्मस्ट्रांग जैसे सत्पुरुषका समागम होना एक बड़े सम्मान और अधिकारकी बात थी । पहले पहल जब मैं उनके पास गया तो मेरा यह विश्वास हो गया कि ये पहुँचे हुए महात्मा हैं । उनके चेहरेसे और बात करनेके ढंगसे दैवी तेज टपक रहा था । जब मैं हैम्पटनमें आया तबसे उनके देहान्त तक, मुझे उनका सत्संग हुआ, और ज्यों ज्यों उनसे मेरा परिचय बढ़ता गया त्यों त्यों, उनके विषयमें मेरी श्रद्धा बढ़ती ही गई । हैम्पटनकी सारी इमारतों, विद्यालय, कक्षाओं, शिक्षकों और उद्योगोंसे जितने लाभ होते हैं वे अकेले जनरल आर्मस्ट्रांगके सत्संगसे प्राप्त हो सकते हैं । मेरा तो यह विश्वास है कि विद्यालयसे मिलनेवाली शिक्षासे कहीं अधिक अच्छी और उपकारी शिक्षा सत्संगसे प्राप्त होती है और ज्यों ज्यों मेरी उम्र ढलती जाती है त्यों त्यों मेरी यह धारणा दृढसे दृढतर होती जाती है कि पुस्तकों और मूल्यवान् सरंजामसे प्राप्त होनेवाली शिक्षा, सत्पुरुषोंके समागमसे प्राप्त होनेवाली शिक्षाके सामने कोई चीज़ ही नहीं है ! पुस्तकोंका अभ्यास करानेके बदले यदि हम लोगोंकी पाठशालाओंमें मनुष्यों और वस्तुओंका अभ्यास कराया जाय तो मैं समझता हूँ कि उससे कई गुना अधिक लाभ हो ।

जनरल आर्मस्ट्रांगने अपनी आयुके अन्तिम दो महीने मेरे टस्केजीके मकानमें बिताये। उस वक्त उन्हें लकवा मार गया था। उनसे बोला नहीं जाता था और शरीर बिलकुल सुन्न हो गया था । उनको इतनी तक-

लीफ़ थी तो भी—इस हालतमें भी, जिस कामको उन्होंने उठाया था उसके लिए, वे दिन रात प्रयत्न कर रहे थे। ऐसा अपने आपको भूल जानेवाला आदमी मैंने दूसरा नहीं देखा। मैं नहीं समझता कि स्वार्थने कभी उन्हें स्पर्श किया हो। हैम्पटन-विद्यालयके लिए काम करते हुए जो आनन्द उन्हें प्राप्त होता वही आनन्द, उन्हें दक्षिणके किसी भी परोपकारी कार्यमें सहायता करते हुए भी होता था। सिविल वारमें वे दक्षिणके गोरोंसे लड़ पड़े थे सही, पर उसके बाद उन गोरोंके बारेमें एक भी अपशब्द उनके मुँहसे निकलता मैंने नहीं सुना। इसके विपरीत इस बातका वे अवश्य विचार किया करते थे कि दक्षिणके गोरोंके लिए मैं क्या कर सकता हूँ।

हैम्पटनके विद्यार्थियों पर उनका जो प्रभाव था, अथवा उनके प्रति विद्यार्थियोंकी जो श्रद्धा थी, उसका वर्णन करना बड़ा ही कठिन काम है। उनके विद्यार्थी सचमुच ही उन्हें ईश्वरके समान मानते थे। वे जिस कामको उठा लेते थे उसे पूरा कर छोड़ते थे। उन्हें किसी काममें नाकामयाब (असफल) होते मैंने नहीं देखा। ऐसा भी कभी न हुआ कि उन्होंने किसीसे कोई प्रार्थना की हो और वह स्वीकृत न हुई हो। अलबामामें जब वे मेरे यहाँ मेहमान थे तब उन्हें लकवेकी बीमारी थी और इसलिए उन्हें पहियेदार कुर्सी पर बैठाके टहलाना पड़ता था। उस समयका ज़िक्र है कि एक रोज़ उनके एक पुराने शिष्यको उनकी कुर्सी एक ऊँची पहाड़ी पर ले जानी पड़ी थी और इस काममें उसको बहुत ही कष्ट और परिश्रम उठाना पड़ा था। किन्तु जब कुर्सी पहाड़ीकी चोटी पर पहुँच गई तब, उस शिष्यने प्रसन्नतासे कहा,—“ मुझे इस बातका बड़ा हर्ष है कि जनरल साहबकी मृत्युके पहले मुझे उनके लिए एक ऐसा कठिन काम करनेका अवसर मिला।”

जिस समय मैं हैम्पटनके विद्यालयमें पढ़ता था उस समय वहाँका

छात्रालय (बोर्डिंग हाउस) इतना भर गया था कि नवीन छात्रोंको वहाँ कदम रखनेकी जगह नहीं थी। यह असुविधा दूर करनेके लिए जनरल साहबने यह निश्चय किया कि कुछ नये खेमे गाड़े जायँ और उनसे कोठरियोंका काम लिया जाय। विद्यार्थियोंमें यह बात फैल गई कि गरमी भर, पुराने विद्यार्थियोंमेंसे यदि कुछ विद्यार्थी खेमोमें डेरा डालेंगे तो जनरल आर्मस्ट्रांग प्रसन्न होंगे। इस खबरको सुनते ही प्रायः सबके सब विद्यार्थी खेमोंमें जा रहनेके लिए तैयार हो गये!

इन्हीं विद्यार्थियोंमें मैं भी एक था। उस साल बहुत ही तेज गरमी पड़ी थी और उन खेमोंमें हम लोगोंके प्राण छटपटाते थे। हम लोगोंको किस कद्र तकलीफ़ हुई सो जनरल आर्मस्ट्रांग कुछ भी नहीं जानते थे; क्योंकि हम लोगोंने कभी इस बातकी शिकायत ही नहीं की। जनरल आर्मस्ट्रांग हम लोगोंसे प्रसन्न हैं, एक बात; और दूसरी बात यह कि हम लोगों द्वारा इस प्रकारसे नये विद्यार्थियोंकी शिक्षाका प्रबन्ध होता है—इन दो बातोंसे बढ़कर आनन्द देनेवाली तीसरी बात ही कौनसी है? कई बार जब रातके वक्त ठंडी ठंडी हवासे बदन ठिठुरने लगता, हवाके झोकोंसे खेमे ही उड़ जाते, और हम लोगोंको सारी रात उस ठंडमें काँपते हुए बितानी पड़ती थी तब जनरल आर्मस्ट्रांग तड़के ही खेमोंकी ओर आते और उनके आनन्द देनेवाले, उत्साह बढ़ानेवाले और स्नेहभरे शब्दोंको सुनते ही हम लोग सारे क्लेश भूल जाते थे।

मैंने जनरल आर्मस्ट्रांगके प्रति अपनी भक्ति प्रकट की है, और मुझे यह भी कहना चाहिए कि प्रभु ईसा मसीहके समान जिन उदार स्त्री पुरुषोंने नीग्रो पाठशालाओंमें पढ़ानेका भार अपने सिर उठाया था उन्हींमें, ये भी एक दृष्टान्तस्वरूप पुरुष थे। नीग्रो पाठशालाओंमें जिन स्त्रीपुरुषोंने पढ़ानेका काम उठाया था उनसे, अधिक अच्छे, पवित्र, शीलवान् और स्वार्थत्यागी स्त्री-पुरुष संसारके इतिहासमें ढूँढ़े न मिलेंगे।

हैम्पटनमें रहते हुए मैंने कई नई बातें सीखीं। मैं तो यही सोचता था कि किसी नई दुनियामें आ गया हूँ। ठीक समय पर भोजन करना, भोजनके वक्त मेज़ पर कपड़ा बिछाना, मुँह पोंछनेके लिए रूमाल काममें लाना, नहानेके लिए टब और दँतवनके लिए ब्रश-से काम लेना, गद्दे पर साफ़ चादर बिछाना, इत्यादि बातें ऐसी थीं जो मेरे बापदादोंके भी वर्तावमें कभी न आई थीं।

हैम्पटन-विद्यालयमें मैंने यह जाना कि नहानेसे क्या लाभ है और उसका कितना महत्त्व है। स्नान शरीरको नीरोग बना देता है, यही नहीं किन्तु आत्माभिमान और सद्गुणोंकी वृद्धि करता है। स्नानके इन लाभोंको मैंने यहीं जाना। हैम्पटनसे विदा होनेपर दक्षिणमें और अन्यत्र भी जहाँ जहाँकी मैंने यात्रा की है वहाँ वहाँ नित्य स्नान करनेका नियम जारी रक्खा है। कभी कभी मुझे ऐसे घरोंमें रहना पड़ा है कि जहाँ सिर्फ़ एक ही कोठरी है और उसमें बहुतसे लोग रहते हैं; ऐसी जगहोंमें नहाना कठिन होता था। तब मैं जंगलमें जाकर किसी नदीनालेमें स्नान कर आता था। हरेक घरमें स्नानका कोई प्रबन्ध अवश्य होना चाहिए, यह बात मैंने अपने जात भाइयोंको बार बार बतलाई है।

मैं जब हैम्पटेनमें था तब कुछ दिनों तक मेरे पास एक ही जोड़ा मोजे थे। ये जब मैले हो जाते तब रातको मैं उन्हें धोता था और दूसरे दिन पहननेकी गरज़से आग पर सुखा लिया करता था।

हैम्पटनमें मेरे भोजनका खर्च मासिक १० डालर था। इसके बारेमें यह तै हुआ था कि कुछ रकम तो मैं नक़द दूँ और बाकी मेरे काममें समझ ली जाया करे। पर जब पहले पहल मैं यहाँ आया तो मेरे पास, मैं बतला ही चुका हूँ कि ५० सेंट थे। मेरे भाई जानने कुछ रुपये भेज दिये थे; पर तो भी मेरे पास नक़द देनेके लिए काफ़ी

खर्च नहीं था । इस लिए मैंने दरवानीका काम ऐसा अच्छा दिखलानेका संकल्प किया कि अधिकारियोंको मेरे कामकी जरूरत जान पड़े । मैं अपना काम इस खूबीसे करने लगा कि मुझे जल्द ही यह सूचना दी गई कि तुम्हारे काम पर तुम्हारा भोजन-खर्च माफ कर दिया जायगा । शिक्षाका खर्च वार्षिक ७० डालर था, और यह रकम देना मेरे सामर्थ्यके बाहरका काम था । मुझे भोजनखर्चके अलावे यदि ये ७० डालर और भी देने पड़ते तो मुझे वह छात्रालय ही छोड़ देना पड़ता। जबतक मैं हैम्पटनमें था तबतक मेरी पढ़ाईका खर्च जनरल आर्मस्ट्रांग मुझपर दया करके एक रईस मि. एच. ग्रिफीट्स मार्गनसे दिला दिया करते थे । हैम्पटनकी पढ़ाई समाप्त होने पर और अपने जीवनकार्यमें हाथ लगा देने पर मैं कई बार मि. मार्गनसे मिला हूँ ।

हैम्पटनमें आ जाने पर कुछ ही दिनोंमें पुस्तकों और कपड़ोंकी मुझे बड़ी असुविधा होने लगी । एक असुविधाको तो मैंने किसी तरह उड़ा दिया, याने किसी दूसरे लड़केसे पुस्तकें मँगनी माँगकर पढ़ लेता था । पर कपड़ोंके लिए क्या करता ? मेरे पास कपड़ोंकी कमी थी और जो कपड़े थे भी, वे मेरे उस छोटेसे थैलेमें थे । जनरल आर्मस्ट्रांग सब लड़कोंको एक कतारमें खड़े कर देखा करते थे । यह देखकर तो मेरी चिन्ता और भी बढ़ी । जूते ब्रश वगैरह देकर बिलकुल साफ रखने पड़ते थे, कोटके बटन टूटे हुए न हों, और कपड़ों पर तेलके दाग रहने न पावें—यह उनकी सख्त ताकीद थी । अब मैं बड़ी आफ़तमें फँसा; क्योंकि मेरे पास एक ही सेट कपड़े थे और उन्हीं कपड़ोंको पहने मैं दिन भर सब काम करता था । अब साफ़ कपड़े लाऊँ तो कहाँसे लाऊँ ? पढ़नेको मैं बड़ी चिन्तापूर्वक पढ़ता था और मेरी पढ़ाई देखकर मेरे मास्टर भी मुझसे प्रसन्न थे; पर कपड़ोंके लिए लाचार था । अन्तमें भगवानको दया आई और मुझे कुछ कपड़े मिल गये । मेरे शिक्षकोंको

ही इस बातकी चिन्ता हुई कि इसे कपड़े दिला देने चाहिए। इसी समय उत्तर प्रान्तसे कपड़ोंकी कई पेटियाँ आईं। उनमेंसे कुछ पुराने कपड़े मुझे दिला दिये गये। इन कपड़ोंने सैकड़ों अनाथ, पर योग्य विद्यार्थियोंका बड़ा उपकार किया। मैं समझता हूँ कि अगर ये कपड़े मुझे न मिलते तो हैम्पटनमें शायद ही मेरा निर्वाह हो सकता।

हैम्पटन जानेसे पूर्व, मुझे याद नहीं आता कि मैं कभी दो चादरोंवाले बिछौने पर भी सोया था। उन दिनों हैम्पटनके विद्यालयमें जगह बहुत थोड़ी थी। मेरे कमरेमें मेरे सिवाय और सात लड़के थे। इनमेंसे बहुतेरे वहाँ मुद्दतके थे। पहले पहल तो चादरोंका गोरखधन्धा मेरी समझमें ही न आया। पहली रातको तो मैं उन दोनों चादरोंके बीचमें सोया और दूसरी रातको उन दोनोंके ऊपर सोया! फिर और लड़कोंसे मैंने जान लिया कि चादरोंको किस तरह काममें लाना चाहिए, और फिर दूसरोंको भी उनका उपयोग बतलाने लगा।

हैम्पटनमें जितने विद्यार्थी थे उन सबसे मैं छोटा था। बहुतसे विद्यार्थी दाढ़ी मोछवाले भी थे। कई स्त्रियाँ भी थीं। चालीस चालीस वर्षके भी कुछ विद्यार्थी थे। विद्यार्थी और विद्यार्थिनी मिला कर, उस समय मेरे सहपाठियोंकी संख्या ३००।४०० थी। ये सब शिक्षा प्राप्त करनेके लिए दिनरात परिश्रम करते थे। इनका एक एक मिनिट काममें या लिखने पढ़नेमें बीतता था। इन लोगोंको मालूम हो गया था कि संसारमें सुखी और कृतकार्य होनेके लिए शिक्षाकी बड़ी भारी ज़रूरत होती है। कुछ विद्यार्थी तो इतने बूढ़े थे कि वे अपनी कक्षाकी पुस्तकें भी बड़ी कठिनाईसे समझते थे और उनकी विद्यालाभकी चेष्टा देखकर औरोंको दया आती थी! उन्होंने अपनी प्रीति और आस्थासे पुस्तकसम्बन्धी ज्ञानके अभावकी पूर्ति की। उनमेंसे बहुतेरे मेरे जैसे ही कंगाल थे। उन्हें केवल पुस्तकोंसे ही नहीं, दरिद्रतासे भी जूझना पड़ता था। जिन

चीजोंके बिना किसीका काम नहीं चल सकता ऐसी चीजें भी, उनके पास नहीं थीं। कितनोंको अपने वृद्ध मातापिताओंके भोजन वस्त्रोंका प्रबन्ध करना पड़ता था और बहुतेरोंको अपने परिवारकी परवरिश करनी पड़ती थी।

अपने गाँवके लोगोंकी दुर्दशा देखकर इन विद्यार्थियोंके हृदय पिघल रहे थे। ये चाहते थे कि हमारे हाथों हमारे भाइयोंका कुछ कल्याण हो। इसके लिए योग्यता और अधिकार प्राप्त करनेका इन्होंने संकल्प किया था। किसीको भी अपनी फ़िक्र नहीं थी। विद्यालयके शिक्षक और नौकरचाकर असाधारण मनुष्य थे। मनुष्य नहीं, उनको देवता कहना चाहिए! वे विद्यार्थियोंके लिए रात दिन परिश्रम करते थे। उन्हें तो विद्यार्थियोंकी सहायता करनेहीमें—फिर वह किसी तरहकी क्यों न हो— सुख मिलता था। सिविल वारके बाद उत्तर अमेरिकाके गोरे शिक्षकोंने नीग्रो लोगोंकी शिक्षाके संबंधमें जो काम किया है वह, इतिहासके पृष्ठों पर सुनहले अक्षरोंसे लिखा जाने योग्य है। इसमें सन्देह नहीं कि दाक्षिण अमेरिकाके लोग भी शीघ्र ही इस कामसे परिचय पा जायँगे और उन्हें भी इसका महत्त्व मालूम होगा।

चौथा परिच्छेद ।
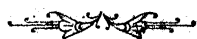
असहायोंकी सहायता ।
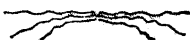
हैम्पटनमें साल भर खूब पढ़ाई हुई। इसके बाद ही एक नई मुश्किलीसे सामना पड़ा। छुट्टीका समय आया और सब विद्यार्थी अपने अपने घर जानेकी तैयारी करने लगे। छुट्टियोंमें प्रायः सभी विद्यार्थी अपने घर चले जाते थे; वहाँ कोई रहने नहीं पाता था। किसी कारणवश कुछ विद्यार्थी न जा सकते तो उन्हें विद्यालयके अधिकारियोंसे वहाँ रहनेकी इजाज़त लेनी पड़ती थी जो बड़ी कठिनाईसे मिलती थी। जब सब लोग तैयारी करने लगे तब, मैं भी घर जानेके लिए तरसने लगा। पर मेरे पास क्या घर और क्या बाहर, कहीं जानेके लिए दाम ही न थे।

आखिर एक तदबीर सूझी। मुझे कहींसे एक पुराना कोट मिल गया। मुझे वह बड़ा कीमती मालूम होता था। राहखर्चके लिए मैं उसे बेचनेके लिए तैयार हुआ। मेरी प्रकृतिमें कुछ अभिमान भी था—अभिमान क्या था, लड़कई थी और इसलिए मैं अपने सहपाठियोंसे अपने खर्चकी तंगी सदा छिपाये रहता था—मैंने कभी उनपर यह बात ज़ाहिर न होने दी कि कहीं सैर करने जानेके लिए मेरे पास खर्च नहीं है। हैम्पटन गाँवके कुछ लोगोंको मैंने बतलाया कि मुझे एक कोट बेचना है। बड़ी मुश्किलसे एक काला मनुष्य कोट देखनेके लिए मेरे स्थान पर आनेको तैयार हुआ। इससे मुझे कुछ अशा बँध गई। दूसरे दिन सबेरे ठीक समय पर वह आ पहुँचा। उसने एक बार कोटको अच्छी तरह देखा और पूछा, ‘ बतलाओ, कितनेमें दोगे ? ’ इसपर मैंने जवाब दिया कि ‘ इसकी कीमत तीन डालरसे क्या कम होगी। ’ कोट उसे जँचा

और मैंने समझा कि कीमत भी उसे वाजिब मालूम हुई है। पर वह था बड़ा धूर्त; उसने कहा,—'अच्छा, यह कोट मैं ले लेता हूँ और नकद ५ सेंट (ढाई आने) भी दिये देता हूँ, बाकी दाम पीछे दे दूँगा!' उस वक्त मेरे दिलका जो हाल हुआ उसका अन्दाज़ करना कुछ कठिन नहीं है।

इस तरह जब मैं निराश हुआ तब बाहर जाकर कुछ कमा लेनेकी आशा भी मैंने छोड़ दी। मैं बहुत चाहता था कि किसी ऐसी जगह जाऊँ जहाँ काम करके अपने लिए कपड़े और ज़रूरी चीज़ें खरीद लाऊँ। सब लोग अपने अपने घर चले गये और इससे मुझे और भी अधिक दुःख हुआ।

हैम्पटन गाँव और उसके आसपास मैंने कामके लिए बहुत तलाश की। अन्तमें फारेट्रस मनरोके एक होटलमें, काम मिल गया। मज़दूरी जो मिलती थी उससे भोजन-खर्च चलता था; बचत बहुत ही थोड़ी होती थी। शामसुबह भोजनके वक्त मुझे वहाँ हाज़िर रहना पड़ता था और बीचका समय पढ़ने लिखनेमें बीतता था। इस प्रकार गरमीकी छुट्टियोंमें मैंने अपनी अवस्था बहुत कुछ सुधार ली।

प्रथम वर्ष जब समाप्त हुआ तब, मेरी तरफ विद्यालयके सोलह डालर निकलते थे। काम करके मैं यह रकम अदा न कर सका। मेरी यह इच्छा थी कि गरमीकी छुट्टियोंमें मज़दूरी करके यह ऋण दे डालूँ। कर्ज़का बोझ मुझे बेइज्जती मालूम होती थी और इस हालतमें मैं अपना मुँह किसीको दिखलाना न चाहता था। मैंने बड़ी किफ़ायतसे अपना खर्च चलाया। अपने कपड़े अपने हाथों धोये; और ज़रूरी कपड़े पहनना भी मैंने त्याग दिया। इतना करके भी मैं छुट्टियोंके अन्तमें १६ डालर जमा न कर सका।

होटलमें एक दिन मुझे एक मेज़के नीचे दस डालरका एक कोरा करकराता नोट मिल गया। मुझे बड़ा हर्ष हुआ। उस जगह पर मेरी

मालकियत नहीं थी; इसलिए मैंने वह नोट अपने मालिकको दिखलाना उचित समझा। देखकर वह भी बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने मुझसे कहा, ‘ यह जगह अपनी है और इसलिए इसे रख लेनेका अपना हक़ है।’ उसने नोट रख लिया। मुझे यह कहनेमें कोई संकोच नहीं कि इससे एक बार मेरे हृदय पर फिर चोट लगी। यह मैं न कहूँगा कि मैं निराश हो गया—मेरी हिम्मत टूट गई; क्योंकि इससे पहले मैंने जो कुछ साधनेका—सिद्ध करनेका निश्चय किया था उसके विषयमें मैं कभी हिम्मत नहीं हारा था। हरेक काम मैंने इसी भरोसे पर शुरू किया है कि मैं अवश्य सफल मनोरथ हूँगा। बहुतसे नाकामयाब लोग जब कभी अपनी नाकामयाबीका (असफलताका) सबब बतलाते थे तब बिना बीचमें दखल दिये मुझसे रहा न जाता था। जिस पुरुषके मुँहसे मैं कामयाबी हासिल करनेके उपाय सुनता था उस पर मेरी श्रद्धा बैठ जाती थी। उस वक्त मुझ पर जो मुसीबत थी उसका सामना करनेके लिए मैं तैयार हुआ। सप्ताहके अन्तमें मैं हैम्पटन-विद्यालयके खजांची, जनरल जे. एफ. बी. मार्शलके पास गया और उन्हें मैंने अपनी रामहानी सुनाई। उन्होंने मुझसे कहा, ‘ कोई हरज नहीं, जब तुम्हारे पास उतनी रकम आजाय तब दे देना; घबरानेकी कोई बात नहीं है। मुझे तुम्हारे ऊपर विश्वास है।’ इन शब्दोंको सुनकर मुझे बहुत संतोष हुआ। दूसरे साल भी मैं दरवानका काम करता रहा।

हैम्पटनके विद्यालयमें मैंने पढ़ा सही; पर विद्यालयमें जो कुछ मैंने सीखा वह, वहाँ जो शिक्षा और अनुभव मैंने प्राप्त किया उसका, एक अंश मात्र था। वहांके शिक्षकोंका स्वार्थत्याग देखकर मेरे हृदय पर बड़ा ही अच्छा परिणाम हुआ। उस समय मेरी समझमें यह नहीं आता था कि दूसरोंके लिए इस प्रकार त्याग करनेसे ये लोग क्योकर सुखी होते हैं। पर दूसरा साल समाप्त होनेसे पहले ही मुझे यह अनुभव होने लगा कि जो लोग दूसरोंके लिए अपना शरीर घिसते हैं वे ही सबसे

अधिक सुखी हुआ करते हैं। तभीसे मैं इस शिक्षाको स्मरण रखनेकी चेष्टा कर रहा हूँ।

हैम्पटनमें उत्तम जानवर और मुर्गे पैदा करनेकी पद्धतिका बारबार निरीक्षण करके मैंने एक नया पाठ सीख लिया। जिस किसीको इनकी परवरिशका नया ढंग देखनेका अवसर मिला है वह मामूली चौपायोंके रखनेसे कभी सन्तुष्ट न होगा।

दूसरे वर्षमें मैंने एक और शिक्षा पाई। बाइबलका उपयोग और महत्ता मैं समझने लगा। यह शिक्षा मुझे पोर्टलैंडकी मिस नार्थली लार्ड नाम्नी एक अध्यापिकासे मिली। इससे पहले मैं बाइबलकी कोई परवा नहीं करता था। पर अब तो सिर्फ अपनी आत्मिक उन्नतिके लिए नहीं बल्कि साहित्यकी दृष्टिसे भी मैं उसे पढ़ने लगा। उसका अब मुझ पर ऐसा दृढ़ संस्कार हो गया है कि मैं रोज़ सबेरे उसके एकाध अध्यायका पाठ कर लेता हूँ तब दूसरा काम देखता हूँ।

मुझे यदि व्याख्यान देना कुछ आ गया है तो, यह भी मिस लार्डही-की कृपा है। जब उन्हें यह मालूम हुआ कि व्याख्यान देनेकी तरफ़ मेरा झुकाव है तभीसे वे मुझे इस विषयकी एक एक बात बतलाने लगीं। उन्होंने ही मुझे ख़ास तौर पर शिक्षा दी कि व्याख्यान देते समय किस प्रकार श्वासोच्छ्वास करना चाहिए, वाक्यमें कहाँ जोर देना चाहिए और स्पष्ट उच्चारण कैसे करना होता है, इत्यादि। मैं यह तो चाहता था कि लोगोंके सामने व्याख्यान देने लगूँ; परन्तु इसके लिए मुझे ऐसी हवस न थी कि बुरा भला जैसा बने वैसा ही बकने लगूँ। सचमुच लोगोंके सामने ऐसे व्याख्यान देना कि जिनसे कोई लाभ नहीं, बड़ा ही बुरा और भद्दा काम है। परन्तु बचपनसे मेरी यही इच्छा रही है कि संसारकी उन्नतिमें मैं भी हाथ बटाऊँ, और इस कार्यके लिए मैं लोगोंके सामने कुछ कह सकूँ।

हैम्पटनकी वादविवाद सभा (Debating Society) से मुझे बड़ी प्रसन्नता होती थी। इस सभाके अधिवेशन प्रति शनिवारको संध्या समय हुआ करते थे; और जबतक मैं हैम्पटनमें था, बराबर इस सभामें जाया करता था। मैं सिर्फ इसी सभाके अधिनेशनोंमें उपस्थित नहीं रहता था, बल्कि एक और सभाके स्थापित करनेमें भी मैं कारणीभूत हुआ था। शामका भोजन होने पर हम सब विद्यार्थियोंको २० मिनिटकी छुट्टी मिलती थी और यह समय गपशपमें ही बीता करता था। इसलिए वादविवाद और वक्तृत्वमें योग्यता प्राप्त करनेके हेतु हम लोगोंमेंसे बीस विद्यार्थियोंने एक सभा संगठित की। इस प्रकार बीस मिनिटका उपयोग करनेसे हम लोगोंको जो लाभ हुआ वह बहुत ही कम लोगोंको हुआ होगा।

दूसरे वर्षके अन्तमें मेरी माने और मेरे भाई जानने कुछ रुपये भेज दिये थे, और एक शिक्षकने भी कुछ सहायता कर दी थी जिससे मैं छुट्टियोंमें अपने घर माल्डन जा सका। घर पहुँच कर मैंने देखा कि नमककी भट्टियाँ बन्द हैं और खानवाले मज़दूरोंने हड़ताल डालकर कोयलेकी खानें भी बन्द कर दी हैं। मैंने यह मालूम कर लिया कि जब मज़दूरोंके पास दो तीन महीनोंके वेतनकी रकम जमा हो जाती है, तब ऐसी हड़ताल हो जाया करती है। हड़ताल पड़ने पर उन्हें अपनी अपनी बचतका रुपया खर्च करना पड़ता था, और जब सब रुपये खतम हो जाते थे तब उन्हें उसी मज़दूरी पर फिर वही काम करना पड़ता था; या किसी दूरकी खानपर काम करनेके लिए पैसे खर्च करके जाना पड़ता था। दोनों हालतोंमें हड़तालका फल खट्टा ही होता था। मैं यह जानता था कि हड़तालसे पहले खानके मज़दूरोंका बहुतसा रुपया बंकमें जमा रहता था; पर जबसे मज़दूरोंका पक्ष लेकर आन्दोलन मचानेवालोंने उन्हें अपने अधीन कर लिया तबसे, बड़ी किफ़ायतशारीसे रहनेवाले लोग भी अपनी बचतसे हाथ धोने लगे!

मैं दो वर्ष बाद घर आया था; मुझमें बहुत कुछ सुधार भी हो गया था, यह देख कर मेरी माताको और परिवारके सभी लोगोंको बड़ा हर्ष हुआ। मेरे वापिस आनेसे नीग्रो मात्रको, विशेषतः बूढ़ोंको जो आनन्द हुआ वह अपूर्व था। मुझे घर घर जा कर लोगोंसे मिलना पड़ा, उनके यहाँ भोजन करना पड़ा और हैम्पटनके अनुभवकी कहानी सुनानी पड़ी। इसके अतिरिक्त गिरजाघरमें, रविवारकी पाठशालामें, और कई अन्य स्थानोंमें मुझे व्याख्यान भी देने पड़े। पर जिस चीज़की तलाशमें मैं था वह न मिली—कोई ऐसा काम न मिला जिससे मैं कुछ कमा लेता। हड़तालके कारण कोई काम ही न था। हैम्पटन वापिस आनेके लिए मुझे राहखर्चकी ज़रूरत थी; पर छुट्टीका पहला एक महीना तो दौड़धूपहीमें बीत गया।

इसी महीनेके अन्तमें मैं कामकी तलाशमें मकानसे बहुत दूर एक स्थान पर गया; परन्तु वहाँ भी कोई काम न मिला और रातके वक्त मैं घर लौटनेके लिए लाचार हुआ। जब मकान डेढ़ दो मीलके फासले पर रह गया और चलते चलते मैं इतना थक गया कि आगे एक कदम चलनेकी भी मुझमें शक्ति नहीं रही तब पासहीके एक मकानमें, जो बिलकुल बेमरम्मत पड़ा था, रात काटनेकी गरज़से घुस गया। सबेरे कोई तीन बजे मेरा भाई जान वहाँ आया और उसने मुझे जगा कर हलकी आवाज़से कहा, 'कल रातको माका देहान्त हो गया!'

इस दुःसमाचारने मेरे हृदय पर गहरी चोट पहुँचाई—मुझे बड़ा ही दुःख हुआ। कुछ वर्षोंसे मेरी मा बीमार थी सही; पर जिस रोज़ मैं उससे बिदा होकर इधर कामकी तलाशमें चला आया उस रोज़ मैं यह नहीं जानता था कि मैं अब इसे जीती न देख सकूँगा। मेरी यह इच्छा सदा ही रहा करती थी कि अन्त समयमें मैं उसकी सेवा शुश्रूषा करूँगा। हैम्पटनमें मैं बड़े परिश्रमसे पढ़ता था और यह सोचता था कि खूब मिहनतसे पढ़कर मैं अपनी अवस्था सुधारूँगा और अपनी

माको सुखी करूँगा। उसने कई बार कहा भी था कि मेरे लड़के अच्छा लिख पढ़कर खूब तरक्की करें और मैं उन्हें अच्छी अवस्थामें देखनेके लिए जीती रहूँ।

मेरी माके मरनेपर कुछ ही दिनोंमें हमारे छोटे घरमें बड़ा कुप्रबन्ध हो गया। मेरी बहिन आमन्दाने अपनी शक्ति भर सब कुछ किया; पर आखिर वह लड़की ही थी; घर सँभाल न सकी और मेरे सौतेले बापके पास इतना धन न था कि वह कोई नौकरिनी रख लेता। हम लोगोंको कभी तो अच्छा भोजन मिल जाता और कभी बिलकुल ही न मिलता था। प्रायः हम लोग एक कटोरीमें 'टोमेटो' और कुछ पतले बिस्कुट, इतना ही भोजन पाने लगे। कपड़ोंकी भी यही दुर्दशा हुई। सब बात ही बिगड़ गई। जिन्दगीमें सबसे अधिक दुःखदायी अवसर मेरे लिए यही था।

मेरी मदद करनेवाली रफनर बीबी मुझे अकसर अपने यहाँ प्रेमसे बुलाती थीं। इस मुसीबतमें भी उन्होंने मेरी कई तरहसे मदद की। छुट्टी समाप्त होनेसे पहले उन्होंने मुझे एक काम दिया। इसी वक्त मेरे घरसे कुछ दूर एक खान पर भी मुझे काम मिला जिससे मेरे पास कुछ रकम हो गई।

एक बार मुझे यह भी आशंका हुई थी कि अब मैं शायद हैम्पटन न जा सकूँगा। परन्तु वहाँ लौट जानेकी इच्छा इतनी प्रबल हो उठी कि उसके सामने सब विघ्नोंको तुच्छ समझकर मैं प्रयत्न करने लगा। जाड़ेके लिए मुझे कुछ कपड़ोंकी ज़रूरत थी। पर यह ज़रूरत रफ़ा न हुई। मेरे भाई जानने मुझे कुछ कपड़े ला दिये सही, पर वे काफ़ी न थे। न धन था, न कपड़े ही थे; पर एक बातसे मैं सुखी था। हैम्पटन जानेके लिए राहखर्च मेरे पास काफ़ी था। मुझे इस बातका तो पूरा भरोसा था कि जहाँ एक बार मैं वहाँ पहुँचा, तहाँ फिर दरवानका काम करके गुज़ारा कर लूँगा।

हैम्पटन-विद्यालय खुलनेसे तीन सप्ताह पहले मुझे मिस मेरी मैकीका एक पत्र मिला । उसे पढ़कर मुझे बड़ा हर्ष हुआ । उस पत्रमें उन्होंने लिखा था कि मैं तुमसे भवनको साफ़ सुथरा करने और सब चीज़ें करीनेसे रखनेके काममें मदद लेना चाहती हूँ, इसलिए विद्यालय खुलनेसे दो हफ्ते पहले ही यहाँ आ जाओ । बस, मेरा काम हो गया । खजानेमें अपने नाम कुछ रकम जमा करा सकनेका यह अच्छा अवसर हाथ लगा । मैंने हैम्पटनके लिए उसी समय प्रस्थान कर दिया ।

इन दो सप्ताहोंमें मैंने जो कुछ सीखा, उसे मैं कभी न भूलूँगा । मिस मैकी उत्तर प्रान्तके एक पुराने और नामवर कुलमें उत्पन्न हुई थीं; तथापि वे मेरे साथ खिड़कियोंको साफ़ करतीं, झाड़ू देतीं, बिस्तरोंको साफ़ रखतीं और कोई ऐसा काम नहीं था जिससे वे किनारा कसती हों । खिड़कियोंके ऊपरके झरोखे जबतक बिलकुल साफ़ न होते तबतक वे सन्तुष्ट न होती थीं । यह काम वे हरसाल छुट्टियोंमें किया करती थीं ।

उस समय मैं उनके कार्यका महत्त्व न समझता था । मैं नहीं सोच सकता था कि उनके जैसी लिखी पढ़ी, प्रभाववाली और कुलीन स्त्री एक अभागी जातिकी उन्नतिमें सहायता पहुँचानेके लिए इस प्रकार सेवाके कार्य क्यों करती है और इसमें इतना आनन्द क्यों मानती है । परन्तु आगे मैं परिश्रमसे इतना प्यार करने लगा कि किसी ऐसी पाठशालासे, कि जहाँ लड़कोंको परिश्रमकी महत्ता न सिखलाई न जाती हो, एक पल भी मेरी पटती नहीं थी ।

हैम्पटनके अन्तिम वर्षमें दरवानका काम कर चुकनेके बाद मुझे जो कुछ समय मिलता था उसका प्रत्येक मिनिट मैं लिखने पढ़नेमें बिताता था । मैंने यह निश्चय किया था कि परीक्षामें मेरा नंबर बहुत ऊपर आवे, और उपाधिदान-समारंभमें मेरा नाम माननीयोंकी (Honour-roll)

सूचीमें लिखा जाय। मेरा यह निश्चय सफल हुआ। १८७५ के जून मासमें मेरी हैम्पटनकी पढ़ाई समाप्त हुई। हैम्पटनमें रहनेसे मुझे दो बड़े भारी लाभ हुए:—

(१) मेरे सौभाग्यसे जनरल एस. सी. आर्मस्टांग जैसे अद्वितीय, उदार, सच्छील और परोपकारी महात्माके साथ मेरा समागम रहा।

(२) हैम्पटनमें ही पहले पहल मुझे यह ज्ञान हुआ कि यथार्थ शिक्षासे मनुष्य कितनी उन्नति कर लेता है। हैम्पटन जानेसे पहले शिक्षाके विषयमें मेरा भी उतना ही ज्ञान था जितना कि साधारण लोगोंका। मैं समझता था कि ऐसी ज़िन्दगी, कि जिसमें शारीरिक परिश्रम करनेकी आवश्यकता नहीं, और बड़े आनन्दसे—आरामसे—दिन कटते हैं, शिक्षा कहाती है। हैम्पटनमें जाकर मैंने सीखा कि परिश्रम करना न लज्जाका काम है और न निन्दाका; हमें उससे प्रेम करना चाहिए। परिश्रम करनेसे धन मिलता है, इसीलिए नहीं, बल्कि संसारको जिस बातकी ज़रूरत है उसे करनेकी योग्यता हममें भी है इस प्रकारका जो आत्मविश्वास है उसके लिए, स्वतंत्रताके लिए और परिश्रमके लिए ही परिश्रमसे प्रेम करना मैंने हैम्पटनमें सीखा। उसी विद्यालयमें मैंने पहले पहल उस आनन्दका अनुभव किया जो परोपकारमें जीवन दे देनेसे मिलता है। और यह बात भी मैंने उसी विद्यालयमें सीखी कि दूसरोंको उपयोगी और सुखी बनानेमें जो लोग हद कर देते हैं वे ही सबसे अधिक भाग्यशाली हैं।

मेरी पढ़ाई समाप्त हुई उस समय, मेरे पास कुछ नहीं था। रुपयेकी ज़रूरत थी। उस मौके पर कानेक्टिकटके होटलमें मैंने और विद्यार्थियोंके साथ खिदमदगारकी नौकरी कर ली। यह होटल गरमीके दिनोंमें खुला करती थी। कानेक्टिकट तक जानेके लिए मैंने किसी तरह कुछ प्रबन्ध कर लिया था। होटलमें जा कर मुझे मालूम हुआ कि मैं खिदमदगारीका काम बिलकुल नहीं जानता;

फिर भी वहाँका मुख्य खिदमदगार मुझसे बड़ा खुश हुआ और उसने मुझे चार पाँच बड़े आदमियोंके मेजका प्रबन्ध सौंप दिया। परन्तु जब भोजन करनेवालोंने देखा कि मैं बिलकुल नौसिखुआ हूँ —मुझे कुछ भी नहीं आता है तब तो उन्होंने मेरी खूब ही हँसी उड़ानी शुरू की—उन्होंने इतना तंग किया कि मुझे वहाँसे नौ दो ग्यारह होना पड़ा और उन बेचारोंको भी भोजनके लिए हाथपर हाथ धरके बैठ रहना पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि खिदमदगारी तो मुझसे छीन ली गई, और परोसी थालियाँ उठाने रखनेका काम मेरे जिम्मे किया गया।

पर मेरा तो यह निश्चय हो गया था कि किसी न किसी तरहसे खिद्-मद्गारका काम सीख लूँगा, और कुछ ही सप्ताहोंमें मैंने वह काम सीख भी लिया। इससे फिर मुझे खिद्मद्गारीका काम मिला। इसके बाद, मुझे इसी भोजनालयमें मेहमानके नाते कई बार ठहरनेका अवसर प्राप्त हुआ है!

होटलका मौसिम बीत चुकने पर मैं माल्डनमें अपने घर आया। यहाँ आते ही मैं नीग्रो लोगोंकी पाठशालामें शिक्षक नियत हुआ। मेरे जीवा नके सुखसमयका यह पहला अवसर था। मुझे इस बातसे बड़ी प्रसन्नता हुई कि अब मुझे अपने गाँवकी उन्नति करनेका अच्छा मौका मिल गया। मैं पहलेसे ही यह जानता था कि इस गाँवके युवकोंको पुस्तकसम्बन्धी ज्ञानके अलावे और भी बहुतसी बातोंकी आवश्यकता है। मैं सबेरे आठबजे अपना काम शुरू करता था और रातको दस दस बजेतक बैठा रहता था तो भी काम खतम न होता था। रोज़की पढ़ाईके सिवाय मैंने लड़कोंको बाल सँवारना, बदन साफ़ रखना, कपड़े धोना, इत्यादि बातें भी सिखलाईं। ब्रशसे रगड़कर दाँत साफ़ करना और स्नान करना, इन दो बातोंकी ओर मैंने उनका ध्यान विशेष करके दिलाया। पढ़ाईके दिनोंमें मैंनें बड़ी बारीकीसे ब्रशका काम—करतब देखा है और मुझे इस बातका विश्वास हुआ है कि यह भी उन्नतिके प्रधान साधनोंमेंसे एक है।

इस गाँवमें अनेक लोग ऐसे थे जो दिन भर काम करते थे और पढ़नेके लिए तरसते थे। इनके लिए मैंने नाइट स्कूल (रातका स्कूल) खोला। शुरूसे ही इस स्कूलमें उतनी ही भीड़ होने लगी जितनी कि दिनकी पाठशालामें होती थी। विद्यार्थियोंमें सभी उम्रके स्त्री पुरुष थे। ५०।६० वर्षके बूढ़े भी थे। ये लोग पढ़नेके लिए जैसी जी जानसे चेष्टा करते थे उसे देखकर हृदय पिघल जाता था।

रातका स्कूल और दिनका स्कूल चलाकर ही मैं स्वस्थ न हुआ। मैंने एक वाचनालय (लाइब्रेरी) और एक वादविवाद सभा भी स्थापित की। इसके सिवाय दो सण्डे स्कूलोंमें (रविवारकी पाठशालाओंमें) भी मैं पढ़ाया करता था। दोपहरको माल्डनके स्कूलमें और रातको, माल्डनसे तीन मील दूर एक स्कूल था वहाँ, पढ़ाया करता था। कई लड़कोंको मैं घर पर भी पढ़ाता था इसलिए कि वे माल्डन स्कूलमें दाखिल कराने लायक़ हो जायँ। वेतनका बिचार किये बिना जिस किसीको विद्यालाभ करनेकी इच्छा होती थी उसीको, मैं पढ़ा दिया करता था। किसी असहायकी सहायता करनेका अवसर आते ही मुझे बड़ा हर्ष होता था। पब्लिक फंडसे मुझे थोड़ासा वेतन मिलता था।

हैम्पटनमें पढ़ते समय मेरे भाई जानने अपनी शक्तिभर मेरी मदद की। यही नहीं, किन्तु परिवारका खर्च चलानेके लिए उसने अपना सब समय कोयलेकी खान पर बिता दिया। मुझे मदद करनेके लिए उसने जान बूझकर अपने लिखने पढ़नेकी तरफ़ ध्यान न दिया। अब मुझे बड़ी इच्छा हुई कि हैम्पटनमें दाखिल करानेके लिए उसकी सहायता करूँ और फिर वहाँका खर्च चलानेके लिए अपनी कमाईमेंसे कुछ बचत किया करूँ। इन दोनों बातोंमें मुझे कामयाबी हुई। तीन सालमें मेरे बड़े भाईने हैम्पटनकी पढ़ाई खतम की और अब वह टस्केजीकी शिल्पव्यवसाय-शाखाका मुख्य मैनेजर है। वह जब हैम्पटनसे

लौट आया तब हम दोनोंने अपना धन और श्रम इकट्ठा करके अपने दत्तक भाई जेम्सको हैम्पटनमें भेज दिया और वह भी अब टस्केजीमें पोस्ट-मास्टर है। १८७७ अर्थात् मेरे माल्डनवासका दूसरा वर्ष भी मैंने पहले वर्षकी तरह बिताया।

जब हम लोगोंका घर माल्डनमें था तब 'कु क्लक्स क्लान-Ku Klux Klan' नामकी एक सभाका बड़ा जोर था। यह सभा गोरोंकी थी और इसकी शाखायें भी अनेक थीं। इसका उद्देश्य था, काले लोगोंके व्योहारोंकी देखभाल करना और राजनीतिक क्षेत्रमें उन्हें आगे न बढ़ने देना। 'पट्रोलर्स—Patrollers' लोगोंके बारेमें मैं सुन चुका था। इन कु-क्लक्सवालोंके भी वैसे ही थोक रहते थे। बिना पासके एक बस-तीसे दूसरी बसतीमें जाने न देना, बिना पासके और बिना किसी गोरेके उपस्थित हुए कोई सभा न होने देना, इत्यादि बातोंमें गुलामोंके कार्योंका निरीक्षण करनेवाले लोग पट्रोलर्स कहे जाते थे।

पट्रोलर्सकी तरह 'कु-क्लक्स-क्लान' का सारा काम प्रायः रातको ही हुआ करता था। पर पट्रोलर्ससे ये लोग शैतानी ज्यादा करते थे। इनका असल मतलब यह था कि नीग्रो लोगोंकी राजनीतिक उच्च अभिलाषा नष्ट हो जानी चाहिए। पर ये इतनेसे ही सन्तुष्ट नहीं होना चाहते थे। ये हमारे गिरजाघरों और स्कूलोंको भी जला डालते थे और बहुतसे निरपराधी मनुष्योंको बड़ा दुःख देते थे। इनके जमानेमें न जाने कितने काले लोग कालके ग्रास बन गये!

इन लोगोंकी इस कार्रवाईसे मेरा खून खौलता था। एक बार माल्डनमें कालों और गोरोंके बीच जो मुठभेड़ हुई थी उसे मैंने देखी है। दोनों तरफ़ अनुमान एकएक सौ जवान थे। दोनों तरफ़के लोग ज़खमी हुए। मेरी मददगारिन रफनर बीबीके पतिको तो बड़ी गहरी चोट आई। जनरल रफनरने काले लोगोंको बचानेकी चेष्टा की और इसी अपराधके कारण

जमीन पर पटके जा कर उनपर ऐसी बेदम मार पड़ी कि फिर वे चंगे ही न हुए। दो जातियोंके बीचकी इस लड़ाईको देखकर मेरा मन यह गवाही देने लगा कि इस देशमें मेरी जातिवालोंको कोई आशा नहीं है। मैं समझता हूँ कि कु-क्लक्सका समय नवसंगठन-कालमें अतिशय काले धब्बेके समान है।

कु-क्लक्स-क्लानके समयके बाद जो कुछ अच्छी बातें हुई हैं उनकी तरफ ध्यान दिलानेके लिए ही मैंने दक्षिण अमेरिकाके इतिहासके इस उद्वेगजनक अंशका विषय यहाँ छेड़ा। आज दक्षिण अमेरिकामें वैसे लोग नहीं हैं, और पहले थे इस बातको भी लोग भूल गये हैं। दक्षिण अमेरिकामें अब बहुत ही थोड़े स्थान ऐसे हैं जहाँ इन लोगोंकी सभायें चल सकें।

पाँचवाँ परिच्छेद ।

नवसंगठन काल ।

सन् १८६७ से १८७८ के बीचके समयको नवसंगठन कालकी संज्ञा दी जा सकती है । मैंने हैम्पटनमें विद्यार्थीके नाते और वेस्ट-वर्जीनियामें शिक्षकके नाते जो समय व्यतीत किया वह इसी नवसंगठन कालके अन्दर आ जाता है। इस कालमें काले लोग ग्रीक-लैटिन भाषाओंको पढ़ने और नौकरी करनेकी धुनमें थे ।

जिन लोगोंने कई पीढ़ी गुलामी की और उससे भी पहले जो कई पीढ़ीतक निरे जङ्गली ही थे वे शिक्षाका ठीक ठीक अर्थ नहीं समझ सकते । दक्षिण प्रान्तके प्रत्येक स्थानमें सब उम्र और हैसियतके लोग—इनमें ६०।७० वर्षके बूढ़े भी थे—दिनकी और रातकी पाठशालाओंमें भीड़ कर देते थे । उस समय लोगोंमें शिक्षा प्राप्त करनेकी महदाकांक्षा अत्यन्त प्रशंसनीय और उत्साहवर्धक थी; परन्तु सर्व साधारणका यह खयाल था कि थोड़ासा लिख पढ़ लेनेसे ही संसारके सब क्लेशों और आपदाओंसे छुटकारा मिल जायगा और बिना हाथ पैर हिलाये मज़ेमें ज़िन्दगी कट जायगी । अगर कहीं उसने ग्रीक और लैटिन पढ़ ली तो फिर क्या पूछना है, जो कुछ बात और इज्ज़त है वह उसीकी है—वह देवता समझा जाने लगेगा । मुझे स्वयं इस बातका अनुभव है कि पहले पहल जब एक काले आदमीको, जो ग्रीक—लैटिन कुछ कुछ जानता था, मैंने देखा तो मैं भी उसके जैसा बन जानेकी इच्छा करने लगा था, क्योंकि मैं समझता था कि बस, इससे बड़ा आदमी और कोई है ही नहीं ।

यों तो हमारे लिखे पढ़े अनेक लोग शिक्षक या उपदेशका काम करते थे, और उनमें सदाचारी और लोकहितके चाहनेवाले स्त्री-पुरुष भी थे, तो भी बहुतसे लोग ऐसे थे जो मजेमें गुजारा करनेके लिए ही इस कामको करते थे। कई एक शिक्षक तो अपना नाम लिख लेनेके अतिरिक्त कुछ जानते ही न थे। ऐसे एक महात्मा मेरे पड़ोसमें नौकरी ढूँढ़ते ढूँढ़ते आ गये थे। वहाँ यह प्रश्न उठा कि "पृथ्वी गोल है या चिपटी ?" होनहार शिक्षक महाशयसे पूछा गया कि, "आप लड़कोंको क्या बतलावेंगे ?" उन्होंने जबाब दिया— "आप लोगोंकी बहुसम्मति जिधर होगी मैं वही सिखला दूँगा—पृथ्वी गोल है, यह भी सिखलानेको मैं तैयार हूँ और यह भी सिखला सकता हूँ कि पृथ्वी चिपटी है!"

यह तो शिक्षकोंकी अवस्था थी। अब धर्मका उपदेश करनेवालोंका भी हाल सुनिए। इनकी दशा तो और भी गई बीती थी। ऐसे निरक्षर-भट्टाचार्य और कुसंस्कारपूर्ण दुराचारी लोग शायद और किसी विभागमें नहीं मिलते। योग्यता हो या न हो, वे मानते यही थे कि "हमें ईश्वरने उपदेश करनेका आदेश भेजा है।" धर्मप्रचार करनेका आदेश जिस तिसको मिलने लगा! दो तीन दिन भी स्कूलमें जाकर नहीं पढ़ा कि धर्मगुरुका कार्य करने लगे। 'आदेश' मिलनेका ढंग भी बड़ा विचित्र था। गिरजाघरमें लोग इकठे हुए हैं और ऐसे समय एक आदमी मेज़के ऊपर धड़ामसे गिर पड़ता है। बहुत देरतक कुछ बोलता नहीं, चालता नहीं—एकदम सुन्न! इसीसे चारों ओर यह खबर फैल जाती कि अमुक मनुष्यको 'आदेश' हुआ है। हरेक नीग्रो-गाँवमें ऐसी घटनायें सप्ताहमें दो चार बार हो जाया करती थीं। अगर एक बारमें वह धर्मगुरु बननेको तैयार न हो सका तो वह फिर गिरता था या गिराया जाता था। इस तरह दो तीन बार गिरने पड़नेसे उसे 'आदेश' मानना

ही पढ़ता था। मुझे बड़ा भय था कि कहीं यह बला मुझ पर न आ जाय; क्योंकि मैं भी पढ़नेवालोंमेंसे एक था। पर मुझ पर ईश्वरकी कृपा थी जो इस मुसीबतसे मैं बचा रहा!

धर्मगुरुओंकी संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। एक गिरजाघरके बाबत तो मुझे याद है कि उसमें कुल लोग शरीक थे २००, और उनमें धर्मगुरु थे २०। पर अब इन धर्मगुरुओंका बहुत कुछ चरित्रसुधार हो रहा है और मैं समझता हूँ कि २०–२५ वर्षोंमें उनमेंसे नालायकोंकी संख्या बहुत कुछ कम हो जायगी। अब आदेशकी लीला पहलेकी तरह नहीं हुआ करती और रोज़गार करनेकी तरफ़ भी लोग झुकते जाते हैं। धर्मगुरुओंकी अपेक्षा शिक्षकोंका चरित्र अधिक सुधरा हुआ है।

नवसंगठन कालमें नीग्रो लोगोंकी दशा एक नन्हें बालककीसी थी। वह जैसे अपनी माके ही भरोसे रहता है वैसे ही हर बातमें ये लोग संयुक्त सरकारका (Federal Govt) मुँह ताकते थे। ऐसा होना स्वाभाविक भी था। क्योंकि संयुक्त सरकारने उन्हें स्वाधीनता दी थी, और सारा राष्ट्र नीग्रो लोगोंके परिश्रमोंसे दो शताब्दियोंतक बल्कि इससे भी अधिक, बराबर लाभ उठाता रहा था। जब सरकारने हमें स्वाधीनता दे दी तो, उसका यह कर्त्तव्य होता है कि वह अपनी प्रजाओंको कर्तव्यशील नागरिक बनानेके लिए सर्वसाधारणमें शिक्षाका यथोचित प्रबन्ध कर दे। मैं यह समझता था कि रियासतोंने शिक्षाके लिए जो कुछ किया सो किया पर इसके साथ ही, मुख्य सरकारको उसका पूरा सार्वत्रिक प्रबन्ध कर देना चाहिए था। ऐसा न करना मेरी समझमें बड़ा भारी पाप था।

किसीका दोष ढूँढ़ निकालना और यह बतलाना कि क्या किया जाना उचित था, बहुत आसान है। पर उस समयकी हालत देखनेसे

पता लगता है कि सरकारने जो कुछ किया वही उचित था। पर मुझे यह कहना ही पड़ता है कि अगर कोई ऐसा रास्ता निकाल दिया जाता कि अमुक श्रेणीतक शिक्षा अथवा अमुक रकम तककी हैसियत होने पर अथवा दोनों ही होने पर वोट देनेका अधिकार मिल सकता है और काली तथा गोरी दोनों जातियों पर वोट-संबंधी नियमका ईमान और सचाईसे अमल किया जाता तो इसमें सरकारकी विशेष बुद्धिमानी समझी जाती।

नवसंगठन कालमें मेरी उम्र कुछ अधिक नहीं थी—पचीसी ही पार कर रहा था; पर मैं यह समझता था कि बड़ी गलतियाँ हो रही हैं, किन्तु जैसी हालत इस वक्त है वह अधिक दिन न रहने पायेगी। मेरी यह धारणा थी कि संगठन-पालिसी मेरी जातिके लिए ठीक नहीं है। उसकी उठान ही ऐसी नीव पर की गई है जो अस्वाभाविक है और जिसमें बड़े दावपेंच हैं। मैंने देखा कि हम लोगोंको अपढ़ और अजान बतला कर गोरे लोगोंको बड़ी बड़ी नौकरियाँ दी जाती हैं। उत्तर अमेरिकाके कुछ लोगोंको यह सूझी थी कि दक्षिणमें गोरे लोगोंका जो मरतबा है उससे बड़ा मरतबा नीग्रो लोगोंको दिलाना चाहिए, अर्थात् उनसे बड़े ओहदों पर इन्हें नौकरी मिलनी चाहिए। ऐसा करके वे दक्षिणवालोंको नीचा दिखाना चाहते थे। पर मुझे तो इसमें नीग्रो लोगोंकी ही हानि देख पड़ी। इसके सिवाय राजनीतिक आन्दोलन-में फँसकर मेरे भाइयोंने अपने समीपके व्यवसायमें पक्के बनना और कुछ कमा खाना छोड़ दिया। वास्तवमें देखा जाय तो यह उनका मुख्य काम होना चाहिए था।

राजनीतिक कार्योंके मोहने मुझे ऐसा घेरा था कि मैं उसके जालमें फँस जाता। पर मैं समझता था कि कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय और अन्तः-करण अथवा, शरीर, मस्तक और हृदय (Hand head and hoart) की

यथेष्ट शिक्षा पर उन्नतिकी नींव दृढ़ करनेसे मैं अपनी जातिका विशेष और यथार्थ कल्याण कर सकूँगा; और इसी विचारने उस जालमें फँसनेसे मुझे बचाया। कुछ नीग्रो लोग रियासतकी व्यवस्थापक सभाके सदस्य होते थे, कुछ लोगोंको बड़ी अफ़सरी हासिल थी, पर उन्हें एक अक्षर भी पढ़ना नहीं आता था, और उनका चरित्र भी बहुत निर्बल था। दक्षिण अमेरिकाके एक शहरके रास्तेमें चलते हुए मैंने सुना कि कुछ मज़दूर किसीको पुकार रहे हैं। ये लोग ईंटोंकी एक दुखंडी इमारतपर काम कर रहे थे और वहींसे किसी गवर्नरको पुकार कर कह रहे थे कि, 'जल्दी करो, और ईंटें ले आओ।' मैंने कई बार ये शब्द सुने कि 'गवर्नर, जल्दी करो! गवर्नर, जल्दी करो!' जिन गवर्नर महाराजकी इतनी इज्जत थी उनका पता लगाना मैंने ज़रूरी समझा। पता लगानेसे मालूम हुआ कि वह एक काला आदमी था और एक बार वह अपनी रियासतका लेफ्टनेंट गवर्नर हुआ था।

इससे यह न समझना चाहिए कि सभी काले अधिकारी ऐसे ही थे। उनमें भूतपूर्व सिनेटर बी. के. ब्रुस, गवर्नर पिकबैंक, तथा और भी कई सज्जन बड़े ही योग्य और उपयोगी पुरुष थे। सभी लोग बेइमान नहीं समझे जाते थे; उनमेंसे कुछ लोग जार्जियाके भूतपूर्व गवर्नर बुलक साहब जैसे उदार और परोपकारी भी थे।

अब यह कहनेकी अवश्यकता ही न रही कि अपढ़ और नवसिखुए काले लोगोंने ऐसी ऐसी गलतियाँ कीं कि जिनकी हद नहीं; परन्तु मेरी समझमें और लोग भी उस हालतमें ऐसी ही गलतियाँ करते। दक्षिण प्रान्तके बहुतेरे गोरे लोगोंका यह खयाल है कि अब अगर नीग्रो लोगोंको कुछ राजनीतिक अधिकार दिये जायँगे तो फिर वैसा ही बखेड़ा खड़ा होगा जैसा कि नवसंगठन कालमें हुआ था। परन्तु मुझे तो ऐसा भय बिलकुल नहीं है।

शुरूके पैंतीस वर्षोंमें जो बात नहीं थी वह अब हुई है—नीग्रो जवान अब अधिक बुद्धिमान् और शक्तिमान् हुआ है और वह इस बातको समझने लगा है कि दाक्षिणके गोरेको नाराज़ करनेसे हमारा काम न बनेगा। दिनोंदिन मेरी यह धारणा दृढ़ होती जाती है कि काले और गोरे दोनोंके लिए बोटका समान अधिकार और निर्वाचनका एक ही मार्ग होना चाहिए जिसमें आजकलकी तरह टालमटोल और दुटप्पी ब्योहारके लिए जगह ही न हो—ऐसा होगा तभी नीग्रो जातिके राजनीतिक प्रश्नोंका निबटेरा होगा। दाक्षिणमें रहकर, वहाँका हाल अपनी आँखों देखकर मुझे यह विश्वास हो गया है कि इसके विपरीत उपायका अवलंबन करना नीग्रो लोगोंसे, गोरोंसे और संयुक्त राज्यकी सब रियासतोंसे अन्याय करना है—यह गुलामीसे कुछ कम पाप नहीं है और इस पापका बदला हमें किसी न किसी समय देना ही पड़ेगा।

माल्डनमें मैं दो वर्षतक शिक्षकका काम करता रहा। वहाँ रहते हुए मैंने अपने दो भाइयोंके सिवाय और भी कितने ही स्त्री-पुरुषोंको हैम्पटन-विद्यालयमें भरती करा दिया और फिर १८७८ के शरहतुमें मैंने कोलंबियाके वाशिंगटन नामक स्थानमें जाकर अभ्यास-अध्ययन करना ठाना। वहाँ मैं आठ महीने रहा। वहाँके अभ्याससे भी मुझे बड़ा लाभ हुआ और कुछ अच्छे पुरुषोंसे समागम भी हुआ। वहाँके विद्यालयमें शिल्प-शिक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं था; और इससे मुझे दो तरहके नमूने देखनेका अच्छा मौका मिला। हैम्पटनके विद्यालयमें सिर्फ़ शिल्पशिक्षा ही दी जाती थी। उसे मैं देख चुका था और उसका परिणाम भी समझ चुका था। अब वाशिंगटनकी अशिल्पशिक्षासे वहाँकी शिल्पशिक्षाका मुकाबला कर सकता था। वाशिंगटनके विद्यालयमें पढ़नेवाले कुछ पैसेवाले थे। उनकी पोशाक भी अच्छी हुआ करती थी; यही नहीं बल्कि बिलकुल ताज़ा फ़ैशनसे ही वे रहा करते थे। यहाँके कुछ विद्यार्थी अधिक बुद्धि-

मान् होते थे । हैम्पटनका तो यह नियम था कि विद्यार्थीकी पढ़ाईका ख़र्च विद्यालयके अधिकारी ही दिलाते थे। पर उन्हें भोजन, वस्त्र, पुस्तक और घरके किरायेका प्रबन्ध ख़ुद करना पड़ता था। इसका खर्च कुछ तो वे अपने कामसे कटा देते थे और कुछ नक़द भी देते थे । वाशिंग-टनके विद्यार्थियोंकी अवस्था इससे निराली थी। इन्हें भोजनादिके ख़र्चकी तो चिन्ता ही नहीं थी; रहा प्राइवेट ख़र्च, सो वह भी कहीं न कहींसे मिल जाता था। हैम्पटनमें उन्हें मिहनत करके कमाना पड़ता था और इससे उनके चरित्रगठनमें बड़ी मदद होती थी। वाशिंगटनके विद्यार्थी अपने बल पर खड़े होना बहुत कम जानते थे। बाहरी भूलभुलैयामें ही वे फँसे रहते थे। तात्पर्य, मैंने यह देखा कि हैम्पटनके विद्यार्थी अपनी शिक्षा बड़ी सुदृढ़ नींव पर आरंभ करते थे और यहाँके विद्यार्थियोंमें वह बात नहीं थी। यहाँके विद्यार्थियोंकी पढ़ाई समाप्त होने पर उन्हें लैटिन और ग्रीक भाषाका ज्ञान अधिक होता था; पर जीविकानिर्वाह और व्यव-हारका ज्ञान कम होता था। हैम्पटनके विद्यार्थी पढ़ाई समाप्त करके देहातोंमें जाकर बड़े शौकसे अपनी जातिके लोगोंके लिए काम करते थे। यहाँके विद्यार्थियोंको आरामतलबीकी आदत पड़ जाती थी और इसलिए वे परिश्रमसे भागते थे। होटलमें खिदमतगारी करना या पल-मानकारमें* पोर्टर होना ही उनके जीवनकी इतिकर्तव्यता हो जाती थी!

मैं जब वाशिंगटनमें पढ़ता था तब, दक्षिणसे आये हुए काले लोगोंसे यह शहर ठसाठस भर गया था। बहुतसे लोग तो इसी गरज़से आये थे कि वाशिंगटनमें जाकर जरा मजा-मौज उड़ावें । कुछ लोगोंको कुछ सरकारी काम मिल गये थे; और बहुतसे लोग नौकरीकी तलाशमें आये थे । बहुतसे काले लोग—इनमें बहुतेरे बड़े होशियार और बुद्धिमान् थे—अमेरिकाकी पार्लियामेंट—House of Represen-

* अमेरिकामें यह एक तरहकी गाड़ी होती है जिसमें सोनेका सुभीता रहता है।

tatives—में सदस्य थे; और आनरेबल बी. के. ब्रूस नामके सज्जन सीनेटमें थे । इन सब कारणोंसे काले लोगोंके लिए वाशिंगटन शहर बड़ा ही मनोहर और प्रिय हुआ था । इसके सिवाय, वे यह भी जानते थे कि कोलंबिया प्रदेशमें कानूनकी सुनाई होती है । वाशिंगटनके काले लोगोंकी सार्वजनिक पाठशालायें अन्य स्थानोंकी पाठशालाओंसे बहुत अच्छी होती थीं । यहाँ मैंने अपने जातिभाइयोंकी दशाका भली भाँति निरीक्षण किया । उनमें कई तो बड़े लायक आदमी थे; तो भी बहुतेरोंका दिखौआपन देखकर मुझे बड़ी चिन्ता हुई । कितने ही काले नवयुवक ऐसे थे कि जिनकी आमदनी सप्ताहमें चार डालरसे अधिक नहीं, पर वे रविवारके दिन ऐसा शाही खर्च किया करते थे मानो इनके पास रुपयोंकी कमी नहीं—पेन्सिलवनियाकी सड़क पर गाड़ीमें बैठ इधर उधर टहलनेमें दो चार डालर खर्च करना इनके लिए मामूली बात थी । सरकारसे ७५ या १०० डालर मासिक वेतन पानेवाले और हर महीने कर्ज़का बोझ बढ़ानेवाले कितने ही युवकोंको मैंने अपनी आँखों देखा । मैंने ऐसे भी लोगोंको देखा है कि जो पहले प्रतिनिधि सभा याने पार्लियामेंटमें प्रतिनिधि बनकर बैठते थे, और अब बिलकुल निकम्मे कंगाल रोटीके मुँहताज़ हो रहे हैं । कितने ही लोग छोटी छोटी बातोंके लिए भी सरकारका मुँह ताकते थे । इस तरहके लोगोंमें अपनी हालत बदलनेकी इच्छा बहुत कम थी और जो थी भी, उसे पूर्ण करना वे सरकार पर ही छोड़े बैठे थे । उस समय और उसके बाद भी, कई बार मैंने सूचित किया कि ऐसे लोगोंको किसी न किसी तरह यहाँसे उठाकर देहातोंमें छोड़ देना चाहिए और वहाँकी सुदृढ़ तथा विश्वस्त भूमाताके अंक पर ही इनकी 'रोपाई' होनी चाहिए । सारे विजयी राष्ट्रों और लोगोंने यहींसे अपनी उन्नतिको आरंभ किया है । आरंभमें तो यह उन्नतिका मार्ग बड़ा बिकट और लंबा पल्ला मालूम होगा, पर यही सच्चा और सीधा मार्ग है ।

वाशिंगटनमें मैंने कुछ लड़कियोंको देखा। उनकी मातायें कपड़े धोनेका काम करती थीं। उन लड़कियोंने भी यह काम उसी पुरानी लकीर पर सीख लिया था। बादको ये लड़कियाँ स्कूलोंमें जाने लगीं और वहाँ सात आठ वर्ष रहीं। पढ़ाई समाप्त होने पर उन्हें कीमती पोशाकों, कीमती टोपियों और कीमती जूतोंकी ज़रूरत पड़ने लगी। तात्पर्य, उनकी आवश्यकतायें बढ़ीं; पर उन्हें रफ़ा करनेकी लियाक़त न आई! सात आठ वर्ष पढ़ने लिखनेमें बीतनेसे अब अपना पुराना रोज़गार करनेमें उनकी तबियत न लगती थी; उस रोज़गारसे भी उन्होंने हाथ धोये। परिणाम यह हुआ कि उनमेंसे कितनी ही लड़कियाँ तबाह हो गईं। लड़कियोंको अगर मानसिक शिक्षाके साथ (मेरी समझमें भाषा, या गणित, इनमेंसे किसी एक विषयका ज्ञान करा देना चाहिए जिसमें मन सुदृढ़ और सुसंस्कृत हो,) धोबीके व्यवसायकी आधुनिक शिक्षा या ऐसा ही कोई दूसरा काम सिखलाया जाता तो मैं समझता हूँ कि बड़ा लाभ हुआ होता।

छठा परिच्छेद ।

कृष्णवर्ण और ताम्रवर्ण जाति ।

जब मैं वाशिंगटनमें रहता था उस समय, इस बातका बड़ा आन्दोलन हो रहा था कि वेस्ट वर्जीनियाकी राजधानी वीलिंगसे हटाकर किसी मध्यवर्ती स्थानमें लाई जानी चाहिए। इस आन्दोलनका यह परिणाम हुआ कि सरकारने तीन शहर चुने और यह घोषित किया कि इनमेंसे जिस शहरके लिए अधिक सम्मति होगी वहीं राजधानी की जायगी। इन शहरोंमें मेरे गाँव माल्डनके समीप लगभग पाँच मीलके फासले पर चार्लस्टन नामक स्थान पड़ता था। वाशिंगटन विद्यालयकी मेरी पढ़ाई समाप्त होनेके समय चार्लस्टनके गोरोंकी पंचायतसे मुझे इस लिए निमंत्रण आया कि मैं वहाँ जाकर चार्लस्टनकी तरफ़से उद्योग करूँ। मुझे इस निमन्त्रणसे आश्चर्य और आनन्द दोनों हुए। मैंने निमन्त्रण स्वीकार किया, और रियासतके कई हिस्सोंमें बराबर मैं तीन महीने तक व्याख्यानोंकी झड़ी लगाये रहा। चार्लस्टनको इस काममें कामयाबी हुई और इस समय वहीं सरकारकी अटल राजधानी है।

इस आन्दोलनमें मेरा व्याख्यान कुछ मशहूर हो गया और इस लिए बहुतेरोंने चाहा कि मैं राजनीतिक कार्योंमें किसी तरह योग देने लगूँ। पर मैं इससे दूर ही रहना चाहता था; क्योंकि मुझे इस बातका पूरा विश्वास था कि मैं और किसी भी कामसे अपनी जातिकी इससे अधिक सेवा कर सकूँगा। उस समय मुझे अपने लोगोंके लिए शिक्षा, व्यवसाय और जायदादका कोई आधार निर्माण करनेकी बड़ी आवश्यकता मालूम होती थी; और इस लिए राजकीय अधिकार प्राप्त करनेके बदले उक्त त्रिपुटी या तीन बातोंके लिए प्रयत्न करनेमें विशेष लाभ था। अगर

मेरी बात पूछिए तो राजनीतिक क्षेत्रमें मुझे कामयाबी अवश्य होती; परन्तु यह कामयाबी एक तरहकी खुदगरजी (स्वार्थपरता) ही थी, और अगर मैं इसीके पीछे पड़ जाता तो अपने समाजकी उन्नतिमें हाथ बँटानेके कर्तव्यसे विमुख हो जाता ।

नीग्रो-समाजकी इस उन्नतिके समयमें, स्कूल और कालेजोंमें जानेवाले बहुतेरे विद्यार्थी आगे चल कर बड़े बड़े वकील या प्रतिनिधि-सभाके सदस्य बनना चाहते थे और बहुतसी स्त्रियाँ वादनकलाकी अध्यापिका बनना चाहती थीं; परन्तु मेरा विचार कुछ और ही था । मैंने निश्चय किया था कि पहले अच्छे वकील, योग्य प्रतिनिधि और गायनवादन कलाके उत्तम अध्यापक निर्माण करनेकी भूमिका तैयार करनी चाहिए ।

गुलामीके दिनोंमें एक बूढ़े नीग्रोको सरंगी सीखनेकी बड़ी इच्छा हुई और उसने एक तरुण संगीत-मास्टरसे प्रार्थना की; परन्तु मास्टरको यह विश्वास नहीं होता था कि यह बूढ़ा सरंगी सीख जायगा । इस लिए उसने उसे नाउम्मेद करनेकी गरज़से कहा, " जेक चचा, मैं आपको सरंगी तो सिखला दूँगा; पर पहले सबक़के लिए मैं आपसे तीन, दूसरेके लिए दो और तीसरेके लिए सिर्फ पाव डालर लूँगा । " जेक चचा बोले, " ठीक है, मुझे मंजूर है; पर पहले मुझे आप अखीरका सबक़ ही दीजिए । " इस वक्त भी लोगोंकी ऐसी ही परिस्थिति हो रही थी ।

रियासतकी राजधानी बदलने पर मुझे एक और आमन्त्रण मिला, और उससे मुझे बहुत ही आश्चर्य और आनन्द हुआ । जनरल आर्मस्ट्रांगने इस अर्थका एक पत्र भेजा कि हैम्पटनमें आगामी उपाधिदान सभारंभके समय ग्रेजुएट हुए विद्यार्थियोंको तुम कुछ उपदेश दो । मैंने कभी स्वप्नमें भी इस बहुमानकी कल्पना नहीं की थी । मैंने अपनी शक्तिभर चिन्तापूर्वक एक स्पीच तैयार की । इस स्पीचके लिए मैंने 'The force that wins' अर्थात् ' यशस्वी शक्ति ' यह विषय चुना था ।

छः वर्ष पहले मैं जिस रास्तेसे हैम्पटनके विद्यालयमें विद्यार्थीके नाते भरती होनेके लिए गया था, इस बार स्पीच देनेके लिए भी मैं उसी रास्तेसे गया; पर इस बार मैं रेलगाड़ीमें सवार था। मेरी पहली सफरमें और इस सफरमें कितना अन्तर है! पाँच वर्षकी अवधिमें शायद ही किसी मनुष्यकी अवस्थामें इतना परिवर्तन हुआ होगा।

हैम्पटनमें शिक्षक और विद्यार्थी, दोनोंने ही शुद्ध अन्तःकरणसे मेरा स्वागत किया। वहाँ मैंने देखा कि विद्यालयने पहलेसे कहीं अधिक उन्नति की है और नीग्रो लोगोंकी हालत सुधारने और ज़रूरतोंको रफ़ा करनेमें उसकी उपयोगिता दिनोंदिन बढ़ रही है; शिक्षा-प्रणालीमें भी बहुत कुछ सुधार हो रहा है। हैम्पटन-विद्यालय किसी नमूनेकी नकल नहीं था; बल्कि उसमें नीग्रो लोगोंकी अवस्था सुधारने और उनकी आवश्यकताओंकी पूर्त्ति करनेके विचारसे ही जनरल आर्मस्ट्रांगके उदार नेतृत्वमें सुधारका प्रत्येक कार्य हुआ करता था। अपढ़ लोगोंमें शिक्षाप्रचार तथा अन्य परोपकारके कार्य करते समय शिक्षित लोग प्रायः पुरानी लकीर ही पीटते जाते हैं। वे इस बातको भूल जाते हैं कि हमें किन लोगोंमें काम करना है, उनकी क्या क्या आवश्यकतायें हैं, और उनकी शिक्षाका ध्येय क्या होना चाहिए। इन बातोंको भूल कर वे एक ही शिक्षाप्रणालीके साँचेमें नये पुराने विद्यार्थियोंको ढालते जाते हैं; परन्तु हैम्पटनमें यह बात न थी।

उपाधिदानसमारंभके समय मैंने जो व्याख्यान दिया उससे लोग बहुत प्रसन्न हुए और बहुतोंने अपनी प्रसन्नता प्रकट करके मुझे खूब ही उत्साहित किया। मैं शीघ्र ही वेस्ट वर्जीनियामें अपने गाँवको वापिस चला आया, और फिर पाठशालामें पढ़ानेका विचार करने लगा। इसी बीच अर्थात् १८७९ में एकाएक मुझे जनरल आर्मट्रांगका पत्र फिर मिला। उन्होंने इस पत्रमें शिक्षकका काम करने और रही सही पढ़ाई पूरी

करनेके लिए चले आनेको लिखा था। वेस्ट वर्जीनियामें शिक्षकका काम करते समय मैंने अपने दो भाइयोंके अतिरिक्त और चार युवकोंको हैम्पटन-विद्यालयमें भरती करानेके लिए बड़ी तैयारी की थी। इसका फल यह हुआ कि जब ये विद्यार्थी हैम्पटन पहुँचे तो उनकी योग्यता देखकर शिक्षक इतने प्रसन्न हुए कि उनको उन्होंने एकदम ऊपरके दर्जेमें भरती कर लिया। मैं समझता हूँ कि यही देखकर हैम्पटनके विद्यालयमें मुझे शिक्षकका काम करनेके लिए बुलाया था।

मैंने जिन विद्यार्थियोंको हैम्पटन भेजा उनमेंसे एकका नाम है डाक्टर सेमुएल ई. कर्टने। ये इस समय बोस्टन शहरके बड़े डाक्टरोंमें गिने जाते हैं और वहाँके स्कूल-बोर्डके मेंबर भी हैं।

इस समय जनरल आर्मस्ट्रांगने इंडियन लोगोंको पहले पहल शिक्षा देनेका प्रयोग करना आरंभ किया था। उस समय बहुत कम लोगोंको यह आशा थी कि इंडियन लोग भी लिख पढ़कर कुछ काम लायक हो जायँगे। जनरल आर्मस्ट्रांगके मनमें यह समाई कि यह प्रयोग विशाल परिमाण पर और ढँगके साथ करना चाहिए। पश्चिम प्रान्तके जंगलोंमेंसे वे जंगली और बिलकुल अपढ़ ऐसे एक सौसे भी ज्यादा इंडियन ले आये; उनमें बहुतेरे युवा भी थे। जनरल आर्मस्ट्रांग चाहते थे कि मैं उन सब इंडियनोंका पितृवत् पालक बनूँ— अर्थात् एक ही मकानमें उनके साथ रहकर उनकी शिक्षा, चालढाल और रहनसहनकी देखभाल किया करूँ। इस कार्यमें मोहकता अवश्य थी, पर वेस्ट वर्जीनियाके कार्यमें मैं इतना मगन हो गया था कि उसे छोड़ देना मेरे लिए बड़े भारी कष्टका कारण था; पर मैंने दिलको मज़बूत करके उस कामको छोड़ ही दिया; क्योंकि जनरल आर्मस्ट्रांगकी आज्ञाको मैं टाल नहीं सकता था।

हैम्पटन जाने पर मैं ७५ इंडियन विद्यार्थियोंके साथ एक मकानमें रहने लगा । मैं ही अकेला एक ऐसा आदमी था जो उनकी जातिके बाहर था । शुरू-शुरूमें मुझे बड़ा सन्देह था कि इस कार्यमें मैं कैसे कामयाब हो सकूँगा। मैं भली भाँति जानता था कि इंडियनोंके दिमाग हम लोगोंसे बहुत ऊँचे हैं । वे अपनेको गोरोंसे भी बड़े मानते थे—इसीसे अन्दाज़ किया जा सकता है कि गुलामीको महत्पाप समझनेवाले इंडियन गुलामीमें पले हुए नीग्रो लोगोंको क्या समझते होंगे । गुलामीके दिनोंमें इंडियन लोगोंके भी बहुतसे गुलाम थे । इन सब बातोंके सिवाय सब लोगोंको यह विश्वास हो गया था कि इंडियन लोगोंको पढ़ाने और सुधारनेकी चेष्टा कभी फलवती नहीं हो सकती । यह सब होते हुए भी मैंने यह प्रण कर लिया कि मैं दिल लगाकर, सावधानीके साथ काम करूँगा और सफलता प्राप्त किये बिना न रहूँगा । कुछ ही दिनोंमें इन इंडियनोंको मेरा विश्वास हो गया—वे मुझसे प्रेम करने लगे और मुझे आदरकी दृष्टिसे देखने लगे । इंडियनोंके विषयमें और लोग चाहे जो कहें; परन्तु मेरा अनुभव तो यह है कि और मनुष्योंके समान वे भी मनुष्य हैं; उनके साथ अच्छा बर्ताव करनेसे वे प्रसन्न रहते हैं और बुरा बर्ताव करनेसे नाराज़ होते हैं । जब उन्हें मेरा परिचय हो गया तब, वे मुझे सुखी करनेका प्रयत्न भी करने लगे । पर उन्हें अपने लंबे बालोंसे, कंबल ओढ़नेसे और तंबाकू पीनेसे इतनी प्रीति थी कि वे इन बातोंको छोड़ना पसन्द नहीं करते थे; और ऐसे ही कारणोंसे गोरे लोग उन्हें असभ्य और जंगली समझते थे ।

अँगरेजी भाषा सीखनेमें इंडियन बहुत पिछड़ जाते थे सही; पर और और विषयोंमें तथा कलाकौशल सीखनेमें काले नीग्रो और लाल इंडियन विद्यार्थियोंमें कोई बड़ा भारी अन्तर न था । मैं इस बातसे

बहुत प्रसन्न रहता था कि काले विद्यार्थी हर तरहसे इंडियनोंकी सहा-
यता करते थे। अवश्य ही कुछ काले विद्यार्थी चाहते थे कि हैम्पटन-
विद्यालयमें इंडियन भरती न किये जायँ; पर सौभाग्यसे उनकी
संख्या बहुत थोड़ी थी। नीग्रो विद्यार्थियोंकी यह सदासे ही इच्छा
थी कि इंडियन भी अँगरेजी बोलना सीख जायँ और उनकी रहन
सहन तथा आदतें सभ्य लोगोंकीसी हो जायँ। इसलिए जब कभी
कभी उनके शिक्षक इंडियनोंको अपने साथ लेने या अपने कमरेमें
ही टिकानेके लिए कहते तो वे बड़े प्रेमसे इंडियनोंका स्वागत
करते थे।

मुझे इस बातका आश्चर्य होता है कि इस प्रकारका स्वागत कर-
नेवाली एक भी ऐसी गोरी संस्था नहीं है जहाँ अन्य जातिके सौसे
अधिक विद्यार्थियोंका प्रवेश हो। गोरोंको यह सिखापन देनेकी मुझे
कई बार इच्छा हुई है कि दूसरोंकी तरक्की करनेमें हम लोग जितनी
ही मदद करेंगे उतनी ही हमारी तरक्की होगी; और जितनी ही कोई
जाति बदकिस्मत (अभागिनी) और असभ्य होगी, उसकी उतनी ही
मदद करके हम अपने आपको ही ऊपर उठावेंगे।

यहाँ पर मुझे आनरेबल फ्रेडरिक डगलसके कथनका स्मरण हो आता
है। एक बार पेन्सिलवनियाकी रियासतमें मि० डगलस भ्रमण करने
गये थे और दूसरे मुसाफिरोंकी तरह इन्होंने भी टिकट कटाया था; पर
बदनका रंग काला होनेसे इन्हें मालगाड़ीमें बैठना पड़ा! कुछ गोरे
मुसाफिरोंने यह देखा और मि० डगलससे अपनी सहानुभूति प्रकट कर-
नेके लिए उनके पास जा कर कहा—"मि० डगलस, हम लोगोंको इस
बातका बड़ा दुःख है कि आपका ऐसा अपमान हुआ।" महाशय
डगलसने बैठे बैठे ही ज़रा गर्दन तान कर कहा—"अजी! वे फ्रेडरिक
डगलसका अपमान नहीं कर सकते! मेरी आत्माका अपमान

करनेकी ताकत किसी मनुष्यमें नहीं है । इस बर्तावसे मेरा अपमान नहीं हुआ, बल्कि मेरे साथ जो ऐसा बर्ताव कर रहे हैं उन्हींका अपमान हो रहा है । ”

हमारे देशके एक हिस्सेमें यह कायदा है कि काले और गोरे लोग गाड़ियोंके अलग अलग डब्बोंमें बैठें । इस हिस्सेमें मुझे एक ऐसा उदा-हरण मिला जिससे यह मालूम हो जाता है कि काला रंग कहाँ आरंभ होता है और सफ़ेद कहाँ ख़तम होता है इस बातका समझना कितना कठिन है ।

हम लोगोंमें एक बड़ा प्रसिद्ध नीग्रो था । पर वह था इतना गोरा कि बड़े बड़े पहचाननेवाले उसे काला नहीं कह सकते थे । एक बार यह कालोंके डब्बेमें बैठ कर सफ़र कर रहा था । गाड़ीका कंडक्टर जब उसके पास आया तब उसे देखते ही चकरा गया । अगर यह नीग्रो ही है तो इसे गोरोंके डब्बेमें भेजनेकी ज़रूरत नहीं; पर अगर यह गोरा है तो इससे यह पूछना कि “ क्या तुम नीग्रो हो ? ” इसका अपमान करना है । कंडक्टरने उसकी तरफ़ खूब बारीकीसे देखा—उसके बाल, आँखें, नाक और हाथ वगैरह सब कुछ देखा; पर वह कुछ निश्चय न कर सका । आखिर उसने यह उलझन सुलझानेके लिए, ज़रा झुक कर उस आदमीके पैरोंकी तरफ़ देखा । इस पर मैंने मन-ही-मन कहा, “अब फ़ैसला हो गया ! ” और सचमुच ऐसा ही हुआ; उसने समझ लिया कि यह नीग्रो ही है और उसे वहीं बैठा रहने दिया । हमारी जातिमेंसे एक आदमी कम नहीं हुआ, इसलिए मैंने कंडक्टरका अन्तःकरणसे आभार माना !

मैं अपने अनुभवसे यह बात कहता हूँ कि किसी सच्चे सभ्य पुरुष-की पहचान ऐसे वक्त करनी चाहिए जब उसे अपनेसे नीचे दर्जेके लोगोंके साथ मिलनेका अवसर मिले । दक्षिण प्रान्तके कोई पुराने सज्जन जब अपने पुराने गुलामोंसे या उनकी सन्ततिसे मिलते हैं

देखिए कि वे किस ढंगसे मिलते हैं; तब मेरे उक्त कथनकी यथार्थता प्रकट हो जायगी । मेरे कथनका तात्पर्य जार्ज वाशिंगटनके विषयमें कही गई एक बातसे विशेष स्पष्ट होता है । रास्तेमें जार्ज वाशिंगटनको देखकर एक नीग्रोने शिष्टाचारसे अपनी टोपी ऊपर उठाई । जार्ज वाशिंगटनने भी इसके उत्तरमें अपनी टोपी उठाई । इस पर उनके कई गोरे मित्रोंने उनसे कहा, "आप इतने बड़े आदमी होकर एक अदने काले आदमीके सामने टोपी उठाते हैं, यह ठीक नहीं है ।" इस पर जार्ज वाशिंगटनने जबाब दिया—"क्या आप समझते हैं कि मैं किसी काले आदमीको अपनेसे बढ़कर विनयशील बन जाने दूँगा ?"

जिस समय मैं हैम्पटनमें इंडियन युवाओंकी निगरानी करता था, मेरे देखनेमें एक दो अवसर ऐसे आये जिनसे अमेरिकाके वर्णभेदकी विचित्रताका पता लग जाता है । एक इंडियन लड़का बीमार हुआ । उसे मुझे वाशिंगटन ले जाना पड़ा, और वह अपने पश्चिमाञ्चलके अरण्यप्रदेशमें वापिस पहुँचा दिया जाय इसके लिए उसे उस प्रदेशके सेक्रेटरीके हवाले करके उससे रसीद लेनी पड़ी । उस समय मुझे संसारकी रीतिनीतिसे विशेष परिचय नहीं था । मैं वाशिंगटनको जा रहा था । रास्तेमें स्टीमरमें, भोजनकी घंटी बजी । और सब लोग भोजन करनेके लिए चले गये; पर मैं नहीं गया—सबके निपटनेकी राह देखता रहा । जब सब मुसाफिर भोजन कर चुके तब मैं उस लड़केके साथ भोजनगृहमें गया । पर वहाँका एक आदमी मुझसे बड़ी शिष्टताके साथ बोला—"उस लड़केको तो भोजन मिलेगा पर आपको नहीं ।" उस लड़केका और मेरा रंग एकहीसा था; पर न जाने उस आदमीने हम दोनोंकी जाति कैसे पहचान ली । इस काममें वह बड़ा चतुर था इसमें सन्देह नहीं । हैम्पटन—विद्यालयके अधिकारियोंने मुझसे कह दिया था कि वाशिंगटन

पहुँचकर तुम अमुक होटलमें ठहरना । उस होटलमें पैर रखते ही एक क्लर्कने मुझे स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया कि उस इंडियनको तो यहाँ जगह मिल जायगी पर तुम्हारे लिए कोई प्रबन्ध न हो सकेगा ।

इसके बाद, इसी तरहका एक और उदाहरण देखनेमें आया । एक बार मैं एक गाँवमें गया था । उस समय वहाँ इतनी खलबली मच रही थी कि नव्वाबीका अमल होनेमें थोड़ी ही कसर थी । इस खलबलीका कारण भी मज़ेदार था । एक काले रंगका आदमी वहाँके होटलमें आ टिका था । वह मरक्कोका रहनेवाला था और अपने सुभीतेके लिए अँगरेज़ी भाषा बोलता था । एक नीग्रो आदमी गोरोंके होटलमें आके ठहरे और अँगरेजी बोले ! यह उस गाँवके गोरोंसे न सहा गया; पर पीछे जब यह मालूम हुआ कि वह अमेरिकन नीग्रो नहीं है तब लोगोंको शान्ति हुई । उस मनुष्यको भी यह शिक्षा मिल गई कि अब यहाँ अँगरेज़ी बोलनेका काम नहीं ।

इंडियन विद्यार्थियोंके साथ एक वर्ष बिता चुकने पर मुझे हैम्पटनमें एक और मौका मिला । पिछली बातोंको सोचनेसे यही कहना पड़ता है कि आगे चल कर टस्केजीमें योग्यतापूर्वक काम करनेके लिए जिस तैयारीकी आवश्यकता थी वह हासिल करनेके लिए ही ईश्वरने मानो यह अवसर दिया । बहुतसे स्त्री-पुरुषोंको विद्या प्राप्त करनेकी बड़ी अभिलाषा थी; पर उनमें भोजन-वस्त्र और पुस्तकोंका ख़र्च जुटानेकी सामर्थ्य न थी । जनरल आर्मस्ट्रांगको यह बात मालूम थी और इसलिए वे चाहते थे कि हैम्पटन-विद्यालयके साथ ही एक नाइट स्कूल खोला जाय और उसमें बुद्धिवान् और होनहार स्त्री-पुरुषोंकी पढ़ाईका प्रबन्ध हो—दिनमें ये लोग दस घंटे काम किया करें और रातको दो घंटे स्कूलमें पढ़ें । इन लोगोंको मेहनताना इतना दिया जाना तै हुआ कि उसमेंसे भोजनखर्चके बाद कुछ बचत हो जाय, जो स्कूलके ख़ज़ा-

नेमें जमा की जाय, और एक दो वर्ष नाइटस्कूलमें पढ़कर जब ये दिनकी पाठशालामें भरती किये जायँ, यह बचत उनके भोजन-खर्चके लिए दी जाय। यह एक ऐसी योजना थी कि जिससे, विद्यार्थियोंको हर तरहसे, अर्थात् शिक्षा, पुस्तकों, चरित्रबल और व्यवसायकी दृष्टिसे लाभ ही लाभ था।

जनरल आर्मस्ट्रांगने यह नाइट स्कूल मुझे सौंप दिया और मैंने भी उसे खुशीसे लिया। शुरू-शुरूमें ऐसे बारह स्त्री-पुरुष भरती हुए जिन्हें पढ़नेकी बड़ी उत्कंठा थी और जो शरीरसे सुदृढ़ भी थे। दिनको पुरुष आरेसे लकड़ी चीरनेका और स्त्रियाँ कपड़े धोनेका काम करती थीं। दोनों काम कुछ आसान नहीं थे; पर मुझे इन विद्यार्थियोंने जितना प्रसन्न किया उतना और किसीने भी नहीं किया! ये अच्छे छात्र थे और इन्होंने अपने कामोंको भली भाँति सीखा। लिखने पढ़नेसे इनको इतना स्नेह हो गया था कि नींद लेनेकी घंटी बजनेसे वे लाचार होकर अपना बस्ता बाँधते थे, और कभी कभी तो सोनेका समय हो जाने पर भी पढ़ते रहते थे।

इन लोगोंने दिनमें जी-तोड़ मिहनत करने और रातको पढ़नेमें ऐसा अपूर्व उत्साह दिखाया कि मैंने इन लोगोंका नाम ही 'The Plueky Class-अनूठा दर्जा रख दिया। यह नाम तुरन्त फैल गया। नाइट स्कूलमें जो विद्यार्थी कुछ दिन रह कर अपनी कुछ करामत दिखलाता था उसे मैं इस प्रकारका सरटिफिकेट देता था:—

"जेम्स स्मिथको सरटिफिकेट दिया जाता है कि यह हैम्पटन-विद्यालयके अनूठे दर्जेका विद्यार्थी है; यह परिश्रमपूर्वक विद्याप्राप्तिके कार्यमें कभी विचलित नहीं हुआ—बराबर टिका रहा है।"

विद्यार्थी इस सरटिफिकेटकी बड़ी कदर करने लगे, और इससे नाइट स्कूलका यश दिनोंदिन बढ़ने लगा। कुछ ही सप्ताहोंमें नाइटस्कूलके

विद्यार्थियोंकी संख्या २५ हो गई। इन विद्यार्थियोंने पढ़नेके बाद अपनी अच्छी उन्नति की। प्रायः सभी इस समय दक्षिण प्रान्तमें अच्छे अच्छे ओहदोंपर काम कर रहे है। हैम्पटन-विद्यालयका नाइट स्कूल जब शुरू हुआ तब उसमें सिर्फ १२ विद्यार्थी थे; पर अब उसमें तीन चार सौ छात्र पढ़ते हैं; और हैम्पटन-विद्यालयमें नाइट स्कूल एक बड़े महत्त्वकी संस्था गिनी जाती है!

सातवाँ परिच्छेद ।

टस्केजीमें आरम्भके दिन ।

हैम्पटनमें जब मेरे जिम्मे नाइट स्कूल और इंडियन विद्यार्थियोंकी देख भाल थी तब मैं वहाँके शिक्षकोंसे कुछ पढ़ता भी रहता था । मेरे उन शिक्षकोंमें जनरल आर्मस्ट्रांगके बादके (आजकलके) प्रिन्सिपल रे. डाक्टर एच. बी. फ्रिसेल् भी एक थे ।

सन् १८८१ के मई मासमें, अर्थात् नाइट स्कूलका काम शुरू होनेके एक वर्ष बाद मुझे अकस्मात् अपने जीवनके मुख्य कार्यको शुरू करनेका अवसर प्राप्त हुआ । एक दिन रातको, नित्य प्रार्थना समाप्त होनेके पश्चात् जनरल आर्मस्ट्रांगने यह बात छेड़ी कि अलबामा रियासतके टस्केजी नामक छोटेसे ग्राममें काले लोगोंके लिए एक नार्मलस्कूल खुलनेवाला है; मुझसे अलबामाके कुछ सज्जनोंने किसी ऐसे मनुष्यकी सिफ़ारिश करनेके लिए लिखा है जो इस पाठशालाको चला सके । उन लोगोंने शायद यह समझ रक्खा था कि इस कामके लायक कोई काला आदमी न मिलेगा, और इसलिए उन्होंने जनरल आर्मस्ट्रांगसे किसी गोरे मनुष्यकी सिफारिश चाही थी । दूसरे दिन जनरल आर्मस्ट्रांगने मुझे अपने दफ्तरमें बुलाकर पूछा—" अलबामाके विद्यालयका काम कर लोगे ? " मैंने बड़े हर्षके साथ उत्तर दिया कि " कोशिश करना मेरे हाथ है । " तब जनरल आर्मस्ट्रांगने उन सज्जनोंको चिट्ठी लिखी कि " कोई गोरा आदमी मिलना तो मुश्किल है; पर यदि आप लोग किसी काले आदमीको पसंद करें तो मैं एक आदमीका नाम बतलाऊँगा । " यह लिख कर उन्होंने मेरा नाम भी लिख दिया ।

कई दिन बीत गये; पर इस चिट्ठीका कोई जबाब ही न आया । कुछ काल पश्चात् एक दिन, जब कि प्रार्थनामन्दिरमें हम लोग एकत्र

हुए थे, एक सिपाही जनरल आर्मस्ट्रांगके पास एक तार ले आया। प्रार्थना हो चुकने पर उन्होंने वह तार सबको पढ़ सुनाया। उसमें लिखा था— " बुकर टी. वाशिंगटनका रखना हमें स्वीकृत है; आप उन्हें शीघ्र भेजिए। "

विद्यार्थियों और शिक्षकोंको बड़ा आनन्द हुआ; और उन्होंने मुझे हृदयसे बधाई दी। मैं भी टस्केजी जानेको तुरत तैयार हो गया। पहले मैं वेस्ट वर्जीनियामें अपने घर गया। वहाँ कुछ दिन रह कर फिर मैं टस्केजीको रवाना हुआ। टस्केजी एक छोटासा गाँव था। उसकी आबादी दो हज़ार थी और उनमें आधे लोग काले थे। यह आधा हिस्सा दक्षिण प्रान्तके कृष्ण कटिबन्धमें (Black Belt) गिना जाता था। टस्केजी जिस प्रदेशमें बसा था वहाँ कालों और गोरोंकी संख्या, तीन काले और एक गोरा, इस हिसाबसे थी। पड़ोसके कुछ प्रदेशमें कालोंकी संख्या इससे भी अधिक अर्थात् ६ काले और एक १ गोरा, इस हिसाबसे थी।

कृष्ण कटिबन्ध क्या चीज़ है ? इस विषयमें मुझसे कई बार कई लोगोंने प्रश्न किये हैं। पहले तो इस शब्दसे देशकी काली भूमि ही समझी जाती थी। दक्षिण अमेरिकामें काली और उपजाऊ भूमि बहुत है। वहाँ गुलामोंको ले जाकर गोरे मालिक उनसे खूब लाभ उठाते थे। धीरे धीरे वहाँ गुलामोंकी बहुत बड़ी आबादी हो गई। जब युद्ध शुरू हुआ तब यही शब्द राजनीतिक अर्थमें लिया जाने लगा, अर्थात् जिस प्रदेशमें गोरोंसे कालोंकी संख्या अधिक है उस प्रदेशका ही कृष्ण कटिबन्ध नाम पड़ गया।

जब तक मैं टस्केजीमें पहुँचा नहीं था तब तक, यही सोचता था कि पाठशालाके लिए मकान और जिन जिन चीज़ोंकी ज़रूरत होती है वे सब चीज़ें जुट गई होंगी; पर वहाँ जाकर देखा तो पाठशालाके लिए

न तो कोई मकान था, और न कोई सामान हीं। यह देखकर मैं कुछ निराश हो गया। परन्तु ऐसे लोगोंकी वहाँ कमी न थी जो सचमुच ही ज्ञानके प्यासे और इस कार्यसे हार्दिक सहानुभूति रखनेवाले थे। इससे मुझे बहुत कुछ ढाढस मिला।

पाठशालाके लिए टस्केजी बड़ी अच्छी जगह थी। यह गाँव नीग्रो लोगोंकी बसतीके बीचमें था और यहाँ एकान्तका भी बड़ा सुख था। रेलवेकी मुख्य सड़कसे यह पाँच मीलके फासले पर था। रेलवेकी दूसरी एक छोटीसी शाखा गाँवतक आ गई थी। गुलामीके दिनोंमें और उसके बाद भी यह स्थान गोरे लोगोंकी शिक्षाका केन्द्र रहा है। इससे बड़ा काम हुआ; क्योंकि मैंने देखा है कि विद्या और विनय, दोनोंमें—यहाँके गोरे सबसे बढ़कर हैं। काले लोग अपढ़ जरूर थे, पर उन्होंने और शहरोंके निम्नश्रेणीके लोगोंमें फैली हुई बुराइयोंसे अपने शरीरोंको नहीं बिगाड़ रक्खा था। दोनों जातिके लोगोंका परस्पर व्यवहार बहुत अच्छा था। उदाहरणार्थ, उस गाँवमें लोहेकी जो सबसे बड़ी दूकान थी उसे एक काले और गोरे आदमीने मिलकर खोला था, उसमें दोनोंका बराबर हिस्सा था और दोनों ही उसका कामकाज देखते थे। जबतक उनमेंसे एकका देहान्त नहीं हुआ तबतक, यह साझेकी दूकान बराबर चलती रही।

मेरे टस्केजी आनेके एक वर्ष पहले, टस्केजीके कुछ सज्जनोंने हैम्पटन–विद्यालयका कार्य देखकर अपने गाँवमें भी एक आदर्श विद्यालय खोलना चाहा और इसके लिए उन्होंने अपने यहाँके प्रतिनिधियोंके द्वारा सरकारसे सहायताकी प्रार्थना की। सरकारने यह प्रार्थना स्वीकार की और इस काममें दो हज़ार डालर खर्च करनेकी मंजूरी दे दी; पर मैंने यहाँ आकर देखा कि यह रकम तो शिक्षकोंके वेतनमें ही खर्च हो जायगी; मकान और सरंजामके लिये कुछ बचेगा ही नहीं। इस

दशामें मैं निराश हुआ। पर काले लोगोंको बड़ी खुशी हुई—यह सुनकर बड़ा हर्ष हुआ कि अब यहाँ एक स्कूल खुलनेवाला है, और वे अपनी शक्तिभर मेरी सहायता करनेके लिए तैयार हो गये।

अब मेरा पहला काम यह हुआ कि पाठशालाके लिए कोई स्थान तलाश करूँ। ढूँढ़ते ढूँढ़ते कालोंके 'मेथाडिस्ट' चर्चके पास एक जगह मिली। एक पुराना बेमरम्मत मकान था; इसमें पाठशाला हो सकती थी; और वह चर्च (गिरजाघर) सभाभवनके काममें आ सकता था। गिरजाघर और मकान दोनों ही अतिशय जीर्ण थे। मुझे याद आता है कि जब कभी पानी बरसता था तब पुराने विद्यार्थियोंमेंसे एकाध लड़का अपना पाठ छोड़कर मेरे पास आकर मेरे सिर पर छाता पकड़े रहता था और इस हालतमें मैं विद्यार्थियोंके पाठ सुनता था। कई बार तो ऐसा हुआ है कि मैं भोजन करने बैठा हूँ और पानी बरसने लगा है। ऐसे समय मेरी स्त्री मुझ पर छाताकी छाया किये खड़ी रहती थी। इससे आप लोग समझ जायँगे कि स्कूलके मकानकी हालत कितनी खराब थी।

अलबामाके काले लोग राजनीतिक बातोंमें बहुत योग दिया करते थे और चाहते थे कि मैं भी उनके पक्षमें जा मिलूँ। राजनीतिक कामोंमें वे दूसरोंका अधिक विश्वास नहीं करते थे। लोग अकसर मेरी चर्चा किया करते थे; क्योंकि उन्हें यह मालूम नहीं था कि मेरे क्या विचार हैं। उन लोगोंने मेरे विचारोंको जाननेके लिए मेरे पास एक आदमी प्रतिनिधि बना कर भेजा था। वह आकर मुझसे कहने लगा, "हम लोग चाहते हैं कि आप भी हम लोगोंके पक्षमें ही अपनी सम्मति दिया करें। हमें समाचारपत्र पढ़ना तो इतना नहीं आता; पर यह मालूम है कि अपना मत कैसे देना चाहिए। और हम चाहते हैं कि आप भी हम लोगोंके समान मत दिया करें। हम लोग पहले यह खूब अच्छी तरहसे देख लेते हैं कि गोरा क्या कहता है—किस ओर अपनी

सम्माति देता है। जब हम जान लेते हैं कि गोरेने अमुक ओरसे सम्माति दी है तब हम लोग ठीक उससे उलटी अपनी सम्माति दे देते हैं! तब हम समझते हैं कि हमने उचित सम्माति दी।" नीग्रो लोगोंकी उस समय यह दशा थी। पर अब मुझे यह कहते हर्ष होता है कि गोरेके विरुद्ध सम्माति देना, फिर उसमें लाभ हो या नुकसान, यह जो पुरानी रीति थी वह अब दिनोंदिन मिट रही है और अब मेरे भाई यह जानने लगे हैं कि राय ऐसी देनी चाहिए जिससे दोनों जातियोंका लाभ हो।

यह मैं कह चुका हूँ कि १८८१ के जून मासमें मैं टस्केजीमें आया। पाठशालाके लिए जगह ढूँढ़ने, देहातके लोगोंकी रहन सहन देखने, और जिन लोगोंको मैं चाहता था कि स्कूलमें आवें उन लोगोंमें, पाठशालाकी चर्चा फैलानेमें ही मैंने पहला महीना बिताया। एक खच्चर और एक गाड़ीके साथ मैंने देहातोंमें भ्रमण किया। मैं काले लोगोंके साथ भोजन करता और उन्हींकी झोपड़ियोंमें रहता था। इस तरह मैंने उनके खेत, उनकी पाठशालायें और उनके गिरजाघर देखे। किसीको मेरे आनेकी सूचना पहलेसे नहीं मिलती थी; इससे मुझे उनकी असली हालत देखनेको मिल जाती थी।

गाँवोंमें प्रायः सभी लोग एक ही कोठरीमें सोया करते थे और कभी कभी मेहमानोंकी भी उसी कोठरीमें खातिर की जाती थी। मैं सोनेके लिए प्रायः कहीं बाहर चला जाता था, और कभी कभी सबके सो जाने पर सोता था। फर्श पर या किसीके बिछौने पर एक तरफ मुझे सोनेको स्थान दिया जाता था। हाथ पैर धोनेके लिए शायद ही किसी झोपड़ीमें कोई प्रबन्ध रहता हो; पर झोपड़ीके बाहर आँगनमें अवश्य ही वे कुछ न कुछ प्रबन्ध कर देते थे।

सूअरका मांस और बाजरेकी रोटी, यही सबका मामूली खाना था।

वहाँकी देहातमें घूमते हुए मुझे कई बार ऐसे मोके मिले हैं जब मैंने बाजरेकी रोटी, खाली पानीमें उबाले हुए मटरके साथ खाई है। वहाँके लोग तो सिवा मांस और रोटीके कुछ खाना जानते ही न थे। वे मांस और बाजरेका आटा गाँवकी बड़ी दूकानसे लाते थे। तरकारी लगानेका विचार भी उनके मनमें कभी न आया। जहाँ देखिए, कपासकी खेती हो रही है, यहाँतक कि कहीं कहीं झोपड़ियोंके दरवाजों तक कपासके पौधे लगे हुए नजर आते थे।

इन झोपड़ियोंमें मैंने अकसर सीनेकी कलें, घड़ियाँ, या हारमोनियम बाजे देखे हैं। सात सात डालर कीमत देकर कोई सीनेकी कल और बारह चौदह डालर खर्च कर कोई घड़ी खरीद लेना या किस्तबन्दी पर ले लेना इन लोगोंके लिए एक मामूली बात थी। एक बार मैं एक आदमीके यहाँ भोजन करने गया। घरके चार आदमी और मैं, पाँच आदमी भोजनके लिए मेज़के पास बैठे। पर खानेको सबके लिए एक ही काँटा था! इस लिए मुझे बहुत देरतक चुपचाप बैठ रहना पड़ा। इसी घरमें सामनेके एक कोनेमें हारमोनियमकी एक पेटी रक्खी हुई थी। उसके बारेमें घरके लोगोंने कहा कि इसकी कीमत ६० डालर है और हम लोग किस्त बाँधकर इसका मूल्य दे रहे हैं। एक काँटा और ६० डालरका बाजा! बहुतेरी जगहोंमें सीनेकी कलसे कोई काम भी नहीं लिया जाता था, और घड़ियाँ इतनी रद्दी होती थीं कि ठीक समय भी न देती थीं। यदि कुछ घड़ियाँ अच्छी भी हुई तो क्या?—उन्हें देखकर समय जाननेवाला ही कौन था? १० में ९ आदमी भी घड़ी देखकर यह न बतला सकते थे कि कितने बजे हैं। बाजेका भी यही हाल था—धूल खाता हुआ पड़ा रहता था।

जहाँ मैं भोजन करने गया था वहाँ, मेज़ वगैरहका प्रबन्ध खास मेरी खातिरके लिए किया गया था। प्रायः सभी घरोंमें भोजनकी यह कैफि-

यत थी कि सबेरे सोकर उठनेके बाद गृहिणी तवे पर एकाध मांसका टुकड़ा, और एक बरतनमें सना हुआ आटा रख देती थी। ये दोनों बरतन ज़रा आग पर रख देनेसे ही सबेरेका भोजन तैयार हो जाता था। घरका मालिक हाथमें मांस और रोटी लिए खाता चबाता हुआ अपने खेत पर जाता, फिर गृहिणी एक कोनेमें बैठ कर खा पी लेती, और बाल बच्चे खेलते कूदते हुए अपनी रोटी और मांस खा लिया करते। बस, यही इन लोगोंकी खाने पीनेकी व्यवस्था थी।

सबेरेका नाश्ता कर चुकने पर घरके सब लोग घरके प्रबन्धकी कोई चिन्ता न करके कपासके खेत पर चले जाते थे। छोटे छोटे बच्चोंको भी खेतोंपर जुत जाना पड़ता था; और नन्हें बालक कपासकी किसी कतारके एक तरफ़ पड़े रहते थे। जब उस कतारकी चुनाई हो चुकती तब उनकी मातायें उन्हें दूध पिलाती थीं। सबेरेकी तरह ही दो-पहर और शामका भी भोजन होता था।

शनिवार और रविवारको छोड़कर प्रायः सर्वदा ही इनका एक ही कार्य-क्रम रहता था। शनिवारको सब लोग आधा दिन या सारा दिन शहरमें बिताते थे। बहुत करके वे बाज़ार करने या आवश्यक वस्तुयें ख़रीदने-की ग़रज़से शहर जाते थे। यद्यपि परिवारमें जितनी चीज़ें आवश्यक होती थीं वे सब १०।१५ मिनिटमें ही कोई एक आदमी खरीद ला सकता था; पर परिवारके सभी लोग सौदा खरीदनेके लिए बाहर निकलते और शहरकी सड़कों पर इधर उधर घूमनेमें सारा दिन बिताते थे; और स्त्रियाँ भी कहीं तमाखू पीती या सुँघनी सूँघती हुई बैठ रहती थीं। रविवारके दिन सभामें आना होता था। इन लोगोंमें ऐसे तो इने गिने ही लोग थे जिनके खेत रहन न रक्खे गये हों अथवा जो किसीके कर्ज़दार न हों—नहीं तो, प्रायः सभी काले किसान ऋणसे दबे रहते थे। प्रादेशिक सरकार प्रत्येक गाँवमें पाठशालाभवन नहीं बना सकती थी; इसलिए

बहुतेरी पाठशालायें गिरजाघरोंमें या लकड़ीकी झोपड़ियोंमें होती थीं । मुझे अपनी यात्रामें अकसर यह देखनेका अवसर मिला है कि जाड़ेके दिनोंमें पाठशालाका मकान गरम रखनेका कोई उपाय नहीं किया गया है, और इसलिए आँगनमें आग सुलगाकर शिक्षक और छात्र बाहर आकर ताप रहे हैं । देहातकी पाठशालाओंके शिक्षक पढ़ानेके काममें निरे मूर्ख थे; उनका आचरण भी शुद्ध न होता था । तीन, चार या पाँच महीने पाठशाला जारी रहती थी । पाठशालामें सिवाय एक मोटे खुरदरे तखतेके और कोई सामान नहीं रहता था । मुझे एक बारकी याद आती है कि मैं एक पुरानी काठकी झोपड़ीकी पाठशालामें गया था । वहाँ मैंने देखा कि पाँच विद्यार्थी एक ही पुस्तकसे पाठ ले रहे हैं । पुस्तक बेंच पर बैठे हुए पहले दो विद्यार्थियोंके बीचमें थी; इनके पीछे दो विद्यार्थी खड़े खड़े इनके कन्धोंपरसे झुककर पुस्तक देख रहे थे; और इन चारोंके कन्धोंपरसे झुककर देखनेवाला एक छोटा विद्यार्थी और खड़ा था !

जो हाल इन पाठशालाओं और शिक्षकोंका था, वही हाल गिरजा-घरों और उनके पादरियोंका या उपदेशकोंका भी समझिए ।

मेरी यात्रामें मुझे कई अजीब लोगोंके दर्शन हुए । गँवारोंके सोचने विचारनेका ढंग कैसा होता है यह जाननेके लिए मैं यहाँ एक उदाहरण दिये देता हूँ । एक साठ वर्षके काले नीग्रोसे मैंने कहा कि "मुझे अपना इतिहास सुना जाओ ।" उसने कहा—"मैं वर्जीनियामें पैदा हुआ, और १८४५ के सालमें अलबामामें मैं बिका ।" मैंने उससे पूछा,—"तुम्हारे साथ और कितने लोग बिके ?" इसपर उसने यह उत्तर दिया कि, "हम लोग पाँच जनें थे—मैं, मेरा भाई और तीन खच्चर ।"

टस्केजीके आसपासके गाँवोंमें यात्रा करते समय मैंने जो कुछ देखा था ऊपर उसीका वर्णन किया है । पर इसके साथ ही मैं यह भी सूचित कर देता हूँ कि उस समय मैंने ऐसे लोग और ऐसी संस्थायें भी देखीं

थीं जिनके विषयमें ऊपरका वर्णन कदापि नहीं घट सकता। टस्केजीके और अन्यान्य संस्थाओंके कार्योंसे जो सुधार हमारे समाजमें हुए हैं उनकी ओर, ध्यान दिलानेके लिए—यह जाननेका सुभीता कर देनेके लिए कि पहले क्या हाल था और अब इन संस्थाओंके प्रयत्नसे क्या हो गया है—मैंने अपनी यात्रामें जो कुछ देखा उसे यहाँ स्पष्ट बतला दिया है।

आठवाँ परिच्छेद।

अस्तबल और मुर्गीखानेमें पाठशाला।
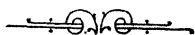
अलबामा प्रदेशके देहातोंमें घूम कर मैंने जो कुछ देखा उससे मेरी आँखें खुल गईं और मैंने जाना कि मुझ पर इस वक्त कितनी बड़ी जिम्मेदारी है। काम करनेवाला मैं अकेला था, और इन लोगोंको अज्ञानसे उठाना कोई साधारण काम नहीं था। मेरे मनकी बड़ी विचित्र अवस्था हुई। मुझे यह विश्वास न होता था कि मैं इस कार्यको कर सकूँगा। मेरा मन यहाँतक चलविचल हुआ कि इस काममें हाथ डालना उचित है या नहीं, इसका भी मुझे सन्देह होने लगा। अस्तु।

नीग्रो लोगोंके गाँवोंमें एक मास बिताकर मैंने इन लोगोंकी असली हालत देखी और देखकर इतना तो खूब समझ लिया कि उस वक्त अमेरिकामें जो शिक्षाप्रणाली प्रचलित थी उससे यहाँ काम न चलेगा—कुछ और भी करना होगा। हैम्पटन-विद्यालयकी शिक्षाप्रणालीका ठीक ठीक महत्त्व इसी समय मेरी समझमें आया। अलबामाके नीग्रो लोगोंके लड़कोंको एकट्ठा करके उन्हें पुस्तकसम्बन्धी शिक्षा या किताबी तालीम देना तो मेरे ख़यालमें, उनके समयको वृथा नष्ट करना ही था। इस समय मेरे सामने नीग्रो जातिके समग्र जीवनकी तैयारीका प्रश्न हल करनेके लिए आ पड़ा।

टस्केजीके रईसोंकी सलाहसे १८८१ की ४ थी जुलाईको गिरजाघरमें और उसके पासके एक बेमरम्मत मकानमें मैंने स्कूल खोलना निश्चय किया। काले और गोरे दोनों ही बड़े उत्साहसे स्कूल खुलनेकी बाट जोह रहे थे। इसमें सन्देह नहीं कि टस्केजीके आसपास ऐसे भी

बहुतसे लोग थे जो स्कूल खोलनेके विरोधी थे। उन्हें यह सन्देह था कि स्कूलसे काले लोगोंको कोई लाभ न होगा। बहुतेरोंका तो यह कहना था कि इससे आपसमें झगड़ा-फ़साद पैदा हो जायगा। कुछ लोगोंकी बुद्धिमें यह आया कि नीग्रो लोग जितना ही लिख पढ़ लेंगे उतनी ही उनकी आर्थिक दुर्गति होगी; क्योंकि शिक्षित होने पर नीग्रो लोग खेती-बारीका काम छोड़ देंगे, और घरू काम करनेके लिए हमें मज़दूर भी न मिलेंगे।

इस नये स्कूलसे गोरोंको यह डर था कि नीग्रो लोग लिख पढ़ करके सिर पर ऊँची टोपी दिया करेंगे, नकली सोनेके चश्मे लगायँगे, हाथमें बढ़िया छड़ी लिया करेंगे, हाथोंमें चमड़ेके हाथमोज़े पहनेंगे, तरह तरहके भड़कदार बूट पहनेंगे; मतलब यह कि सभी काम अपनी बुद्धिसे किया करेंगे। वे लोग शिक्षाका मतलब ही यही समझते थे और इस लिए यदि उन्होंने नीग्रो लोगोंकी शिक्षामें इन्हीं बातोंको देख पाया तो कोई आश्चर्य नहीं।

स्कूल खोलनेमें जो जो विघ्नबाधायें उपस्थित हुईं उनको हटानेमें टस्केजीके कई सज्जन मेरी बराबर सहायता करते रहे और आगे भी उनसे मुझे बराबर सहायता मिलती रही। दो सज्जनोंसे तो मैं सदा ही सलाह लिया करता था और उन्हींकीं देखरेखमें सब काम किया करता था। यह तो कभी हुआ ही नहीं कि मैं उनसे कोई बात पूछने गया और उन्होंने ‘ नाहीं ’ कर दी। मुझे जो कुछ कामयाबी इस काममें हुई उसे मैं इन्हीं दो महाशयोंकी बदौलत समझता हूँ। ये दो पुरुष वहाँके आदर्शस्वरूप थे। इनमेंसे एक तो गोरे साहब हैं; जो पहले गुलामोंका व्यवसाय किया करते थे। इनका नाम है मि० जार्ज डब्ल्यू. कैंबेल। दूसरे सज्जन काले हैं। ये पहले गुलाम थे। इनका नाम मि० लेविस एडम्स है। इन्हीं दो सज्जनोंने जनरल आर्मस्ट्रांगको शिक्षक भेजनेके लिए चिट्ठी लिखी थी।

मि० कैम्बेल एक व्यापारी और कोठीवाल हैं। शिक्षाके बारेमें उन्हें बहुत थोड़ा अनुभव है। मि०एडम्स शिल्पी (कारीगर) हैं। इन्होंने गुलामीके दिनोंमें जूता सीना, ज़ीन वगैरह बनाना, और टिनकी जोड़ाई करना आदि काम सीख लिये थे। स्कूलमें इन्होंने एक दिन भी पैर नहीं रक्खा; फिर भी इतना इन्होंने कर लिया है कि कुछ लिख-पढ़ लेते हैं। मैंने टस्केजीमें आकर स्कूलका जो ढाँचा डाला था—जो योजना की थी, उसे इन्होंने शुरूसे देखा। इन्हें वह पसन्द भी हुई और इस लिए हर काममें इन्होंने मुझे साथ दिया। जब जब स्कूलके लिए धनकी ज़रूरत हुई है और हम लोग मि० कैंबेलके पास गये हैं तब तब उन्होंने हमारी खुले दिलसे सहायता की है। स्कूलके प्रबन्ध और सुधारके कामोंमें सिवा इन दो सज्जनोंके, और किसीसे सलाह लेनेकी ज़रूरत मैंने न समझी।

मि० एडम्समें बड़ा मानसिक बल था। मैं समझता हूँ कि गुलामीके दिनोंमें इन्हें जो ऊपर बतलाये हुए तीन कामों पर हाथ जमानेकी शिक्षा मिली थी उसीका यह फल है। आज भी, अगर दक्षिण प्रान्तमें जाकर किसी शहरमें मुख्य और विश्वासपात्र नीग्रो लोगोंका अनुसन्धान किया जाय तो फ़ी दस आदमियोंमें पाँच मनुष्य अवश्य ऐसे मिलेंगे जिन्होंने गुलामीके दिनोंमें कोई न कोई हुनर—शिल्प अच्छी तरह सीखा होगा। अर्थात् अच्छी तरह हुनर या कारीगरी आदि परिश्रमके काम सीखे हुए लोग ही प्रायः मानसिकबलशाली और विश्वासपात्र होते हैं।

जिस दिन स्कूल खुला उसी दिन सबेरे तीस छात्र भरती किये गये। उस वक्त पढ़ानेवाला मैं अकेला ही था। इन तीस छात्रोंमें १५ स्त्रियाँ थी। प्रायः सभी छात्र मैकन प्रदेशसे आये हुए थे। टस्केजी इसी प्रदेशका मुख्य स्थान था। उक्त ३० छात्रोंके अतिरिक्त और भी बहुतसे छात्र भरती होना चाहते थे; पर यह निश्चय हो चुका था कि

केवल ऐसे छात्र भरती किये जायँगे जिनकी उम्र १५ वर्षसे अधिक हो और जो कुछ शिक्षा भी पहलेसे पा चुके हों। इन तीस छात्रोंमें बहुतेरे ऐसे थे जिन्होंने इससे पहले पब्लिक-स्कूलोंमें मुदर्रिसी या अध्यापकी भी की थी। चालीस चालीस साल उम्रके भी कुछ विद्यार्थी थे। अध्यापकोंके साथ उनके कई एक शिष्य भी आ गये थे। और यह तमाशा देखनेमें आया कि प्रवेशपरीक्षामें शिष्य ही शिक्षकोंसे बढ़कर निकले, इसलिए वे शिक्षकोंसे ऊपरके दर्जेमें भरती किये गये! इन शिष्य-शिक्षकोंको विद्यालाभके उद्देश्य और उपायके बारेमें बहुत कम ज्ञान था। बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ने और बड़े बड़े शब्दोंको काममें लानेका भी इन्हें बड़ा शौक था। इनमेंसे बहुतेरे इस बातका भी अभिमान रखते थे कि हमने अमुक अमुक ग्रन्थोंका अध्ययन किया है और अमुक विषयोंमें पारदर्शिता प्राप्त की है। आपसमें जब इस तरहकी बातें ये लोग करते तो सुनकर मुझे हँसी आती थी। कुछ छात्रोंने लैटिन भाषाका अभ्यास किया था। दो एक छात्र ग्रीकभाषा भी जानते थे, इसलिए वे अपनेको औरोंसे बहुत श्रेष्ठ समझते थे।

सचमुच ही मैंने अपनी एक महीनेकी यात्रामें एक बड़ी ही खराब बात देखी; वह यह कि हाई-स्कूलमें पढ़ा हुआ एक विद्यार्थी अपनी झोपड़ीमें बैठा हुआ था। उसके कपड़ों पर तेलके धब्बे लगे हुए थे, आस-पास इतनी गन्दगी थी कि जी मचला जाय, आँगनमें और बाग़में बेहिसाब घास बढ़ी जा रही थी, और आप फ्रेंच भाषाका व्याकरण पढ़नेमें मगन हो रहे थे!

शुरू शुरूमें जो विद्यार्थी आये उन्हें व्याकरण और गणितकी लंबी लंबी और कठिन परिभाषायें कंठ करनेका बड़ा शौक़ था; पर कंठ किये हुए इन नियमोंको काममें लानेकी बात कभी उनके ध्यानमें भी न आई। उन्होंने सूद, मितीकाटा, स्टाक आदिके नियम तोतेकी तरह रट डाले थे;

पर यह नहीं जानते थे कि बैंकसे क्या काम लिया जाता है। विद्यार्थि-योंके नाम राजिस्टरमें लिख लेते समय मैंने यह देखा कि हरेकके नामके साथ एक या दो अक्षर भी हुआ करते हैं, जैसे जान जे. जेम्स। अगर यह पूछा जाता कि इस 'जे'का क्या मतलब है तो यही जबाब मिलता कि यह भी उपनामका (अल्लका) एक हिस्सा है। बहुतेरे शिक्षार्थी इसलिए पढ़ना चाहते थे कि आगे चलकर वे शिक्षक हो जायँगे तो बहुतसा धन कमा लेंगे।

पर इन बातोंसे यह न समझिए कि स्कूलके छात्र बिलकुल निकम्मे थे। इन विद्यार्थी और विद्यार्थिनियोंमें पढ़नेकी ओर जैसी प्रवृत्ति और जैसा उत्साह था वैसा तो मैंने कहीं देखा ही नहीं। कोई बात जब उन्हें समझाई जाती थीं तो वे उसे पूरा ध्यान दे कर समझते थे। मैंने निश्चय किया कि उन्हें जो कुछ पुस्तकसंबन्धी विद्या सिखलाई जाय उसकी जड़ उनमें पहले पक्की जमा दी जाय तब आगे पढ़ाया जाय और जो कुछ सिखलाया जाय वह अधूरा ही न छोड़ा जाय। जिन विषयोंके ज्ञानकी डींग वे लोग हाँका करते थे, मैंने देखा कि उन विषयोंका उन्हें बहुत ही थोड़ा परिचय है। हमारी नई विद्यार्थिनियाँ नकशे पर सहाराकी मरुभूमि दिखला सकती थीं; चीनकी राजधानी भी ढूँढ निकाल सकती थीं; पर भोजनकी मेज़ पर काँटा और चम्मच कहाँ रक्खा जाता है, या रोटी और मांस कहाँ परोसना चाहिए, इतना भी न जानती थीं!

एक विद्यार्थी घनमूल और सूद मितीकाटेके हिसाब लगानेमें बड़ी माथापच्ची किया करता था। आखिर मुझे उससे कहना ही पड़ा कि पहले तुम पहाड़ा अच्छी तरहसे याद कर लो तब आगे बढ़ो!

विद्यार्थियोंकी संख्या दिनोंदिन बढ़ती जाती थी; यहाँ तक कि पहले ही मासके अन्तमें ५० विद्यार्थी हो गये। कई विद्यार्थियोंका यह कहना था कि "हम लोगोंको यहाँ बहुत थोड़े दिन रहना है, इस

लिए हमें ऊपरके दर्जेमें भरती कर लीजिए और संभव हो तो पहले ही सालमें डिप्लोमा दिला दीजिए !"

कोई डेढ़ महीने बाद स्कूलको एक उत्तम व्यक्तिके अध्यापनका सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनका नाम मिस आलिविया ए. डेविड्सन था। आगे चलकर ये ही आलिविया मेरी सहधर्मिणी हुईं। मिस डेविड्सनने आविओ रियासतमें जन्म पाया था, और उसी रियासतके पब्लिक स्कूलमें उन्होंने आरंभिक शिक्षा भी पाई थी। जब वे कुछ सयानी हुईं तब उन्होंने सुना कि दक्षिण प्रान्तमें शिक्षकोंकी बड़ी आवश्यकता है। तभीसे वे बाहर जानेकी चिन्ता करने लगीं। निदान एक अच्छा योग पा करके वे मिसिसिपी रियासतमें आकर अध्यापनका कार्य करने लगीं। इसके बाद मेंफिस रियासतमें पढ़ाती रहीं। मिसिसिपीमें जब वे पढ़ाती थीं तब उनके एक विद्यार्थीको माता निकल आई थीं। उस वक्त लोग इतने घबरा गये कि उस बेचारे लड़केकी सेवाटहल करनेके लिए भी कोई न रहा। मिस डेविड्सनने अपना स्कूल बन्द कर दिया, और जब तक वह लड़का बिलकुल चंगा न हो गया तब तक वे रात दिन उसीकी सेवाशुश्रूषा करने लगीं। छुट्टियोंमें वे अपने घर आ गईं और ऐसे वक्त मेंफिसमें 'यलो फिवर' नामक संक्रामक ज्वर फैलने लगा। जब मि० डेविड्सनको इसकी खबर मिली तो वे संक्रामक रोगके रोगियोंकी शुश्रूषा करनेको तैयार हो गईं और यद्यपि उन्होंने कभी इस रोगके रोगियोंकी परिचर्या नहीं की थी—इस रोगका नाम भी न सुना था तो भी मेंफिसके शेरीफको तार दे दिया कि "मैं दाईका काम करनेके लिए तैयार हूँ।"

दक्षिण प्रान्तमें मिस डेविड्सनको जो कुछ अनुभव प्राप्त हुआ उससे उनकी भी यह धारणा हो गई थी कि केवल पुस्तकी-विद्याके अतिरिक्त कुछ और भी, लोगोंके लिए आवश्यक है। हैम्पटनकी शिक्षापद्धतिके

विषयमें उन्होंने सुना था और उन्होंने यह विचार भी कर रक्खा था कि दक्षिण प्रान्तमें मैं तभी कुछ कार्य कर सकूँगी जब हैम्पटन-विद्यालयमें जाकर पूरा अभ्यास करूँ । संयोगवश बोस्टनकी मिसेस मेरी हेमेनवे नामकी एक कुलीन महिलाने इनकी असाधारण बुद्धिमत्ता देख उदारतापूर्वक इनकी सहायता की जिससे ये हैम्पटन-विद्यालयकी पढ़ाई पूरी कर सकीं । इसी प्रकार फ्रामिंगहमके 'मेसेच्युसेट्स नार्मल स्कूल'में पढ़ने और वहाँकी दो सालकी पढ़ाई समाप्त करनेका भी इन्हें मौका मिला ।

मिस डेविड्सनका रंग गोरा है; पर गोरे रंगमें उन्होंने मौका मिलने पर भी कभी अपना नीग्रोपन छिपाना नहीं चाहा । जिस वक्त ये फ्रामिंगहम जा रही थीं, इनके एक परिचित व्यक्तिने इन्हें सलाह दी कि "अगर मेसेच्युसेट्स स्कूलमें आप अपनी जाति छुपा दें तो आपका बड़ा काम होगा । यह आप आसानीसे कर भी सकती हैं; क्योंकि आपका रंग खासा गोरा है और कोई आपको देखकर नीग्रो नहीं कह सकता ।" इस पर इन्होंने फ़ौरन जबाब दिया—"किसी कामके लिए अथवा कैसी ही मुसीबत आने पर भी मैं कभी अपनी जातिके विषयमें किसीको धोखा न दूँगी ।"

फ्रामिंगहमकी पढ़ाई समाप्त करके मिस डेविड्सन टस्केजीमें आईं । वे अपने साथ उत्तम शिक्षापद्धति, असाधारण नीतिमत्ता, और असीम स्वार्थत्याग भी लेती आईं । टस्केजीके विद्यालयने जो कामयाबी पाई है उसकी नीव देनेमें जितनी सहायता मिस आलिविया ए. डेविड्सनने की है उतनी और किसीने भी नहीं की ।

मैं और मिस डेविड्सन दोनों शुरूसे ही स्कूलके भविष्यका विचार करने लगे । विद्यार्थी पुस्तकी विद्या चटपट ग्रहण कर अपने मनका विकाश करने लगे; परन्तु उनका जीवन सुदृढ़ नीव पर संगठित करनेके लिए यह आवश्यक था कि पुस्तकी विद्याके अतिरिक्त भी कुछ किया

जाय । छात्रोंमें ऐसे विद्यार्थी बहुत थे जिन्हें घरपर अपने शरीरकी रक्षा और उन्नतिके विषयमें कुछ भी सिखलाया नहीं गया था । टस्केजीके छात्रावास छात्रोंके निजी घरोंसे अच्छी हालतमें न थे । उन्हें मुँह हाथ धोना, नहाना, कपड़े साफ़ रखना इत्यादि बातें भी सिखलानी आवश्यक जान पड़ीं । क्या खाना चाहिए, किस तरह खाना चाहिए, और कमरोंको कैसे साफ़ रखना चाहिए, यह भी सिखलानेकी आवश्यकता थी । इन सब बातोंको छोड़ उन्हें किसी व्यवसायकी अमली तालीमके साथ साथ उद्यम, मितव्यय और किफ़ायतशारीकी ऐसी आदतें लगा देनी थीं जिनसे उन्हें आगे चलकर जीविकाके लिए कभी किसीके सामने हाथ न पसारना पड़े । केवल पुस्तकी विद्या देनेके बदले हम उन्हें सब बातोंका यथार्थ ज्ञान देना चाहते थे ।

हमारे विद्यालयमें आनेवाले छात्र प्रायः ऐसी जगहोंसे (देहातोंसे) आते थे जहाँ जीविकाका एक मात्र साधन खेती ही था । गल्फ स्टेटके फ़ी सैकड़ा ८४ लोग खेती पर बसर करते थे। इस लिए हम लोगोंको शिक्षा देनेमें इस बातपर ध्यान देना पड़ता था कि हमारी शिक्षासे ऐसा न हो कि हमारे छात्र खेतीसे भाग कर शहरमें रहनेकी लालचमें आजायँ। हम लोग चाहते थे कि हमारे छात्र इस योग्य हो जायँ कि वे शिक्षक बन कर अपने गाँवोंमें वापिस जा खेतीकी उन्नति करें और अपने भाइयोंकी बौद्धिक, नैतिक तथा धार्मिक बातोंमें—विचारोंमें नवीन जीवन और नया जोश डालने लगें ।

परन्तु यह सब कैसे हो ? हमारे पास तो काफ़ी जगह भी न थी । *वही पुराना मकान और गिरिजाघर,* नीग्रो लोगोंकी कृपासे मिल गया था । पर उससे क्या होता ? विद्यार्थियोंकी संख्या दिनोंदिन बढ़ती जाती थी । जैसे जैसे नये नये विद्यार्थी आते थे और हम लोग भी गाँव-देहातोंमें घूम कर लोगोंकी हालत देखते थे, हमको यह पता लगता था

कि जिन लोगोंके उद्धारके लिए हम इन छात्रोंको शिक्षित करानेकी चेष्टा कर रहे हैं, उनकी ज़रूरतें बहुत हैं और हम लोग उनमेंसे एकाध ही रफ़ा कर सके हैं ।

गाँवोंसे आये हुए विद्यार्थियोंसे बातचीत कर हम लोगोंने यह मालूम किया कि उनमेंसे बहुतेरे इस लिए शिक्षार्थी हुए थे कि हाथसे काम न न करना पड़े; मेहनत करनेको वे नीच काम समझते थे ।

धीरे धीरे इसी टूटे-फूटे मकानमें तीन महीने बीत गये । इसके बाद पता लगा कि टस्केजीसे अनुमान डेढ़ मील फ़ासले पर एक ज़मीन बिकाऊ है । गुलामीके दिनोंमें यहाँ गुलामाबाद था । वह मकान जिसमें गुलामोंका मालिक रहता था, जल-बलकर ख़ाक हो चुका था । खैर, हम लोग वह ज़मीन देखने गये; देखकर यह विश्वास हो गया कि स्कूलके लिए इससे अच्छी जगह जल्द न मिलेगी ।

पर यह जगह हम लोग लें तो कैसे लें ? इसका दाम तो बहुत थोड़ा अर्थात् सिर्फ़ पाँच सौ डालर था । पर हमारे लिए एक डालर भी बहुत था । अगर यह कहिए कि किसीसे कर्ज़ लेते तो हमारे जैसे अजनबीको दे कौन ? जगहके मालिकने यहाँ तक मंजूर कर लिया था कि आधी रकम नक़द दीजिए, और आधी एक सालके अन्दर देनेसे भी काम चल जायगा । ज़मीनके मुकाबलेमें ५०० डालर कीमत बहुत थोड़ी थी; पर जिसके पास कुछ है ही नहीं उसके लिए तो ज़्यादा ही कहनी चाहिए ।

आख़िर बहुत सोच समझकर मैंने हैम्पटन-विद्यालयके खजांची जनरल जे. एफ. बी. मार्शल साहबको एक पत्र लिखा । उसमें मैंने सब हाल लिख दिया और खास अपनी जिम्मेदारी पर ढाई सौ डालर उधार देनेकी प्रार्थना की । कुछ ही दिनोंमें उनका जवाब आया । उसमें लिखा था—" हैम्पटन-विद्यालयका धन किसीको कर्ज़ या उधार

देनेका मुझे अधिकार नहीं; पर मैं अपनी बचतमेंसे बड़ी खुशीके साथ आपको यह रकम दूँगा।"

इस प्रकार एकाएक इस धनके मिल जानेसे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, और आनन्द भी हुआ। अबतक एक साथ सौ डालर कभी मेरे हाथ नहीं आये थे; इसलिए यह जनरल मार्शलसे उधार माँगी हुई रकम मुझे बहुत बड़ी जान पड़ी। रकम अदा करनेकी जिम्मेदारी भी मुझ ही पर होनेसे मेरा चित्त अस्थिरसा हो उठा।

स्कूलको नये स्थान पर ले जानेमें मैंने बड़ी फुरती की। जिस वक्त यह जगह खरीदी गई उस वक्त वहाँ चार कोठरियाँ थीं—एक भोजनघर, एक पुराना रसोईघर, एक अस्तबल और एक पुराना मुर्ग़ीख़ाना। इन कोठरियोंको काममें लाने लायक बनानेके लिए एक दो सप्ताहसे अधिक समय नहीं लगा। अस्तबल साफ़ सुथरा कर वहाँ सबक़ सुनानेका कमरा बना, और फिर मुर्ग़ीख़ाना भी इसी तरह काममें लाया गया।

एक दिनकी याद आती है कि सबेरे मैंने अपने पासके एक नीग्रो मददगारसे कहा कि, "अब हमारा स्कूल इस क़दर बढ़ चला है कि मुर्ग़ीख़ाना भी काममें लाना पड़ेगा; उसकी सफ़ाई करनेमें तुम्हारी मदद होनी चाहिए।" इसपर उसे बड़ा ताज्जुब हुआ और उसने पूछा, "आप कहते क्या हैं? क्या आप दिन दहाड़े सबके सामने मुर्ग़ीख़ाना साफ़ करेंगे?" नीग्रो समाजमें लोकनिन्दाका इतना भय था!

यह नई जगह स्कूलके काम लायक बनानेमें हम लोगोंने ही शुरूसे अख़ीर तक सब काम किये—कुलियोंकी ज़रूरत न हुई। दोपहरको स्कूलसे छुट्टी होने पर विद्यार्थियोंने स्वयं यह काम किया। कमरे तैयार हो चुकने पर, मेरा यह विचार था कि कुछ ज़मीन साफ़ करके रख देनी चाहिए ताकि उसमें कुछ बोया जा सके। यह तो मैंने ताड़

लिया कि मेरा यह विचार हमारे युवा विद्यार्थियोंको पसन्द न हुआ। ज़मीन साफ़ करना और शिक्षा इन दोनोंके बीचका सम्बन्ध समझना उनका काम न था। इन विद्यार्थियोंमें बहुतेरे शिक्षक भी थे। उन्होंने यह सोचा कि अगर हम लोगोंने झाडू देकर ज़मीन ही साफ़ की तो हमारी इज्ज़त ही क्या रह गई? इसका जबाब देना फ़िज़ूल था इस लिए मैं खुद रोज़ स्कूल बन्द होने पर कुदारी लेकर मैदानमें जाने लगा। जब उन्होंने मुझे मिट्टी खोदते हुए देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने जान लिया कि मैं काम करनेमें न किसीसे डरता हूँ और न किसीसे लजाता हूँ। यह देखकर वे लोग भी बड़े उत्साहसे मेरी मदद करने लगे। रोज़ दोपहरके वक्त काम करके हम लोगोंने २० एकड़ ज़मीन साफ़ करके—कमा करके रख दी और उसमें बीज बो दिया।

इधर मिस डेविड्सन ज़मीनका कर्ज़ अदा करनेके लिए रुपया इकट्ठा करनेकी फ़िक्रमें थीं। पहली कोशिश उनकी यह थी कि उन्होंने एक मेला खड़ा कर दिया और फिर घर घर जा कर इस मेलेमें बिकने लायक केक, मुर्गी, रोटी, पक्वान्न आदि चीज़ोंको, सहायताके रूपमें देनेके लिए लोगोंसे प्रार्थना की और लोगोंने भी हरतरहसे सहायता करनेका वादा किया। काले नीग्रो लोग तो अपनी शक्तिभर सब कुछ देते ही थे; पर मुझे यहाँ यह बतलाना है कि कभी ऐसा भी मौका नहीं आया कि मिस डेविड्सनने किसी गोरेसे मददकी प्रार्थना की हो और उस गोरेने उनकी मदद न की हो! इस प्रकार गोरे परिवारोंने भी नाना प्रकारसे स्कूलके साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की।

कई बार ऐसे मेले किये गये, और उनसे कुछ रकम भी जमा हुई। दोनों जातिके लोगोंसे नक़द रुपये वसूल करनेकी कोशिश भी की गई, और जिन जिन सज्जनोंसे प्रार्थना की गई उन सब ही लोगोंने

कुछ न कुछ दान दिया । जिन बूढ़े नीग्रो लोगोंने अपना यौवन गुलामीमें बिताया था उनके दानकी प्रशंसा अनिर्वचनीय है । उन्होंने जो दान दिया, वह अपने हृदयसे काट कर दिया, इसमें सन्देह नहीं । वे कभी कुछ सेंट देते, कभी अपनी चादर दे डालते और कभी कभी तो अपने खेतसे ऊख काटकर ला देते ! इस तरह धन इकट्ठा किया जा रहा था; इसी समय एक नीग्रो वृद्धा मुझसे मिलने आई । उससे चला नहीं जाता था । डंडेके सहारे चलती हुई वह किसी तरह मेरे कमरेमें आई । उसके शरीर पर कपड़े नहीं, कपड़ोंकी धाज्जियाँ थीं; पर बिलकुल साफ़ थीं । उसने मुझसे कहा, "वाशिंगटन, ईश्वर जानता है, मेरी उम्रका अच्छा अंश तो गुलामीमें बीत गया । उसे यह भी मालूम है कि मैं कंगाल और मूरख हूँ । पर मैं यह जानती हूँ कि, मिस डेविड्सन और तुम दोनों क्या कर रहे हो । तुम दोनों हमारी जातिमें उत्तम स्त्रियाँ और पुरुष उत्पन्न करनेका प्रयत्न कर रहे हो । मेरे पास धन नहीं; पर मेरे पास ये छः अंडे हैं; मैं चाहती हूँ, इन्हें तुम लो और लड़के लड़कियोंको पढ़ानेमें इनका उपयोग करो ।"

टस्केजीमें स्कूल खुला तबसे अबतक मुझे उस स्कूलके लिए कितने ही दान लेनेका अवसर मिला है; परन्तु इस वृद्धाके दानसे मेरे अन्तः-करणमें करुणाका जैसा कुछ भाव उठा उसका अनुभव फिर कभी न हुआ ।

नवाँ परिच्छेद।
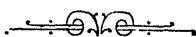
घोर चिन्ताके दिन।

अलबामा रियासतमें आकर रहने पर बड़े दिनोंमें मुझे वहाँके लोगोंकी रहन सहनका वास्तविक परिचय पानेके लिए और भी अधिक अच्छा अवसर मिला। बड़े दिनोंका जलसा आरंभ होनेसे एक रोज़ पहले ही शहरके बालक दल बाँधकर, घरघर घूमकर, बड़े दिनोंका उपहार माँगते फिरते थे। उस दिन दो बजे रातसे शामके पाँच बजेतकके बीचमें कमसे कम पचास टोलियाँ हमारे यहाँ उपहार माँगने आई होंगी। दाक्षिण प्रान्तके इस भागमें अब भी यह रिवाज चला जाता है।

गुलामीके दिनोंमें, प्राय: सभी दक्षिणी रियासतोंमें बड़े दिनोंके अवसर पर काले लोगोंको पूरे एक सप्ताहकी छुट्टी मिला करती थी। इस छुट्टीभर सभी स्त्रीपुरुष शराबके नशेमें चूर रहते थे। बड़े दिनका त्योहार आरंभ होनेसे एक रोज़ पहले ही इन लोगों पर दिवालीका रंग चढ़ जाता था और उसी दिनसे ये लोग सब काम धन्धा छोड़कर मारे खुशीके मतवाले हो जाते थे; यहाँ तक कि बड़े दिनोंमें एक भी काला आदमी किसी तरहका काम करनेके लिए राजी न होता था। जो लोग वर्ष भरमें कभी शराबको छूते तक न थे वे भी इन दिनों बोतल पर बोतल बेखटके चढ़ा जाते थे। लोग मस्त हो कर आनन्द करते थे और खूब शिकार खेलते थे। इस तरह बड़े दिनोंकी पवित्रताको लोग एकदम भूलसे गये थे।

पहले वर्षके बड़े दिनोंमें मैं टस्केजीके बाहर एक बड़ा गाँव देखने गया।

ऐसे पवित्र और आनन्द देनेवाले त्योहारमें इन कंगाल और गवाँर भाइयोंको मौजके सामान जुटाते हुए देखकर मुझे दया आती थी। एक झोपड़ीमें जाकर देखा कि पाँच लड़के थोड़ेसे पटाके आपसमें बाँट रहे थे। एक दूसरी झोपड़ीमें ६—७ आदमी थे जिनके पास पाँच आने मूल्यकी अदरककी चपातियाँ थीं। एक परिवारमें थोड़ेसे गन्ने ही थे। एक स्थान पर एक पादरी महाशय अपनी स्त्रीके साथ बैठे शराब चढ़ा रहे थे। एक जगह नोटिसके रंगीन कार्डोंको ही लोग बड़े कुतूहलसे देख रहे थे। एक जगह एक नया तमंचा खरीदा गया था। उत्सवकी और कोई खास बात नहीं दिखाई दी, इसके सिवाय कि सब लोग काम-धाम छोड़कर अपनी अपनी झोपड़ीमें स्वर्ग देखा करते या इधर उधर व्यर्थ घूमा करते थे। रातके वक्त वे एक तरहका जंगली नाच नाचते थे और शराब पीकर पिस्तौल और दूसरे हथियार लेकर दंगा-फ़साद किया करते थे।

इसी समय मुझे एक बूढ़ा नीग्रो उपदेशक मिला। उसने बाबा आदमका किस्सा कह कर मुझे यह समझाना चाहा कि परमेश्वर उद्योगसे अप्रसन्न होता है और इस लिए उद्योग करना बड़ा भारी पाप है। इसी लिए यह बूढ़ा जहाँ तक होता, कामसे भागता था। बड़े दिनोंमें कामके पापसे बचे रहनेके कारण यह बहुत ही प्रसन्न मालूम होता था।

हम लोगोंने अपने स्कूलके लड़कोंको बड़े दिनोंका महत्त्व और उन्हें मनानेकी रीति समझानेका बहुत प्रयत्न किया। इसका परिणाम भी विद्यार्थियों पर अच्छा हुआ और मैं यह भी कह सकता हूँ कि जहाँ जहाँ हमारे ग्रेज्युएट विद्यार्थी हैं वहाँ वहाँ उन्होंने इस बड़े दिनोंके त्योहार पर एक नई रोशनी डाल दी है।

अब बड़े दिनोंमें हमारे विद्यार्थी वह आनन्द मनाते हैं जिससे

अनाथ और अभागे लोग मदद पाकर सन्तुष्ट होते हैं। एक बार हमारे विद्यार्थियोंने अपनी यह छुट्टी एक पचहत्तर वर्षकी बुढ़ियाके लिए एक झोपड़ी बनादेनेमें ख़र्च कर दी! एक दूसरे अवसर पर मैंने गिरजेमें कहा था कि एक अनाथ विद्यार्थी कोट न होनेके कारण जाड़ेसे बहुत कष्ट पा रहा है। दूसरे ही दिन मेरे पास उस विद्यार्थीके लिए दो कोट आ गये!

मैं कह ही चुका हूँ कि टस्केजी और आसपासके गोरे लोग इस स्कूलकी मदद किया चाहते थे। मैं भी सदा इस बातकी चेष्टा किया करता था कि यह विद्यालय सर्वप्रिय हो—कोई भी इसे पराये लोगों-की संस्था न समझे। मैंने विद्यालय-भवनके लिए काले—गोरोंसे सबसे चन्देकी प्रार्थना की थी। इस प्रार्थनासे ही उनमें विद्यालयके संबंधमें एक प्रकारका आत्मीय भाव प्रत्यक्ष हो गया था—वे इस बातको समझने लगे थे कि विद्यालयसे हमारा भी कुछ नेह और नाता है।

सर्वसाधारणको यह समझानेकी चेष्टा की गई कि यह विद्यालय आपका है। आप सब लोग इसकी सहायता कीजिए। इसके साथ ही विद्यालयसे होनेवाले लाभ उन्हें बतलाये गये। तब सभी लोग विद्याल-यके पक्षमें हो गए।

यहाँ मैं यह भी कहना चाहता हूँ—इसका सुबूत भी आगे चलकर दूँगा—कि इस समय टस्केजी-विद्यालयकी मदद करनेवालोंमें टस्केजी, अलबामा और समस्त दक्षिणके गोरे अधिवासियोंके बराबर मदद करनेवाला कोई नहीं है। शुरूसे ही मैं अपने भाइयोंको यह नसीहत देता आया हूँ कि काले गोरेका ख्याल न कर अपने पड़ोसियोंको, किसी प्रकारकी गाँठ न रखकर शुद्ध हृदयसे, अपने मित्र बना लो। मैंने उन्हें यह भी बतलाया है कि किसी प्रश्नके बारेमें या निर्वाचनके संबंधमें सम्मति देते हुए स्थानीय हिताहितका विचार करके—न कि

किसी जातिका विरोध करनेके लिए—अपने मित्रोंको वोट देनेकी सलाह देनी चाहिए।

स्कूलके लिए खरीदी हुई भूमिका ऋण चुकानेके हेतु लगातार कई महीने तक उद्योग होता रहा। तीन महीनोंमें जनरल मार्शलका ऋण चुकाने योग्य धन इकट्ठा हो गया और फिर और दो महीने परिश्रम करनेसे पूरे पाँच सौ डालर जमा हो गये। इससे हमारे नाम सौ एकड़ ज़मीनका काग़ज़ हो गया। अब हम लोगोंको बड़ा सन्तोष हुआ। संतोष केवल इसी बातका न था कि स्कूलकी एक निजी जगह हो गई; किन्तु सबसे अधिक सन्तोषका विषय यह था कि इस धनका अधिक अंश टस्केजीके ही गोरे और काले लोगोंसे संग्रह किया गया था। प्राय: मेलों, जलसों, बैठकों और छोटे छोटे फुटकर दानोंसे यह संग्रह हुआ था।

धन एकत्र कर चुकने पर हम लोगोंने खेती बारीके काममें हाथ लगाया। इससे दो लाभ होनेवाले थे। एक तो स्कूलके लिए कुछ बँधी आमदनी हो जाती और दूसरे छात्रोंको भी कृषिकर्म्मकी शिक्षा मिल जाती। टस्केजी स्कूलके सभी काम धन्धे लोगोंकी असली आवश्यकताओंकी पूर्त्ति करनेके लिए ही, समय और साधनके अनुसार आरंभ किये गये हैं। प्रारंभ खेतीसे ही किया गया; क्योंकि सबसे पहले पेटकी चिन्ता दूर करनेका प्रयत्न होना चाहिए।

बहुतसे विद्यार्थी स्कूलमें भरती होकर अधिक दिन ठहर नहीं सकते थे; क्योंकि भोजन-खर्चके लिए उनके पास पैसा नहीं रहता था। ऐसे विद्यार्थियोंको सालमें नौ महीने विद्यालयमें रह सकने योग्य बनानेके लिए ही औद्योगिक शिक्षाकी तजवीज करनेकी अवश्यकता हुई।

टस्केजी-विद्यालयको सबसे पहले जो पशु मिला वह एक गोरे आदमीका दिया हुआ एक अन्धा और बूढ़ा घोड़ा था। आज

वहाँ दो सौसे अधिक घोड़े, टट्टू, खच्चर, गायें, बैल, बछड़े, और अनुमान सातसौ सूअर और बहुतसी भेड़-बकरियाँ हैं ।

जब भूमिका ऋण चुका दिया गया, खेती आरंभ हो गई और पुराने कमरोंकी मरम्मत हो चुकी तब हम लोगोंने विद्यालयके लिए एक नया भवन बनवाना आवश्यक समझा; क्योंकि विद्यार्थियोंकी संख्या प्रतिदिन बढ़ती हीं जा रही थी । हम लोगोंने बहुत सोच समझ कर भावी भवनका नकशा तैयार किया और हिसाब लगा कर देखा कि इसमें छः हजार डालर लगेंगे । इतनी बड़ी रकम कहाँसे मिले ? पर हम यह जानते थे कि दोमेंसे एक बात अवश्य होगी—या तो स्कूल उन्नति करके आगे बढ़ेगा या पीछे हट जायगा । यदि आगे बढ़ना है तो विद्यार्थियोंके लिए स्थानका प्रबन्ध करना ही पड़ेगा; क्योंकि यदि हम लोग विद्यार्थियोंकी रहन सहन पर पूरी निगरानी न रख सके तो हम लोगोंके सारे परिश्रमों पर पानी फिर जायगा और यह निगरानी स्थानका यथेष्ट प्रबन्ध हुए बिना हो नहीं सकती ।

इसी समय एक ऐसी घटना हुई जिससे मुझे बड़ा सन्तोष और साथ साथ आश्चर्य भी हुआ । जब नगरनिवासियोंको यह बात मालूम हुई कि हम लोग एक नया भवन बनवानेकी फ़िक्रमें हैं तब एक लकड़ीके कारखानेका गोरा मालिक मेरे पास आया और कहने लगा—“ भवनके लिए लकड़ीका जितना समान लगेगा वह सब मैं यहाँ लाकर खड़ा किये देता हूँ । उसका मूल्य मैं अभी नहीं चाहता । जिस समय आपके हाथ रुपया आजाय उस समय दे दीजिएगा । इसके सिवाय मैं आपकी कोई ग्यारंटी या स्वीकारता नहीं चाहता कि रुपया आने पर मुझे दे दिया जायगा । ” मैंने साफ़ साफ़ कह दिया कि मेरे पास इस वक्त एक पैसा भी नहीं है । इस पर भी वह यही कहता रहा कि

"लकड़ी लाकर मैं यहाँ रखवा देता हूँ।" पर मैंने उसे ऐसा करनेसे रोका और जब मेरे हाथ कुछ रुपया आ गया तब लकड़ी लाने दी।

अब फिर मिस डेविड्सनने काले-गोरे दोनोंसे चन्दा लेना आरंभ किया। इस नये भवनके समाचारसे नीग्रो लोगोंको जो आनन्द हुआ मैंने नहीं देखा कि दूसरे लोगोंको कभी किसी बातसे वैसा आनन्द हुआ हो। एक रोज़ इमारतके लिए धन किस तरह संग्रह किया जाय इस विषयमें विचार करनेको एक सभा हो रही थी। उसमें बारह मीलसे चल कर एक बूढ़ा नीग्रो आया जो अपने साथ बैलगाड़ी पर एक बड़ा सूअर लाया था। भरी सभामें खड़े होकर उसने कहा, "मैं निर्धन हूँ, इस लिए धन नहीं दे सकता। पर भवनके व्ययके चन्देमें मैं यह सूअर देता हूँ। मुझे आशा है कि जिन लोगोंको अपनी बिरादरीसे प्रेम है और जिनमें कुछ भी स्वाभिमान है, वे अबकी सभामें एक एक सूअर अवश्य दान करेंगे।" इस सभामें और कितने ही लोगोंने प्रतिज्ञा की कि इमारतफंडके लिए हम अपनी कमाईके कुछ दिन अर्पण कर देवेंगे।

जब, टस्केजीसे पूरा चन्दा उतर चुका तब, मिस डेविड्सनने विशेष धन संग्रह करनेके लिए उत्तरकी ओर जाना निश्चय किया। कुछ सप्ताहों तक वे लोगोंसे मिलती जुलतीं रहीं और पाठशालाओं, गिरजों तथा अन्य सभा समितियोंमें वक्तृता देती रहीं। चन्दा करनेमें उन्हें बड़ी कठिनाई झेलनी पड़ी; क्योंकि स्कूलकी विशेष प्रसिद्धि उस ओर नहीं हुई थी। तथापि मिस डेविड्सनको वहाँके बड़े बड़े लोगोंका चित्त अपनी संस्थाकी ओर आकर्षित करनेमें बहुत बिलम्ब नहीं लगा। मिस डेविड्सन जिस नाव (अगन-बोट) पर सवार होकर उत्तर प्रान्तकी भूमि पर उतरीं उसी नाव पर, न्यू यार्ककी एक महिलासे उनका परिचय हो गया। उत्तर प्रान्तके चन्दा देनेवालोंकी नामावलीमें इन्हींका पहला नाम है। नाव पर दोनोंमें परिचय हुआ, बातचीत शुरू हुई

और टस्केजी-विद्यालयकी बात चली । टस्केजी-विद्यालयके प्रयत्न से ये इतनी प्रसन्न हुईं कि चलते वक्त मिस डेविड्सनको पचास डालरका एक चेक देती गईं । विवाहसे पहले और इसके उपरान्त भी मिस डेविड्सनने पत्र व्यवहार करके और लोगोंसे स्वयं मिल करके भी उत्तर दाक्षिणमें धन संग्रह करनेका काम बराबर जारी रक्खा। इसके साथ ही वे टस्केजी-विद्यालयकी देखरेख और अध्यापनका कार्य भी करती थीं। इसके अतिरिक्त वे टस्केजीके और आसपासके बूढ़े लोगोंमें काम करती और टस्केजीमें एक रविवार–पाठशाला भी चलाती थीं । उनमें शारीरिक बल अधिक नहीं था; पर विद्यालयके लिए दिन रात परिश्रम करते रहनेमें ही उन्हें आनन्द मिलता था । धन-संग्रह करनेके लिए घर घर घूमकर वे इतनी थक जाती थीं कि रातको अपने कपड़े उतारना भी उनकी सामर्थ्यके बाहरका काम हो जाता था। बोस्टनमें एक महिलासे ये मिलीं थीं । उस महिलाने मुझसे कहा–" जब मिस डेविड्सन मुझसे मिलने आईं तब मैं किसी काममें फँसी थी; इस लिए मैंने उनसे कुछ समय तक ठहरनेके लिए कहा । थोड़ी देर बाद जब मैं बाहरके कमरेमें आई तो देखा कि उन्हें थकावटसे नींद आ गई है ।"

सबसे पहले, मिस्टर ए. एच. पोर्टर नामक एक सज्जनके नाम पर ––जिन्होंने एक बहुत बड़ी रकम दी थी–' पोर्टर-हाल ' नामका भवन बनाया गया। जिन दिनों इस भवनका काम चल रहा था उस समय रुपयेकी बड़ी तंगी मालूम हुई । एक साहूकारसे मैंने वादा किया था कि अमुक दिन चार सौ डालर आपको दूँगा; पर उस दिन सबेरे मेरे पास एक पैसा भी न था ! जब दस बजे डाक आई तब उसमें मिस डेविड्सनका भेजा हुआ पूरे चार सौ डालरका एक चेक मेरे हाथ आया ! ऐसी घटनायें मेरे जीवनमें प्रायः हुई हैं । अस्तु । ये जो चार सौ डालर मिस डेविड्सनने भेजे थे सो बोस्टनकी दो महिलाओंने

दिये थे। दो वर्ष बाद, जब कि टस्केजी-विद्यालयका काम बहुत बढ़ गया था और हमलोग धनके अभावसे भविष्यके विषयमें उदास और हताश हो रहे थे, इन्ही दो महिलाओंने छः हज़ार डालर भेजकर हमारी मदद की थी। इस मदद्से हम लोगोंको जो आश्चर्य हुआ और जो उत्तेजन मिला उसका वर्णन करनेकी लेखनीमें सामर्थ्य नहीं। इसके उपरान्त ये ही दो स्त्रियाँ चौदह वर्षों तक बराबर छःसौ डालर अर्थात् अठारह हज़ार रुपया वार्षिक भेजकर विद्यालयकी सहायता करती रहीं।

पहला भवन बन चुकने पर अब दूसरा उठानेकी बारी आई। विद्यार्थी पढ़ाई हो चुकनेके बाद प्रतिदिन नियमपूर्वक उसकी नीव खोदने लगे। अभी उन लोगोंका यह संस्कार मिटा नहीं था कि हाथसे काम करना अपना मान घटाना है। एक विद्यार्थीने एक दिन कह भी डाला था कि "हम लोग यहाँ पढ़ने आते हैं, मज़दूरी करने नहीं।" पर हाँ, धीरे धीरे यह कुसंस्कार मिटता जाता था। कुछ दिनोंके परिश्रमसे नीव तैयार हो गई और नीवका पत्थर देनेके लिए दिन निश्चित हो गया।

दक्षिणका यह भाग गुलामगीरीका केन्द्रस्थान था। कृष्णकटिबन्धके इस स्थानमें इमारतकी नीव रख दी गई। गुलामगीरीको बन्द हुए अभी केवल १६ वर्ष हुए थे। सोलह वर्ष पहले कोई नीग्रो यदि लोगोंको पुस्तकों द्वारा शिक्षा देनेका साहस करता तो समाज और राज्य दोनों ही उस पर टूट पड़ते; परन्तु उस दिन उसी दासत्वके केन्द्रस्थल पर अज्ञान-नाशिनी भगवती सरस्वतीके सुरम्य निकेतनकी नीव-शिला बिठाई गई। सचमुच ही वह समारम्भ और वसन्तका वह प्राकृतिक सौन्दर्य अपूर्व था। संसारके शायद ही किसी स्थानको ऐसा मनोहर दृश्य देखनेका अवसर मिला हो।

इस अवसर पर उस प्रदेशके शिक्षाविभागके सुपरिंटेंडेंट आनरेबल वाडी थामसनकी मुख्य वक्तृता हुई। कोणशिलाके इर्दगिर्द शिक्षक, विद्यार्थी,

उनके मातापिता या मित्रमंडली, उस प्रदेशके गोरे अधिकारी, आस-पासके मुख्य मुख्य गोरे रहीस और अनेक नीग्रो स्त्रियाँ तथा पुरुष, जिन्हें कुछ वर्ष पहले ये ही गोरे अपने गुलाम समझते थे, एकत्रित हुए थे। दोनों ही जातियोंके लोग कोणाशिलाके पास अपना कुछ न कुछ स्मारक या चिह्न रखनेके लिए बहुत ही उत्सुक दिखाई देते थे।

भवन बन चुकनेके पहले हम लोगोंको कई बड़ी बड़ी कठिनाइयोंसे सामना करना पड़ा। बिलपर बिल आ धमकते थे और उनका रुपया चुका न सकनेके कारण हम लोग बहुत ही दुखी होते थे। जिसे इस तरहके मौके बारबार नहीं आये हैं कि स्कूलके लिए इमारतें तो बनवाना है पर यह मालूम नहीं है कि धन कहाँसे आयगा, वह हम लोगोंकी दुरवस्थाकी और अड़चनोंकी पूरी पूरी कल्पना कदापि नहीं कर सकेगा। मुझे टस्केजीके वे दिन याद आते हैं जब मैंने इस फ़िक्रमें कि धन कहाँसे लाया जाय, बिस्तरे पर करवटें बदलते हुए सारीकी सारी रातें बिता दी हैं। मैं जानता था कि यह समय मेरी जातिकी परीक्षाका है—समय इस बातको बतलावेगा कि हम नीग्रो लोगोंमें कोई स्वतंत्र विद्यापीठ चलानेकी सामर्थ्य है या नहीं। मुझे मालूम था कि यदि इस कार्यमें मैं हारा, तो सारी जातिको इसका कुफल चखना पड़ेगा। मुझे यह भी विदित था कि नीग्रो जाति बदनाम है और इसलिए हमारे प्रयत्न भी 'बालू पर भीत' समझे जा रहे हैं। मैं जान चुका था कि यदि ऐसा ही कोई दुस्साध्य कार्य गोरे लोग उठा लेते तो लोगोंको उनके कामयाब होनेमें ज़रा भी सन्देह न रहता; और इसके विपरीत यदि हम लोग कामयाब हुए तो लोग आश्चर्य करेंगे। इन बातोंके बोझेने हम लोगोंको बुरी तरह दबा रक्खा था।

इस दुरवस्थामें भी मैं टस्केजी नगरके जिस किसी गोरे या नीग्रो मनुष्यके पास गया उसने कुछ न कुछ अवश्य सहायता की; ऐसा एक भी मौका नहीं आया जब किसीने इंकार कर दिया हो। कई बार ऐसा

हुआ कि सैकड़ों रुपयोंके बिल आये और उनका रुपया चुकानेके लिए मुझे गाँवके दस पाँच सज्जनोंसे छोटी छोटी रकमें उधार लेनी पड़ीं। पर एक बातका मैं सदा ध्यान रखता था कि स्कूलकी साख़ बनी रहे, और इस प्रयत्नमें मुझे बराबर सफलता प्राप्त हुई।

मि० कैम्बल जिन्होंने जनरल आर्मस्ट्रांगको लिखकर मुझे टस्केजी-स्कूलके लिए बुलाया था, बड़े ही योग्य पुरुष थे। उनका एक उपदेश मैं कभी न भूलूँगा। टस्केजीका काम शुरू होने पर एक दिन उन्होंने पितृतुल्य स्नेहसे कहा था—"वाशिंगटन, यह सदा स्मरण रखना कि साख़ ही पूँजी है।"

एक बार धनाभावके मारे जब हमलोग बहुत ही तंग हुए तब मैंने जनरल आर्मस्ट्रांगको अपनी सारी दशा लिख भेजी। उन्होंने तत्काल ही अपनी सारी बचतका चेक मेरे पास भेज दिया! इस प्रकारसे जनरल आर्मस्ट्रांगने टस्केजी-विद्यालयकी कई बार मदद की है। यह बात शायद मैंने इससे पहले सर्वसाधारणपर ज़ाहिर नहीं की थी।

स्कूलका प्रथम वर्ष समाप्त होने पर, १८८२ के ग्रीष्म ऋतुमें माल्डनकी मिस फैनी ए. स्मिथके साथ मेरा विवाह हुआ। शरद्दतुमें हम दोनों टस्केजीमें मकान लेकर एक साथ रहने लगे। स्कूलमें इस समय चार शिक्षक थे; उन्हें भी इसी मकानमें रहनेको जगह दी गई। मेरी सहधर्मिणी हैम्पटन-विद्यालयकी ग्रेज्युएट थीं। स्कूलके लिए इन्होंने भी जीतोड़ परिश्रम किया था। इनके कारण मेरा घर सदा हँसतासा देख पड़ता था। पर दुर्भाग्यवश १८८४ के मई मासमें, पोर्शिया एम. वाशिंगटन नामकी एक कन्याको छोड़कर, ये सुरलोकको सिधार गईं।

आरंभसे ही मेरी सहधर्मिणी तन, मन और धनसे विद्यालयकी सहायता करती थीं। उनके विचार और अभिलाषायें सर्वथा मेरी ही जैसी थीं; पर विद्यालयकी कली खिलनेसे पहले ही उन्होंने इह लोकसे प्रस्थान कर दिया।

दसवाँ परिच्छेद ।

टेढ़ी खीर ।

टस्केजी-विद्यालयका आरंभ करनेसे पहले ही मैंने यह विचार कर रक्खा था कि इस विद्यालयके द्वारा विद्यार्थियोंको खेती बारी और गृहस्थीके कामोंके अतिरिक्त, मकान बनानेका काम भी सिखलाया जायगा । ऐसा करनेमें मेरा यह अभिप्राय था कि इन कामोंको सिखलाते हुए विद्यार्थियोंको काम करनेकी नई पद्धतियाँ भी बतलाई जायँ जिससें उनके परिश्रमोंसे स्कूलका भी लाभ हो और उन्हें भी परिश्रमके महत्त्व, उसके उपयोग और उससे होनेवाले आनन्दका अनुभव हो । इसके सिवाय उनकी मानसिक उन्नति यहाँतक हो जाय कि वे किसी परिश्रमको आपत्ति या कष्ट न समझ कर परिश्रमके लिए ही परिश्रम करना सीखें । हवा, जल, भाफ, बिजली और अश्वबल आदि निसर्गशक्तियोंको किसतरह उपयोगमें लाना चाहिए, इसकी शिक्षा भी मैं उन्हें देना चाहता था ।

शुरू शुरूमें बहुतसे लोगोंने मुझे विद्यार्थियों द्वारा भवन बनवानेकी चेष्टासे रोक देना चाहा । पर मैं अपने विचारोंको बदलनेवाला न था । जिन लोगोंने मुझे रोका उनसे मैंने कहा—" मैं जानता हूँ कि बाहरके अनुभवी कारीगर जैसा भवन बना देंगे वैसा हमारे विद्यार्थी नहीं बना सकेंगे; पर विद्यार्थियोंके हाथों भवन बनवानेसे जो लाभ होंगे उनके सामने यह कमी किसी गिनतीमें न रह जायगी । उन्हें जो शिक्षा प्राप्त होगी, अपने बल पर खड़े होनेकी जो आदत पड़ेगी और जो आत्मविश्वास उत्पन्न होगा उसका मूल्य भवनके डौलढाँचेसे बहुत अधिक है । "

जिन लोगोंको मेरे इन विचारोंमें विश्वास न होता था उनसे मैंने

यह भी कहा कि " हमारे विद्यार्थी निर्धन हैं; कपास, चावल और गन्ने बेचनेवालोंकी झोपड़ियोंमें पले हुए हैं। इसलिए यह मैं जानता हूँ कि कारीगरोंकी बनाई हुई सुन्दर हवेलीमें स्थान मिलनेसे उन्हें बड़ीभारी खुशी होगी, पर मेरा यह विश्वास है कि अपने मकान आप ही बना लेना यदि उन्हें सिखलाया जायगा तो उनके मनोविकासका मार्ग बहुत ही सुगम हो जायगा। भूल होना स्वाभाविक है; पर इन्हीं भूलोंसे वे आगेके लिए बहुमूल्य शिक्षा भी प्राप्त करेंगे।"

टस्केजी–विद्यालयको स्थापित हुए बीस वर्ष हो गये। इस बीचमें इमारतें बनवानेका काम विद्यार्थियों द्वारा ही हुआ है और लगभग चालीस भवन बन चुके हैं। इनमेंसे चारको छोड़कर बाकी सब विद्यार्थियोंके परिश्रमके ही फल हैं। दक्षिण प्रान्तमें इस समय ऐसे सैकड़ों आदमी फैले हुए हैं जो पहले इसी विद्यालयके विद्यार्थी थे और जिन्हें कारीगरीकी शिक्षा यहीं पर भवन बनानेके कारण मिली थी।

पुराने विद्यार्थी शिक्षा समाप्त कर चले जाते हैं। उनके स्थानमें नये विद्यार्थी आकर उनकी परम्परा सुरक्षित रखते हैं। इस प्रकार ज्ञान और कौशलका सिलसिला बराबर ज़ारी रहता है और आज यहाँ तक उन्नति हुई है कि भवन बनानेमें हमारे विद्यालयको किसी बाहरी कारीगर या मजदूरकी आवश्यकता नहीं पड़ती; सब काम अर्थात् इमारतोंके नकशे खींचनेसे लेकर इमारतें तैयार होने पर उनमें बिजलीकी रोशनी लगा देने तक सब तैयारियाँ हमारे विद्यालयके शिक्षक और विद्यार्थी वहींके वहीं अपने हाथों कर लेते हैं।

ऐसा होनेसे विद्यालयके भवनतकसे विद्यार्थियोंका स्नेह हो जाता है। किसी इमारतकी दीवार पर यदि कोई नया विद्यार्थी चाकू या पेन्सिलसे निशान करता हुआ दिखाई देता है तो पुराना विद्यार्थी उससे तत्काल ही कहता है–" खबरदार! ऐसा काम मत करना। यह हमारी इमारत

है। इसके बनानेमें मैंने सहायता की है।" इस प्रकारके शब्द मैंने स्वयं कई बार सुने हैं।

विद्यालयके शुरू दिनोंमें हम लोगोंको ईंटें बनानेके काममें बड़ी कठिनाई झेलनी पड़ी। जब खेती बारीका काम चल निकला तब हम लोगोंने ईंटें बनानेका विचार किया। अपनी इमारतोंके लिए तो ईंटोंकी ज़रूरत थी ही; इसके अतिरिक्त और भी एक कारण था। टस्केजीमें ईंटें बनानेका कारखाना एक भी न था और इससे वहाँ भी ईंटोंकी बड़ी माँग थी। हमारे पास न तो धन था और न इस कामका अनुभव ही था। तो भी हमने यह कठिन कार्य हाथमें ले लिया।

ईंटें बनानेका काम गन्दा और कठिन है, इस कारण इसमें विद्यार्थियोंसे सहायता लेना ज़रा टेढ़ी खीर थी। जब वे ईंटें बनानेके काममें लगाये गये तब बहुत घबराये और शारीरिक परिश्रमसे उनका जी हटने लगा। घुटने घुटने भर मिट्टी और कीचड़में खड़े होकर घंटों काम करना किसीको भी पसन्द न आया। बहुतसे विद्यार्थी तो कामसे घबराकर विद्यालय छोड़ गये।

कई जगहें देखभाल कर अन्तमें एक स्थान पर मिट्टीके लिए गड़हा खोदा गया। अबतक मेरी यह धारणा थी कि ईंटें बनानेका काम सुगम है; पर जब काम पड़ा तब मालूम हुआ कि इस काममें भी विशेषकर ईंटें पकानेमें, बुद्धि और कौशलकी आवश्यकता है। बड़े परिश्रमसे हम लोगोंने पचीस हज़ार ईंटें तैयार करके पजावेमें पकानेके लिए रक्खीं। पजावा दुरुस्त न होनेसे हो, या काफ़ी आग न होनेसे हो, हमारी पहली कोशिश तो बिलकुल ही व्यर्थ गई। इसके बाद हमने दूसरा पजावा तैयार किया। यह प्रयत्न भी खाली गया। इससे विद्यार्थी भी पीछे हटे। तीसरी बार इस विषयकी शिक्षा पाये हुए अनेक अध्यापकोंने बड़े परिश्रम और उद्योगसे फिर पजावा लगाया। ईंटें पकनेके लिए एक सप्ताह लगता था। चार

पाँच दिन बीत गये और हम लोगोंको यह आशा हुई कि अब शीघ्र ही बहुतसी ईंटें तैयार मिल जायँगी; पर एक दिन आधी रातके समय अकस्मात् पजावा खिसल पड़ा और हमारे सारे परिश्रमों पर पानी फिर गया।

अब चौथी बार पजावा लगानेके लिए मेरे पास एक डालर भी न बचा। मेरे साथी शिक्षकोंने ईंटें बनानेका विचार छोड़ देनेके लिए मुझसे अनुरोध भी किया। इसी बीच मुझे अपनी एक पुरानी घड़ीका स्मरण हुआ। मैं समीपके मांटगोमरी नगरमें गया और वहाँ इसे रेहन रखकर फिर पजावा लगानेके लिए पंद्रह रुपये ले आया। इन पंद्रह रुपयोंके बल पर मैंने अपने निराश साथियोंमें फिर उत्साह उत्पन्न किया और चौथा पजावा फिर लगा दिया। मुझे यह बतलाते हुए आनन्द होता है कि इस बार मेरी ईंटें भलीभाँति पक गईं। इसके बाद जब तक मेरे पास धन आया तब तक उस घड़ीके रेहनकी मियाद गुज़र गई और मैं घड़ी छुड़ा न सका; पर मुझे इसके लिए कभी दुःख न हुआ।

अब हमारे यहाँ ईंटोंका कारखाना भी शिल्पविभागका एक विशेष अंश हो गया है। इसमें विद्यार्थियों द्वारा जो ईंटें तैयार होती हैं वे चाहे जैसे बाजारमें कट सकती हैं। इसके अतिरिक्त, हाथोंसे और यंत्रोंकी सहायतासे ईंटें तैयार करनेके काममें कितने ही युवक अच्छी जानकारी रखते हैं और उन्होंने दक्षिणके कई हिस्सोंमें यह व्यवसाय ज़ारी कर दिया है।

ईंटोंके कामसे मैंने गोरों और कालोंके संबंधके विषयमें एक नई बात सीखी। हमारे विद्यालयकी बनी हुई ईंटें बहुत बढ़ियाँ होती थीं; इस लिए विद्यालयसे कोई सरोकार न रखनेवाले गोरे भी उन्हें ख़रीदने लगे। उनके दिलमें यह बात भी बैठ गई कि विद्यालयकी बदौलत समाजके एक बड़े

भारी अभावकी पूर्ति हो रही है। वे यह भी समझने लगे कि नीग्रो शिक्षा पाकर निकम्मे नहीं हो जाते, बल्कि उनसे समाजके सुख और वैभवकी वृद्धि होती है। आसपासके लोग ईंटें खरीदनेके लिए आने लगे, इससे उनसे हमारी जान पहचान बढ़ी और आपसमें लेन देन भी शुरू हो गया। दक्षिण प्रान्तके इस हिस्सेमें हम लोगोंमें जो कुछ अच्छापन दिखाई देता है उसकी जड़ जमानेमें ईंटोंकी शिक्षाने बड़ी भारी मदद की है।

दक्षिणमें जहाँ जहाँ हमारे ईंटें बनानेवाले विद्यार्थी गये हैं वहाँ वहाँ उन्होंने समाजका कुछ न कुछ उपकार करके उसे अपना कृतज्ञ बनाया है। इस प्रकारसे दोनों जातियोंमे परस्पर अच्छा संबंध स्थापित हुआ है।

मनुष्यकी प्रकृतिमें कोई ऐसी बात अवश्य है जिससे वह गुणोंको—फिर वे गुण किसी वर्णके मनुष्यमें क्यों न हों—परख कर उनकी कदर करता है। मैंने यह भी अनुभव किया है कि बकबकसे कोई काम नहीं होता; जो कुछ होता है, प्रत्यक्ष कार्यसे होता है। नीग्रो लोगोंके विषयमें ही देखिए। उदाहरणार्थ, किसी नीग्रोकी बनाई हुई एक बहुत अच्छी इमारत है। ऐसी इमारत नीग्रो आदमी बना सकता है या नहीं, बनावे तो कैसे बना सकता है, इत्यादि बातों पर एक ग्रन्थ लिख डालनेसे भी जो काम न होगा, वह उस इमारतके देखनेसे हो जायगा।

टस्केजी-विद्यालयमें कई प्रकारकी गाड़ियाँ भी बनती हैं। खेतीके कामोंके लिए और खास विद्यालयके लिए हम इन गाड़ियोंसे काम लेते हैं। ये सब गाड़ियाँ स्वयं विद्यार्थियोंके हाथोंकी बनाई हुई हैं। हमारे यहाँ जो गाड़ियाँ तैयार होती हैं वे बिकनेके लिए भी भेजी जाती हैं। इन गाड़ियोंने भी ईंटोंकी तरह सर्व साधारणको मोह लिया है और

गाड़ीका काम सीखे हुए विद्यार्थी जहाँ कहीं गये हैं वहाँ वे दोनों जातियोंके सम्मानभाजन हुए हैं । जिस समाजसे हमारे विद्यार्थीका संबंध हो जाता है वह समाज फिर उसे अपने गलेका हार बना लेता है ।

जो मनुष्य दूसरोंकी आवश्यकतायें पूरी कर सकता है, वह, चाहे किसी जातिका हो, उपराचढ़ीमें बाजी मार ही ले जायगा । किसी भाषा-विशेषमें पारंगत होकर यदि कोई मनुष्य किसी समाजमें प्रवेश करे तो वहाँ उसकी क्या क़द्र होगी ? हाँ, ईंटें, घर और गाड़ियोंका काम जाननेवालेकी क़द्र ज़रूर होगी । बात यह है कि जिस मनुष्यकी सहायतासे समाजका कोई अभाव पूरा होता है, समाज उसीका आदर करता है ।

ईंटें पकानेमें जब हम लोगोंको पहली बार कामयाबी हुई, तब हम लोगोंने यह काम विद्यार्थियोंको सिखलानेके लिए और भी अधिक ज़ोर दिया । इस वक्त तक आसपासके गाँवोंमें और नगरोंमें यह बात प्रसिद्ध हो चुकी थी कि टस्केजी-विद्यालयमें प्रत्येक विद्यार्थीको कोई न कोई शिल्पव्यवसाय या धन्धा सिखलाया जाता है, चाहे वह विद्यार्थी अमीर हो या गरीब । इस पर कई विद्यार्थियोंके मातापिताओंने चिट्ठियाँ भेजकर बड़ा विरोध किया और कुछ तो विरोध करनेके लिए स्वयं ही चले आये । नये भरती होनेवाले विद्यार्थियोंके मातापिताओंने भी किसी न किसी रूपमें यह प्रार्थना की कि हमारे लड़कोंको सिवाय पुस्तकें पढ़ानेके और कुछ भी न सिखलाया जाय ! पढ़ाईमें बड़ी बड़ी पुस्तकोंके ढेर और उनके बड़े बड़े नाम देखकर ही विद्यार्थी और उनके माता पिता प्रसन्न होते थे ।

मैंने इस विरोध पर कुछ भी ध्यान न दिया । पर हाँ, जब कभी समय मिल जाता था, प्रदेशके भिन्न भिन्न स्थानोंमें जाकर विद्यार्थियोंके अभिभावकोंको शिल्पशिक्षाका महत्त्व और उससे होनेवाले लाभोंका

परिचय करा देनेमें चूकता नहीं था। इसके आतिरिक्त, विद्यार्थियोंको भी समय समय पर इसकी महत्ता बतला दिया करता था। शुरू शुरूमें शिल्पाशिक्षासे लोगोंके हृदयमें एक प्रकारका तिरस्कार था, तो भी विद्यार्थियोंकी संख्या बढ़ती ही जाती थी; यहाँ तक कि दूसरे वर्ष छः महीनोंके भीतर ही अलबामाके भिन्न भिन्न भागों और दूसरे राज्योंसे आये हुए विद्यार्थियोंकी संख्या डेढ़ सौ पर पहुँच गई थी।

सन् १८८२ के ग्रीष्मकालमें मैं अपने साथ मिस डेविड्सनको लेकर नये भवनके लिए धनसंग्रह करनेके आभिप्रायसे उत्तरकी ओर गया। रास्तेमें मैं न्यूयार्क नगरमें अपने एक पुराने मुलाकाती पादरीसे एक सिफ़ारिशी चिट्ठी लेनेके लिए ठहरा। परन्तु इस भले आदमीने चिट्ठी देना तो दूर रहा, उलटा मुझे यह समझा देना चाहा कि मैं अपने घरका रास्ता लूँ-धनसंग्रह करनेके बखेड़ेमें न पड़ूँ। क्योंकि ऐसा करनेसे लेनेके देने पड़ेंगे—राहखर्च भी न मिलेगा। इस उपदेशके लिए मैंने उसे धन्यवाद दिया और अपना रास्ता लिया।

पहला मुकाम नार्थम्पटनमें हुआ। होटलवाले तो मुझे ठहरने न देंगे इस आशंकासे मैंने आधा दिन किसी ऐसे नीग्रो कुटुंबीको ढूँढ़नेमें बिताया जिसके यहाँ ठहरनेका और भोजनका सुभीता हो जाय। पीछे मुझे मालूम हुआ कि यदि मैं एक होटलमें चाहता तो ठहर सकता था। इससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

धन तो यथेष्ट मिला, और इसी लिए भवन पूरा तैयार न होने पर भी इस वर्षके 'धन्यवाद-पर्व' पर हम लोगोंने पोर्टर—हालके ही भजन-मन्दिरमें पहली ईशस्तुति और प्रार्थना की। इस अवसर पर 'धन्यवाद-मंत्र' पढ़नेके लिए भी एक अत्युत्तम व्यक्ति जिनका नाम पादरी राबर्ट सी. बेडफोर्ड है, मिल गये। ये विसकानासिनके रह नेवाले एक गोरे आदमी हैं और उस वक्त मांटगोमरी राज्यके काले गिरजेमें धर्मोपदेशक थे।

इससे पहले मैंने कभी इनका नाम भी न सुना था और मिस्टर बेडफोर्ड भी मुझसे इतने ही अपरिचित थे। इन्होंने टस्केजीमें आना और 'धन्यवादपर्व' पर उपदेश देना बड़े आनन्दसे स्वीकार किया। अभीष्ट सिद्धि होनेपर इस प्रकार ईश्वरको धन्यवाद देनेकी प्रथा गोरोंमें तो प्रचलित थी; परन्तु नीग्रो लोगोंके लिए यह एक बिलकुल नई बात थी। इस अवसर पर उपस्थित लोगोंमें अपूर्व उत्साह देख पड़ता था। नये भवनका वह दृश्य, वह उपासनाकार्य और वह दिन लोगोंको भूलनेवाला नहीं।

मिस्टर बेडफोर्डने विद्यालयका ट्रस्टी होना भी स्वीकार कर लिया। अब तक उसी नातेसे और अन्य प्रकारसे भी वे विद्यालयकी बराबर सहायता कर रहे हैं। विद्यालयकी उन्नतिका उन्हें सदा ही ध्यान रहता है। वे विद्यालयके लिए, कैसा ही मामूली काम क्यों न हो, करके बड़े प्रसन्न होते हैं। वे हर बातमें निजको एकदम भूल जाते हैं, और जिस कामसे लोग किनारा कसते हैं उसे आगे बढ़कर कर डालते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि वे सत्य मार्ग पर चलनेवाले एक अलौकिक महात्मा हैं।

कुछ दिनोंके उपरान्त हमारे विद्यालयमें एक नवीन व्यक्तिने प्रवेश किया। ये हैम्पटन-विद्यालयसे हाल ही उत्तीर्ण होकर निकले थे। इनके कारण टस्केजी-विद्यालयने बड़ी उन्नति की है। इनका नाम मिस्टर लोगन है। ये सत्रह वर्षसे विद्यालयके कोषाध्यक्ष हैं और मेरी अनुपस्थितिमें प्रिन्सिपलका कार्य भी करते हैं। ये इतने स्वार्थत्यागी हैं, कामधन्धेमें इतने चतुर हैं, और इनकी बुद्धि भी इतनी तीव्र है कि इनके कारण मुझे और कामोंसे बाहर जानेके लिए बहुत अवकाश मिलता है—मेरी अनुपस्थितिमें कोई काम न कभी रुका है और न कभी बिगड़ा ही है। अनेक अवसरों पर धनाभावके कारण विद्यालयको

अनेक कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी हैं पर मि० लोगनने कभी हिम्मत नहीं हारी।

पहला भवन बनकर तैयार हुआ ही चाहता था कि हम लोगोंने, दूसरे वर्षके मध्यमें, विद्यार्थियोंके लिए एक भोजनगृह खोल दिया। दूर दूरसे अनेक विद्यार्थी आते थे; इसलिए उनके भोजन निवास आदिका प्रबन्ध करना आवश्यक था। विद्यार्थियोंकी संख्या इतनी बढ़ने लगी कि उनकी भीतरी स्थितियोंकी तथा रहन-सहनकी पूरी पूरी देखभाल रखना कठिन हो गया और यह देखकर हम लोग बहुत दुखी हुए।

भोजनगृह खोलनेके लिए हमारे पास विद्यार्थी और उनकी क्षुधाके अतिरिक्त और कोई साधन न था। नये भवनमें रसोई और भोजन आदिके लिए कोई स्थान न बना था। इस लिए भवनके नीचेकी भूमि खोद कर इस कामके लिए स्थान निकालनेका विचार किया गया। विद्यार्थियोंने भूमि खोदनेमें बहुत सहायता दी, जिससे शीघ्र ही रसोई और भोजन आदिके लिए स्थानका किसी कदर प्रबन्ध हो गया। पर अब इसी स्थानका इतना परिवर्तन हो गया है कि देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि कभी यह रसोईघर था।

अब और एक पेचीदा मामला आ पड़ा। भोजनका सामान खरीद-नेके लिए धन बिलकुल न था। इस पर गाँवके कुछ व्यापारी हम लोगों-को खाद्य पदार्थ उधार देनेके लिए तैयार हुए। मुझे खुद अपने ऊपर जितना विश्वास नहीं उतना लोग मुझ पर रखते थे। इससे कभी कभी मैं बहुत ही चकराता था। (यह बात बिना अनुभवके समझमें नहीं आ सकती।) हमारे पास रसोई बनानेके लिए स्टोव या मिट्टीके तेलवाले चूल्हे नहीं थे और न खानेके लिए थालियाँ ही थीं। इस लिए शुरू शुरूमें पुराने ढंगके ही चूल्होंसे काम लेना पड़ा। कुछ बेंचें—जो इमारत

बनते समय काम आई थीं—वहाँ पड़ी हुई थीं, उन्हींसे मेज़ोंका काम लिया गया। थालियाँ भी कुछ मिलीं पर वे नहींके बराबर थीं।

आरम्भमें रसोईघरका प्रबन्ध बड़ा गड़बड़ रहता था। नियमित समय पर भोजन करना तो वहाँ कोई जानता ही न था। भोजनके पदार्थ भी ठीक नहीं बनते थे। एक दिन प्रातःकालकी घटना है कि मैं भोजनगृहके दरवाज़े पर खड़ा था। भीतर विद्यार्थी भोजनके अप्रबन्धकी शिकायत कर रहे थे। कितनोंको उस दिन जल भी न मिला था। इसी समय एक लड़की, जिसे कुछ भी खानेको न मिला था, बाहर आई और 'खाना न सही, पानी तो कमसे कम पी लूँ' इस विचारसे वह कुएँ पर गई। पर वहाँ रस्सी भी टूटी हुई थी! वहाँसे लौटकर उसने, मुझे न देख पानेसे, बहुत ही निराश होकर कहा—"इस विद्यालयमें पीनेको जल भी नहीं मिलता।" यह सुनकर मेरे हृदयमें गहरी चोट लगी। इसके समान नाउम्मेद करनेवाली बात मैंने और कोई नहीं सुनी।

एक बार विद्यालयके ट्रस्टी मि० बेडफर्ड विद्यालय देखनेके लिए आये। उन्हें भोजनगृहके ऊपर सोनेके लिए स्थान दिया गया। एक दिन तड़के दो विद्यार्थियोंसे झगड़ा हो पड़नेके कारण उनकी नींद खुल गई। झगड़ा इस बातका था कि उस दिन कहवेका प्याला दोनोंमेंसे कौन ले। एक विद्यार्थीने अन्तमें यह सिद्ध कर दिया कि उसे तीन दिन हुए, प्याला नहीं मिला और तब उसने वह प्याला ले लिया।

परन्तु धीरे धीरे उद्योगमें लगे रहकर हम लोगोंने सारी कठिनाइयों और अभावोंको दूर कर दिया। कोई काम हो, यदि चतुराईसे, सच्चे हृदयसे और अध्यवसायके साथ किया जाय तो अवश्य ही सिद्ध होता है।

इस समय जब मुझे उन पुरानी कठिनाइयों और अभावोंका ध्यान आता है तो मैं बहुत ही प्रसन्न होता हूँ; क्योंकि यदि आरंभहीमें सुख

और चैनके सामान प्रस्तुत हो जाते तो शायद हम लोगोंके दिमाग़ ठिकाने न रहते और हम लोगों द्वारा कोई काम भी न बनता। मेरा तो यह सिद्धान्त है कि कोई काम हो उसे अपने ही बल पर शुरू करना चाहिए।

अब पुराने विद्यार्थी टस्केजीमें आकर बहुत ही आनन्दित होते हैं; क्योंकि उन्होंने जिस स्वाभाविक क्रमसे उन्नति आरंभ की थी उसी क्रमसे वह आगे बराबर होती हुई चली जा रही है। अब वह अव्यवस्था और अभाव नहीं रहा। इस समय भोजनगृहके कमरे बड़े बड़े हैं और सुन्दर तथा हवादार हैं। उनमें जो जो वस्तुयें आवश्यक होती हैं, वे सब इस समय प्रस्तुत हैं। सब काम बेशिकायत और नियमसे होते हैं। विद्यार्थियों द्वारा तैयार हुए पक्वान्न, मेज़ें, उनपरके कपड़े (मेज़-पोश), फूलोंके गुच्छे और काँचके बरतन आदि सामान करीनेसे रक्खे हुए पाकर और भोजनके समय परोसनेमें कोई शिकायतकी बात न देखकर पुराने विद्यार्थियोंको बड़ा हर्ष होता है और अवसर मिलने पर वे अपना हर्ष मुझ पर भी प्रकट करते हैं। उन्हें विशेषकर इसी बातका हर्ष है कि टस्केजीके विद्यालय और विद्यार्थियोंने अपनी उन्नति अपने बल पर खड़े होकर स्वाभाविक क्रमसे की है।

ग्यारहवाँ परिच्छेद।

सोनेके पहले बिछौनेकी तैयारी।

कुछ दिनोंके उपरान्त हैम्पटन-विद्यालयके कोषाध्यक्ष जनरल जे. एफ. बी. मार्शल विद्यालयमें आये। इनका आना एक बड़े महत्त्वकी घटना थी। इन्हीं मार्शल साहबने हम लोगों पर विश्वास रखकर टस्केजी-विद्यालयकी भूमिके लिए आरंभमें ढाई सौ डालर उधार दिये थे। उन्होंने विद्यालयमें एक सप्ताह तक रहकर सब कार्योंका भली भाँति निरीक्षण किया। विद्यालयके प्रबन्ध और कार्यक्रम आदिसे वे बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होंने अपनी रिपोर्टमें विद्यालयकी प्रशंसा लिखकर वह रिपोर्ट हैम्पटन-विद्यालयमें भेज दी। इसके कुछ दिन उपरान्त वहाँकी सुप्रसिद्ध अध्यापिका मिस मेरी एफ. मैकी—जिन्होंने हैम्पटन-विद्यालयमें भरती करनेसे पहले मुझसे झाड़ू दिलवाकर मेरी परीक्षा ली थी—आ गईं और कुछ दिनोंमें स्वयं जनरल आर्मस्ट्रांग भी आ पधारे।

इस समय टस्केजी-विद्यालयमें अध्यापकोंकी संख्या बहुत बढ़ गई थी। उनमेंसे अधिकांश हैम्पटनहीके ग्रेज्युएट थे। हम लोगोंने इन हितचिन्तकोंका विशेषतः जनरल आर्मस्ट्रांगका सच्चे हृदयसे स्वागत किया। अभ्यागत भी विद्यालयकी इस थोड़ेसे अरसेमें इतनी अधिक उन्नति देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए। आसपासके नीग्रो लोग जनरल आर्मस्ट्रांगकी प्रशंसा सुन चुके थे और इसलिए जब उन्हें मालूम हुआ कि जनरल आर्मस्ट्रांग टस्केजी-विद्यालयमें आये हैं तो वे दूर दूरसे उन्हें देखनेके लिए आये। गोरोंने भी उनका अच्छा स्वागत किया।

जनरल आर्मस्ट्रांगके इस समागमसे मुझे उनका स्वभाव भली भाँति परखनेका बहुत ही अच्छा अवसर मिला। सिबिल वारमें जनरल आर्मस्ट्रांग दक्षिणी गोरोंके विरुद्ध लड़े थे; इसलिये मैं यह समझता था कि वे उनसे चिढ़ते होंगे और दक्षिणके सिर्फ़ काले लोगोंकी ही मदद करना उन्हें अभीष्ट होगा; परन्तु उनके टस्केजीमें आने पर मेरा यह भ्रम दूर हो गया और मैंने जाना कि जनरल आर्मस्ट्रांग बड़े ही उच्च विचार और उदार प्रकृतिके महात्मा हैं। जिस ढंगसे वे दक्षिणी गोरोंसे मिलते और बातचीत करते थे उससे स्पष्ट मालूम होता था कि वे दोनों जातियोंकी सुखसमृद्धि देखनेके लिए उत्सुक थे। कभी किसी अवसर पर उन्होंने दक्षिणी गोरोंके विषयमें कोई अनुचित बात नहीं कही। जनरल आर्मस्ट्रांगके समागमसे मैंने यह जाना कि महात्मा लोग सबसे स्नेह रखते हैं। द्वेष रखना नीच जनोंका काम है। निर्बलकी सहायता करनेसे सहायक ही अधिक बलवान् होता है और अभागोंको कष्ट देनेवाला स्वयं बलहीन हो जाता है; यह तत्त्व भी मैंने उन्हींसे सीखा। तभीसे मैंने निश्चय कर लिया कि अब मैं कभी किसी जातिके मनुष्यके साथ घृणा करके अपने आपको नीच न बनाऊँगा। मेरा विश्वास है कि अब मेरे मनमें दक्षिणी गोरोंके प्रति कोई बैरभाव नहीं है। अपने जाति-भाइयोंकी सेवा करनेमें मुझे जो आनन्द होता है वही आनन्द दक्षिणी गोरोंकी सेवा करके भी प्राप्त होता है। किसीके मनमें यदि जातिद्वेषकी जड़ जमी हुई देखता हूँ तो मुझे उस पर बहुत दया आती है।

विचार करके मैंने यह मालूम किया है कि दक्षिण अमेरिकाके जो गोरे इस बातके उद्योगमें लगे रहते हैं कि राजनीतिक विषयोंमें नीग्रो लोगोंकी सम्मतिका कोई उपयोग न हो, वे केवल नीग्रो लोगोंकी ही हानि नहीं करते, बल्कि अपनी भी हानि करते हैं। नीग्रो लोगोंकी हानि तो अस्थायी होती है, पर गोरोंकी नीतिमत्ता ही सदाके लिए बिगड़ जाती है। मैंने अनुभव करके यह बात जानी है कि जो गोरा

नीग्रो लोगोंका मत निर्बल करनेके लिए झूठी सौगंद खानेको तैयार होता है वह अपने जीवनमें अपने भाइयोंसे भी अनुचित व्यवहार करना सीख लेता है । नीग्रोको ठगनेवाला गोरा अपने गोरे भाइयोंको भी ठगनेमें संकोच नहीं करता । कानूनको ताखमें रख करके नीग्रोको दंड देनेवाला गोरा आदमी आगे मौका आने पर अपने गोरे भाईसे भी वैसा ही व्यवहार करता है । इन सब बातोंसे यह स्पष्ट सिद्ध है कि अमेरिकाका यह अज्ञानान्धकार दूर करनेके लिए समूचे राष्ट्रकी सहायता बहुत आवश्यक है ।

जनरल आर्मस्ट्रांगके शिक्षासंबंधी विचारोंका गोरे काले दोनोंमें दिन पर दिन अधिक प्रचार होता जाता है । आजकल प्रायः सभी दक्षिणी राज्योंमें बालकों और बालिकाओंको शिल्पकलाकी शिक्षा देनेका प्रयत्न किया जाता है और इन सारे प्रयत्नोंके मूल जनरल आर्मस्ट्रांग हैं ।

विद्यालयके साथ भोजनगृहका पूरा प्रबन्ध हो चुकने पर विद्यार्थियोंकी संख्या बेहिसाब बढ़ने लगी । हम लोगोंके पास धन नहीं था; तो भी हमें कई सप्ताहों तक विद्यार्थियोंके भोजनके अतिरिक्त उनके बिस्तर आदिका भी प्रबन्ध करना पड़ा । स्थान न होनेके कारण विद्यालयके पास कुछ कोठरियाँ किराये पर लेनी पड़ीं । ये कोठरियाँ बहुत बुरी दशामें थीं जिसके कारण जाड़ेमें विद्यार्थियोंको बहुत कष्ट हुआ । भोजन-खर्चके लिए प्रत्येक विद्यार्थीसे मासिक आठ डालर लिये जाते थे । इतना भी विद्यार्थियोंसे मिलना कठिन होता था । भोजन-खर्चहीमें कोठरीका किराया और कपड़ोंकी धुलाई भी आ जाती थी । इसके अतिरिक्त विद्यार्थी विद्यालयका जो कार्य करते थे उसका पुरस्कार इन आठ डालरोंमेंसे काट दिया जाता था । पढ़ाईकी फ़ीस वार्षिक पचास डालर होती थी और आजकलके समान उस समय भी जो विद्यार्थी देने लायक़ थे उनसे यह फ़ीस वसूल कर ली जाती थी ।

इन छोटी छोटी रकमोंसे भोजननिवासगृह शुरू करनेके योग्य पूँजीका प्रबन्ध नहीं हो सका। दूसरे सालके जाड़ेमें बड़ी ठंड पड़ी और विद्यार्थियोंको पूरे ओढ़ने बिछौने भी न मिल सके। कुछ समयतक थोड़ेसे विद्यार्थियोंके लिए केवल चारपाई और चटाई-का ही प्रबन्ध हो सका और शेषके लिए वह भी न हुआ। जिस दिन अधिक जाड़ा पड़ता था उस दिन विद्यार्थियोंकी चिन्ताके कारण मुझे भी रातको नींद न आती थी। प्रायः मैं आधी रातके समय विद्यार्थियोंकी टूटी फूटी झोपड़ियोंमें जाकर उन्हें धीरज दिलाता था। वहाँ मैं उन विद्यार्थियोंको एक ही कंबल ओढ़कर आगके चारों ओर बैठे हुए पाता था। कुछ विद्यार्थी तो रात रात भर बैठे रहते थे। एक रात बहुत ही अधिक ठंड पड़ी। दूसरे दिन जब सब विद्यार्थी प्रार्थनामन्दि-रमें इकट्ठे हुए तब मैंने कहा—"जिन लोगोंको कल जाड़ेसे बहुत अधिक कष्ट हुआ हो, वे हाथ ऊपर उठावें।" सुनते ही एक साथ सब विद्यार्थियोंने हाथ उठा दिया। हम लोगोंको इस प्रकारसे उनके कष्टोंका अनुभव हुआ; पर वे स्वयं कभी शिकायत न करते थे। वे जानते थे कि हम लोग अपनी शक्तिभर उनके दुःख दूर करनेका यत्न कर रहे हैं। इसी लिए वे सदा सब कार्योंमें शिक्षकोंकी सहायता करनेके लिए तैयार रहते थे।

मैंने उत्तर और दक्षिण अमेरिकामें अनेक बार यह शिकायत सुनी है कि यदि किसी नीग्रोको कोई उच्च पद या अधिकार मिल जाता है तो उसके मातहत लोग न तो उसका कहना मानते हैं और न परस्पर मेलसे रहते हैं। पर मैं अपने अनुभवकी बात कहता हूँ कि इन उन्नीस वर्षोंमें किसी विद्यार्थीने अथवा विद्यालयके किसी नौकरने अपनी ज़बा-नसे या कामसे मेरा कभी निरादर नहीं किया। उलटे उन्होंने अनेक बार मुझ पर एहसान चढ़ाकर मुझे ही अपना कृतज्ञ बनाया है। जब कभी मैं कोई पुस्तक या और कोई चीज़ हाथमें लेकर कहीं जाता हूँ,

तो मेरे विद्यार्थी उसी समय वह चीज़ मेरे हाथसे लेकर निर्दिष्ट स्थानतक पहुँचा देते हैं । पानी बरसनेके समय अगर मैं दफ्तरसे बाहर निकलता हूँ तो कोई न कोई विद्यार्थी मेरे हाथसे छाता अवश्य ले लेता है ।

इसके साथ ही मुझे यह कहते हुए भी आनन्द होता है कि दाक्षिणके गोरोंके साथ मेरा जो सहवास रहा है उसमें अब तक कभी किसी गोरेने मेरा निरादर नहीं किया । टस्केजी और आसपासके गोरे लोग मेरा हर प्रकारसे सम्मान करनेहीमें अपना गौरव समझते हैं ।

जब कभी मैं किसी स्थानके लिए प्रस्थान करता हूँ तो लोगोंको न जाने कहाँसे मेरी यात्राका समाचार मिल जाता है और प्रायः सभी स्टेशनों पर अनेक गोरे और विशेषतः गाँवोंके गोरे कर्म्मचारी मुझसे आकर मिलते हैं और दाक्षिणमें मैंने जो कार्य आरम्भ किया गया है उसके लिए धन्यवाद देते हुए मेरा अभिनन्दन करते हैं । डालास–हाउस्टनकी यात्रामें मुझे यही अनुभव प्राप्त हुआ है ।

एक बार एटलांटा जाते समय मैं रेलगाड़ीमें सफ़र कर रहा था । बहुत अधिक थक जानेके कारण बीचमें मैं एक ऐसे डब्बेके पास गया जिसमें यात्रियोंके सोनेका भी प्रबन्ध रहता है । वहाँ बोस्टनकी दो महिलायें बैठी थीं । मैंने उन्हें देखते ही पहचान लिया । उनसे मेरी अच्छी जान पहचान थी । उन्होंने भी मुझे देखते ही अन्दर आ बैठनेके लिए आग्रह किया । शायद उन देवियोंको दाक्षिणका रिवाज मालूम न था । खैर, उनके बहुत आग्रह करनेपर मैं उनके पास बैठ गया । थोड़ी ही देर बाद मेरे बिना जाने उन्होंने नौकरको तीन आदमियोंका भोजन परोसनेकी आज्ञा दी । इससे मैं और भी चकराया–कारण उस डब्बेमें दाक्षिणी गोरे भरे हुए थे और उनमेंसे बहुतेरे हमीं लोगोंकी ओर देख रहे थे । जब भोजन परोस कर मेरे सामने रक्खा गया तब कोई न कोई बहाना निकालकर मैंने इस बलासे बचनेकी बहुत चेष्टा की । पर उन महिलाओंने बहुत ज़ोर देकर मुझे

अपने साथ भोजन करनेके लिए विवश कर दिया। मैंने मन-ही-मन कहा—" अब तो बेतरह फँसा ! "

अब और एक बला खड़ी हुई। मेज़ पर भोजन परोसा जा चुकने पर उन महिलाओंमेंसे एकको अपनी थैलीमें रक्खी हुई उमदा चायकी याद आई और उसने चाहा कि वह तैयार करके अभी भोजनके वक्त सबको दी जाय। नौकर अच्छी तरह तैयार न कर सकेगा इस विचारसे उसने उसे स्वयं तैयार किया। आखिर किसी तरह भोजन हो गया। मनकी अवस्था चलबिचल होनेसे मुझे ऐसा हो गया था कि कब इस भोजनसे मेरा छुटकारा होता है। उतना समय तो मुझे एक युगसा मालूम हुआ ! भोजनोपरान्त इस विपद्से रक्षा पानेके निमित्त मैं धूम्रपान करनेके कमरेमें चला गया। उस समय कितने ही यात्री प्रकृति देवीका सौन्दर्य्य देखनेके लिए इस डब्बेमें आ गये थे। जितने लोग वहाँ थे उन्हें न जाने कहाँसे यह मालूम हो गया कि मैं कौन हूँ। मैं जब उस डब्बेमें गया तो मुझे मेरे जीवनका एक अत्यन्त आश्चर्यकारक दृश्य दिखाई दिया। उन यात्रियोंमेसे प्रत्येक आदमी—प्रायः सभी जार्जियाके रहनेवाले थे—मुझसे आकर मिला और प्रत्येकने बड़े प्रेमसे बातें कीं। उन लोगोंने दक्षिणके लिए मैंने जो जो कुछ प्रयत्न किया था उसके लिए मुझे शुद्ध अन्तःकरणसे धन्यवाद दिये। यह खुशामद या ठकुरसुहाती न थी; क्योंकि यह तो सबको मालूम था कि मेरी प्रशंसा करनेसे किसीको कुछ मिलनेवाला नहीं।

प्रारंभसे ही मैंने सदा इस बातका उद्योग किया है कि विद्यार्थी लोग टस्केजी-विद्यालयको मेरी अथवा दूसरे अधिकारियोंकी सम्पत्ति न समझ कर स्वयं अपनी समझें और सदा ट्रस्टियों और शिक्षकोंकी भाँति उसकी उन्नतिकी चिन्तामें लगे रहें। मैंने उन्हें यह भी बतलानेकी चेष्टा की है कि मैं विद्यालयका कोई अधिकारी या स्वामी नहीं, केवल उसका मित्र और

परामर्शदाता हूँ। विद्यालयके प्रबन्ध आदिके विषयमें यदि कुछ कहना हो तो मेरी यही इच्छा रहती है कि विद्यार्थी स्वयं आकर साफ़ साफ़ कह दें। मैं वर्षमें दो तीन बार विद्यार्थियोंसे, पत्र भेजकर विद्यालयके कार्योंकी आलोचना करनेके लिए कहता हूँ। यदि विद्यार्थियोंके पत्र नहीं आते हैं तो मैं स्वयं ही उन्हें गिरजेमें एकट्ठा करके इस विषयकी चर्चा करता हूँ। इस प्रकारकी विद्यार्थियोंकी सभायें करना मुझे बहुत ही पसन्द है और विद्यालयके भावी कार्यक्रमको निश्चित करनेमें मुझे इनसे बड़ी मदद मिलती है। सब बातोंका रत्ती रत्ती पता लगानेमें इन सभाओंसे बड़ा काम निकलता है। किसी कामकी जिम्मेदारी दूसरे पर रख कर उसे यह जतला देना कि हम तुम्हारा विश्वास करते हैं, बड़ा ही लाभदायक होता है। जब मैं मालिक और मज़दूरोंके बीच होनेवाले झगड़ोंका हाल पढ़ता हूँ तो यह विचार मेरे मनमें आता है कि अगर मालिकने मज़दूरोंको अपनाकर उनसे हर काममें सलाह ली होती और यह मालूम करा दिया होता कि मालिक—मज़दूर दोनोंका स्वार्थ एक ही है तो हड़ताल आदिकी कठिनाइयाँ सहजहीमें दूर हो जातीं। यह तो एक सामान्य नियम है कि जिस मनुष्य पर हम विश्वास करेंगे वह भी हमारे ऊपर विश्वास करेगा। नीग्रो लोगोंके लिए भी यही नियम है। उन्हें आप यदि इतना ही विश्वास दिलानेमें समर्थ हो जायँ कि आप निःस्वार्थ भावसे उनकी शुभकामना करते हैं तो फिर वे आपके चरणोंके दास बन जायँगे।

टस्केजीमें विद्यार्थियोंसे भवन बनवानेके अतिरिक्त शुरूसे मेरा यह विचार था कि मेज़, कुरसी तथा दूसरे सामान भी बनवाये जायँ। चारपाइयाँ या चटाइयाँ तैयार होनेतक विद्यार्थी बड़ी सहनशीलताके साथ खाली ज़मीन पर ही सोते रहे!

शुरू शुरूमें बढ़ईका काम जाननेवाले बहुत ही थोड़े विद्यार्थी थे; और उनकी बनाई हुई चारपाइयाँ बहुत ही लचर—पचर और भद्दी

होती थीं। जब कभी मैं विद्यार्थियोंके कमरेमें जाता था तो एक दो चारपाइयाँ अवश्य टूटी हुई पाता था। सब विद्यार्थियोंको एक एक चटाई देनेकी बड़ी ही कठिन समस्या हम लोकोंके सामने थी। बहुत सोच विचारके बाद हम लोगोंने एक तदबीर ढूँढ़ निकाली। एक तरहका सस्ता कपड़ा ख़रीदकर उससे कई बड़े बड़े थैले तैयार किये गये, और पासहीके जंगलसे देवदार वृक्षकी पतली कोमल छाल (पयाल जैसी) इकठा करके उनमें भर दी गई। इस तरहसे एक प्रकारके गद्दे बन गये और तब चटाइयोंके बदले इन्हींका व्यवहार होने लगा। फिर धीरे धीरे चटाइयाँ भी बनने लगीं और अब तो हमारे यहाँ उसका एक कारख़ाना ही खुल गया है। इस कारख़ानेमें बालिकाओंको एक ख़ास ढंगके साथ शिक्षा भी दी जाती है, और टस्केजीके कारख़ानेमें तैयार होनेवाली चटाई बाज़ारकी किसी चटाईसे घटिया नहीं होती।

पहले पहल छात्रावासमें कुरसियोंका कोई प्रबन्ध न था। कुरसियोंके बदले लकड़ीकी तीन पटियोंमें कीलें जड़ कर एक तरहके स्टूलसे बनाकर उनसे काम लेते थे। उन दिनों विद्यार्थियोंको केवल एक विस्तर, विद्यार्थियों द्वारा बने हुए कुछ स्टूल और कभी कभी एकाध भद्दी मेज़ मिलती थी। अब भी ये सब चीजें विद्यार्थी ही बनाते हैं; परन्तु अब साजसरंजाम बहुत बढ़ गया है; और बढ़ईगरीमें भी अब इतनी तरक्की हो गई है कि विद्यार्थियों द्वारा बनी हुई चीज़ोंमें कोई जल्दी नुक्स नहीं निकाल सकता। मैंने शुरूसे ही इस बात पर ध्यान रक्खा है कि टस्केजीकी हरेक बातमें और हरेक स्थानमें स्वच्छता होनी चाहिए। हम लोग अगर ग़रीब हैं तो हमारे पास सुखसुभीतेके सामान न होना कोई अपराध नहीं; परन्तु इसके साथ ही यदि स्वच्छता भी न हो तो, लोग हमें, कभी क्षमा न करेंगे—हमसे घृणा करने लगेंगे। यह बात मैंने अपने विद्यार्थियोंको बार बार बतलाई है और अब भी बतलाता हूँ।

ब्रशसे दाँत साफ़ करने पर भी हमारे यहाँ बहुत जोर दिया जाता है। जनरल आर्मस्ट्रांग इस दाँतोंकी सफ़ाईके उपदेशको The Gospel of the tooth-brush अर्थात् ' दाँतोंको ब्रशसे साफ़ करनेका धर्मोपदेश ' कहा करते थे। टस्केजी-विद्यापीठका यह एक विशिष्ट संस्कार रहा है। ब्रश पास रहते हुए जो विद्यार्थी उससे दाँत साफ़ नहीं करता उसे हम लोग अपने विद्यालयमें भरती नहीं करते। पुराने विद्यार्थियोंसे ब्रशकी कड़ाईका हाल सुनकर जो नये विद्यार्थी भरती होनेके लिए आते हैं वे अपने साथ कमसे कम टूथ-ब्रश अवश्य लाते हैं-और कोई चीज़ चाहे न ले आवें। एक दिन सबेरे मैं लेडी-प्रिन्सिपलके साथ विद्यार्थिनियोंकी कोठरियाँ देखने गया। एक कमरेमें तीन नई बालिकायें थीं। मैंने उनसे पूछा,-" तुम लोगोंके पास टूथ-ब्रश हैं ? " फौरन उनमेंसे एक लड़कीने ब्रश सामने लाकर कहा,-" यह है। कल ही हम तीनों जनी मिलकर इसे खरीद लाई हैं। " उन्हें उस वक्त तक यह ज्ञान न था कि सबका एक एक अलग ब्रश होना चाहिए !

टूथब्रशके उपयोगसे विद्यार्थियोंको बड़ा लाभ हुआ है। यहाँतक मैंने अनुभव किया है कि यदि किसी विद्यार्थीका टूथब्रश खो गया और वह चट बिना कहे दूसरा ले आया तो आगे चलकर ऐसे विद्यार्थीने बड़ी कीर्त्ति संपादन की है ! दाँतोंकी सफ़ाईके अतिरिक्त शरीरके शेष अवयवोंकी स्वच्छता पर भी बहुत ध्यान दिया जाता है। भोजनकी तरह स्नान भी नित्य नियमित समय पर करनेकी शिक्षा दी जाती है। स्नानागार तैयार होनेके पहलेसे ही हम लोगोंने यह शिक्षा आरंभ कर दी थी। बहुतसे विद्यार्थी देहातोंसे आये हुए थे और इसलिए उन्हें सोना, बिस्तर बिछाना आदि बातें भी सिखलानी पड़ती थीं। रातको कुरता पहननेका महत्त्व भी उन्हें बतलाया गया।

यहाँ कोई विद्यार्थी फटे, मैले, बिना बटनोंके, तेलहे कपड़े नहीं पहनने

पाता। शुरू शुरूमें इसकी शिक्षा देनेमें बड़ी कठिनाई पड़ती थी। पर अब मुझे यह कहते आनन्द होता है कि स्वच्छताकी शिक्षासे हमारे विद्यार्थियोंने इतना बड़ा लाभ उठाया है और पुराने विद्यार्थियोंसे नये विद्यार्थियोंने यह गुण इतना ले लिया है कि नित्य संध्यासमय जब सब विद्यार्थी गिरजेसे बाहर आते हैं और जब उनके कपड़ोंकी परीक्षा की जाती है तो एक भी विद्यार्थी ऐसा नहीं निकलता कि जिसके कपड़े मैले हों या कोटमें एक बटनका भी स्थान खाली हो।

बारहवाँ परिच्छेद ।

धन-संग्रह ।
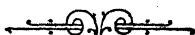
टस्केजी-विद्यालयमें जब विद्यार्थियोंके निवास आदिका प्रबन्ध हो गया तब पहले भवन अर्थात् पोर्टर-हालके ऊपरके खंडकी कुछ कोठरियोंमें बालिकाओंके रहनेका प्रबन्ध किया गया । परन्तु छात्रोंकी संख्या दिनोंदिन बढ़ने लगी । विद्यार्थियोंको तो भवनके बाहर भी स्थान दिला दिया जासकता था; परन्तु बालिकाओंको वहाँ रखना ठीक न मालूम हुआ । इसलिए एक विशाल छात्रावास शीघ्र ही बनवानेकी आवश्य-कता हुई; क्योंकि बालिकाओंके रहने और सब छात्रोंके भोजनादिके लिए पर्याप्त स्थान चाहिए था ।

इस नये भवनका नकशा बनने पर मालूम हुआ कि उसके बननेमें दस हज़ार डालर लगेंगे । कार्य आरंभ करनेके लिए हम लोगोंके पास धन बिलकुल न था; पर तो भी इस नये भवनका नामकरण हम लोगोंने कर दिया । हम लोग जिस राज्यमें कार्य कर रहे थे उस राज्यका आदर करनेके निमित्त इस भवनका नाम 'अलबामा—हाल' रख-नेका निश्चय किया गया । अब फिर मिस डेविड्सन आसपासके गोरों और नीग्रो लोगोंसे चन्दा उगानेका उद्योग करने लगीं और प्रायः सबोंने अपनी अपनी शक्तिके अनुसार सहायता दी । विद्यार्थियोंने भी पहलेकी भाँति जमीन खोदकर नीवकी तैयारी आरम्भ कर दी ।

नये भवनके लिए हमें रुपयोंकी बहुत ही ज़रूरत थी । जब सब उपाय हम लोग कर चुके तब एक ऐसी घटना हुई जिससे जनरल आ-र्मस्ट्रांगके मनकी असाधारण उदारताका पूरा परिचय मिला । हम लो-

गोंको धनकी बड़ी चिन्ता हो रही थी कि इसी बीच जनरल आर्मस्ट्रांगका एक तार आया जिसमें उन्होंने मुझसे पूछा था,—“ क्या आप एक मासतक उत्तर प्रान्तमें मेरे साथ प्रवास कर सकते हैं ? यदि कर सकते हों तो शीघ्र ही हैम्पटन चले आवें । ” मैं तार पाते ही हैम्पटनके लिए रवाना हो गया। वहाँ पहुँचने पर मुझे मालूम हुआ कि जनरलने चार गवैयोंको साथ लेकर उत्तर प्रान्तके भिन्न भिन्न स्थानोंमें भ्रमण करना निश्चय किया है। उनका यह भी विचार है कि स्थान स्थान पर सभायें की जायँ और वहाँ मैं और जनरल महाशय व्याख्यान दें। जब मुझे यह मालूम हुआ कि ये सभायें हैम्पटन-विद्यालयके लिए नहीं बल्कि टस्केजी-विद्यालयके लिए होंगीं और उनके सारे व्ययकी जिम्मेवारी हैम्पटन-विद्यालय लेगा तब मुझे जो आश्चर्य हुआ उसका अन्दाज़ पाठक ही कर लें।

जनरल आर्मस्ट्रांगने मुझसे स्वयं कुछ नहीं कहा। पर मैंने यह मालूम किया कि इस प्रकार स्थान स्थानमें परिभ्रमण कर व्याख्यान देनेमें उनका मतलब सिर्फ़ यही था कि उत्तर प्रान्तके बड़े बड़े लोगोंसे मेरा परिचय हो जाय और ‘अलबामा-हाल’ के लिए कुछ धन मिल जाय। यदि कोई क्षुद्र बुद्धिवाला मनुष्य होता तो वह यही समझता कि यह सारा धन मानों हैम्पटन-विद्यालयके कोशसे ही दिया जाता है। परन्तु जनरल आर्मस्ट्रांगके मनमें ऐसे संकुचित और तुच्छ विचार कभी न आये। वे जानते थे कि उत्तर प्रान्तके लोगोंने जो धन दिया है वह किसी ख़ास विद्यालयके लिए नहीं बल्कि सारी नीग्रो जातिकी उन्नतिके हेतु अर्पण किया है। यह भी वे ख़ूब जानते थे कि हैम्पटन-विद्यालय तभी बलशाली होगा—उसकी प्रतिष्ठा तभी बढ़ेगी जब समस्त दाक्षिणी नीग्रो लोगोंकी उन्नतिके लिए निःस्वार्थ और उदार प्रयत्न करनेका वह केन्द्र बन जाय और इस काममें वह अगुआ बने। उत्तर प्रान्तकी वक्तृताओंके संबंधमें जनरल आर्मस्ट्रांगने मुझे यह उपदेश दे रक्खा था;—“ अपने

भाषणके प्रत्येक शब्दके साथ श्रोताओंको एक एक नई बात—नई कल्पना बतलाओ; अर्थात् ऐसा प्रयत्न करो जिससे तुम्हारे प्रत्येक शब्दसे उनके हृदयमें एक नया विचार उत्पन्न हो।" मैं समझता हूँ कि यह उपदेश प्रत्येक वक्ताको ध्यानमें रखना चाहिए। मैं सदा ही इस उपदेश-पर अमल करनेका यत्न करता आ रहा हूँ।

न्यूयार्क, ब्रुकलिन, बोस्टन, फिलाडेल्फिया और अन्यान्य नगरोंमें हम लोगोंने सभायें कीं, और जनरल आर्मस्ट्रांगने मेरे साथ, हैम्पटन विद्यालयके लिए नहीं बल्कि टस्केजी-विद्यालयके लिए सहायता माँगी। इन सभाओंमें 'अलबामा-हाल' बनवानेके हेतु धन संग्रह करने और टस्केजी-विद्यालयको सर्व प्रसिद्ध करनेका हम लोगोंने प्रयत्न किया, और हमारे इन दोनों कामोंमें हमें बहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई।

इस प्रकार उत्तर प्रान्तमें मेरी मेल—मुलाकात बढ़ने पर मैं फंड जमा करनेके लिए अकेला ही जाने लगा। बिगत पंद्रह सोलह वर्षोंमें विद्यालयकी नई नई आवश्यकताओंकी पूर्त्ति करनेके निमित्त धनसंग्रहके लिए मुझे विद्यालय छोड़ बहुत दूर दूरकी यात्रा करनी पड़ी है और मेरा बहुतसा समय भी इस काममें व्यतीत हुआ है। धन संग्रह करते हुए मुझे जो अनुभव प्राप्त हुए हैं उनके वर्णनसे पाठकोंका अवश्य ही मनोरञ्जन होगा। परोपकारी संस्थाओंने—उनके संचालकोंने मुझसे अनेक बार पूछा है कि मैं (अच्छे कामोंमें धन खर्च कर सकनेवाले) अमीर लोगोंसे सहानुभूति और सहायता किस प्रकार प्राप्त करता हूँ। इसके उत्तरमें 'मैं भिक्षां देहि'के शास्त्रके दो ही नियम बतला सकता हूँ:—

(१) साधारण लोगों और संस्थाओंको अपने कार्यका पूरा परिचय देनेमें कोई बात उठा न रखना।

(२) परिणामके लिए अधीर न होना।

दूसरे नियमके अवलंबनमें मुझे बड़ी कठिनाई पड़ी है। अब मैं सम-

झने लगा हूँ कि परिणामके लिए अधीर होनेसे व्यर्थ ही शारीरिक और मानसिक शक्ति चिन्ताकी चिता पर भस्म हो जाती है । इसी शक्तिका उपयोग और अच्छे कामोंमें किया जा सकता है। पर तो भी इसमें सन्देह नहीं कि ऐसी दशामें जब कि अपने पास धन बिलकुल न हो और महाजनोंके बिल पर बिल आते हों, निश्चिन्त बैठ रहना अथवा धैर्य रखना बड़ा ही कठिन होता है। अनेक अमीर और नामवर लोगोंसे मिलकर मैंने यह अनुभव प्राप्त किया है कि जो लोग अपने शरीर और मनको वशमें रखते हैं, जो कभी अधीर नहीं होते, जिनका आत्म-संयमन कभी नष्ट नहीं होता और जो सदा शान्त, स्वस्थ, सहनशील और नम्र बने रहते हैं, वे ही बड़े भारी कर्मवीर और कीर्त्तिके भागी होते हैं । इस प्रकारके पुरुषोंमें मैंने प्रेसिडेंट ‘ विलियम मैकिनले ’को आदर्श-स्वरूप पाया है ।

मेरी सम्मातिमें किसी प्रयत्नकी सफलता प्राप्त करनेका मूलमंत्र उस कार्यको करते हुए अपने आपको भूल जाना—उस कार्यमें ही सब तरहसे तन्मय हो जाना है । जिस कार्यमें हम जितने ही मगन हो जाते हैं उतना ही वह कार्य हमें सुख देता है ।

कुछ लोग धनवानोंको केवल इसी लिए दोष देते हैं कि वे धनवान् हैं और उपकारी कार्योंमें अधिक धन नहीं देते हैं । जब मैं ऐसी बातें सुनता हूँ तो टस्केजी–विद्यालयके लिए धनसंग्रह करनेमें मुझे जो अनुभव हुआ है वह मुझे चुप नहीं बैठने देता । पहले तो, जो लोग इस प्रकार धनवानोंको दोष देते हैं वे यह नहीं जानते कि यदि धनवान् लोग अपनी मिलकियतका बड़ा भारी हिस्सा दानधर्म्ममें ही खर्च कर डालें तो उनका व्यवसाय गिर जाय, हज़ारों लोग भूखों मरें, और बहुत बड़ा अनर्थ हो जाय । दूसरे, धनवानोंके पास सहायता माँग-नेके लिए कितने लोग आते हैं इसका अन्दाज़ भी बहुत थोड़े लोग कर

सकते हैं। मैं ऐसे धनवानोंको जानता हूँ जिनके पास रोज़ कमसे कम बीस आदमी सहायता माँगने आते हैं। मैंने धनवानोंकी कोठियोंमें जाकर देखा है कि वहाँ चार छह आदमी एक ही कामसे अर्थात् धनके लिए बैठे हुए हैं। यह तो लोगोंके खुद आकर मिलनेकी बात हुई; इसके अलावे डाकसे कितनी प्रार्थनायें आती होंगीं सो ईश्वर जाने! अनेक ऐसे भी दाता होते हैं जो अपना नाम भी प्रकट नहीं होने देते। ऐसे लोगोंके दानका अन्दाज़ कौन कर सकता है? इस प्रकार गुप्तरूपसे हरसाल हज़ारों रुपयोंका दान करनेवाले कई लोगोंको मैं जानता हूँ। परन्तु मैंने कई बार सुना है कि लोग उन पर कुछ भी दान न करनेका—कंजूसीका दोष लगाते हैं! उदाहरणार्थ, न्यूयार्कमें दो महिलायें हैं। इनके नाम समाचारपत्रोंमें बहुत ही कम प्रकाशित होते हैं। परन्तु इन्हीं दो महिलाओंने गत आठ वर्षोंमें हम लोगोंको तीन बड़ी भारी इमारतें बनवाने लायक गुप्तदान दिया है। इसके अतिरिक्त और भी कई बार अलग दान दिये हैं जिनकी कुल रकम बहुत बड़ी होगी। इन उदार स्त्रियोंने केवल टस्केजी-विद्यालयकी ही मदद नहीं की है बल्कि अन्यान्य कार्योंमें भी इसी प्रकार बहुत सहायता दी है।

यद्यपि टस्केजीके लिए मेरे हाथों लाखों रुपये संग्रह किये गये हैं, तथापि जिसे 'भिक्षा' कहते हैं उससे मैं बचा हुआ हूँ। धनके लिए मैंने भीख नहीं माँगी, और लोगोंसे भी मैंने कई बार कहा है कि मैं भिक्षुक नहीं हूँ। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि धनके लिए किसी धनवानका गला दबानेसे धन नहीं मिलता। जो लोग धन कमाना जानते हैं वे उसका व्यय करना भी जानते हैं—यह मैं जानता हूँ और इस लिए धनसंग्रहकी यात्रामें मैं केवल लोगोंके सामने हाथ पसारनेके बदले टस्केजी—विद्यालय और उससे निकले हुए ग्रेज्युएटोंके कार्योंका परिचय देता रहा हूँ; और इसी उपायसे मुझे धन भी अधिक मिला है।

मैं समझता हूँ कि धनवान् लोग हमसे सब बातों और कार्योंका गुरुता और योग्यतापूर्वक वर्णन ही सुनता चाहते हैं ।

घर घर माँगने जानेमें शरीरको बहुत कष्ट होते हैं इसमें सन्देह नहीं; परन्तु इन कष्टोंका प्रतिफल भी मिलता है । इसके सिवाय मनुष्य-स्वभावकी जाँच-पड़ताल करनेका भी सुअवसर हाथ लगता है और उत्तम पुरुषोंसे—सर्वोत्तम पुरुषोंसे कहना अधिक अच्छा होगा—मिलनेका सौभाग्य प्राप्त होता है । किसी देशका स्थूल रूपसे निरीक्षण करनेमें यह मालूम हो जाता है कि प्रत्येक देशमें सबसे अधिक परोपकारी और प्रभावशाली पुरुष वे ही होते हैं जो सार्वजनिक कार्योंसे—सबके लाभके लिए स्थापित हुई संस्थाओंसे—सहानुभूति रखते हैं ।

एक बार मैं बोस्टन नगरमें एक धनाढ्य महिलासे मिलने गया । मैंने अपने नामका कार्ड अन्दर भेजा और उत्तरकी बाट जोहता हुआ खड़ा रहा । इतनेमें उस महिलाके पतिने बाहर आकर मुझसे पूछा–' तुम्हें क्या चाहिए ? " मैंने अपना उद्देश्य समझाना चाहा; पर वह भला आदमी इतना तेज़ और रूखा हो गया कि बिना उस महिलासे मिले ही मुझे वहाँसे लौट आना पड़ा । इसके अनन्तर मैं वहाँसे थोड़ी ही दूर पर रहनेवाले एक सज्जनके घर गया । उसने शुद्ध अन्तःकरणसे मेरा यथोचित स्वागत किया और एक बड़ी रकमका चेक मेरे नाम लिखदिया । इसके लिए मैं उसे धन्यवाद भी न देने पाया कि उसने कहा,– " मिस्टर वाशिंगटन, आपने मुझे ऐसे अच्छे काममें हाथ बटानेका अवसर दिया इसलिए मैं आपका बहुत ही कृतज्ञ हूँ । ऐसे सत्कार्यमें योग देना भी एक बड़े गौरवकी बात है । आपके आगमनसे बोस्टनवासियोंको यह गौरव प्राप्त हुआ इसलिए हम लोग आपके बहुत अनुग्रहीत हैं । " धनसंग्रहके कार्यसे मुझे यह अनुभव हो गया है कि पहले प्रकारके—रुखाईका व्यवहार करनेवाले लोग दिनों दिन

घट रहे हैं और दूसरे प्रकारके लोगोंकी–सुजनताका व्यवहार करनेवालोंकी संख्या बराबर बढ़ती जा रही है। इसी बातको इस प्रकारसे भी कह सकते हैं कि अब धनवान् लोग, अच्छे कार्योंके लिए मदद माँगनेवाले स्त्री-पुरुषोंको, भिक्षुक न समझ कर अपने ही कार्य करनेवाले लोकप्रतिनिधि मानने लगे हैं।

बोस्टन शहरमें मैंने यह देखा है कि दाता धन देकर मुझे धन्यवाद देनेका अवसर न देकर उलटे मुझहीको धन्यवाद देते हैं। वे लोग यह समझते हैं कि ऐसे कामोंमें दान देना अपना ही गौरव बढ़ाना है। अन्य स्थानोंमें भी मुझे अच्छे अच्छे लोगोंसे मिलनेका अवसर प्राप्त हुआ है, पर जैसी उदार और दयालु प्रकृतिके लोग मैंने बोस्टनमें देखे वैसे अन्यत्र कहीं देखनेमें न आये। मैं समझता हूँ कि लोगोंमें दिनोंदिन दानशीलता बढ़ रही है। धनसंग्रह करते हुए मेरे सामने यही एक बात रही और अब भी है कि धनवान् लोगोंको सत्कार्योंमें दान देनेका मौका दिलानेमें कोई बात उठा न रखनी चाहिए।

टस्केजी-विद्यालयके प्रारंभके दिनोंमें कुछ समयतक उत्तर प्रान्तके शहरों और देहातोंमें भटकते रहने पर भी कहींसे एक पैसा भी मुझे न मिला था। कई बार ऐसा हुआ है कि जिन लोगोंसे बहुत कुछ सहायता मिलनेकी आशा थी उनसे तो कुछ भी न मिलता और उदासीसे मेरा उत्साह भंग हो जाता; पर जिन लोगोंसे कभी कुछ भी मिलनेकी आशा न होती थी, ऐसे लोगोंसे कभी कभी बड़ी सहायता मिल जाती थी।

कनेक्टिकट राज्यके स्टैंफर्ड गाँवसे दो मीलके फ़ासले पर रहनेवाले एक सज्जनके विषयमें मुझसे यह कहा गया था कि अगर उन्हें टस्केजी-विद्यालयका सब हाल बतलाया जायगा तो वे अवश्य सहायता करेंगे। इसलिए मैं एक दिन उनसे मिलने गया। उस रोज़ बड़ी ही ठंड थी

और पाला पड़ रहा था । पर इसकी मैंने कोई परवा नहीं की और उनके मकान तक जाकर मैंने उनसे भेंट की । उन्होंने मेरी बातें सब सुन लीं; पर दिया कुछ भी नहीं । इससे मुझे खेद अवश्य हुआ क्योंकि मेरे तीन घंटे व्यर्थ ही खर्च हुए; परन्तु सन्तोष इस बातका था कि मैंने अपना कर्तव्य किया । यदि मैं उनसे न मिलता तो मुझे अपना कर्तव्य पालन न करनेके कारण बहुत अधिक बेचैनी होती ।

इस घटनाके दो वर्ष बाद इन्हीं सज्जनने मेरे पास एक पत्र भेजा जिसमें लिखा था;—" आपके विद्यालयके लिए इस पत्रके साथ मैं दस हज़ार डालरकी एक हुंडी भेजता हूँ । मैंने यह रकम अपने मृत्युपत्रमें (वसीहतनामेमें) आपके विद्यालयके नाम लिख दी थी; पर अब इसे मैं जीते जी ही दे डालना उचित समझता हूँ । दो वर्ष पूर्व मैंने आपके दर्शन किये थे; उसका स्मरण होनेसे मुझे बड़ा आनन्द होता है । "

इस हुंडीसे मुझे जैसा आनन्द हुआ वैसा और किसी बातसे न हुआ होगा । विद्यालयको अबतक जितने दान मिले थे उनमें सबसे बड़ी रकम यही थी । यह दान भी ऐसे अवसर पर मिला जब कि बहुत दिनोंसे विद्यालयको कहींसे कुछ भी न मिला था । धनाभावके कारण उस समय हम लोग बड़ी चिन्तामें थे । एक बड़े विद्यापीठके संचालनका भार सिर पर था, अभी कितने ही बिलोंको चुकाना था; इसके सिवाय हर महीने बिल पर बिल आते ही जाते थे और हम लोग यह नहीं जानते थे कि इनको चुकानेके लिए धन कहाँसे आवेगा ! मैं नहीं जानता कि इससे भी अधिक चिन्ताग्रस्त करनेवाली और कोई दुरवस्था हो सकती है ।

यदि मेरे विषयमें पूछिए तो मुझ पर दूनी जिम्मेदारी थी और इसलिए मेरी चिन्ता भी उसी हिसाबसे बढ़ी हुई थी । यही विद्यापीठ यदि गोरोंकी किसी मंडलीकी देखरेखमें होता और उसमें नाकामयाबी होती तो केवळ नीग्रो लोगोंकी शिक्षाका एक प्रबन्ध टूट जाता; परन्तु

यह नीग्रो द्वारा ही चलाई जानेवाली एक संस्था यादि मिट जाती तो एक विद्यालयकी ही हानि न होती; बल्कि सारी जाति पर कलंकका टीका लग जाता। ऐसी विकट अवस्थामें इन दस हज़ार डालरोंने बड़ा भारी काम किया।

मैंने अपना यह सिद्धान्त बना लिया है और मैं मौका पाकर विद्यालयके अध्यापकोंको बार बार यही बतलाया करता हूँ कि विद्यालयकी आन्तरिक अवस्था जितनी ही निर्मल, पवित्र और उपयोगी रक्खी जायगी उतनी ही उसे बाहरसे सहायता मिलेगी।

मैं पहली बार जब सुप्रसिद्ध रेल-महाजन मिस्टर कार्लीस पी. हटिंगटनसे मिला तो उन्होंने हमारे विद्यालयके लिए सिर्फ़ दो ही डालर दिये थे। उन्हीं हटिंगटन साहबने, उनकी मृत्युसे कुछ महीने पहले जब मैं उनसे मिला तो, पचास हज़ार डालर दे दिये! इन दो दानोंके मध्यसमयमें मिस्टर और मिसेस हटिंगटनसे हमें और भी कई बड़ी बड़ी रकमें मिली हैं।

कुछ लोग शायद यह कहेंगे कि यह टस्केजी–विद्यालयका बड़ा भाग्य था जो उसे पचास हज़ार डालर मिल गये। पर मैं इसे भाग्य या तक़दीर नहीं कहता। यह अविराम परिश्रम और अध्यवसायका ही फल था। दीर्घोद्योगके बिना किसीको कुछ नहीं मिलता। मिस्टर हटिंगटनने मुझे जिस वक्त दो ही डालर दिये उस वक्त मैंने अधिक दान न देने पर उन्हें दोष नहीं लगाया। तबसे मैं बराबर उन्हें यह दिखलानेका उद्योग करता रहा कि हम लोग अधिक दानके पात्र हैं। मैं लगातार बारह वर्षतक यह उद्योग करता रहा। ज्यों ज्यों वे विद्यालयकी उन्नतिके आगे बढ़ते हुए कदम देखते चले त्यों त्यों अधिक सहायता भी करते गये। मिस्टर हटिंगटनसे अधिक सहानुभूति और विद्यालयके कार्यमें उदारता रखनेवाला कोई भी धानिक पुरुष मैंने नहीं देखा।

उन्होंने हम लोगोंको भरपूर धन दिया; यही नहीं, बल्कि उन्होंने मुझे संस्थासंचालनके विषयमें अनेकबार पितृवत् स्नेहसे उपदेश दिया है और इस कार्यमें अपना अमूल्य समय खर्च किया है।

उत्तर प्रान्तमें धन संग्रहका कार्य करते हुए मुझे बड़ी बड़ी कठिनाइयोंसे सामना करना पड़ा है। लोग शायद विश्वास न करेंगे, इस लिए मैंने अबतक एक घटनाका हाल किसीको भी नहीं बतलाया है; पर आज बतला देता हूँ। मैं अपने कामसे ह्रोड द्वीपके प्राविडेन्स नामक स्थानमें आया हुआ था। सबेरेका वक्त था, मेरी जेबमें भोजनके लिए एक पैसा भी न था; एक माहिलासे कुछ मिलनेकी आशा थी। उससे मिलनेके लिए सड़कके उस पार जाते समय गाड़ीकी राह पर मुझे पचीस सेंटका (साड़े बारह आनेका) एक सिक्का हाथ लग गया! भोजनके लिए ये पचीस सेंट तो मिल ही गये, और थोड़ी ही देर बाद उस माहिलाके यहाँसे आशानुसार दान भी मिल गया!

एक बार उपाधिदानके अवसर पर मैंने ट्रिनिटी चर्चके रेक्टर बोस्टनके पादरी मिस्टर विंचेस्टर डोनाल्डको विद्यालयमें मुख्य भाषण करनेके लिए निमंत्रित किया। व्याख्यान सुननेके लिए आनेवाले लोगोंको बैठनेकी जगह बहुत ही कम थी। इस लिए हम लोगोंने पेड़की डालियाँ छाकर और लकड़ीकी बड़ी बड़ी बल्लियाँ खड़ी करके एक मामूली मंडप तैयार कर दिया था। ज्यों ही डाक्टर डोनाल्ड वक्तृता देने खड़े हुए त्यों ही मूसलधार वृष्टि होने लगी। इसलिए उन्हें अपनी वक्तृता बन्द करनी पड़ी और उन पर छाता लगाना पड़ा!

ट्रिनिटी चर्चके रेक्टर उस बड़े भारी जनसमुदायके सामने एक पुराने छातेके नीचे खड़े हैं और इस बातकी राह देख रहे हैं कि वर्षा समाप्त होकर कब मेरा भाषण आरम्भ होता है! इस दृश्यको जब मैंने देखा तब मुझे अपने कियेकी सुध हुई!—मालूम हुआ कि मैंने कितने बड़े साहसका काम कर डाला है।

शीघ्र ही पानी रुका और डाक्टर डोनाल्डने अपनी वक्तृता चटपट दे डाली। हवा प्रतिकूल थी तो भी आपकी वक्तृताका रंग जम गया। कुछ देर बाद, भींगे कपड़े सूखने पर, डाक्टर साहबने यों ही मामूली बातचीतमें कहा कि "यहाँ एक बड़ा गिरजाघर बन जाय तो अच्छा हो।" दूसरे ही दिन इटालीमें प्रवास करती हुई दो स्त्रियोंका एक पत्र मेरे पास आया। उसमें लिखा था कि "टस्केजीमें जिस बड़े गिरजाघरकी ज़रूरत है हमने उसे बनवानेका सारा खर्च देना निश्चय किया है!"

इसके कुछ ही दिन बाद (अमेरिकाके सुप्रसिद्ध दानी) मिस्टर एंड्रू कार्नेजीने टस्केजी-विद्यालयके नवीन पुस्तकालयके लिए बीस हज़ार डालर भेज दिये! हमारा पुराना पुस्तकालय एक छोटीसी झोपड़ीमें था। मिस्टर कार्नेजीकी सहानुभूति और सहायता प्राप्त करनेमें मुझे दस वर्ष उद्योग करना पड़ा। दस वर्ष पहले पहली मुलाकातमें उन्होंने हमारे विद्यालयकी ओर विशेष ध्यान न दिया था। परन्तु मैंने उन्हें यह दिखला देनेका निश्चय किया था कि हम लोग आपके दानपात्र हैं। दस वर्ष अविराम परिश्रम करनेके पश्चात् मैंने उन्हें निम्नलिखित पत्र लिखा:—

१५ दिसंबर १९००.

मिस्टर एंड्रू कार्नेजी,

५ डब्ल्यू. ५१ स्ट्रीट, न्यूयार्क—की सेवामें।

प्रिय महाशय, कुछ समय पूर्वकी भेंटमें सूचित किये अनुसार टस्केजी—विद्यालयके पुस्तकालय-भवनके लिए आपकी सेवामें यह प्रार्थनापत्र भेजता हूँ।

इस समय हमारे विद्यालयमें ११०० विद्यार्थी, ८६ कर्मचारी और अध्यापक (सपरिवार) हैं। विद्यालयके आसपास लगभग २०० नीग्रो रहते हैं। ये सब लोग इस पुस्तकालयसे बहुत लाभ उठा सकेंगे।

हमारे पास १२०० पुस्तकें, सामायिक पत्र और मित्रोंके दिये हुए उपहार आदि हैं। इनके लायक हमारे पास स्थान नहीं और न कोई वाचनालय ही है जहाँ लोग आकर पुस्तकें या पत्र पढ़ सकें।

हमारे विद्यालयके ग्रेज्युएट दक्षिणके हर हिस्सेमें काम करने जाते हैं। इस लिए इसमें सन्देह नहीं कि वाचनालयसे उन्हें जो ज्ञान प्राप्त होगा वह समस्त नीग्रो जातिकी उन्नतिमें सहायक होगा।

हमारी आवश्यकतानुसार भवन बीस हज़ार डालरमें बन जायगा। इस भवनके लिए इंटें बनानेका तथा बढ़ई, लुहार आदिका सारा काम विद्यार्थी खुद कर लेंगे। आपके धनसे केवल भवन ही नहीं बनेगा, बल्कि भवनके बनानेमें बहुतसे विद्यार्थियोंको इमारतके कामकी शिक्षा मिलेगी और उनके कार्य्यके पुरस्कारस्वरूप उन्हें जो धन मिलेगा उसकी सहायतासे वे विद्यालयमें रहकर शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। मैं नहीं जानता कि इतने धनसे दूसरी किसी जातिकी इतनी उन्नति हो सकती है। यदि आप कुछ और अधिक विवरण जानना चाहें तो मैं प्रसन्नतापूर्वक बतला सकता हूँ।

विनीत—

बुकर टी. वाशिंगटन,

प्रिन्सिपल।

इस उत्तरमें मिस्टर कार्नेजीने लिखा किः—

"पुस्तकालयके भवनके लिए मैं बड़ी प्रसन्नतासे बीस हज़ार डालर तक देनेके लिए तैयार हूँ। आपके इस उदार कार्य्यसे मुझे बहुत प्रसन्नता प्राप्त हुई है।"

मैं अपने अनुभवसे यह बात कहता हूँ कि व्यवहार यदि साफ़ और सुन्दर रक्खा जाय तो धनवान् लोग सहानुभूतिके साथ अवश्य सहायता करते हैं। टस्केजी विद्यालयका हिसाब और अन्य व्यवहार मैंने इतना साफ़ रखनेकी चेष्टा की है कि न्यूयार्ककी बड़ीसे बड़ी कोठी भी उसे देखकर प्रसन्न होगी।

विद्यालयको मिले हुए बड़े बड़े दानोंका हाल मैं ऊपर कह चुका। पर, हमारे विद्यालयको उन्नत दशामें लानेके लिए जो धन खर्च हुआ

है उसका बड़ा भारी अंश छोटी छोटी रकमोंसे ही इकट्ठा हुआ है । जितने परोपकारी कार्य होते हैं वे साधारणतः सच्ची सहानुभूति रखनेवाले साधारण लोगोंकी छोटी मोटी रकमों पर ही चला करते हैं । धनसंग्रह करते समय मैंने अनेक धर्मोपदेशकोंकी हालत देखी है । इनके पीछे सहायता माँगनेवालोंकी इतनी भीड़ रहती है कि साधारण मनुष्य देख-कर ही घबरा जाय । पर इनकी सहानुभूति और सहिष्णुता देखकर मैं चकित हो जाता हूँ । ईसाके समान उदार और परोपकारी जीवनका महत्त्व मैंने इन्हीं धर्मोपदेशकोंके जीवनसे समझा है । आज पैंतीस वर्षोंसे काले लोगोंकी उन्नतिके लिए अमेरिकाका सार्वजनिक (सब संप्रदायोंका) क्रिश्चियन चर्च जो काम कर रहा है वह बड़ा ही प्रभाव उत्पन्न करनेवाला है । रविवारकी पाठशालाओं, क्रिश्चियन एनडेवर सोसायटियों, मिशनरी संस्थाओं और सार्वजनिक चर्चोंसे मिलनेवाले धनसे ही नीग्रो लोगोंका काया पलट हो रहा है ।

इन छोटी रकमोंका जिक्र करते हुए मुझे यह भी कहना चाहिए टस्केजीके ग्रेज्युएट भी अपना वार्षिक चन्दा समय भर भेज देते हैं । अप-वादरूप बहुत ही थोड़े हैं । यह चन्दा पचीस सेंटसे दस डालर तक है ।

तीसरे वर्षका कार्य आरंभ होनेके समयसे हमें अन्य तीन स्थानोंसे अकस्मात् सहायता मिलने लगी, और अबतक बराबर मिलती है । (१) अलबामा-सरकारने अपनी सहायता दो हज़ार डालरसे बढ़ाकर तीन हज़ार प्रतिवर्ष कर दी और आगे चलकर यह सहायता साढ़े चार हज़ार डालर तक पहुँच गई । इस सहायतावृद्धिमें वहाँकी व्यवस्थापक सभाके सदस्य माननीय मिस्टर एम्. एफ. फास्टरने बहुत उद्योग किया है । (२) जान एफ. स्लेटर-फंडसे हमें प्रति वर्ष ग्यारह हज़ार डालर मिलते हैं । (३) पीबाड़ी फंडसे भी सहायता मिलने लगी । पहले पाँच ही सौ डालर मिले; पर बढ़ते बढ़ते अब यह रकम पंद्रह सौ डालर तक पहुँच गई है ।

स्लेटर और पीबाड़ी इन दो फंडोंसे सहायता पानेका उद्योग करनेमें दो अच्छे सज्जनोंसे मेरी जान पहचान हुई । इन दोनोंने नीग्रो लोगोंकी शिक्षाको एक अच्छे मार्ग पर ला दिया है । इनमेंसे एक तो वाशिंगटनके मिस्टर जे. एल. एम. करी और दूसरे न्यूयार्कके मिस्टर मारिस के. जेसप हैं । डाक्टर करी दक्षिण प्रान्तके रहनेवाले हैं । वे पहले संयुक्त-सेनामें एक सैनिक थे । उनके समान नीग्रो जातिकी अभिवृद्धि चाहनेवाले अथवा वर्णविद्वेषको पास भी न फटकने देनेवाले सज्जन इस देशमें बहुत कम होंगे । उनमें विशेषता यह है कि काले गोरे दोनों ही उन पर विश्वास रखते हैं । उनसे मेरी जो पहली भेंट हुई उसे मैं कभी न भूलूँगा । मैं उनसे मिलनेके लिए रिचमंड शहरमें उनके मकान पर गया था । इससे पहले उनकी सुजनताके विषयमें मैं बहुत कुछ सुन चुका था । तथापि मेरी उम्र अल्प होने और अनुभव भी कुछ न होनेके कारण उनके सामने जाते मुझे डर लगा और शरीर काँपने लगा । उन्होंने बड़े प्रेमसे मेरा हाथ पकड़ा और मुझसे इतनी मधुर और उत्साह देनेवाली वाणीसे बातचीत की, तथा मेरे कर्त्तव्यके विषयमें मुझे ऐसी अच्छी शिक्षा दी कि मुझे इस बातका पूरा विश्वास हो गया कि मानव जातिके कल्याणके लिए सदा निष्काम भावसे प्रयत्न करनेवालोंमेंसे ही वे एक महात्मा हैं । और सचमुच ही, अनुभवसे मेरा यह विश्वास दृढ़से दृढ़तर होता गया है ।

मिस्टर मारिस के. जेसप, स्लेटर-फंडके कोषाध्यक्ष हैं । नीग्रो लोगोंकी उन्नतिके लिए अपना समय और सम्पत्ति खर्च करनेवाला इनके समान धनवान् और उद्योगी पुरुष मैंने दूसरा नहीं देखा । इधर कुछ वर्षोंमें टस्केजी-विद्यालयकी औद्योगिक शिक्षाको जो महत्त्व प्राप्त हुआ है और उसकी जैसी मजबूत नीव दी गई है उसके लिए विद्यालय इनका सदा कृतज्ञ रहेगा; क्योंकि इन्हींके प्रयत्न और प्रभावसे यह सब हो सका है ।

तेरहवाँ परिच्छेद ।

पाँच मिनिटकी वक्तृताके लिए दो हज़ार मीलकी यात्रा ।

जब विद्यालयके साथ छात्रावासका प्रबन्ध हो गया तब बहुतसे ऐसे विद्यार्थियोंने भी विद्यालयमें भरती होनेके लिए प्रार्थना की जो योग्य और सत्पात्र थे, पर किसी प्रकारकी फ़ीस न दे सकते थे। इन प्रार्थियोंको निराश करना हम लोगोंसे न बन पड़ा और इनके लिए, सन् १८८४ में, एक नाइट-स्कूल (रात्रिकी पाठशाला) खोला गया ।

हैम्पटनके नाइट-स्कूलके समान इसका भी प्रबन्ध किया गया । ऐसे ही विद्यार्थी इसमें भरती किये गये जो अपने भोजनका कुछ भी प्रबन्ध न कर सकते थे और इस कारण दिनकी पाठशालामें न पढ़ सकते थे। उन्हें दिनमें दस घंटे काम करना पड़ता था और रातको दो घंटे पढ़ना पड़ता था । परन्तु यह नियम पहले एक दो वर्षके लिए ही था । उन्हें भोजन-खर्चसे कुछ अधिक मिल जाता था और उनकी यह बचत विद्यालयके कोशमें जमा की जाती थी । आगे जब ये विद्यार्थी दिनकी पाठशालामें पढ़ना शुरू करते थे तब उनकी इस बचतसे उनका भोजन-खर्च चलाया जाता था । इस समय इस नाइट-स्कूलमें साढ़े चार सौ विद्यार्थी पढ़ते हैं ।

इस नाइट-स्कूलसे बढ़कर विद्यार्थियोंकी योग्यता परखनेवाली और कौनसी कठिन कसौटी हो सकती है ? इसमें विद्यार्थियोंकी दृढ़ताका अच्छा परिचय मिल जाता है; इसी लिए मैं इसको बहुत महत्त्वकी संस्था समझता हूँ । रातकी दो घंटेकी पढ़ाईके लिए जो विद्यार्थी दिनमें दस घंटे धोबीखाने या ईंटोंके कारखानेमें काम कर सकता है उसमें

शिक्षा सम्पादनकी पूरी सामर्थ्य होती है यह बात आप ही साबित हो जाती है ।

रातकी पढ़ाई समाप्त होने पर विद्यार्थी दिनकी पाठशालामें भरती होता है । वहाँ उसे सप्ताहमें चार दिन शिक्षा दी जाती है और बाकी दो दिन वह अपने काममें खर्च करता है । इसके अतिरिक्त गरमीके तीन महीने भी वह अपने कामहीमें बिताता है । रातकी पाठशालासे जो विद्यार्थी निकल आता है उसे साधारणतः शिल्पसंबंधी और मानसिक शिक्षा पूर्ण करनेका मार्ग मिल जाता है । विद्यार्थी कितना ही धनवान् क्यों न हो उसे इस विद्यालयमें हाथसे काम करना ही पड़ता है । अब अन्य विषयोंके समान शिल्पशिक्षा भी सर्वप्रिय हो चुकी है । टस्केजी-विद्यालयसे ग्रेज्युएट होकर संसारमें यश और नाम प्राप्त करके सुखी बने हुए कितने ही स्त्रीपुरुषोंने इसी नाइट-स्कूलसे पढ़ना आरम्भ किया था ।

टस्केजीमें शिल्पशिक्षा पर ज़ोर दिये जानेका यह अर्थ नहीं है कि यहाँ धार्मिक अथवा आध्यात्मिक शिक्षामें कुछ ढिलाई की जाती है । यह विद्यालय किसी संप्रदाय विशेषका नहीं; तथापि पूर्ण धार्म्मिक है । हमारी उपासनायें, प्रार्थनासभायें, रविवारकी पाठशालायें, क्रिश्चियन एनडेवर सोसाइटियाँ, वाइ. एम. सी. ए. और अन्यान्य मिशनरी संस्थायें हमारे उक्त कथनको प्रमाणित करती हैं ।

सन् १८८५ में मिस आलिविया डेविड्सनसे मेरा विवाह हुआ । विवाहके पश्चात् भी वे अपनी शक्ति और समय, घरके कामकाजके अतिरिक्त, विद्यालयके लिए खर्च करती रहीं । विद्यालयमें पढ़ाने और निगरानी करनेके अतिरिक्त पहलेकी भाँति बीच बीचमें धनसंग्रह करनेके लिए उत्तर प्रान्तमें भ्रमण करनेका क्रम भी उन्होंने जारी रक्खा । चार वर्ष संसारसुख अनुभव कर और आठ वर्ष विद्यालयके लिए प्रसन्नतापूर्वक उद्योग करके १८८९ में वे इहलोकसे सिधार गईं !

अपने प्रिय कार्यके लिए उन्होंने अपना शरीर दे डाला था! हम दोनोंके संसारसुखके चिह्नस्वरूप हमारे दो सुन्दर और बुद्धिवान् पुत्र हुए। उनके नाम बेकर टैलिफेरो और अर्नेस्ट डेविड्सन हैं। इनमेंसे बड़े, बेकरने टस्केजीमें ईंटें तैयार करनेके काममें अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली है।

लोगोंने मुझसे कई बार पूछा है कि मैंने सर्व साधारणमें वक्तृता देनेका आरम्भ किस प्रकार किया। इसके उत्तरमें मुझे यह कहना है कि सार्वजनिक भाषणोंमें मैंने अपने जीवनका बहुत ही थोड़ा अंश लगाया है। बात यह है कि मैं कोरी बातें करनेकी अपेक्षा वास्तविक कार्य्य करना अधिक पसन्द करता हूँ। मैं जब जनरल आर्मस्ट्रांगके साथ उत्तर प्रान्तमें भ्रमण करने गया था और बड़े बड़े नगरोंमें सभायें करके मैंने व्याख्यान दिये थे तब मालूम होता है कि एक व्याख्यानके समय वहाँकी जातीय शिक्षासमितिके सभापति माननीय मिस्टर थामस. डब्ल्यू. बिकनेल उपस्थित थे। कुछ दिनोंके उपरान्त उन्होंने मुझे समितिके एक अधिवेशनमें व्याख्यान देनेके लिए निमंत्रित किया। यह अधिवेशन माडीसन नामक नगरमें होनेवाला था। यहींसे मानों मेरे व्याख्यान-जीवनका आरंभ हुआ।

समितिमें मेरे व्याख्यानके समय लगभग चार हज़ार आदमी उपस्थित थे। पीछेसे मुझे यह भी मालूम हुआ कि इस व्याख्यानको सुननेके लिए अलबामा रियासत और ख़ास टस्केजीके भी कुछ गोरे लोग चले आये थे। कुछ समय बाद इनमेंसे कुछ लोगोंने मुझसे कहा कि "हम आपके व्याख्यानमें दक्षिणी गोरोंकी मट्टी पलीद होनेका ही अनुमान करते थे और इसी लिए हम लोग आपका व्याख्यान सुननेके लिए इतनी दूर गये; पर आपके मुँहसे एक भी ख़राब शब्द न सुनकर हम लोगोंको बड़ा ही आश्चर्य हुआ। यही नहीं बल्कि टस्केजी-विद्या-

लय स्थापित करनेमें गोरे लोगोंने जो सहायता दी थी उसके लिए आपने उनका आभार तक माना । ”

टस्केजीमें जिस समय मैं पहले पहल आया उसी समय मैंने यह निश्चय कर लिया था कि यहाँ मैं अपना घर बनाऊँगा । टस्केजीसे मेरा प्रेम हो गया था । वहाँके गोरे अधिवासियोंमें टस्केजीके लिए जो प्रीति थी उससे कम प्रीति मुझमें नहीं थी और मुझे वहाँके अच्छे कार्यों पर उतना ही अभिमान था और बुरे कामोंके लिए उतनी ही घृणा थी जितनी कि गोरोंको थी । दक्षिण प्रान्तमें मैं जिन बातोंको छिपाये रहता था अथवा जिन्हें कहना नहीं चाहता था उन बातोंको उत्तर प्रान्तमें जाकर कहना मैंने कभी उचित नहीं समझा । किसी व्यक्तिको गालियाँ देकर सन्मार्गमें प्रवृत्त करनेकी आशा करना दुराशा मात्र है । हाँ, यदि उसके दोष दूर करने हैं तो सबसे अच्छा उपाय यही है कि उसके दोषोंकी ओर अधिक ध्यान न देकर उसके अच्छे कामोंकी प्रशंसा करता रहे । इस तत्त्व पर अमल करते हुए मैंने उचित अवसर पर दक्षिणके लोगोंके अन्यायका समुचित रीतिसे, विरोध करनेमें भी भूल नहीं की है और उचित आलोचना करने पर मैंने देखा है कि उससे दक्षिण-वाले नाराज़ भी नहीं होते । आलोचनाके विषयमें मेरा यह सिद्धान्त रहा है कि जहाँके लोगोंकी आलोचना करनी हो वहीं जाकर उसे करना चाहिए । इस लिए यदि कभी दक्षिणवालोंकी आलोचना करनी होती है तो मैं दक्षिणके ही किसी नगरमें उसे करता हूँ—बोस्टन या और किसी शहरमें जाकर नहीं ।

माडीसनवाली वक्तृतामें मैंने यह बतलाया था कि सीधे और सच्चे व्यवहारसे ही काले-गोरोंमें मेल बढ़ सकता है और दोनों जातियोंको इस बातका यत्न करना चाहिए कि परस्पर द्वेषभाव रहनेके बदले मित्रभाव स्थापित हो । मैंने वहाँ यह भी बतलाया था कि हम लोग जिस स्थान

और समाजमें रहते हैं उसी स्थान और समाजका जिस बातमें हित हो उसी बात पर ध्यान देकर निर्वाचनके समय सम्मति देनी चाहिए। हजारों मील दूर रहनेवाले किसी मनुष्यको प्रसन्न करनेके लिए अपने हिताहितका विचार छोड़ सम्मति देना अपनी हानि करना है।

इस व्याख्यानमें मैंने नीग्रो जातिका ध्यान इस बातकी ओर दिलाया था कि यदि उसे अपना भविष्य उज्ज्वल करना हो तो और सब बातोंको छोड़ उसे अपने कला-कौशल बुद्धिमत्ता, और शुद्ध आचरणसे समाजको अपनी ओर खींच लेना चाहिए। यदि उससे यह न बन पड़ेगा तो समाजको उसकी आवश्यकता ही न रहेगी। जिस किसी मनुष्यने कोई कला हस्तगत कर ली है—फिर उसका रंग चाहे गोरा हो या काला—वह अपनी कलाके बलसे अवश्य बाजी मार लेगा; और जो नीग्रो औरोंकी आवश्यकताओंके अनुसार उन्हें पूर्ण करनेमें जितना ही समर्थ होगा उसकी इज्ज़त और प्रतिष्ठा भी उसी हिसाबसे बढ़ती जायगी।

उक्त कथनकी सत्यता प्रमाणित करनेके लिए मैंने एक दृष्टान्त भी दिया था। पहले एक एकड़ ज़मीनमें ४९ मन शकरकन्द पैदा होते थे; परन्तु हमारे विद्यालयके एक ग्रेज्युएटने एक ही एकड़से २५० मन शकरकन्द पैदा करके दिखला दिये। खेतीकी अर्वाचीन पद्धति और रसायनशास्त्रके ज्ञानसे ही वह ऐसा कर सका। इससे आसपासके गोरे किसानोंने उसका बड़ा सम्मान किया और बहुतेरे उसके पास शकरकन्दकी खेतीके विषयमें पूछताँछ करनेके लिए आने लगे। उसके आदरसत्कारका मुख्य कारण यही था कि उसने अपने ज्ञान और परिश्रमसे समाजके सुख और वैभवको बढ़ाया था। मैंने इसके साथ ही यह भी जतला दिया था कि हम लोग अच्छे शकरकन्द पैदा करना अथवा सदा खेतों पर काम करते रहना ही नीग्रो लोगोंके लिए काफ़ी नहीं समझते। मैंने यह समझानेकी चेष्टा

की थी कि इसी प्रकारके किसी भी काममें—किसी भी उद्योग धन्धेमें यदि कोई अच्छा जानकार हो जाय तो आगे चलकर उसके लड़के और नाती उससे भी अधिक कुशल और अभिज्ञ होंगे।

इस प्रकार मैंने अपने पहले व्याख्यानमें दोनों जातियोंके विषयमें थोड़ीसी बातें कहीं थीं। तबसे अबतक मेरे उन विचारोंमें कुछ भी परिवर्त्तन नहीं हुआ है।

पहले जब मैं किसी मनुष्यको नीग्रो लोगोंके विषयमें अपशब्द प्रयोग करते हुए देखता था अथवा उनकी सर्वांगीन उन्नतिको रोक देनेका प्रयत्न करते हुए पाता था तो मन-ही-मन बहुत अप्रसन्न होता था; पर अब अगर मैं किसीको किसी गैरकी उन्नतिमें बाधा डालते हुए देखता हूँ तो मुझे उस मनुष्य पर दया आती है। मैं जानता हूँ कि स्वयं किसी प्रकारकी उन्नति न कर सकनेके कारण ही वह इस बुरे मार्ग पर चलता है। ऐसे मनुष्य पर मुझे इस लिए दया आती है कि वह जिस संसारकी उन्नतिमें बाधा डालनेकी चेष्टा करता है उस संसारकी उन्नति किसीके रोके नहीं रुक सकती और इस लिए वह संकीर्ण-हृदयवाला मनुष्य आगे चलकर स्वयं अपने किये पर लज्जित होगा। परस्पर सहानुभूति और बन्धु-प्रेम, आदि बातोंमें मानव जातिकी बराबर प्रगति होती जा रही है और इस प्रगतिको रोकनेकी चेष्टा करना और चलती हुई रेलगाड़ीको रोकनेके लिए उसके आगे लेट जाना एक ही बात है।

माडीसनमें शिक्षासमितिके सामने मैंने जो व्याख्यान दिया उससे उत्तर अमेरिकामें मेरा नाम चारों ओर फैल गया और तबसे व्याख्यान देनेके लिए मुझे वहाँके निमंत्रण पर निमंत्रण आने लगे।

इस समय मैं दक्षिणके गोरों पर भी अपने विचार प्रकट करनेके लिए उत्सुक हो रहा था। संयोगवश १८९३ में मुझे इसके लिए भी अच्छा मौका मिल गया। इस वर्ष एटलांटामें सब राष्ट्रोंके पादरियोंकी एक महा-

सभा हुई थी। जिस समय मुझे इस महासभामें व्याख्यान देनेका निमंत्रण-पत्र मिला उस समय मैं बोस्टनमें एक काम कर रहा था। पहले तो मुझे एटलांटामें जाकर व्याख्यान देना असंभव ही मालूम हुआ। तथापि मैंने अपने कार्यक्रमको देखकर यह मालूम किया कि मैं बोस्टनसे चलकर एटलांटामें व्याख्यानसे आध घंटे पहले पहुँच सकता हूँ और बोस्टन लौटनेसे पहले वहाँ एक घंटे ठहर सकता हूँ। आमंत्रण-पत्रमें मेरे व्याख्यानके लिए पाँच मिनिटका समय लिखा था। अब मेरे सामने केवल यही प्रश्न रहा कि इतनी लम्बी मंजिल मार कर वहाँ पाँच मिनिटके समयमें मैं कुछ कह भी सकूँगा या नहीं।

मैंने यह सोचा कि इस अवसर पर वहाँ बड़े बड़े गोरे अधिकारी और महाजन एकत्रित होंगे। उन लोगोंको टस्केजी-विद्यालयके कार्योंका परिचय देनेके लिए ऐसा अच्छा अवसर शीघ्र न मिलेगा। इस लिए मैंने यह यात्रा करना स्वीकार कर लिया। वहाँ जाकर मैंने दो हज़ार दक्षिणी और उत्तरी गोरोंके सामने केवल पाँच मिनिट व्याख्यान दिया। मेरा व्याख्यान सुनकर वे लोग आनन्दसे गद्गद हो गये। दूसरे दिन एटलांटाके समाचारपत्रोंने मेरे व्याख्यान पर अपने अनुकूल अभिप्राय प्रकट किये, और चारों ओर उसकी चर्चा होने लगी। दाक्षिणके बड़े बड़े लोगोंको मेरा व्याख्यान सुननेका मौका मिला और मैंने समझा कि मेरा उद्देश्य सफल हुआ।

अब लोगोंमें मेरा व्याख्यान सुननेकी चाह दिन पर दिन बढ़ने लगी और गोरे तथा नीग्रो दोनों ही उसके लिए समानरूपसे उत्सुक होने लगे। टस्केजीके कार्यसे मैं जितना समय बचा सकता था उतना समय मैं इन व्याख्यानोंमें खर्च करने लगा। टस्केजी-विद्यालयके फंडके लिए ही मैंने उत्तर प्रान्तमें अनेक व्याख्यान दिये। नीग्रो लोगोंके सामने मेरे जो व्याख्यान होते थे उनका उद्देश्य यही होता था कि लोग धार्मिक और मानसिक तथा शिल्प-संबंधी और औद्योगिक शिक्षाका महत्त्व जान जायँ

दो हजार मीलकी यात्रा।

अब मैं अपने जीवनकी एक महत्त्वपूर्ण घटना आपको बतलाता हूँ। १८ सितंबर सन् १८९५ के दिन एटलांटाकी सर्वजातीय प्रदर्शनीमें मेरा जो व्याख्यान हुआ उससे लोगोंमें बड़ा आन्दोलन मचा और ओरसे छोरतक सारे देशमें मेरी कीर्ति फैल गई।

इस घटना पर इतना आन्दोलन हुआ है और मेरे भाषणके संबंधमें मुझ पर प्रश्नोंकी इतनी भरमार हुई है कि यदि मैं यहाँ इस घटनाका विस्तारपूर्वक विवरण दे दूँ तो कुछ अनुचित न होगा। बोस्टनसे आकर एटलांटामें मैंने जो पाँच मिनिटकी वक्तृता दी, वही शायद मेरे इस दूसरे व्याख्यानका मूल है। एटलांटाकी प्रदर्शनीको सरकारकी सहायता चाहिए थी और इसलिए वाशिंगटन नगरमें कांग्रेस-कमेटीसे मिलनेके हेतु एटलांटाके पंचोंके साथ जानेके लिए वहाँके अग्रगण्य लोगोंने एक तार द्वारा मुझसे प्रार्थना की। इन पंचोंमें जार्जियाके पचीस मुखिया और प्रतिष्ठित पुरुष थे। बिशप ग्रांट, बिशप गेनिस और मैं, इन तीन आदमियोंको छोड़कर बाकी सब गोरे थे। शहरके मेयर (शेरीफ़) और शहरके अन्य अधिकारियोंने कमेटीके सामने भाषण किये। इनके बाद दोनों काले प्रतिनिधियोंके भाषण हुए। वक्ताओंकी नामावलीमें मेरा नाम सबके बाद लिखा गया था। मैं कभी ऐसी कमेटीके सामने उपस्थित न हुआ था और राजधानीमें मैंने कभी बोलनेका साहस भी न किया था। क्या कहूँ और क्या न कहूँ, कुछ देरतक तो मैं यही सोचता रहा। अन्तमें मेरी बारी आई और उस समय मेरे हृदयमें जो विचार उठे मैंने प्रकट कर दिये। इस समय मुझे अपना सम्पूर्ण व्याख्यान स्मरण नहीं; पर मेरे कहनेका तात्पर्य यह था कि यदि कांग्रेस वास्तवमें दक्षिणसे जातिभेद दूर कर दोनों जातियोंमें परस्पर मेल बढ़ाना चाहती है तो उसे उचित है कि वह दोनों जातियोंकी साम्पत्तिक और मानसिक उन्नतिमें हर प्रकारसे सहायता करे। मैंने यह

भी बतलाया कि दासत्वकी बेड़ी टूटने पर दोनों जातियोंने अपनी कितनी उन्नति की है यह दिखलानेका सुयोग और उससे भविष्यत्के कार्यके लिए भरपूर उत्साह इस प्रदर्शनीसे मिलेगा। इसके बाद मैंने कहा कि यद्यपि केवल राजनीतिक अधिकारोंसे ही नीग्रो लोगोंको स्वर्ग नहीं मिल जायगा; तथापि उनके निर्वाचन-संबंधी अधिकारोंको छल कपटसे छीन लेनेका प्रयत्न भी न होना चाहिए, बल्कि इसके साथ ही उनमें उद्यम, कौशल, मितव्यय, बुद्धिमत्ता और सदाचारके प्रचारका भी प्रयत्न किया जाना चाहिए। अन्तमें मेरे कहनेका यह भाव था कि सिविल-वारके बाद लोगोंको इस प्रकारका यह पहला ही सुअवसर प्राप्त हुआ है, और यदि कांग्रेस इस अवसर पर चाही हुई रकम देगी तो इससे दोनों जातियोंका वास्तविक और स्थायी कल्याण होगा।

मैंने यह व्याख्यान केवल पंद्रह-बीस मिनिट तक दिया था तो भी जार्जियाके पंचों और कांग्रेसके सदस्योंने मेरा हार्दिक अभिनन्दन किया, जिससे मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ। कमेटीने एक दिलसे हम लोगोंके अनुकूल रिपोर्ट लिख भेजी और थोड़े ही दिनोंमें उसकी सूचना कांग्रेसने मान भी ली। इससे एटलांटा-प्रदर्शनीकी सफलताके विषयमें कोई सन्देह न रहा।

इस यात्रासे लौटकर प्रदर्शनीके संचालकोंने यह निश्चय किया कि प्रदर्शनीमें एक ऐसा बड़ा भवन बनवाया जाय जिसमें यह दिखलाया जाय कि दासत्वसे मुक्त होकर नीग्रो लोगोंने अबतक क्या उन्नति की है। यह भी निश्चय हुआ कि भवनका नकशा नीग्रो ही खींचें और भवन भी वे ही बनावें। इस निश्चय पर शीघ्र ही अमल भी किया गया। नीग्रो लोगोंने जो भवन तैयार किया वह किसी बातमें प्रदर्शनीके अन्य भवनोंसे कम न था।

अब यह विचार हुआ कि नीग्रो लोगोंका पदार्थसंग्रह भी अलग

रक्खा जाय और उस पर मैं निगरानी करूँ। पर टस्केजीमें इस वक्त कामोंकी बहुत अधिकता थी और इस लिए मैंने यह बात स्वीकार न की। तब शायद् मेरी ही सूचनासे लिंचबर्गके मिस्टर आई० गारलैंड पेन इस काम पर नियुक्त किये गये। मैंने अपनी शक्ति भर उनकी सहायता करनेमें कोई बात उठा न रक्खी। पदार्थसंग्रह बड़ा और देखने योग्य था। हैम्पटन और टस्केजी-विद्यालयसे आई हुई वस्तुओं-पर तो लोग टूटे पड़ते थे। नीग्रो वस्तुसंग्रह देखकर दक्षिणी गोरोंको बहुत ही आश्चर्य और आनन्द हुआ।

प्रदर्शनी खुलनेका दिन समीप आया और कार्यक्रम बनने लगा। कुछ लोगोंका यह प्रस्ताव था कि प्रदर्शनी खुलने पर पहले दिन किसी नीग्रोकी भी वक्तृता होनी चाहिए; क्योंकि प्रदर्शनीमें उन लोगोंने मुख्य-तया योग दिया है, और इसके सिवाय उनमेंसे किसीका व्याख्यान पहले रोज़ होनेसे दोनों जातियोंमें परस्पर सद्भाव भी बढ़ेगा। कुछ लोगोंने इस प्रस्तावका विरोध किया; परन्तु डायरेक्टर लोग सुयोग्य थे इस लिए उन्होंने आरंभिक वक्तृताके लिए किसी नीग्रोको निमंत्रित करनेका निश्चय कर दिया। अब दूसरा प्रश्न यह उठा कि इस कार्य्यके लिए किसको बुलाया जाय। कई दिन वादविवाद होता रहा और अन्तमें यह निश्चय हुआ कि मैं ही पहले दिन वक्तृता दूँ। शीघ्र ही मेरे पास निमंत्रण-पत्र भी आ गया।

इस निमंत्रणसे मुझ पर कितनी बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी, सो वही अनुमान कर सकता है जो स्वयं कभी ऐसी स्थितिमें पड़ा हो। निमंत्रण-पत्र पाते ही मेरे मनमें तरह तरहके विचार उठने लगे। मुझे स्मरण हुआ कि मैं गुलाम था, मेरा बचपन दुःख दरिद्रता और अज्ञानमें बीता है, इतनी बड़ी जिम्मेदारीके कार्यके लिए आपको तैयार करनेके मुझे बहुत ही कम मौके मिले हैं, कुछ ही वर्ष पहले मेरी अवस्था इतनी गिरी हुई

थीं कि श्रोताओंमेंसे कोई आदमी उठकर मुझे अपना 'गुलाम' बतलाकर गिरफ्तार कर सकता था, और इस समय भी बहुत संभव है कि मेरे पुराने मालिकोंमेंसे कुछ लोग मेरा भाषण सुननेके लिए एटलांटाकी प्रदर्शनीमें आवें।

एक नीग्रोके लिए ऐसे महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय अवसर पर दाक्षिणी गोरे पुरुषों और स्त्रियोंके साथ एक ही व्यासपीठ (प्लेटफार्म) पर खड़े होकर वक्तृता देनेका यह पहला ही अवसर था। मैं जानता था कि मेरे पुराने मालिकोंके प्रतिनिधि (वंशज) रूप दक्षिणके बड़े बड़े विद्वान् और धनवान् इस व्याख्यानको सुननेके लिए आवेंगे। इसके साथ ही मुझे यह भी मालूम था कि उत्तर प्रान्तके भी बहुतसे गोरे और मेरी जातिके लोग उपस्थित होंगे।

मैंने पहले ही यह निश्चय कर लिया था कि मैं कोई ऐसी बात न कहूँगा जिसे मैं सत्य और समुचित नहीं समझता। मुझे इस बातकी कोई सूचना नहीं मिली थी कि मैं कौनसी बात कहूँ और कौनसी छोड़ दूँ। मेरे लिए यह गौरवकी ही बात थी। प्रदर्शनीके संचालकोंको यह भली भाँति मालूम था कि अगर मैं चाहूँ तो एक ही बातसे प्रदर्शनीकी मर्य्यादा भंग कर दे सकता हूँ। परन्तु मुझे अपने भाषणमें सचाईके साथ अपनी जातिका पक्ष सुरक्षित रखना था और इस लिए मैं इस बातसे डरता था कि मेरा भाषण यदि अप्रासंगिक हुआ तो भविष्यमें कई बरसों तक कोई नीग्रो ऐसे अवसरों पर वक्तृता देनेके योग्य न समझा जायगा। उत्तर प्रान्तवासियोंके संबंधमें और साथ ही दक्षिणके अच्छे अच्छे सज्जनोंके विषयमें सच बातें बतलानेका ही मैंने निश्चय किया।

उत्तर और दक्षिणके समाचारपत्रोंमें मेरे भावी भाषणके संबंधमें खूब टीका-टिप्पणियाँ होने लगीं और उनसे प्रदर्शनी खुलनेके पूर्व चारों ओर मेरी चर्चा फैल गई। दक्षिणके कई समाचारपत्र मेरे व्याख्यान

देनेके विरोधी थे । मेरे कई जाति भाइयोंने मेरे व्याख्यानके लिए कितनी ही बातें सुझाई थीं । उस समय विद्यालयका वर्षारम्भ होनेके कारण मुझे अवकाश बहुत कम था, तो भी समय निकालकर मैंने अपना भाषण पूरा ध्यान देकर तैयार किया । सितंबरकी अठारहवीं तारीख जैसे जैसे पास आने लगी वैसे वैसे मुझे न जाने क्यों, अपने प्रयत्न पर पानी फिरनेकी आशंका होने लगी और मेरा उत्साह भी घटने लगा । मैंने अपना भाषण अपनी स्त्रीको पढ़ सुनाया; उन्होंने उसे बहुत सराहा । एटलांटाके लिए प्रस्थान करनेसे एक दिन पहले १६ सितंबरको टस्केजी-विद्यालयके अध्यापकोंके बहुत आग्रह करने पर मैंने उन्हें भी अपना भाषण पढ़ सुनाया । उन्होंने उस पर जो आलोचना की उससे भी मेरे मनकी धुकधुकी कुछ कम हो गई ।

१७ सितंबरको प्रातःकाल मैं अपनी स्त्री मिसेस वाशिंगटन और तीनों सन्तानोंके साथ एटलांटाके लिए रवाना हुआ । फाँसी पर लटकाये जानेके लिए जानेवाले किसी अपराधीके समान इस समय मेरी दशा हो रही थी ! टस्केजीसे जाते समय मुझे पासहीके एक गाँवमें रहनेवाला एक गोरा किसान मिला । उसने मेरी तरफ़ देखकर कहा— " वाशिंगटन, तुमने उत्तरके गोरोंके सामने और गाँव देहातोंमें रहनेवाले मेरे जैसे दक्षिणी गोरोंके सामने लेक्चरबाजी की है; पर, कल एटलांटामें उत्तरके गोरे लोग, और दक्षिणके गोरे तथा नीग्रो लोग तुम्हारा लेक्चर सुननेके लिए इकट्ठे होंगे । मालूम होता है कि तुम इसी सोचमें पड़े हुए हो । " इस गोरे किसानने मेरे मनका हाल तो खूब जान लिया; पर उसकी स्पष्टोक्तिसे—साफ़ साफ़ कह देनेसे मेरे मनको धैर्य न मिला ।

मार्गमें अनेक गोरे और नीग्रो मेरी ओर इशारा करके प्रदर्शनीके विषयमें ज़ोर ज़ोरसे बातें करते हुए दिखाई देते थे । एटलांटामें एक कमेटीने हम लोगोंका स्वागत किया । गाड़ीसे उतरते ही सबसे

पहले, एक नीग्रोके मुँहसे निकले हुए ये शब्द सुन पड़े—" कल प्रदर्शनीमें हमारी जातिके इसी आदमीका व्याख्यान होनेवाला है; मैं इसका व्याख्यान सुननेके लिए अवश्य जाऊँगा। "

उस समय सारा नगर सब प्रदेशोंके डेलिगेटों, विदेशी राज्योंके प्रतिनिधियों और बड़ी बड़ी नागरिक और सामरिक संस्थाओंसे ठसाठस भरा हुआ था। समाचारपत्रोंने बड़े बड़े शीर्षक देकर दूसरे रोज़के कार्यक्रमके विषयमें लेख प्रकाशित किये थे। इन सब बातोंसे मेरी छाती और भी धड़कने लगी। रातको मुझे पूरी नींद भी न आई। दूसरे दिन प्रातः काल मैंने अपनी व्याख्यानको एक बार फिर पढ़ा और इस उद्योगमें सफलता प्राप्त करनेके लिए ईश्वरसे प्रार्थना की। यहाँ मैं यह बतला देना आवश्यक समझता हूँ कि परमेश्वरसे अपने भाषण पर अनुग्रह करनेकी प्रार्थना किये बिना, मैं कभी श्रोताओंके सामने न आता था।

मेरा यह नियम है कि वक्तृता देनेसे पहले मैं उसकी तैयारी कर लेता हूँ। मैं श्रोताओंके सामने उसी भावसे खड़ा होकर भाषण करता हूँ कि जिस भावसे कोई मनुष्य अपने मित्रसे एकान्तमें बातें करता है। प्रत्येक श्रोताके हृदयसे भिड़ जाना ही मेरी व्याख्यानकलाका लक्ष्य होता है। किसी सभामें भाषण करते हुए मैं यह नहीं सोचा करता कि मेरा भाषण समाचारपत्रोंमें शोभा पायगा या नहीं, अथवा इस भाषणको और लोग पसन्द करेंगे या नहीं। उस समय तो सम्मुख उपस्थित लोगोंमें ही मेरी सारी सहानुभूति, सारे विचार और सारी शक्ति तन्मय हो जाती है।

प्रातःकाल ही बहुतसे लोग जुलूस निकालकर मुझे प्रदर्शनी तक लिवा ले जानेके लिए मेरे स्थान पर आये। इस जूलूसमें बहुतेरे नीग्रो सज्जन गाड़ियों पर सवार होकर सम्मिलित हुए थे। मैंने इस बातको गौर करके देखा कि प्रदर्शनीके अधिकारी नीग्रो लोगोंकी खातिर करनेमें विशेष

सावधानीसे काम ले रहे थे । प्रदर्शनीतक पहुँचनेमें जुलूसको तीन घंटे लगे । रास्ते पर बड़ी कड़ी धूपसे सामना करना पड़ा । प्रदर्शनीके स्थान-पर पहुँचकर गरमी और मानसिक कष्टोंके कारण मेरा शरीर शिथिल हो गया । सभास्थान मनुष्योंसे ठसाठस भरा हुआ था और स्थानाभावके कारण सहस्रों श्रोता बाहर खड़े थे ।

प्लेटफार्म खूब लंबा चौड़ा था; स्थान, व्याख्यानके लिए सर्वथा योग्य था । प्लेटफार्म पर पैर रखते ही नीग्रो लोगोंने एक साथ तालियाँ बजाईं और कुछ गोरोंने भी उनका अनुकरण किया । मुझे एक रोज़ पहले ही यह बतलाया गया था कि बहुतसे गोरे तमाशेके तौर पर मेरा भाषण सुननेके लिए आनेवाले हैं, बहुतोंकी मेरे साथ सहानुभूति है इस लिए उपस्थित होंगे; परन्तु अधिकांश लोग ऐसे ही होंगे जो मेरी 'मूर्खताकी प्रदर्शनी' देखकर प्रदर्शनीके संचालकोंसे ताना मारते हुए यह कहेंगे कि कहिए, हमारा ही भविष्यत्कथन ठीक निकला न ?

टस्केजी–विद्यालयके एक ट्रस्टी और मेरे मित्र, दक्षिणरेलवेके मैनेजर, मिस्टर विलियम. एच. बाल्डविन एटलांटामें रहते हुए भी प्रारम्भिक कार्यक्रम समाप्त होने तक अन्दर नहीं आये; क्योंकि उन्हें इस बातका बड़ा भय और सन्देह था कि न तो मेरा (बुकर टी.वाशिंगटनका) यहाँ कुछ सम्मान होगा और न मैं अपना काम ही सफलताके साथ कर सकूँगा ।

चौदहवाँ परिच्छेद ।

एटलांटा-प्रदर्शनीमें व्याख्यान ।

आरंभमें गवर्नर बुलकने एक छोटीसी वक्तृता देकर प्रदर्शनी खोली । इसके उपरान्त जार्जियाके बिशप नेल्सनकी प्रार्थना, अलबर्ट हावेलका स्तुतिपाठ, प्रदर्शनीके सभापति, तथा स्त्रीमंडलकी सभापत्नी मिसेस जोसेफ आदिके भाषण हुए । अन्तमें गर्वनर बुलकने मेरा परिचय करा दिया और कहा—" नीग्रो जातिकी उन्नति, संस्कृति और साहसप्रीतिके प्रतिनिधि आज हम लोगोंके सम्मुख उपस्थित हैं । वे अब अपना व्याख्यान देंगे । "

व्याख्यान देनेके लिए जब मैं खड़ा हुआ तब श्रोताओंने, विशेषतः नीग्रो भाइयोंने खूब करतल-ध्वनि की । मुझे इस समय स्मरण है कि मैं जो कुछ बतलानेके लिए खड़ा हुआ था उसका भाव यही था कि दोनों जातियोंमें परस्पर मेल रहे और परस्परकी सहायतासे दोनों उन्नत हों । उस वक्त हज़ारों मनुष्योंकी दृष्टि केवल मेरे ऊपर गड़ी हुई थी । मैंने अपना व्याख्यान इस तरह प्रारंभ किया:—

" मान्यवर सभापति महाशय, संचालक सभाके सदस्य, और नगरवासियो, दक्षिणकी जनसंख्यामें एक तृतीयांश नीग्रो लोग हैं । इस लिए जब तक इन लोगोंका ध्यान न रक्खा जायगा तब तक दक्षिणवासियोंकी नैतिक, सामाजिक अथवा साम्पत्तिक, किसी प्रकारकी उन्नति कदापि नहीं हो सकेगी । मेरी जातिके लोग खूब समझते हैं कि इस विशाल प्रदर्शनीके संचालकोंने नीग्रो जातिके पराक्रम और महत्त्वका जैसा कुछ आदर किया है वैसा और किसीने कभी नहीं किया; और इसलिए सभापति महाशय और संचालक महाशयो, मैं

उन सबकी ओरसे इस बातको आप लोगोंके सम्मुख प्रकट करता हूँ। मैं समझता हूँ कि हम लोगोंके दासत्वविमोचनके उपरान्त आजतक जितने कार्य हुए हैं उन सबकी अपेक्षा नीग्रो जातिके इस गौरवसे दोनों जातियोंकी मित्रता विशेष दृढ़ हुई है।

"आज हम लोगोंको जो अवसर प्राप्त हुआ है उससे हम लोगोंमें औद्योगिक उन्नतिका एक नया युग आरंभ होगा। स्वाधीनता पा लेने-पर हम लोगोंने अज्ञानवश मूलकी ओर ध्यान न देकर शिखरसे ही अपना जीवन आरंभ किया था। कहनेका तात्पर्य यह है कि हम लोगोंने धन और कलाकौशल्यके साधनोंको छोड़कर कांग्रेस या राज-सभामें स्थान पानेकी चेष्टा आरम्भ की थी! दही दूधका कारख़ाना ज़ारी करने या फलोंका बाग़ लगानेके बदले हमारा हौसला राजसभा या अन्य स्थानोंमें व्याख्यान देनेकी तरफ़ बढ़ गया था!

"एक बार समुद्रमें बहुत दिनोंसे भूले भटके एक जहाज़ने एक दूसरे जहाज़को देखा। पहले जहाज़के यात्री गरमी और प्यासके मारे छटपटा रहे थे। इस लिए उन्होंने उसके मस्तूल पर इसी मतलबका एक निशान लगा रक्खा था। उसका मतलब समझकर दूसरे जहाज़ने उत्तरमें कहा,—'जिस स्थान पर तुम हो, वहीं पर बाल्टी लटकाओ।' उस जहाज़ने फिर इशारेसे पानी माँगा और उसे फिर वही उत्तर मिला। तीसरी चौथी बार फिर पानी माँगा गया और वही उत्तर बार बार दिया गया। तब पहले जहाज़के कप्तानने बाल्टी लटकाकर पानी खींचा और देखा तो उसे अमेजन नदीके मुहानेका साफ़, मीठा और ताजा पानी मिल गया! हमारे जो जातिभाई अपने साथी दाक्षिणी गोरोंसे मित्रता रखनेमें विशेष लाभ नहीं समझते और विदेशमें जाकर अपनी उन्नति करना चाहते हैं उनसे मैं भी यही कहूँगा कि 'जिस स्थानपर तुम हो वहीं बाल्टी लटकाओ। जिस समाजमें रहते हो उसी समाजके सब लोगोंके साथ जी खोलकर मित्रता करो।'

" खेती, शिल्प, व्यापार, घरू काम और अन्यान्य उद्यमोंमें अपनी बाल्टी लटकाओ। दक्षिणवाले और बातोंके लिए चाहे भले ही दोषी हों पर व्यापारमें नीग्रो लोगोंको आगे बढ़नेका अवसर दक्षिणमें ही मिला करता है और यही बात आजकी प्रदर्शनीसे भलीभाँति स्पष्ट हो जाती है। मुझे यह एक बड़ा भय है कि दासत्वके अंधकारसे निकलकर एकाएक स्वतंत्रताके प्रकाशमें आजानेके कारण शायद हम लोग इस बातकी ओर आनाकानी करें कि हम लोगोंमेंसे बहुतेरोंको परिश्रम करके ही अपना गुज़ारा करना है; अथवा इन बातोंको भूल जायँ कि हम लोग नित्य परिश्रम करनेकी उपयोगिता और महत्ता जितनी ही बढ़ावेंगे, सामान्य व्यवसायोंमें दिमाग भिड़ाकर जितना ही अधिक कौशल लाभ करेंगे, चमकदमक और दिखौआपनको त्याग कर सचाई और पुरुषार्थमें जितनी ही अधिक उन्नति करेंगे, उतना ही हमारा सिर ऊँचा होगा। जबतक कोई जाति सुन्दर काव्यकी रचना करने और खेत पर हल चलानेमें समान प्रतिष्ठा नहीं समझती तब तक वह जाति सम्पन्न हो नहीं सकती। हम लोगोंका कार्य शिखरसे नहीं, बल्कि मूलसे आरंभ होना चाहिए। हमें अपने दुःखों और क्लेशोंके कारण तथा अपनी शिकायतोंके कारण मिले हुए सुअवसरको अपने हाथसे न खो देना चाहिए।

" जो गोरे दक्षिणको सम्पन्न करनेके लिए विदेशियोंको ले आना चाहते हैं उनसे भी (यदि वे ध्यान देकर सुनें तो) मैं यही कहूँगा कि जहाँ तुम हो वहीं बाल्टी लटकाओ! उन्हीं अस्सी लाख नीग्रो भाइयोंमें अपनी बाल्टी लटकाओ कि जिनके स्वभावसे तुम परिचित हो और जिनकी सचाई और स्वामिभक्तिकी परीक्षा तुम ऐसे अवसर पर कर चुके हो जब वे अपने कपट-व्यवहारसे, यदि चाहते तो तुम्हारा सर्वस्व नष्ट कर डालते। उन्हीं लोगोंमें अपनी बाल्टी लटकाओ

जिन्होंने हड़ताल या और किसी तरहके उपद्रव किये बिना तुम्हारे खेत जोते हैं, तुम्हारे जंगलोंको काटकर साफ़ किया है, तुम्हारी रेलकी सड़कें और शहर बनाये हैं और इस प्रकार दाक्षिणकी सम्पन्न अवस्था दिखलानेवाली इस प्रदर्शनीको खड़ी करनेमें जिन्होंने मदद की है। अगर तुम इसी प्रकारसे उनकी सहायता कर उन्हें उत्साहित करते रहोगे और कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय और अन्तःकरणकी शिक्षा दिलानेमें उनकी मदद करोगे तो तुम्हारी परती पड़ी हुई ज़मीन वे खरीद लेंगे, उसे उपजाऊ बनावेंगे और तुम्हारे कारखाने चला देंगे। इसके साथ ही ये नीग्रो लोग जो, संसारमें सबसे अधिक सहनशील, शान्त, विश्वासपात्र और कानूनके पाबन्द हैं पहलेकी भाँति तुम्हारी और तुम्हारे परिवारकी सेवामें तत्पर रहेंगे। तुम्हारे बाल-बच्चोंका लालन करनेमें, तुम्हारे रुग्ण मातापिताओंकी रात रात भर जागकर सेवा-टहल करनेमें, उनके देहान्त पर शोकाकुल हो उनके पीछे पीछे स्मशानतक आँसू बहाते हुए जानेमें और ऐसी ही अन्य अनेक बातोंमें हम लोगोंने तुम्हें अपनी सचाई और स्वामिभक्तिका यथेष्ट प्रमाण दे दिया है। अब इसके बाद भी हम लोग विदेशियोंसे कहीं अधिक कृतज्ञता और नम्रताके साथ तुम्हारा साथ देंगे और आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राण भी तुम लोगों पर न्योछापर कर देंगे! हम अपने धार्म्मिक, औद्योगिक और व्यावहारिक जीवनको तुम्हारे जीवनमें मिला देंगे। केवल सामाजिक बातोंमें, उँगलियोंके समान हम तुमसे भिन्न रहेंगे परन्तु पारस्परिक उन्नतिके कामोंमें हम लोग हाथकी भाँति एक हो जायँगे।

"जबतक हम सबोंकी उन्नति और अभिवृद्धि न होगी तबतक दोनोंमेंसे कोई भी निर्भय या सुरक्षित नहीं हो सकता। नीग्रोलोगोंकी उन्नति रोकनेका यदि कहीं उद्योग होता हो तो उसे बदल कर उत्तम नागरिक बनानेका उद्योग कीजिए। इस प्रकारके उद्योगसे हज़ार गुना अधिक लाभ होगा। दोनों जातियोंका मंगल इसीमें है!

" मानवी अथवा दैवी नियमोंमें जो बातें अवश्यंभावी हैं—अपरिहार्य हैं—उनसे कभी छुटकारा नहीं हो सकता ।

" सृष्टिके कभी न बदलनेवाले नियमोंसे अन्याय करनेवाले और उसे सहनेवाले दोनों एक साथ बंधे हुए हैं और जिस प्रकार पाप और दुःख साथ साथ रहते हैं उसी प्रकार हम दोनों भी (अन्यायी और अन्यायपीड़ित) एक साथ ही नियति ' या ' मृत्युकी ओर कंधोंसे कंधे मिलाकर जा रहे हैं ।

" एक करोड़ साठ लाख हाथ या तो भार उठानेमें तुम्हारी सहायता करेंगे या तुम्हारी इच्छाके विरुद्ध तुम्हारा बोझ नीचे खींचकर तुम्हें मुँहके बल गिरा देंगे । दक्षिणकी जनसंख्याका तीसरा हिस्सा या तो अज्ञान और पापकी कीचड़में डूब जायगा या उन्नत और बुद्धिमान् ही बन जायगा । या तो हम लोग आपके व्यापार और वैभवकी वृद्धिमें सहायता करेंगे या समूचे समाजकी उन्नतिके बाधक बनकर उसके उत्साहको भंग करनेवाले एक गतिरहित—निर्जीव, मुर्दे ही बन जावेंगे ।

"सज्जनो, इस प्रदर्शनीमें हम लोगोंने अपनी उन्नति दिखलानेका नम्रतापूर्वक प्रयत्न किया है । आप लोग इससे अधिककी आशा न करें । तीस वर्ष पूर्व हमारी दशा शोचनीय थी—हम लोगोंके पास कुछ भी न था । तबसे अबतक खेतीके औज़ार, बग्गियाँ, भाफ़के इंजिन, समाचारपत्र, पुस्तकें, मूर्तियाँ, नक्काशी और चित्र आदि बनानेमें और उनमें नवीन नवीन आविष्कार तक करनेमें हम लोगोंको थोड़ी कठिनाइयाँ नहीं उठानी पड़ी हैं—इस उन्नतिके मार्गको हमने सहज ही तै नहीं कर लिया है । यद्यपि हम लोगोंको इस बातका बड़ा अभिमान है कि प्रदर्शनीमें रक्खी हुई चीज़ें खुद हम लोगोंने तैयार की हैं; तथापि हम लोग यह भी कदापि नहीं भूल सकते कि यदि दक्षिणके राज्य और उत्तरके दानशूर

सज्जन हम लोगोंकी धनद्वारा सहायता न करते तो इस प्रदर्शनीमें हम लोगोंके करतबका रंग फीका पड़ जाता।

"हमारी जातिमें जो विशेष बुद्धिमान् लोग हैं वे सामाजिक समताके लिए आन्दोलन करनेको बड़ी भारी मूर्खता समझते हैं और कृत्रिम उपायोंसे अधिकारयुक्त होनेकी अपेक्षा स्वाभाविक उपायोंसे अर्थात् दृढ़ प्रयत्न करके उन अधिकारोंका प्राप्त करना अधिक अच्छा समझते हैं। संसारके बाज़ारमें अपना माल तैयार करके भेजनेवाली कोई भी जाति बहुत दिनों-तक अवहेलाकी दृष्टिसे नहीं देखी जा सकती और न वह उन्नतिमें किसीसे पीछे ही रह सकती है। यह बात बहुत ठीक है कि कानूनसे हम लोगोंके जो अधिकार हैं वे हमें मिलने चाहिए; पर इससे भी अधिक महत्त्वकी बात यह है कि हमें पहले उन अधिकारोंका उचित उपयोग करनेकी योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। किसी नाटकघरमें जाकर एक डालर खर्च करनेकी अपेक्षा किसी कारखानेमें काम करके एक डालर कमाना बहुत अच्छा है।

"अन्तमें, मैं आप लोगोंसे यही विनय करूँगा कि इस प्रदर्शनीने हम लोगोंको जितनी अधिक आशा और उत्साह दिलाया है, और गोरोंसे हमारा जितना अधिक संबंध बढ़ाया है, उतना और किसी अवसर या कार्यसे नहीं बढ़ा। तीस वर्ष पूर्व दोनों जातियोंने खाली हाथ प्रयत्न आरंभ किया था। इन तीस वर्षोंमें दोनों जातियोंने जो उन्नति की है उसका फल इस वेदीके सामने आप लोग देख सकते हैं। इस पवित्र वेदीके सामने नम्रतापूर्वक झुककर मैं यह कहना चाहता हूँ कि पर-मात्माने दाक्षिणके लोगोंके सामने जो बड़ा और गूढ़ प्रश्न रक्खा है उसकी मीमांसामें आप लोगोंको मेरी जातिसे सदा सहायता और सहानुभूति मिलती रहेगी। पर आप लोग इस बातको सदा ध्यानमें रक्खें कि इस प्रदर्शनीमें जो खेत, जंगल, खान, कारखाने, साहित्य, कला आदिसे सम्बन्ध रखनेवाली वस्तुयें रक्खी हैं उनसे आपको लाभ तो

अवश्य होगा; पर नियमानुसार सबके साथ उचित न्याय करनेके उद्देश्यसे परस्परका जातिद्वेष और भेदभाव नष्ट करनेका जो फल या लाभ होगा वह इन भौतिक लाभोंसे कहीं अधिक कल्याणकारी होगा ! जातिद्वेषको नष्ट करके भौतिक सम्पन्नता प्राप्त करनेसे हमारा प्रिय दक्षिण प्रान्त निस्सन्देह दूसरा नन्दनवन बन जायगा ! ”

मेरा व्याख्यान समाप्त होते ही गवर्नर बुलक तथा अन्य कई लोगोंने प्लेटफार्म पर आकर मेरे हाथमें हाथ मिलाया । लोग मुझे इतनी अधिक हार्दिक बधाइयाँ देने लगे कि मेरा वहाँसे निकलना कठिन हो गया । दूसरे दिन जब मैं बाज़ार गया तब मुझे बहुतसे लोगोंने चारों ओरसे घेर लिया और मुझसे हाथ मिलाना चाहा । मैं जिस किसी गली कूचेमें जाता था वहीं लोग मुझसे मिलते और मुझे बधाई देते थे । मैं इससे इतना घबरा गया कि मुझे अपने डेरे पर लौट आना पड़ा । दूसरे दिन सबेरे मैं टस्केजीके लिए रवाना हो गया । एटलांटा स्टेशन पर और फिर जहाँ जहाँ गाड़ी ठहरती थी वहाँ वहाँ बहुतसे लोग मुझसे हाथ मिलानेके लिए आये हुए देख पड़ते थे ।

अमेरिकाके प्रायः सभी समाचारपत्रोंमें मेरा वह व्याख्यान छप गया और महीनों तक उस पर अनुकूल सम्पादकीय लेख निकलते रहे । ‘एटलांटा कन्स्टिटट्यूशन ’ पत्रके सम्पादक मिस्टर क्लार्क हावेलने न्यूयार्कके एक पत्रसम्पादकके पास तार द्वारा संवाद भेजा कि “ दाक्षिणमें आजतक जितने व्याख्यान हुए हैं, उन सबमें प्रोफेसर बुकर टी. वाशिंगटनका कल जो व्याख्यान हुआ वह परम उत्कृष्ट और रमणीय हुआ है । उनका स्वागत भी वैसा ही अपूर्व हुआ । इसमें मैंने कोई अत्युक्ति नहीं की है । उनके व्याख्यानसे वास्तवमें हम लोगोंको बहुतसी नई बातें मालूम हुईं । उन्होंने अपने व्याख्यानमें काले और गोरे, दोनोंकी समुचित आलोचना की । ”

'बोस्टन ट्रन्सक्रिप्ट' नामक समाचारपत्रमें यहाँ तक लिखा गया था कि "एटलांटा-प्रदर्शनीमें बुकर टी. वाशिंगटनके व्याख्यानके सामने वहाँका सारा कार्यक्रम; और तो क्या स्वयं प्रदर्शनी भी, फीकी पड़ गई थी। इस व्याख्यानने समाचारपत्रोंमें जैसा आन्दोलन उपस्थित कर दिया है वैसा कभी किसी व्याख्यानसे नहीं हुआ था।"

शीघ्र ही चारों ओरसे व्याख्यान करानेवाले और पत्रसम्पादक गण मुझसे व्याख्यान देने और लेख लिखनेके लिए आग्रह करने लगे। व्याख्यान करानेवाली एक संस्था तो मुझे एक साथ पचास हज़ार डालर अथवा प्रतिव्याख्यानके लिए दो सौ डालर देनेके लिए तैयार हो गई ! पर उन सबोंको मैंने यही उत्तर दे दिया कि "मैंने अपने जीवन भर टस्केजी-विद्यालयकी सेवा करनेका संकल्प कर लिया है; मैं उक्त विद्यालयकी और अपनी जातिकी सेवाके लिए ही व्याख्यान दिया करता हूँ। मेरा यह कोई पेशा नहीं, जो धनलाभकी दृष्टिसे ही मैं इस कामको करूँ।"

मैंने अपने व्याख्यानकी एक नकल संयुक्त राज्यके प्रेसिडेंट आनरेबल ग्रोवर क्लीवलैंडके पास भेजी। इसके उत्तरमें उन्होंने अपने हस्ताक्षरके साथ नीचे दिया हुआ पत्र मेरे पास भेजा:—

"ग्रे गेबल्स, बज़ार्डस बे, मसेच्युसेट्स,
६ अक्टूबर, १८९५

श्रीमान् बुकर टी. वाशिंगटनकी सेवामें—

प्रिय महाशय, एटलांटा प्रदर्शनीमें दिये हुए व्याख्यानकी एक नकल मेरे पास भेज कर आपने मुझे बहुत ही अनुग्रहीत किया है।

आपके इस उत्तम व्याख्यान पर मैं आपको हार्दिक उत्साहसे बधाई देता हूँ। मैंने आपका व्याख्यान बहुत ध्यानपूर्वक पढ़ा है और यदि आपके इस व्याख्यानके अतिरिक्त प्रदर्शनीमें और कोई बात न होती तो भी कोई हानि न होती। आपकी जातिका कल्याण चाहनेवाले सब

लोगोंको आपके व्याख्यानसे आनन्द और उत्साह प्राप्त होगा, इसमें सन्देह नहीं। यदि आपके व्याख्यानसे हमारे नीग्रो देशबन्धु अपने नागरिकत्वके अधिकारसे यथासंभव लाभ उठानेका निश्चय और नवीन आशा न करें तो सचमुच ही आश्चर्यकी बात होगी।

आपका सच्चा हितैषी
ग्रोवर क्लीवलैंड।"

कुछ काल पश्चात् जब मिस्टर क्लीवलैंड प्रेसिडेंटकी हैसियतसे एटलांटा-प्रदर्शनी देखने आये तब उनसे मेरी भेंट भी हुई। मेरे और अन्य लोगोंके प्रार्थना करने पर उन्होंने नीग्रो-भवनमें चलकर वहाँ रक्खे हुए नीग्रो-कारीगरीके नमूने देखने और उपस्थित नीग्रो लोगोंको हाथ मिलानेका अवसर देनेके लिए एक घंटेका समय देना स्वीकार किया। मिस्टर क्लीवलैंडसे पहली बार मिलते ही उनकी रहन-सहनकी सादगी, मनकी उदारता और हृदयकी सचाईका मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इसके बाद भी कई बार उनसे मिलनेका मुझे अवसर मिला है। जितना ही अधिक मैं उनसे मिलता हूँ उतना ही अधिक मेरा उनसे स्नेह होता जाता है। एटलांटा-प्रदर्शनीके नीग्रो-भवनमें जाकर उन्होंने खुले दिलसे सबसे हाथ मिलाया। एक फटे-पुराने कपड़े पहनी हुइ नीग्रो बुढ़ियासे हाथ मिलाते हुए वे इतने गद्गद और प्रसन्न मालूम होते थे मानो किसी करोड़पतिका ही स्वागत कर रहे हैं! बहुतसे लोगोंने इस अवसरसे लाभ उठा कर उनसे उनकी डायरीमें अपने नाम लिखवाय और उन्होंने भी यह काम इतनी सावधानी और धैर्यके साथ किया, मानों राज्यसंबंधी किसी महत्त्वपूर्ण पत्र पर हस्ताक्षर ही कर रहे हों!

मिस्टर क्लीवलैंडने मेरे साथ अपना मित्रभाव कई प्रकारसे प्रकट किया है। इतना ही नहीं, बल्कि, टस्केजी–विद्यालयके लिए मैंने उनसे जो जो प्रार्थनायें की हैं उन सबको उन्होंने स्वीकार किया है। उन्होंने विद्यालयको

स्वयं आर्थिक सहायता दी है और अपने मित्रोंसे भी दिलाई है । मेरे साथ उन्होंने जैसा मित्रभाव रक्खा है उससे मैं नहीं समझता कि वे वर्णद्वेष भी रखते होंगे । वे इतने उच्चविचारके उदार पुरुष हैं कि उनमें वर्णद्वेष जैसे संकुचित भाव कभी समा ही नहीं सकते । ऐसे ही ऐसे महानुभावोंसे मिलकर मैंने यह मालूम किया है कि केवल क्षुद्र और छोटे मनुष्य ही अपने लिए जीते हैं अर्थात् स्वार्थी होते हैं । वे कभी अच्छे ग्रन्थोंको नहीं पढ़ते, देशाटन नहीं करते, दूसरी आत्माओंसे—संसारके बड़े बड़े पुरुषोंसे परिचय नहीं करते । वर्णद्वेषसे जिनकी दृष्टि छोटी हो जाती है उन्हें संसारकी सुन्दर और मनोहर वस्तुओंका दर्शन नहीं हो सकता । देश देश घूमकर नाना प्रकारके लोगोंसे मिलकर मैंने यह जाना है कि परहितके लिए प्रयत्न करनेवाले लोग सबसे अधिक सुखी होते हैं, और जो सदा अपने ही स्वार्थमें लगे रहते हैं वे सबसे अधिक दुखी होते हैं ! जातिद्वेषके समान मनुष्यको अन्धा और तुच्छ बनानेवाली दूसरी वस्तु नहीं । प्रत्येक रविवारकी संध्याको मेरा उपदेश हुआ करता है । उस समय मैं अपने विद्यार्थियोंसे अकसर कहा करता हूँ कि मैं ज्यों ज्यों बड़ा और बूढ़ा होता जाता हूँ और ज्यों ज्यों मेरा सांसारिक अनुभव बढ़ता जाता है त्यों त्यों मेरा यह विश्वास दृढसे दृढतर होना जाता है कि ‘ दूसरोंको अधिक उपयोगी और सुखी बनानेका मौका मिलना ’ बस, यही एक ऐसी बात है कि जिसके लिए हमें जीते रहनेकी और समय पड़ने पर अपने प्राण भी न्योछावर कर देनेकी आवश्यकता है । गरज यह कि मनुष्यका जीवन परोपकारके * लिए है और आवश्यकता पड़ने पर उसके लिए प्राणतक न्योछावर कर देना हमारा धर्म है ।

---

* श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

मेरे व्याख्यानसे और उसकी जो प्रशंसा हुई उससे नीग्रो लोग बहुत ही प्रसन्न हुए—उनके समाचारपत्रोंने भी खूब प्रसन्नता प्रकट की; परन्तु यह प्रसन्नता बहुत दिनों तक न रहने पाई। थोड़े ही दिनोंमें जब उत्साह मन्द पड़ गया तब मेरे उस ठंडे व्याख्यानको पढ़कर मेरे बहुतसे जातिभाइयोंको ऐसा भासने लगा कि हम उस समय भूल गये—वास्तवमें वह व्याख्यान इतना प्रशंसाके योग्य न था। उनका कहना यह था कि मैंने दाक्षिणी गोरोंके विषयमें तो बहुत अधिक उदारता दिखलाई, पर अपनी जातिके अधिकारोंका वैसा अच्छा प्रतिपादन नहीं किया। इस तरह कुछ दिनों तक मेरे विषयमें नीग्रो लोग ऐसी ही शिकायत करते रहे; पर पीछेसे वे सब मेरे अनुकूल हो गये।

यहाँ मुझे एक बात और याद आती है जिसे बतला देना ज़रूरी है। टस्केजी-विद्यालयके ग्यारहवें वर्षमें मुझे एक ऐसा अनुभव प्राप्त हुआ जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता। प्लाइमाउथ चर्चके पादरी और 'आउट लुक' पत्रके सम्पादक डाक्टर लीमन एबटने अपने पत्रमें प्रकाशित करनेके लिए नीग्रो धर्मोपदेशकोंके संबंधमें मेरी सम्मति माँगी थी, तदनुसार मैंने अपनी यथार्थ सम्मति लिख भेजी। एक तो धर्मोपदेशकोंकी दशाका मैंने जो चित्र खींचा वह काला ही था—जब मैं ही काला हूँ, तब वह चित्र कहाँसे गोरा हो?—और दूसरे अभी दासत्वसे मुक्त हुए हम लोगोंको अच्छे उपदेशक निर्म्माण करनेका अवसर ही न मिला था।

मैं समझता हूँ कि देशके प्रत्येक नीग्रो धर्मोपदेशकने मेरी उस सम्मतिको पढ़ा होगा; क्योंकि मेरे पास इस विषयमें ऐसे सैकड़ों ही पत्र आये जिनमें मेरी सम्मतिको दूषित और असन्तोषजनक बतलाया था। इस घटनासे एक वर्ष बादतक कोई भी ऐसी सभा न हुई जिसमें मुझे उलटी सीधी न सुनाई गई हो अथवा मुझे अपनी सम्मति लौटा लेने या उसमें उचित परिवर्त्तन करनेके लिए कहनेका प्रस्ताव पास न किया

गया हो। कई संस्थाओंने तो यहाँ तक कहना प्रारंभ किया था कि लोग अपने बालकोंको टस्केजी-विद्यालयमें पढ़नेके लिए न भेजें। इसी कामके लिए एक संस्थाकी ओरसे एक उपदेशक भी नियुक्त हुआ था। इसने स्थान स्थान पर जाकर यह उपदेश देना आरंभ किया कि कोई अपने बालकोंको टस्केजीके विद्यालयमें पढ़नेके लिए न भेजे। पर मज़ेकी बात यह थी कि इसी भले आदमीने अपने पुत्रको, जो हमारे विद्यालयमें पढ़ता था, विद्यालयसे नहीं हटाया! कितने ही समाचारपत्रोंने तो मेरी कड़ी आलोचना करने अथवा मुझे अपनी सम्मति लौटा लेनेकी सूचना करनेका मानों काम ही उठा लिया था।

इतना सब होते हुए भी मैंने इसके उत्तरमें न तो कुछ कहा और न अपनी सम्मति ही लौटा ली। मैं जानता था कि मेरी सम्मति यथार्थ है और समय पाकर तथा शान्तिपूर्वक विचार करके लोग उसी सम्मतिका समर्थन करने लगेंगे। कुछ दिनोंके बाद जब बड़े बड़े धर्माधिकारियोंने धर्मोपदेशकोंकी दशाका अनुसन्धान आरम्भ किया तब उन्हें मेरे कथनकी सत्यता प्रतीत हो गई। मेथाडिस्ट चर्चके एक वृद्ध और प्रभावशाली धर्माधिकारीने तो यहाँ तक कह दिया कि मैंने धर्मोपदेशकोंकी दशाका चित्र खींचनेमें बड़ी मुलामियतसे काम लिया है। थोड़े ही दिनोंमें लोकमत भी बदलने लगा और और लोग भी धर्मोपदेशकोंकी दशाका सुधार होना आवश्यक बतलाने लगे। यद्यपि इस समय भी धर्मोपदेशकोंकी जैसी चाहिए वैसी अच्छी दशा नहीं है; तथापि मेरे शब्दोंने—बड़े बड़े धर्मोपदेशकोंका भी यही कथन है—लोगोंके हृदयमें यह अच्छी तरह ठँसा दिया कि धर्मोपदेशका कार्य करनेवाले लोग उच्चश्रेणीके शिक्षित और सदाचारी होने चाहिए। जिन लोगोंने आरम्भमें मेरे लेखसे असन्तुष्ट होकर मेरी निन्दा की थी पीछे उन्हींने मेरी स्पष्ट सम्मतिके विषयमें मेरा हार्दिक अभिनन्दन किया और इससे मुझे बहुत सन्तोष हुआ।

इस समय धर्मोपदेशकोंमें मेरे जैसे हार्दिक मित्र हैं वैसे और किसी विभागमें नहीं है। नीग्रो-धर्मोपदेशकोंका चरित्र अब बहुत सुधरा हुआ है और यह जातिकी उन्नतिका एक सन्तोषप्रद लक्षण है। धर्मोपदेशकोंके संबंधमें और अपने जीवनकी अन्य घटनाओंके विषयमें मुझे जो अनुभव मिला है उससे मेरा यह विश्वास हो गया है कि जब अपने किसी उचित कार्यके या कथनके विरुद्ध चारों ओरसे आन्दोलन होता हो तब हमें मौन धारण करके रह जाना चाहिए—उस समय सबसे अच्छा उपाय चुप हो रहना ही है। यदि हमारा कथन या कार्य सत्य है तो समय पाकर वह अवश्य ही सिद्ध होगा।

जिस समय मेरे एटलांटा-प्रदर्शनीवाले व्याख्यानकी चर्चा चारों ओर फैल रही थी उस समय जान्स हापाकिन्स यूनिवर्सिटीके अध्यक्ष डाक्टर गिलमनका एक पत्र मेरे पास आया। वह पत्र नीचे दिया जाता है। डाक्टर गिलमन प्रदर्शनीकी पुरस्कार—सामितिके प्रधान नियुक्त हुए थे।

"जान्स हापाकिन्स यूनिवर्सिटी, वाल्टीमोर,
अध्यक्ष—कार्यालय, ३० सितंबर १८९५.

प्रिय वाशिंगटन महाशय,

क्या आप एटलांटा-प्रदर्शनीके शिक्षाविभागकी पुरस्कार—कमेटीके पंच होना पसन्द करेंगे? यदि पसन्द करें तो मैं आपका नाम कमेटीके पंचोंकी नामावलीमें लिख लूँ। कृपया तार द्वारा उत्तर दीजिए।

आपका सच्चा हितैषी,
डी. सी. गिलमन।"

एटलांटा-प्रदर्शनीकी आरंभिक वक्तृताके निमंत्रणकी अपेक्षा इस नि-

मंत्रणसे मुझे बहुत ही अधिक आश्चर्य हुआ। अब मेरा यह कर्त्तव्य हुआ कि पंचकी हैसियतसे केवल नीग्रो ही नहीं बल्कि गोरोंके विद्यालयोंकी भी वस्तुओं पर मैं अपनी सम्मति दूँ। उत्तरमें मैंने पंच होना स्वीकार कर लिया और अपना काम ठीक तरहसे करनेके लिए मैं एटलांटामें एक मास तक रहा। पंचोंकी कमेटीमें साठ पंच थे। इनमें आधे तो प्राय: दक्षिणके गोरे थे और आधे उत्तरके। कमेटीमें कालेजोंके प्रेसिडेंट, मुख्य मुख्य शास्त्रज्ञ, बड़े बड़े विद्वान् और भिन्न भिन्न विषयोंके अनुभवी जानकार थे। मिस्टर पेज नामक एक पंचकी सूचनासे मैं ही शिक्षाविभागका मंत्री बनाया गया। गोरोंके विद्यालयोंकी प्रदर्शित वस्तुओंका निरीक्षण करते समय मैंने उपस्थित गोरोंको बहुत विनयशील पाया। यह काम समाप्त होने पर जब मैं अपने साथी पंचोंसे विदा होकर घर जाने लगा तब मुझे मोहवश बहुत दु:ख हुआ।

मैं अपनी जातिकी राजनीतिक अवस्था और उसके भविष्यके विषयमें अपनी स्पष्ट सम्मति प्रकट करूँ, इसके लिए मुझसे अनेक बार कहा गया है। मेरी यह सम्मति है कि—अब तक मैंने इसे किसी पर प्रकट नहीं किया था—दाक्षिणी नीग्रो लोगोंको, उनकी योग्यता, उनके चरित्रबल और उनकी सम्पत्तिके अनुसार, सब प्रकारके राजकीय अधिकार शीघ्र ही मिलनेवाले हैं। ये राजकीय अधिकार अस्वाभाविक उपायोंसे अथवा किसी ग़ैरके करतबसे न मिलेंगे, बल्कि स्वयं दाक्षिणी गोरे ही ऐसा सुअवसर ले आवेंगे और उनके अधिकारोंकी रक्षा भी करेंगे। दक्षिणी गोरोंकी यह पुरानी धारणा है कि बाहरी लोगोंके दबावसे उन्हें अपनी इच्छाके विरुद्ध कार्य करने पड़ते हैं। ज्यों ज्यों यह धारणा मिटती जायगी त्यों त्यों नीग्रो जातिको अधिकार मिलने लगेंगे और यह कार्य अब किसी अंशमें आरंभ भी हो गया है।

मैं इस बातको और भी स्पष्ट करके बतलाता हूँ। यह सोचिए कि

यदि प्रदर्शनी खुलनेसे कुछ महीने पहले दक्षिणके समाचारपत्रों और सभाओंमें इस बातका आन्दोलन किया जाता कि प्रारंभिक कार्यक्रममें एक नीग्रोको स्थान दिया जाना चाहिए तथा पुरस्कार देनेवाले पंचोंमें एक नीग्रो भी होना चाहिए, तो क्या इससे हमारी जातिका कुछ भी गौरव हो सकता ? मैं नहीं समझता कि इससे हम लोग कोई लाभ उठाते। हाँ, प्रदर्शनीके अधिकारियोंने नीग्रो लोगोंकी योग्यता देखकर गुणोंका योग्य गौरव करनेके लिहाजसे स्वयं ही उनका यथेष्ट आदर किया—उन्हें स्वयं ही यह अच्छा मालूम हुआ। मनुष्यके स्वभावकी बनावट ही ऐसी है कि वह अन्तमें जातिद्वेषको भूल कर काले-गोरोंमें कोई अन्तर नहीं देखता और दोनोंकी योग्यता समझ कर उनका यथेष्ट आदर करता ही है।

मेरी तो यह राय है कि नीग्रो लोग राजकीय अधिकार माँगनेमें अधिक विनयशील रहें तो बहुत अच्छा हो। यह बड़े ही संतोषकी बात है कि बहुतसे नीग्रो लोगोंका आचरण ऐसा ही देखनेमें आता है। धन-सम्पत्ति, बुद्धिमता और उत्तम चरित्रबल होने पर ही राजकीय अधिकार सुख देते हैं। उन अधिकारोंसे सुख प्राप्त करनेकी योग्यता पहले होनी चाहिए। यह योग्यता धीरे धीरे अवश्य प्राप्त होगी। यह कोई बाजीगरका खेल नहीं जो 'आओ' कहते ही आ जाय! मेरे कहनेका तात्पर्य यह नहीं है कि नीग्रो लोग सम्मति (वोट) ही न दिया करें। मैं तो यह कहता हूँ कि बिना पानीमें उतरे जैसे कोई बालक तैरना नहीं सीख सकता वैसे ही, वोट दिये बिना स्थानीय स्वराज्यसे भी कोई लाभ नहीं उठा सकता। परन्तु इसके साथ मेरी यह भी सलाह है कि वोट देनेके समय नीग्रो लोग अपने गोरे पड़ोसियोंसे भी सलाह लिया करें जो उनसे अधिक बुद्धिवान् और चरित्रवान् हैं।

मैं ऐसे नीग्रो सज्जनोंको जानता हूँ जिन्होंने दक्षिणी गोरोंके उत्साह

दिलानेसे और उन्हींकी सलाह और मददसे हज़ारों डालरकी मिलकियत प्राप्त कर ली है; परन्तु जब वोट देनेका मौका आता है तब ये ही नीग्रो लोग उनके पास सलाह लेने तकको नहीं जाते। यह बहुत ही अनुचित बात है और इस लिए मैं चाहता हूँ कि इस विषयमें लोग बहुत जल्द सावधान हो जायँ। मैं यह नहीं चाहता कि नीग्रो लोग हाँमें हाँ मिलाया करें अथवा बातको खूब सोचे समझे बिना दूसरोंके कहनेसे ही अपनी सम्मति दे दिया करें। कभी नहीं। यदि वे ऐसा करने लगेंगे तो उनके विषयमें दक्षिणी गोरोंका विश्वास और आदर नष्ट हो जायगा।

कोई राज्य ऐसा नियम नहीं बना सकता जिससे अशिक्षित और दरिद्र गोरा तो वोट दे सके पर उसी हैसियतका नीग्रो न दे सके। यह नियम अन्यायपूर्ण है और इससे बहुत बड़ी हानि होगी। इसका परिणाम यह होगा कि नीग्रो तो शिक्षित और सम्पन्न बननेका प्रयत्न करेंगे और गोरोंको दरिद्र और मूर्ख बने रहनेमें उत्तेजना मिलेगी। इस समय वोट इकट्ठा करनेमें बड़े बड़े कपटनाटक होते हैं; पर मैं समझता हूँ कि शिक्षा और दोनों जातियोंके परस्पर मित्रभावसे यह बात बहुत दिन न रहने पावेगी। जो गोरा नीग्रोको धोखा देकर उसका वोट छीन लेता है वह आगे चलकर अपने गोरे भाईसे भी ऐसा ही व्यवहार करने लगता है और अन्तमें इसका परिणाम किसी बड़े भारी अपराधमें होता है। मुझे आशा है कि वह समय शीघ्र ही आवेगा जब दक्षिणमें सब लोग समानरूपसे वोट देनेके लिए उत्साहित होंगे। दक्षिणके अधिकारी अब इस बातको जल्द ही जान लेंगे कि स्थानीय स्वराज्यमें सबको समान अधिकार न मिलनेसे अथवा उसमें कुछ लोगोंका कुछ भी स्वार्थ न होनेसे जो त्रिशंकुकी अवस्था उत्पन्न होती है उसकी अपेक्षा यही सब प्रकारसे अच्छा है कि सबको समान अधिकार दिये जायँ और राजकीय व्यवस्थामें जीवन उत्पन्न किया जाय।

मेरी सम्मतिमें, साधारणतः सबको सम्मति देनेका समान अधिकार

होना चाहिए। परन्तु दाक्षिणके कुछ राज्योंकी अवस्था इस समय इतनी बिगड़ी हुई है कि वहाँ कुछ काल तक वोट देनेके लिए विद्या और सम्पत्ति दोनों बातें आवश्यक रक्खी जानी चाहिए। अर्थात् शिक्षाकी या सम्पत्तिकी अथवा दोनोंकी यथेष्ट योग्यता बिना वोट देनेका अधिकार किसीको न दिया जाय। इस विषयमें नियम कैसे ही बनें, यह ज़रूरी है कि उनका उपयोग दोनों जातियोंके लिए समान रूपसे और समान न्यायसे हो।

पंद्रहवाँ परिच्छेद।

व्याख्यानकी सफलताका रहस्य।

एटलांटा-प्रदर्शनीमें मेरा व्याख्यान लोगोंको किस कदर पसंद हुआ यह मैं स्वयं न बतलाकर सुप्रसिद्ध सामरिक संवाददाता मिस्टर क्रीलमेनके शब्दोंमें बतलाता हूँ। मि. क्रीलमेन मेरे व्याख्यानके समय मौजूद थे। उन्होंने नीचे लिखा हुआ तार न्यूयार्कके 'वर्ल्ड' के पास भेजा था:—

"एटलांटा, १८ सितंबर, १८९५.

प्रदर्शनी खुलनेके अवसर पर गोरे श्रोताओंके सामने एक नीग्रो मूसाने बड़े मार्केकी वक्तृता दी। दाक्षिणके इतिहासमें इस तरहकी यह पहली घटना है। और एक महत्त्वकी बात यह हुई कि जार्जिया और लुसियानाके नागरिकोंके साथ नीग्रो लोगोंका एक जुलूस निकला था। इस समय सर्वत्र इन्हीं बातोंकी चर्चा हो रही है। न्यूयार्ककी न्यू इंग्लैंड सोसायटीके सामने हेनरी ग्रेडीके स्मरणीय भाषणके उपरान्त दाक्षिणमें इस प्रदर्शनके समान उत्साहदर्शक और महत्त्वपूर्ण बात और कोई नहीं हुई।

"जिस समय टस्केजी-विद्यालयके प्रिन्सिपल प्रोफेसर बुकर टी. वाशिंगटन व्याख्यान देनेके लिए प्लेटफार्म पर खड़े हुए उस समय संध्या समयके स्वच्छ सूर्यके सुकोमल किरण उस विशाल भवनकी खिड़कियोंसे अन्दर प्रवेश कर श्रोताओंके सिरपरसे उनके मुखकमल पर चमकने लगे और इससे उनके चेहरे पर एक प्रकारका दिव्य तेज झलकने लगा। उस समय हेनरी ग्रेडीके उत्तराधिकारी क्लार्क हावेलने मुझसे कहा,—'इस मनुष्यकी वक्तृता अमेरिकामें नैतिक क्रान्ति उत्पन्न करनेवाली है।'

"ऐसे महत्त्वपूर्ण अवसर पर गोरे पुरुषों और स्त्रियोंके सामने अब तक किसी नीग्रोका भाषण नहीं हुआ था। इस भाषणको सुनकर लोग चकित हो गये और उन्होंने बड़ा हर्ष प्रकट किया!

"मिसेस टामसनकी वक्तृता समाप्त होते ही सब लोग प्लेटफार्म पर पहली पंक्तिमें बैठे हुए एक ऊँचे पूरे, कपिल वर्णके नीग्रोकी ओर टकटकी लगाकर देखने लगे। ये टस्केजी–विद्यालयके सर्वस्व बुकर टी. वाशिंगटन थे। अबसे अमेरिकाकी नीग्रो जातिमें इन्हींका पद सबसे ऊँचा समझना चाहिए। इस समय बैंड पर राष्ट्रीय गीतोंका मधुर गान हो रहा था जिससे सब लोग शान्त हो रहे थे–किसी तरहका शोर-गुल न था।

"हज़ारों लोगोंकी दृष्टि उस नीग्रो वक्ता पर गड़ी हुई थी। बात भी ऐसी ही थी। सब लोग जानते थे कि आज एक काला मनुष्य हम लोगोंके हितार्थ निर्भय होकर भाषण करनेवाला है। ये प्रोफेसर वाशिंगटन ही थे। प्रोफेसर साहब जब अपने स्थानसे व्याख्यानस्थान पर आये तब अस्ताचल पर आरूढ हुए सूर्यदेवके आरक्त किरण भवनकी खिड़कियोंमेंसे आकर उनके चेहरे पर चमकने लगे, और लोगोंने प्रचंड करतलध्वनिसे उनका स्वागत किया। सूर्यकिरणोंके तापसे अपने नेत्रोंको बचानेके लिए उन्होंने अपना मुँह एक ओर ज़रा फेर लिया और प्लेटफार्म पर इधर उधर टहलना शुरू कर दिया। इसके बाद अस्ताचल पर विराजमान हुए सूर्यकी ओर ही अपनी दृष्टि स्थिर कर उन्होंने अपनी वक्तृता आरंभ कर दी।

"उनके देहकी गठन बड़ी ही सुन्दर थी। शरीर भरपूर ऊँचा और कसा हुआ था; छाती चौड़ी और उभरी हुई थी; ललाट विशाल, नाक सीधी, चेहरा चौड़ा और दृढ़ताका सूचक, दाँत बिलकुल साफ़ और नेत्र तेजोमय थे। चेहरे पर एक प्रकारका दिव्य तेज था। उनकी कत्थई रंगकी गर्दन पर उठी हुई नसें दिखाई देती थीं। मुट्ठीमें मज़बूतीसे पेन्सिल

पकड़कर उन्होंने अपना मोहड़ेदार हाथ ऊपर कर रक्खा था। अपने मज़बूत पैरों पर एड़ीसे एड़ीसे भिड़ाकर, पर पंजे अलग रखकर, वे गड़ेसे खड़े हुए थे। उनकी आवाज़ साफ़ और ज़ोरदार थी। वे एक बातको श्रोता-ओंके दिलों पर अच्छी तरह जमा कर फिर दूसरी बात उठाते थे। उनकी वक्तृता सुनकर दश मिनिटके भीतर ही सब लोग जोशमें भर गये और रूमाल, बेत और टोपियाँ हिला हिलाकर अपना आनन्द प्रकट करने लगे। जार्जियाकी सुन्दर स्त्रियाँ खड़ी होकर प्रसन्नतासे तालियाँ बजाने लगीं। ऐसा मालूम होता था कि मानों वक्ताने सब पर जादू कर दिया हो! जब वक्ताने हाथकी उँगलियोंको फैलाकर अपना कालासा हाथ सिर पर उठा रक्खा और अपनी जातिकी ओरसे दाक्षिणी गोरोंको सम्बो-धनकर कहा, 'केवल सामाजिक कार्योंमें हाथकी उँगलियोंकी भाँति हम अलग अलग रहें; पर पारस्परिक उन्नतिके सब कामोंमें हम लोगोंको हाथकी भाँति एक होना चाहिए,' और जब उनकी इस आवाज़की लहर चारों दीवारोंसे टकराई तब सबके सब लोग उठ खड़े हुए और मारे आनन्दके बहुत देर तक तालियाँ बजाते रहे।

"मैंने अनेक देशोंके वक्ताओंकी वक्तृतायें सुनी हैं पर इस नीग्रो वक्ताने सूर्यके आरक्त किरणोंमें खड़े होकर उन लोगोंके सामने—कि जिन्होंने नीग्रो जातिको गुलामीमें ही सड़ानेके लिए युद्ध किया था—अपनी जातिके पक्षका बड़ी खूबीके साथ जैसा अच्छा समर्थन किया वैसा स्वयं ग्लैड-स्टनसे भी न बन पड़ता! लोग मारे आनन्दके तालियाँ बजाते जाते थे; परन्तु वक्ता पर उनका कुछ भी प्रभाव न पड़ता था—उनके उत्सुक चेहरेकी छटा ज़रा भी नहीं बदलती थी।

"सभामंडपमें ही एक ओर एक हट्टा कट्टा दरिद्र नीग्रो बैठा हुआ था। वह वक्ताके चेहरेकी ओर एकटक निहार रहा था। अन्तमें वक्ताके भाषणके प्रभावसे उसकी आँखोंसे आँसू टपकने लगे। इस समय प्रायः सभी नीग्रो लोगोंकी यही दशा हुई।

“वक्तृता समाप्त होते ही गवर्नर बुलक वक्ताके पास लपक कर आये और उन्होंने ज्यों ही उनसे हाथ मिलाया त्यों ही फिर तालियाँ बजीं। कुछ देरतक ये दोनों महाशय हाथमें हाथ दिये आमने सामने खड़े हुए देख पड़े।”

इस व्याख्यानके बाद टस्केजी–विद्यालयके आवश्यक कार्योंसे फुर-सत पाने पर मैं कभी कभी व्याख्यानोंके निमंत्रण स्वीकार कर लेता था; परन्तु जहाँतक मुझसे बनता मैं ऐसे ही स्थानोंमें व्याख्यान देना स्वीकार करता था जहाँसे टस्केजी–विद्यालयको सहायता मिलनेकी आशा होती थी। व्याख्यान देना स्वीकार करनेसे पहले ही मैं यह निश्चय करा लेता था कि मुझे अपने जीवनके मुख्य कार्य और अपनी जातिकी आव-श्यकताओंके विषयमें कहनेका पूरा अवसर मिलेगा। मैं यह बात भी पहले ही जतला देता था कि पेशेके ख़यालसे या केवल स्वार्थके लिए मैं कोई व्याख्यान न दूँगा।

मैं स्वयं अभीतक इस बातको नहीं समझ सका हूँ कि लोग मेरा व्याख्यान सुननेके लिए इतने उत्सुक क्यों रहते हैं। सभामंडपके बाहर खड़े होकर यदि मैं लोगोंको उत्साहपूर्वक मेरा व्याख्यान सुननेके लिए आते हुए देखता हूँ तो मैं इस बातसे बहुत ही लज्जित होता हूँ कि मेरे कारण इन लोगोंका अमूल्य समय नष्ट हो रहा है। कुछ वर्ष पूर्व माडीसनकी एक साहित्यसभाके सामने मेरा व्याख्यान होनेवाला था। निश्चित समयसे एक घंटा पहले बड़े ज़ोरोंसे बर्फ गिरने लगी और कई घंटे गिरती रही। मैंने समझा कि आज न लोग आवेंगे और न मुझे कुछ कहना पड़ेगा। तो भी कर्त्तव्य जानकर मैं वहाँ गया। देखा तो, श्रोताओंसे सब हाल भर गया है! उस विराट् जनसमुदायको देखकर मेरी विचित्र दशा हुई जिससे मैं दिनभर बेचैन रहा!

लोग मुझसे प्रायः पूछा करते हैं कि क्या मैं भी व्याख्यान देनेसे

पहले घबरा जाता हूँ ? और साथ साथ यह भी कहते हैं कि आदत पड़ जानेसे अब कोई घबराहट न होती होगी । इसके जबाबमें मैं यह कहता हूँ कि व्याख्यान देनेसे पूर्व मैं बहुत ही घबरा जाता हूँ। अनेक अवसरों पर व्याख्यान होनेके पहले मेरी घबराहट इतनी बढ़ गई है कि मैंने कई बार फिर कभी व्याख्यान न देनेका संकल्प भी कर डाला है। व्याख्यान न देनेसे पहले मैं घबराता हूँ, इतना ही नहीं, बल्कि, बाद भी इस सन्देहसे कि मैं कोई बात कहनेके लिए भूला तो नहीं, बहुत व्याकुल होता हूँ ।

परन्तु व्याख्यानके पूर्वकी घबराहटका बदला मुझे अच्छा मिल जाता है। दस मिनिटके कथनसे मुझे यह बोध होने लगता है कि अब श्रोताओंके दिल मेरे काबूमें आरहे हैं और उनसे मेरी पूरी एकता हो चली है। वास्तवमें वक्ताको जब यह मालूम हो जाता है कि श्रोताओंके दिल मेरे दिलसे मिल रहे हैं तब उससे उसे जैसी कुछ प्रसन्नता होती है वैसी और किसी बातसे न होती होगी । पूर्ण सहानुभूति और एकताका धागा वक्ता और श्रोताओंको मिला देता है और यह धागा किसी दृश्य या मूर्त्त वस्तुके समान बहुत मज़बूत होता है। यदि हज़ारों श्रोताओंमेंसे एक भी ऐसा हो जिसे मेरे विचा-रोंके साथ सहानुभूति न हो अथवा जो उत्साहशून्य, साशंक और दोषदर्शी हो, तो मैं उसे तत्काल पहचान लेता हूँ और उसकी ओर मुड़कर कोई ऐसा चुटकिला छोड़ता हूँ कि वह उसी समय ठीक हो जाता है—यह चुटकिला या मनोरंजक कथा उस पर रामबाणका काम करती है और उस समय उसके मनकी गति देखते ही बनती है । परन्तु चुटकिला मैं इसलिए कभी नहीं छोड़ता कि केवल सुननेवालोंका दिल बहला करे। ऐसे मन बहलावके ढंगको मैं बिलकुल पसन्द नहीं करता हूँ।

जो वक्ता इस विचारसे ही भाषण करता है कि अपने गौरवके लिए मुझे भी कुछ कहना चाहिए, वह अपना और श्रोताओंका अपराध करता है। मेरा तो यह सिद्धान्त है कि जबतक कोई विशेष बात लोगोंको न बतलानी हो, तबतक कभी भाषण न करना चाहिए। जिसे इस बातका पूरा विश्वास हो कि मेरे शब्दोंसे किसी व्यक्ति या कार्यकी कुछ सहायता हो जायगी, उसे ही भाषण करना चाहिए और इस प्रकारके भाषण करनेमें वक्तृत्वके कृत्रिम नियमोंसे मुझे कोई लाभ नहीं दिखाई देता। इसमें सन्देह नहीं कि विराम, श्वासोच्छ्वास, स्वरका उतार-चढ़ाव आदि बातें जानने और अमल करने योग्य हैं; परन्तु व्याख्यानमें इनसे जान नहीं आ जाती। जब मुझे कोई व्याख्यान देना होता है तब मैं अँगरेज़ी भाषाके नियम, अलंकारशास्त्रके नियम आदि सब कुछ भूल जाता हूँ, और अपने श्रोताओंको भी ये बातें भुला देना चाहता हूँ।

मेरे व्याख्यानके समय यदि कोई श्रोता बीचहीमें उठकर चला जाता है तो मेरा चित्त ठिकाने नहीं रहता। इसलिए जहाँ तक बनता है मैं अपने व्याख्यानको इतना रोचक और चित्ताकर्षक बनानेका प्रयत्न करता हूँ कि जिससे किसीकी वहाँसे उठनेकी इच्छा ही न हो। प्रायः श्रोता लोग साधारण उपदेशोंकी अपेक्षा तत्त्वकी बातें सुनना अधिक पसन्द करते हैं। यदि उन्हें रोचक पद्धतिसे—कथा कहानियों या चुट-किलोंके साथ तत्त्वकी बातें सुनाई जावें तो वे शीघ्र ही उनका ठीक परिणाम भी निकाल लेते हैं।

शिकागो, बोस्टन, न्यूयार्क, और बुफालो आदि शहरोंके व्यापारी लोग विशेष चतुर, दृढ और व्यवहारदक्ष हैं और मैं ऐसे ही लोगोंमें व्याख्यान देना सबसे अधिक पसन्द करता हूँ। ये लोग बड़े उत्साह और ध्यानसे व्याख्यान सुनते हैं और व्याख्यानगत प्रश्नोंका तत्काल ही उत्तर

भी देते हैं। मुझे ऐसे लोगोंके सामने व्याख्यान देनेका कई बार अवसर मिला है। ऐसे व्यवहारदक्ष व्यापारियोंकी संस्थाओंको हस्तगत करनेके लिए—उन्हें अपने विचारोंसे भर देनेके लिए—किसी दावतके उपरान्त बड़ा ही अच्छा अवसर मिलता है; परन्तु कठिनाई यह आ पड़ती है कि भोजनमें ही बहुतसा समय नष्ट हो जाता है और तब तक अपने कार्यकी सफलताके विषयमें तरह तरहकी आशंकायें करते हुए बैठे रहना पड़ता है।

मैं ऐसी दावतोंमें बहुत कम शरीक होता हूँ। कारण, जब कभी ऐसा मौका आता है तो मुझे बचपनमें अपने मालिकके यहाँसे सप्ताहमें एक बार मिलनेवाली लपसीकी याद आ जाती है। उन दिनों बाजरेकी रोटी और सूअरका मांस ही हमारा भोजन होता था; पर रविवारके दिन हम तीन लड़कोंके लिए मालिकके बड़े मकानसे थोड़ीसी लपसी मिला करती थी जिसे पाकर हम लोग बहुत खुश होते थे और यह चाहते थे कि रोज़ रोज़ ही रविवार हुआ करे। मैं अपनी टीनकी थाली लपसीके लिए ऊपर उठाये और आँखें बन्द किये बैठा रहता था। अनन्तर आँखें खोलने पर थालीमें बहुत सी लपसी परोसी हुई देखकर मन-ही-मन बड़ा खुश होता था! थालीको इधरसे उधर हिलाकर लपसीको थालीभरमें फैला लेता और मन-ही-मन कहता था कि यह बहुत बढ़ गई है—अब इसे बहुत देर तक खाता रहूँगा! मैं यह नहीं समझ सकता था कि थालीके एक कौनेमें जो लपसी थी वही फैलकर थालीभरमें फैल गई है और इससे वह एक कौनेकी लपसीसे अधिक नहीं है! मेरे हिस्सेकी यह लपसी दो बड़े चमचे भरसे अधिक नहीं होती थी; पर उसके खानेमें मुझे जो आनन्द मिलता था वह इन पचासों पक्वान्नोंकी दावतोंमें भी नहीं मिलता!

श्रोताओंमें पहला नंबर तो उक्त शहरोंके व्यवहारदक्ष व्यापारियों-

का है। इसके बाद मैं दक्षिणकी दोनों जातियोंके सामने एक साथ या अलग अलग व्याख्यान देना पसन्द करता हूँ। उनके उत्साह और प्रत्युत्तरसे मुझे बड़ा आनन्द होता है। काले लोगोंके 'तथास्तु' और 'साधु, साधु' कहनेसे, कोई भी वक्ता हो, अवश्य उत्साहित होगा। इनके बाद कालेजके तरुण विद्यार्थियोंका नंबर है। हारवर्ड, येल, विलियम्स, अमहर्स्ट, पेन्सिलवानिया, मिशिगन आदि विश्वविद्यालयोंमें तथा नार्थ कैरोलिनाके ट्रिनिटी कालेजमें और ऐसे ही अन्य अनेक स्थानोंमें मेरे अनेक व्याख्यान हुए हैं।

मेरे व्याख्यानके बाद बहुतसे लोग मेरे पास आकर मुझसे हाथ मिलाते हैं और कहते हैं,—"किसी नीग्रोको 'मिस्टर' कहनेका यह पहला ही अवसर है!" यह सब देख-सुनकर मुझे बड़ा कुतूहल होता है।

टस्केजी—विद्यालयके लाभके लिए जब व्याख्यान देने होते हैं तब मैं ख़ास ख़ास स्थानों पर सभायें करनेका प्रबन्ध करता हूँ। ऐसे अवसरों पर मुझे देवालयों, रविवारकी पाठशालाओं, क्रिश्चियन एन्डेवर सोसायटियों और स्त्रीपुरुषोंके भिन्न भिन्न क्लबोंमें जाना पड़ता है और कभी कभी तो एक एक दिनमें चार चार व्याख्यान देने पड़ते हैं।

तीन वर्ष पूर्व, मिस्टर मारिस के. जेसप और डाक्टर करीके अनुरोधसे स्लेटर—फंडके पंचोंने नीग्रो लोगोंकी पुरानी बसतियोंमें घूम घूम कर सभायें करनेके लिए मुझे और मेरी स्त्रीको कुछ धन देना निश्चय किया। गत तीन वर्षोंमें मैंने प्रत्येक वर्षके कई सप्ताह इस काममें खर्च किये हैं। कार्यक्रम इस प्रकारका रहा कि सबेरे धर्मोपदेशकों, अध्यापकों तथा पेशेवालोंके सामने मैं व्याख्यान देता, दो पहरको स्त्रियोंमें मिसेस वाशिंगटन वक्तृता देतीं, और सन्ध्या समय सर्व साधारणके सामने फिर मेरा व्याख्यान होता। इन सभाओंमें नीग्रो लोगोंके अति-

रिक्त गोरे भी आया करते थे। उदाहरणार्थ, चटनुगाकी सभामें तीन हज़ार श्रोता थे जिनमें आठ सौ गोरे थे। इन सभाओंका कार्य मुझे बहुत पसन्द आया और इनसे लाभ भी बहुत हुआ।

इन सभाओंके कारण हम लोगोंको हर तरहके लोगोंसे मिलकर उनकी असली हालत जाननेका बहुत ही अच्छा अवसर मिला। इसके अतिरिक्त दोनों जातियोंके पारस्परिक व्यवहार भी हम लोग भली भाँति देख सके। ऐसी सभाओंमें काम करनेके बाद नीग्रो जातिकी उन्नतिके विषयमें मेरा उत्साह बहुत बढ़ जाता है। मैं यह जानता हूँ कि ऐसे अवसरों पर लोग प्रायः दिखौआ उत्साह प्रकट किया करते हैं; पर बारह घाटका पानी पीकर अब मुझे इतना अनुभव हो गया है कि इससे मैं धोखा नहीं खा सकता। इसके सिवाय मैं हर बातकी तह तक पहुँचकर उसका ठीक ठीक पता लगानेका पूरा पूरा उद्योग किया करता हूँ।

समझबूझकर बात करनेका अभिमान रखनेवाले एक मनुष्यके मुँहसे मैंने सुना कि, "नीग्रो जातिमें सैकड़ा नब्बे स्त्रियाँ दुराचारिणी होती हैं।" एक सम्पूर्ण जातिके विषयमें इससे बढ़कर निराधार और मिथ्या विधान और क्या हो सकता है?

बीस वर्षतक दाक्षिणमें रहकर और वहाँके निवासियोंकी वास्तविक दशाका पता लगाकर मुझे यह विश्वास हो गया है कि मेरी जाति सदाचार, सम्पत्ति, शिक्षा आदि सभी बातोंमें दिनोंदिन बराबर तरक्की करती जा रही है। किसी खास स्थानके निम्न श्रेणीके लोगोंकी रहन-सहनको प्रमाणस्वरूप लेकर सारी जाति पर कलंक लगाना बुद्धिमानीका काम नहीं है।

सन् १८९७ के आरंभमें बोस्टन निवासियोंने मुझे राबर्ट गोल्ड शाका स्मारक खोलनेके अवसर पर निमंत्रित किया। यह समारंभ बोस्टनके म्यूज़िक हालमें बड़ी धूमधामसे हुआ। बड़े बड़े विद्वान् और प्रतिष्ठित

लोग उपस्थित हुए थे। गुलामीके कई पुराने विरोधी भी आये हुए थे। सभापतिका आसन मैसेच्युसेट्स राज्यके गवर्नर आनरेबल रोजर वुलकाट महाशयने मंडित किया था और उनके साथ प्लेटफार्म पर अनेक गण्यमान्य लोग बैठे हुए थे। इस सभाके विषयमें 'ट्रन्स क्रिप्ट' नामक पत्रके निम्न–लिखित लेखसे बहुत अच्छा प्रकाश पड़ेगा।

" कल म्यूजिक हालमें विश्वबंधुत्वके सन्मानार्थ जो सभा हुई थी उसमें टस्केजी–विद्यालयके प्रिन्सिपलका व्याख्यान बहुत ही अच्छा हुआ। गवर्नर वुलकाटने उनका इस प्रकार परिचय दिया कि–'गत जून मासमें हारवर्ड–यूनिवार्सिटीने आपको एम. ए. की पदवी प्रदान की है। इस देशके सबसे प्राचीन विश्वविद्यालयकी ओरसे यह आनरेरी डिग्री प्राप्त करनेवाले सबसे पहले नीग्रो आप ही हैं। आपको यह माननीय पदवी अपनी जातिके उदार नेतृत्वकी सूचनारूप मिली है।' जिस समय प्रोफेसर वाशिंगटन व्याख्यान देनेके लिए खड़े हुए उस समय ऐसा जान पड़ा कि मानों मैसेच्युसेट्सके स्वातंत्र्यकी साक्षात् प्रतिमा ही खड़ी हुई हो। उनके चेहरे पर मैसेच्युसेट्सकी परम्परागत और अचल श्रद्धा झलक रही थी। उनके शक्तिशाली विचारों और उज्ज्वल भाषणमें पूर्वकालीन घोर संग्रामका वैभव दिखाई देता था। वह सारा दृश्य ऐतिहासिक सौन्दर्यसे भरा हुआ और महत्त्वसे परिपूर्ण था। निरुत्साही बोस्टन अपने अन्तःकरणके सत्य और सद्भावके अग्नितेजसे दीप्तिमान हो रहा था। किसी सार्वजनिक अवसर पर न दिखाई देनेवाले लोगोंके झुंडके झुंड, और पर्वके दिन घर छोड़कर बाहर जानेवाले सैकड़ों परिवार आज उस सभाभवनमें ठसाठस भरे हुए थे। नगरके नरनारियोंने उत्तम वस्त्र और आभूषण पहनकर कुछ ऐसी शोभा उप-स्थित की थी, मानों यह नगर अपना ही जन्ममहोत्सव मना रहा हो।

" सामरिक गीतोंसे भवन गूँज रहा था। जब कर्नल शाके मित्र और

कर्मचारी, शिल्पी, सेंट गाडन्स, स्मारक कमेटीके सदस्य, गवर्नर, उनके मंत्री और मैसेच्युसेट्सकी ५४ वीं पल्टनके नीग्रो सैनिक आदि लोग आये और प्लेटफार्म पर चढ़ने लगे तब चारों ओरसे जयजयकी पुकार और तालियोंकी कड़कड़ाहट आरंभ हुई । कमेटीकी ओरसे गवर्नर एंड्रूके एक पुराने मंत्रीने भाषण किया । इसके बाद गवर्नर वुलकाटने एक छोटी पर बहुत ही सुन्दर वक्तृता दी । उन्होंने कहा, 'वागनरके दुर्गकी घटनासे इस जातिके इतिहासमें नवीन युग आरंभ हुआ और अब इस जातिने शैशव काल पार कर यौवनकालमें पदार्पण किया है ।' उन्होंने बोस्टनके विजयस्तंभका तथा कर्नल शा और उनकी काली पल्टनोंके कार्योंका बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें वर्णन किया । तब–

"Mine eyes have seen the glory of
the coming of the Lord."

यह गीत हुआ और इस अच्छे मौके पर बुकर वाशिंगटन व्याख्यान देनेके लिए उठ खड़े हुए । उस समय श्रोताओंकी शान्ति भंग हो गई और उनमें आवेश और उत्साह भर गया । सारा श्रोतृसमाज उनका जयजयकार करने और उन्हें धन्यवाद देनेके लिए कई बार उठा । जब इस काले वर्णके सुशिक्षित और बलवान् मनुष्यने गंभीर ध्वनिसे अपना भाषण आरंभ किया और स्टर्न्स तथा एंड्रूका ज़िक्र छेड़ा तब लोग बड़े ही उत्साह और एकाग्रतासे वक्ताकी ओर देखने लगे । सैनिकों और नागरिकोंकी आँखोंमें आंसू भर आये । प्लेटफार्म पर बैठे हुए काली पल्टनके सिपाहियोंकी ओर, विशेषकर उन सिपाहियोंकी ओर जिन्होंने बहुत घायल हो जाने पर भी हाथसे अपना जातीय झंडा गिरने न दिया था–मुड़कर वाशिंगटन महाशय कहने लगे,–'५४ वीं पल्टनके बचे हुए वीरो, और कटे हुए हाथ पैरोंसे आजके समारंभकी शोभा बढ़ानेवाले सैनिको, तुम्हारा सेनापति अब भी जीवित है । यदि बोस्टनवाले उसका

कोई स्मारक न बनाते और इतिहासमें उसका कोई उल्लेख न किया जाता, तो भी तुम लोगोंमें और उस नमकहलाल जातिमें जिसके कि तुम लोग प्रतिनिधि हो, राबर्ट गोल्ड शाका अक्षय्य स्मारक सदा बना रहता।' इन शब्दोंको सुनते ही श्रोताओंमें उत्साहसागर उमड़ आया। मैसेच्यु-सेट्सके गवर्नर, रोजर वुलकाटने उठकर बड़े ज़ोरसे कहा,–बुकर टी. वाशिंगटनका त्रिवार जयजयकार हो!"

उस समय प्लेटफार्म पर फोर्ट वागनरके झण्डेदार, न्यू बेडफर्डके काले अफ़सर, सार्जेट विलियम कारने भी उपस्थित थे। यद्यपि उनकी पल्टनके अधिकांश सिपाही मारे जा चुके थे और भाग गये थे तथापि वे अन्त समयतक अमेरिकाकी ध्वजा लिये खड़े रहे थे। युद्ध समाप्त होने पर उन्होंने कहा था, 'अमेरिकाके पुराने झंडेने कभी ज़मीन नहीं देखी!' वही झंडा इस समय भी उनके हाथमें था! मैंने जब काली पल्टनके बचे हुए वीरोंको सम्बोधन करके भाषण किया और सार्जेट कारनेका नाम लिया तो वे आप ही उठ खड़े हुए और उन्होंने अपना झंडा ऊपर उठा दिया। मैंने कई बार अपने भाषणसे लोगोंको उत्साहित या उत्तेजित हुए देखा है; पर इस मौके पर जैसा दृश्य दिखाई दिया वैसा पहले न कभी देखा था और न अनुभव ही किया था। कई मिनिटों तक मारे आनन्दके लोग आपेमें न रहे।

स्पेनके साथ अमेरिकाका युद्ध समाप्त हो चुकने पर, शान्तिके उप-लक्ष्यमें अमेरिकाके सभी बड़े बड़े नगरोंमें उत्सव हुए। इसी प्रकारका एक उत्सव शिकागोमें भी हुआ। शिकागो–विश्वविद्यालयके प्रेसिडेंट विलियम हारपर स्वागतकारिणी सभाके सभापति थे। उन्होंने मुझे व्याख्यान देनेके लिए निमंत्रित किया। मैं वहाँ गया और मेरा पहला व्याख्यान १६ अक्टूबर, रविवारके दिन सन्ध्याके समय हुआ। उस

दिन श्रोताओंकी बड़ी भीड़ थी । ऐसी भीड़ मेरा व्याख्यान सुननेके लिए इससे पहले इस प्रदेशमें कभी न हुई थी । उसी दिन दो स्थानों-पर और भी मैंने व्याख्यान दिये ।

पहले व्याख्यानके लिए अनुमान सोलह हज़ार श्रोता उपस्थित थे और सभामन्दिरके बाहर अनुमान इतने ही लोग अन्दर आनेकी चेष्टा कर रहे थे । उस समय भीड़की यह कैफ़ियत थी कि बिना पुलिसकी मद्-दके कोई अन्दर नहीं जा सकता था । उपस्थित सज्जनोंमें प्रेसिडेंट विलियम मैकिनले, उनके मंत्री, परराष्ट्रोंके प्रतिनिधि, इसी युद्धमें नाम पाये हुए जलस्थल-सेनाके अनेक अफ़सर और अन्य बड़े लोग भी थे । मेरे अतिरिक्त रैबी एमिल जी. हर्श, फादर टामस पी. हाउनेट और डाक्टर जान एच. बरोज आदि वक्ताओंके भी भाषण हुए । इस सभाका हाल लिखते हुए शिकागोके 'टाइम्स हेरल्ड' ने मेरे भाषणके विषयमें इस प्रकार लिखा था:—

"उन्होंने (मैंने) कहा कि नीग्रो लोग नष्ट होनेकी अपेक्षा दासत्वको अधिक पसन्द करते हैं । उन्होंने यह स्मरण दिलाया कि काले अमेरिकन दास बने रहें और गोरे अमेरिकन स्वतंत्र हों—इसीके लिए राज्यक्रान्तिके समय क्रिसपस अटक्सने अपने प्राण दिये थे । न्यू आरलीन्समें नीग्रो लोगोंने जैक्सर्नके साथ जैसा व्यवहार किया था, उसका भी उन्होंने उल्लेख किया । जिस समय दक्षिणी गोरे नीग्रो जातिके दासत्वके लिए लड़ रहे थे—उन्हें सदा गुलाम बनाये रखनेके लिए जी तोड़ प्रयत्न कर रहे थे उस समय नीग्रो लोगोंने जिस स्वामिभक्तिके साथ उनके परिवारकी रक्षा की थी, उसका भी उन्होंने बहुत ही हृदयद्रावक चित्र खींचा । पोर्ट हडसन, फ़ोर्ट वागनर और फ़ोर्ट पिलोमें उन्होंने जिस शूरताका परिचय दिया था उसका भी उन्होंने वर्णन किया । क्यूबावासियोंको स्वातंत्र्य दिलानेके लिए नीग्रो लोगोंने अपने ऊपर होनेवाले अन्यायोंको

भूलकर एलकाने और सांशियागो पर जिस वीरताके साथ छापा मारा था उसकी भी उन्होंने खूब प्रशंसा की।

"इन सब बातोंमें वक्ताने यही दिखलाया कि उनकी जातिके लोगोंका व्यवहार बहुत ही उचित और शुद्ध रहा है। इसके बाद उन्होंने अपने वक्तृत्वपूर्ण शब्दोंमें गोरोंसे प्रार्थना की,–'जब आप लोग स्पेनिश-अमेरिकन युद्धमें किये हुए नीग्रो लोगोंके सारे पराक्रम सुन लें, दक्षिणके और उत्तरके सैनिकोंसे आपको इसका पूरा वृत्तान्त मालूम हो जाय, और दासत्वकी प्रथा उठा देनेवालोंसे तथा पहलेके मालिकोंसे उनके विषयमें आद्यन्त जान लें, तब अपने अन्तःकरणमें इस बातको सोचें कि जो जाति इस प्रकार देशके लिए मरनेको–अपने प्राण न्योछावर करनेको तैयार रहती है उसे जीवित रहनेका अवसर देना चाहिए या नहीं।"

स्पेनिश-अमेरिकन युद्धमें योग देनेका अवसर देकर प्रेसिडेंटने हम लोगोंका जो गौरव किया था उसके लिए मैंने अपने व्याख्यानमें उन्हें अनेक धन्यवाद दिये। व्याख्यान सुनकर लोग बहुत ही प्रसन्न हुए। स्टेजके दाहिनी ओर प्रेसिडेंटके बैठनेकी जगह खास तौर पर बनाई गई थी। वहाँ प्रेसिडेंट उपस्थित भी थे। जिस समय उनकी ओर मुड़कर मैंने उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की उस समय सब लोग उठ खड़े हुए और लगातार जयघोष करते हुए रूमाल, टोपियाँ और बेत हिलाने लग गये। स्वयं प्रेसिडेंटने भी खड़े होकर सिर झुकाया। तब तो श्रोताओंके उत्साहका पारावार ही न रहा। उस समय जिस प्रकारसे उन्होंने इस उत्साहको प्रकट किया उसका वर्णन करना असंभव है!

शिकागोके इस व्याख्यानका एक अंश दक्षिणी गोरोंकी समझमें भली भाँति नहीं आया और इसलिए वहाँके समाचारपत्र मुझ पर तरह

तरहके आक्षेप करने लगे, यहाँ तक कि, ‘एज–हेरल्ड’ के सम्पादकने मुझसे उसका खुलासा भी लिख भेजनेकी प्रार्थना की। मैंने उत्तरमें लिख भेजा कि “उत्तरी श्रोताओंके सामने मैं उन बातोंको कभी नहीं कहता, जिन बातोंको मैं दक्षिणी श्रोताओंके सामने कहना अनुचित समझता हूँ। इससे अधिक खुलासेकी मैं कोई आवश्यकता नहीं समझता। यदि मेरी सत्रह वर्षकी सेवाओंसे दक्षिणके निवासी मेरा ठीक ठीक अभिप्राय नहीं समझ सके तो अब मेरे शब्दोंसे क्या ख़ाक समझेंगे? व्यावहारिक और नागरिक वर्णद्वेष नष्ट करनेके संबंधमें एटलांटामें मैंने जो कुछ कहा था उसीकी पुनरावृत्ति मैंने यहाँ शिकागोंमें की थी। अपनी जातिकी सामाजिक अवस्थाके सम्बन्धमें मैं कभी चर्चा नहीं करता।” इसके साथ ही मैंने एटलांटावाले अपने व्याख्यानसे कुछ अंश उद्धृत भी कर दिये। इस उत्तरसे सम्पादक महाशयकी दिलजमई हो गई और दूसरे समाचारपत्र भी चुप हो रहे।

सार्वजानिक संमेलनोंमें तरह तरहके लोग मिलते हैं। साधारणतः लम्बी डाढ़ी, बिखरे हुए बाल, लंबा और छोटासा चेहरा, काला कोट और कोट तथा फतूही पर तेलकी चिकनाहट—इतने लक्षणोंसे युक्त मनुष्यको देखते ही मैं समझ जाता हूँ कि यह कोई विक्षिप्त है। ऐसे लोगोंसे मुझे भय मालूम होता है। शिकागोमें व्याख्यानके बाद एक ऐसा-ही मनुष्य मुझे मिला। उसकी एक एक बात नौ नौ हाथकी थी। वह कहता था कि मैं एक ऐसी तरकीब जानता हूँ जिससे मकई तीन चार साल तक बिना बिगड़े रक्खी रह सकती है और इस तरकीबको दाक्षिणी लोग अमलमें ले आवें तो जात-पाँतका प्रश्न बातकी बातमें हल हो जाय। मैंने उसे यह समझानेका प्रयत्न किया कि इस समय हमारे सामने केवल यही प्रश्न है कि एक वर्षका काम चल जाने लायक धान पैदा कर लेना कैसे सिखालाया जावे; पर उसे सन्तोष न हुआ। एक और

महात्मा ऐसे ही मिले जो इस उद्योगमें लगे थे कि सब महाजनी कोठियाँ और बेंक बन्द हो जायँ। वह मुझे भी इस उद्योगमें मिलाना चाहता था और कहता था कि जब ऐसा हो जायगा तब ही नीग्रो लोग अपने बल पर खड़े हो सकेंगे!

किसी किसी मनुष्यकी यह आदत हुआ करती है कि वह दूसरोंका समय ही नष्ट किया करता है। एक दिन बोस्टनके एक होटलमें मुझे खबर मिली कि कोई आदमी मुझसे मिलने आया है। मैं जल्दी जल्दी अपने कपड़े पहनकर नीचे उतरा तो देखा कि एक निकम्मा आदमी खड़ा है। उसने बड़े शान्त भावसे कहा, "कल मैंने आपका व्याख्यान सुना और बड़ी प्रसन्नता लाभ की। आज फिर इसी लिए आया हूँ कि और भी कुछ सुनकर कृतार्थ होऊँ!"

लोग मुझसे प्रायः पूछते हैं कि आप टस्केजीसे इतनी दूर रहकर भी विद्यालयका प्रबन्ध कैसे करते हैं। बात यह है कि मैं 'जो काम तुम स्वयं कर सकते हो उसे दूसरोंसे मत कराओ' इस सिद्धान्तको नहीं मानता। मेरा तो यह सिद्धान्त रहता है कि 'जो काम दूसरे लोग भली भाँति कर सकते हों उसे तुम स्वयं मत करो।'

टस्केजी-विद्यालयमें एक बड़ा सुभीता यह है कि कोई काम किसी मनुष्यके उपस्थित न रहनेसे रुक नहीं जाता। उसकी व्यवस्था ही ऐसी अच्छी और परिपूर्ण है। इस समय वहाँ सब मिलाकर ८६ कार्यकर्त्ता लोग हैं। इन सबके कामोंका ऐसा हिसाब लगा रक्खा है कि हरेक काम समय पर और भली भाँति होता रहता है। कई शिक्षक बहुत पुराने हैं और विद्यालय पर वैसा ही प्रेम करते हैं जैसा कि मैं करता हूँ। मैं जब विद्यालयमें नहीं रहता तब सत्रह वर्षोंसे कोषाध्यक्षका काम करनेवाले मि० वारन लोगन मेरा काम देख लेते हैं। इस काममें मिसेस वाशिं-

गर्टन और मेरे प्राइवेट सेक्रेटरी मि० स्काट उनकी यथेष्ट सहायता करते हैं। मि० स्काट मेरी चिट्ठियोंको देख लेते हैं और विद्यालय तथा दाक्षिणी नीग्रोभाइयोंके विषयमें आवश्यक बातोंकी सूचना मुझे दे दिया करते हैं। उनके उद्यम, उनका चातुर्य और उनकी काम करनेकी खूबीके लिए मैं उनका बहुत कृतज्ञ हूँ। विद्यालयका प्रबन्ध करनेके लिए एक कार्यकारिणी सभा भी है, जिसका अधिवेशन सप्ताहमें दो बार होता है। इस सभामें विद्यालयके नौ विभागोंके नौ प्रधान रहते हैं। इसके सिवाय एक और सभा है, जो प्रति सप्ताह आयव्ययके विषयमें विचार करती है। इसमें छः सदस्य हैं। महीनेमें एक बार, अथवा आवश्यकता पड़ने पर अनेक बार शिक्षकोंकी एक साधारण सभा हुआ करती है। इन सबके अतिरिक्त धार्मिक और कृषिविभागके शिक्षकोंकी भी कई छोटी मोटी सभायें होती रहती हैं।

मैंने अपने जानने समझनेके लिए ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा है कि मैं कहीं भी रहूँ, मेरे पास विद्यालयके कार्योंकी डेली रिपोर्ट आया करे। इससे मुझे विद्यालयके संबंधमें सब विवरण हरवक्त मालूम रहता है; यहाँतक कि किन किन विद्यार्थियोंने छुट्टी ली है और किस कारणसे ली है, इसका भी मुझे पता रहता है। विद्यालयकी दैनिक आय, गोशालासे आये हुए दूध और मक्खन, विद्यार्थियों और शिक्षकोंको मिलनेवाला भोजन, बाज़ारसे अथवा अपने खेतोंसे लाई हुई तरकारियाँ, आदिका पूरा पूरा ब्योरा इन रिपोर्टोंमें होता है। इस तरहका प्रबन्ध होनेसे सब काम विद्यालयके उद्देश्यके अनुकूल बराबर होते रहते हैं।

इन सब कामोंको करते हुए भी मुझे विश्राम और विहारके लिए समय मिल जाता है। लोग मुझसे पूछते हैं कि तुम यह सब कैसे कर लेते हो। इसका उत्तर देना कठिन है। मेरी यह धारणा हो गई है कि दृढ़ताके साथ प्रयत्न करनेके लिए और निराश कर देनेवाली महान्-

से महान् कठिनाइयोंका सामना करनेके लिए जैसे बलयुक्त शरीरकी और सुदृढ़ मज्जातन्तुओंकी आवश्यकता होती है उनकी प्राप्ति अपने ऊपर और अपने कार्यके ही ऊपर अवलम्बित है । मैंने अपना जीवन ऐसा नियमित कर लिया है कि मुझे सब काम और यथेष्ट विश्राम करनेका पूरा अवकाश मिल जाता है । मैं अपने प्रत्येक दिनका कार्यक्रम बना रखता हूँ । जहाँतक शीघ्र हो सकता है, अपने नित्यके कामसे निपटकर मैं कोई नया काम ढूँढ़ता हूँ और दूसरे दिन उसमें हाथ लगा देता हूँ । कामके अधीन रहकर उसके गुलाम बननेकी अपेक्षा मैं कामको अपने अधीन रखकर उसे ही गुलाम बनाये रहता हूँ । कामको पूर्णतया अपने अधीन रखनेसे शरीर नीरोग रहता, मन प्रफुल्लित होता, हृदयमें बल आता और आत्माको शान्ति मिलती है । मैं यह अपने अनुभवकी बात कहता हूँ । अपना काम प्यारा हो जानेसे एक प्रकारकी अपूर्व शक्ति प्राप्त होती है ।

तड़के अपने काममें लग जानेसे मैं समझ लेता हूँ कि आजका दिन अच्छा बीतेगा और खूब काम होगा; पर इसके साथ ही, न जानी हुई विपत्तियोंके लिए भी मैं तैयार रहता हूँ । मैं यह सुननेके लिए तैयार रहता हूँ कि विद्यालयका कोई भवन गिर पड़ा, या जल गया, या और कोई वारदात हो गई; अथवा किसी समाचारपत्र या सार्वजनिक सभामें मेरे कामोंकी कड़ी आलोचना हुई, इत्यादि ।

गत उन्नीस वर्षोंके लगातार कामसे मैंने केवल एक बार छुट्टी ली है। इसका कारण यह हुआ कि दो वर्ष पूर्व मेरे कुछ मित्रोंने मुझे धन देकर सपत्नीक यूरोप जाकर वहाँ तीन महीने विश्राम करनेके लिए विवश किया था । मेरी रायमें प्रत्येक मनुष्यको अपना शरीर सुदृढ़ रखना चाहिए । मेरी तबियत ज़रा भी ख़राब हो जाती है तो मैं शीघ्र ही उसका इलाज करता हूँ । मुझे यदि कभी मीठी नींद न आई तो मैं समझता हूँ

कि कुछ गड़बड़ है। यदि शरीरके किसी अंगमें कुछ शिथिलता मालूम होती है तो मैं किसी अच्छे डाक्टरके पास जाकर उसकी चिकित्सा कराता हूँ। मैं यह समझता हूँ कि हर समय और हर स्थान पर नींद ले सकनेकी शक्तिसे बहुत लाभ होते हैं। मुझे इतना अभ्यास हो गया है कि जब मैं चाहता हूँ, पंद्रह बीस मिनिट झपकी लेकर शरीरकी सब थकावट दूर कर देता हूँ।

मैं ऊपर कह चुका हूँ कि दिन खतम होनेसे पहले ही मैं अपने कामोंसे निपट लेता हूँ; परन्तु यदि कभी कोई ऐसा बिकट प्रश्न आ पड़ता है कि उसका एकाएक निर्णय करना मैं उचित नहीं समझता; तो उसे दूसरे दिनके लिए छोड़ देता हूँ, अथवा, अपनी स्त्री और अपने मित्रोंसे उसके विषयमें परामर्श करता हूँ।

मुझे अच्छे अच्छे ग्रन्थ पढ़नेके लिए रेलकी सफ़रमें मौका मिलता है। समाचारपत्र पढ़नेका मुझे बड़ा शौक़ है; पर शोक इस बातका है कि मैं बहुतसे समाचारपत्र पढ़ डालता हूँ। उपन्यासोंमें मुझे कुछ लज्ज़त नहीं आती। जिस उपन्यासकी बड़ी तारीफ़ सुननेमें आती है—जिसके बाँचनेके लिए बीसों मित्र सिफ़ारिश करते हैं उसे भी मैं बड़ी कठिनाईसे पढ़ता हूँ। जीवनचरितोंसे मेरा बड़ा प्रेम है; पर कोई जीवनचरित हाथमें लेनेसे पहले मैं यह अच्छी तरह देख लेता हूँ कि वह चरित किसी सत्पुरुष या सद्वस्तुका है या नहीं। यदि नहीं, तो मैं उसे नहीं पढ़ता। अब्राहम लिंकनके विषयमें जितनी पुस्तकें छपी हैं अथवा मासिकोंमें जो जो लेख निकले हैं उन सबको मैंने पढ़ डाला है। साहित्यमें लिंकन ही मेरे प्रधान गुरु हैं।

सालमें छः महीने मुझे टस्केजीसे बाहर रहना पड़ता है। विद्यालयसे दूर रहनेमें हानि तो है ही; पर इसके बदलेमें कुछ लाभ भी अवश्य होजाता है। कार्यमें परिवर्त्तन होनेसे एक प्रकारका विश्राम मिलता है।

रेलगाड़ीमें बैठकर बहुत दूरकी यात्रा करनेसे मेरी तबियत हरी हो जाती है और आराम भी मिलता है। हाँ; कभी कभी वहाँ भी लोग मिलनेके लिए आ जाते हैं और उसी सदाकी रीतिसे कहा करते हैं— "क्या आप ही बुकर टी. वाशिंगटन हैं ? मैं आपसे मिलना चाहता था।" विद्यालयसे दूर रहने पर मुझे छोटी मोटी बातें भूल जाती हैं और मुख्य मुख्य बातों पर विचार करनेका अवसर मिलता है। यह विद्यालयमें रहते हुए हो नहीं सकता। इसके सिवाय मुझे अन्य स्थानोंके शिक्षाप्रबन्ध देखने और अच्छे अच्छे अध्यापकोंसे मिलनेका भी अवसर मिलता है।

सबसे आनन्ददायक विश्राम मुझे उस समय मिलता है, जब टस्केजीमें रातके भोजनके उपरान्त मैं अपनी स्त्री और बच्चोंके साथ बैठकर कहानियाँ कहता और सुनता हूँ। इसी प्रकार रविवारके दिन उनके साथ जंगलोंमें सैर करनेके लिए निकल जाना मुझे बहुत ही प्रिय है। वहाँ प्रकृतिकी शोभा देखनेमें हम लोग मगन हो जाते हैं। वहाँ किसी प्रकारका कष्ट नहीं। स्वच्छ वायु, सुन्दर वृक्ष, घनी झाड़ियाँ नाना प्रकारके फूल, और पुष्पवृक्षोंसे सर्वत्र फैलनेवाली सुगन्धि इन सबसे मोहित होकर हम लोग झिल्लियोंकी तानारीरी और पक्षियोंका मधुर गान सुनकर अपूर्व आनन्द प्राप्त करते हैं। वास्तवमें, यही तो विश्राम है !

मुझे अपने बाग़में भी बड़ा आनन्द मिलता है। कृत्रिम वस्तुओंकी अपेक्षा साक्षात् निसर्गसे ही संलग्न होनेमें मुझे प्रसन्नता होती है। दफ्तरके कामसे निपटकर मैं घंटे आध घंटेके लिए जमीन खोदने, बीज बोने और पौधे रोपनेमें लग जाता हूँ। यह काम करते हुए मेरे अन्तःकरणमें यह भाव उठता है कि प्रकृतिके महाप्राणमें मेरा प्राण मिल रहा है और इससे मुझमें दृश्य संसारके संकटोंसे सामना करनेकी शक्ति आ रही है। मुझे ऐसे मनुष्य पर दया आती है जिसने स्वयं प्रकृतिसे ही आनन्द, बल और स्फूर्ति प्राप्त करनेकी विद्या नहीं सीखी।

विद्यालयमें बहुतसे बत्तख और जानवर पाले जाते हैं; पर उनके सिवाय मैं स्वयं भी बढ़िया बढ़िया सूअर और बत्तख रखता हूँ । सूअर पालनेका मुझे बड़ा शौक है। खेल आदिकी मुझे अधिक परवा नहीं रहती। फुटबालका खेल तो मैंने कभी देखा ही नहीं । ताशके पत्ते भी मैं नहीं पहचान सकता । हाँ अपने लड़कोंके साथ कभी कभी गोटियोंका खेल खेल लेता हूँ । बचपनमें यदि मुझे खेलनेके लिए अवकाश मिलता तो इस समय भी मुझे उससे आनन्द मिलता; पर यह असंभव था !

सोलहवाँ परिच्छेद ।

यूरोप ।

सन् १८९३ में मिसिसिपी-निवासिनी और फिस्क-यूनिवर्सिटीकी ग्रेज्युएट मिस मारगरेट जेम्स मरेके साथ मेरा विवाह हुआ। ये कुछ वर्ष पूर्व यहाँ अध्यापिका होकर आई थीं और विवाहके समय विद्यालयकी 'लेडी प्रिन्सिपल' थीं। विद्यालयके कामोंमें मुझे इनसे बड़ी मदद मिलती है। इन्होंने एक मातृसभा स्थापित की है। इसके अतिरिक्त ये टस्केजीसे आठ मील दूरकी एक बड़ी बसतीके बालकों, स्त्रियों और पुरुषोंको वहाँ जाकर खेतीके विषयमें शिक्षा देती हैं।

इन दो कामोंके अतिरिक्त हमारे विद्यालयमें स्त्रियोंका एक क्लब है। उसकी देखरेख भी मिसेस वाशिंगटन पर ही है। इस क्लबमें विद्यालय तथा आसपासकी स्त्रियाँ महीनेमें दो बार एकत्रित होकर कुछ महत्त्वके विषयों पर विचार करती हैं। इन सबके आतिरिक्त, मिसेस वाशिंगटन दक्षिणकी नीग्रो-स्त्रियोंके क्लबकी तथा उनके राष्ट्रीय क्लबके कार्यकारी मंडलकी चेयरमेन हैं।

मेरी सबसे बड़ी लड़की पोर्शियाने कपड़े सीनेका काम भली भाँति सीख लिया है। बाजा बजानेमें तो वह बहुत ही प्रवीण है। वह टस्केजी—विद्यालयमें पढ़ती है और अपना कुछ समय पढ़ानेके काममें भी खर्च करती है।

मेरे मझले लड़के बेकर टेलिफेरोने बाल्यावस्थासे ही ईंटें बनानेका काम सीखा है और अब वह उस काममें बहुत निपुण हो गया है। इस कामसे उसे बहुत ही प्रेम है। वह कहा करता है कि मैं इष्टिकाकार

(कुंभार) बनूँगा ! गत वर्षकी गरमीमें उसने मुझे एक पत्र लिखा था जिसको पढ़कर मुझे बहुत सन्तोष हुआ। घरसे बिदा होते समय मैं उससे कह आया था कि प्रतिदिन तुम अपना आधा समय अपने काममें लगाया करो और आधा जिस तरह चाहो, बिताओ। दो सप्ताह उपरान्त मुझे उसका वह पत्र मिला जिसकी नकल नीचे देता हूँ:—

"**टस्केजी, अलबामा।**

प्रिय पिताजी,

आपने यहाँसे चलते समय कहा था कि तुम प्रतिदिन अपना आधा समय अपने काममें लगाया करो; पर मुझे अपना काम इतना पसन्द है कि मैं अपना सारा समय उसीमें लगाना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं धन एकत्र करनेका भी उद्योग कर रहा हूँ; क्योंकि आगे चल कर जब मैं दूसरे विद्यालयमें पढ़ने जाऊँगा तब वहाँ मुझे अपना खर्च चलानेके लिए धनकी आवश्यकता होगी।

आपका पुत्र:—

बेकर।"

मेरा सबसे छोटा लड़का अर्नेस्ट डेविड्सन वाशिंगटन वैद्य बननेकी इच्छा प्रगट करता है। विद्यालयमें पढ़ने और काम करनेके अतिरिक्त वह वहाँके वैद्यक-कार्यालयका भी कुछ कुछ काम कर लेता है।

मुझे अपना घर बड़ा प्यारा है। पर मेरा अधिकांश समय सार्वजनिक कामोंमें उसके बाहर ही खर्च हो जाता है। इससे मुझे बहुत बुरा मालूम होता है। संसारके अच्छेसे अच्छे स्थानकी अपेक्षा मुझे अपने कुटुम्बमें रहना बहुत पसन्द है। जिन लोगोंको नित्य अपने घर आकर विश्राम करनेका अवसर मिलता है उनसे मैं हसद करता हूँ। परन्तु कभी कभी मुझे यह भी खयाल होता है कि ऐसे लोग शायद

इस सुखको कोई सुख नहीं समझते। लोगोंकी भीड़भाड़, उनसे हाथ मिलाना, सफ़र करना आदि बातोंसे, थोड़े ही समयके लिए क्यों न हो, फ़ुरसत मिलने पर मुझे घर आनेमें बड़ा ही आनन्द प्राप्त होता है! मैं समझता हूँ कि थकावट दूर करनेके लिए सबसे अच्छी ओषधि यही है।

मेरी प्रसन्नताका दूसरा स्थान प्रार्थनामान्दिर है, जहाँ नित्य रातको साढ़े आठ बजे सब विद्यार्थी और अध्यापक सपरिवार एकत्र होते हैं। इन ग्यारह बारह सौ स्त्रियों और पुरुषोंको अपने सामने परमेश्वरकी प्रार्थना करते हुए देखनेसे मनमें बड़े ही उच्च भाव उठते हैं। उस समय पर यह विचार उठता है कि इन सब स्त्री-पुरुषोंके जीवनको अधिक श्रेष्ठ और उपयोगी बनानेमें हमारे हाथसे कुछ सहायता हो रही है। क्या इससे भी बढ़कर अभिमानका और गौरवका और कोई काम हो सकता है?

१८९९ के वसन्त ऋतुमें एक बड़ी ही आश्चर्यजनक घटना हुई। बोस्टन नगरकी कुछ भद्र महिलाओंने टस्केजी-विद्यालयकी सहायताके लिए एक सभा की जिसमें दोनों जातियोंके मुख्य मुख्य लोग सम्मिलित हुए थे। बिशप लारेन्स सभापति थे। मेरा भी व्याख्यान हुआ। इसके अतिरिक्त मि० डंबारने कुछ कवितायें और मि० डुबाइसने कुछ वर्णनात्मक लेख पढ़ सुनाये। सभामें आये हुए कुछ लोगोंको मालूम हुआ कि मेरा शरीर बहुत शिथिल होता जाता है। इससे सभा विसर्जित होने पर एक महिलाने मुझसे पूछा कि आप कभी यूरोप गये हैं? मैंने कहा—नहीं। उसने पूछा क्या आप वहाँ जाना चाहते हैं? मैंने कहा—नहीं, यह बात मेरी शक्तिसे बाहर है। इस संवादको मैं थोड़ी देर बाद बिलकुल भूल गया। पीछे मुझे यह खबर मिली कि मि० गारिसन आदि मेरे मित्रोंने मुझे और मेरी स्त्रीको तीन चार

मासके लिए यूरोप भेजनेके विचारसे कुछ धनसंग्रह किया है। उन्होंने बहुत ज़ोर देकर मुझे वहाँ जानेके लिए आग्रह किया। एक वर्ष पूर्व ही मि० गारिसनने मुझसे गरमीके दिनोंमें यूरोप जानेका वचन लेना चाहा था। उस समय मुझे यह बात इतनी असंभव मालूम होती थी कि मैंने उसकी तरफ़ कोई ध्यान ही नहीं दिया था; पर अबकी बार मि० गारिसनने कुछ महिलाओंको इस 'साज़िश' में शामिल करके मेरे जानेका पूरा प्रबन्ध कर रक्खा था, यहाँतक कि मेरे जानेका मार्ग और मैं किस स्टीमरसे जाऊँगा यह भी निश्चित हो चुका था।

ये सब बातें ऐसी कारवाई, सफ़ाई और फुरतीसे हुई कि मैं जानेके लिए विवश हो गया। मैं अठारह वर्षसे लगातार टस्केजी–विद्यालयकी सेवामें लग रहा था। इसी सेवाकार्यमें मेरा जीवन समाप्त हो जाय, इसके अतिरिक्त मेरे मनमें और कोई विचार ही न आया था। दिनों-दिन विद्यालयके खर्चका बोझ मुझ ही पर बढ़ता जाता था, इसलिए मैंने अपने बोस्टनके मित्रोंसे निवेदन किया कि—"आपकी उदारता और दूरदर्शिताके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ; पर मेरी अनुपस्थितिमें विद्यालयकी आर्थिक दशा बिगड़ जायगी, इसलिए मैं यूरोप न जा सकूँगा।" इस पर उन्होंने लिख भेजा कि "मि० हिगिनसन तथा अन्य कई सज्जन, जो अपना नाम प्रकट करना नहीं चाहते, आपकी अनुपस्थितिमें विद्यालयकी यथेष्ट सहायता करनेके लिए बहुत बड़ी रकम एकत्र कर रहे हैं।" यह उत्तर पढ़कर मुझे चुप हो जाना पड़ा। अब मेरे बचनेकी और कोई सूरत न रही!

इतना सब कुछ होने पर भी यूरोपयात्राका विचार मुझे स्वप्नवत् ही मालूम होता था। मैं जन्मसे ही घोर दासत्वमें पला था। बचपनमें मुझे सोनेकी जगह नहीं थी, खानेको पूरा भोजन नहीं मिलता था, वस्त्र वग़ैरहकी भी ऐसी ही दुर्दशा थी। भोजनके लिए मेज़ तो अब

मिलने लगी है। मैं समझता था कि संसारके सुख केवल गोरोंके लिए हैं—हम लोगोंके लिए नहीं ! यूरोप, लंदन और पेरिसको मैं स्वर्ग ही समझता था। ऐसी अवस्थामें मुझे यूरोपकी यात्राके सौभाग्यको स्वप्न जैसा समझना स्वाभाविक ही था।

इसके अतिरिक्त और दो विचार मुझे विकल कर रहे थे। मैं समझता था कि लोग जब मेरी इस यात्राका समाचार सुनेंगे तब बिना कुछ जाने बूझे कहने लगेंगे कि वाशिंगटनको अब दिमाग़ हो गया है और अब वह बनने लगा है। बचपनमें मैं अपने जातिभाइयोंके विषयमें सुना करता था कि यदि उन्हें कुछ सफलता होगी तो वे अपने-को बहुत श्रेष्ठ समझने लगेंगे और धनाढ्योंका अनुकरण करनेसे उनका मस्तक फिर जायगा। अब मुझे उन बातोंका स्मरण हुआ। इसके अतिरिक्त मैं यह भी समझता था कि अपना काम छोड़कर मैं यूरोपमें सुखसे न रह सकूँगा। बहुत सा काम अभी करना था और, और और लोग उसमें लगे हुए थे। ऐसी अवस्थामें सिर्फ़ मैं ही काम छोड़कर चला जाऊँ यह मुझे अच्छा न मालूम होता था। बचपनसे मेरा सारा समय काम ही करते बीता था और इसलिए मैं यह नहीं समझ सकता था कि अब ये तीन चार महीने बिना कामके कैसे बिता सकूँगा।

यही कठिनाई मिसेस वाशिंगटनके सामने भी थी; परन्तु मुझे विश्रा-मकी बहुत ज़रूरत है, इस ख़यालसे उन्होंने यूरोप चलना स्वीकार कर लिया। उस वक्त नीग्रोजातिके जीवनसम्बन्धी कुछ प्रश्नों पर बड़ा आन्दोलन हो रहा था। उसे भी हम दोनोंने छोड़ दिया और बोस्टनमें अपने मित्रोंसे कहला भेजा कि हम लोग जानेके लिए तैयार हैं। उन्होंने भी शीघ्र ही प्रस्थान करनेके लिए आग्रह किया और तब यह तै हो गया कि १० मई के दिन हम दोनों यूरोपके लिए प्रस्थान करेंगे। मेरे परम मित्र मि० गारिसनने मेरी यात्राका बहुत ही अच्छा प्रबन्ध कर

दिया और उन्होंने तथा उनके मित्रोंने मुझे इंग्लेंड और फ्रान्सके अनेक —सज्जनोंके नाम परिचय-पत्र भी दे दिये। टस्केजीमें सब लोगोंसे मिल कर ता० ९ को हम दोनों न्यूयार्क नगरमें आये। यहाँ मेरी कन्या पोर्शिया जो उस समय फ्रामिंगहममें विद्याभ्यास करती थी, हम दोनोंसे मिलने आई। मेरे सेक्रेटरी मि० स्काट और अन्य कई मित्र न्यूयार्क चले आये थे। जहाज़ पर सवार होनेसे कुछ ही पहले एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना हुई। दो महिलाओंका एक पत्र मिला जिसमें उन्होंने टस्केजीमें बालिकाओंकी शिल्पशाखाके लिए भवन बनवानेके निमित्त यथेष्ट धन देना स्वीकार किया था!

रेड स्टार लाइन कंपनीके फ्रीसलेंड नामक जहाज़ पर हम लोग सवार हुए। यह जहाज़ बहुत ही सुन्दर और सुडौल था। मैंने अब तक महासागरमें चलनेवाला कोई भी जहाज़ न देखा था। जहाज़ पर सवार होते ही मेरे मनमें जो विचार उठे उनका वर्णन करना असंभव है। मुझे उस समय बड़ी प्रसन्नता हुई और कुछ भय भी हुआ। जहाज़के कप्तान और अन्य कर्मचारी हम दोनोंको केवल जानते ही न थे, बल्कि हमारी राह देख रहे थे। उन्होंने हम दोनोंका स्वागत किया। इससे हमें आश्चर्य हुआ। जहाज़ पर और भी कई जान पहचानके सज्जन बैठे हुए थे। मुझे यह सन्देह हो रहा था कि जहाज़के कुछ यात्री हमारे साथ अच्छा व्यवहार न करेंगे। मैंने सुन रक्खा था कि अमेरिकन जहाज़ों पर हमारे जातिभाइयोंके साथ अनेक बार बड़े बुरे व्यवहार किये गये हैं; परन्तु हम दोनोंके साथ कप्तान और अदनेसे अदने नौकरने भी बड़ा ही अच्छा सुलूक किया। वहाँ कुछ दक्षिणी गोरे भी थे; वे भी बड़ी सुजनताके साथ हम दोनोंसे पेश आये।

जब जहाज़का लंगर उठा तब, लगातार अठारह वर्षसे मेरे ऊपर जिस चिन्ता और जिम्मेदारीका बोझा था, वह हर मिनिट हलका होने

लगा। अठारह वर्षोंके बाद यह पहला ही अवसर था जब मेरी चिन्ता किसी कद्र घटी हुई मालूम हुई। मुझे इस समय जो प्रसन्नता हुई उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। अब मेरा यूरोप देखनेका हौसला भी बढ़ा; पर इस समय भी मुझे यह विश्वास न होता था कि मैं यूरोपकी यात्रा करने जा रहा हूँ!

मिस्टर गारिसनने हम दोनोंके लिए जहाज़में एक बहुत ही अच्छे कमरेका प्रबन्ध कर दिया था। जब दो तीन दिन जहाज़ पर बीत गये तब मुझे नींद खूब आने लगी। यहाँ तक नींद बढ़ी कि मैं दिनरातके चौबीस घंटोंमें पंद्रह घंटे सोने लगा! उस वक्त मुझे विश्वास हुआ कि सचमुच काम करते करते मैं बहुत थक गया था। यूरोप पहुँचनेके एक मास बाद तक मैं इसी प्रकार प्रति दिन पंद्रह घंटे सोता रहा। अब प्रातःकाल उठकर मुझे इस बातकी कोई चिन्ता नहीं रहती थी कि आज किसीसे भेंट करनी है, या रेल पर जाना है अथवा कहीं कोई व्याख्यान देना है। इससे मेरी तबियतको बड़ा आराम मिलता था। अमेरिकामें प्रवास करते समय मुझे कई बार एक ही रातमें तीन भिन्न भिन्न स्थानों पर सोना पड़ता था! कहाँ वह दौड़धूप, और कहाँ यह आराम!

रविवारके दिन कप्तानने मुझसे धर्मोपदेश करनेकी प्रार्थना की; पर मैं धर्मोपदेशक नहीं था, इस लिए उसकी यह प्रार्थना मैंने स्वीकार नहीं की। तथापि कई यात्रियोंके आग्रह करने पर मैंने एक दिन भोजनोत्तर एक व्याख्यान दिया। दस दिनकी सुखयात्राके बाद हम लोग बेलजियमके सुप्रसिद्ध एंटवर्प नगरमें उतरे।

जिस होटलमें हम दोनों ठहरे वह शहरके चौकके बिलकुल सामने था। दूसरे दिन इस नगरमें एक बड़ा उत्सव हुआ। इस अवसर पर नगरका दृश्य देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ कुछ दिन रहनेके पश्चात् मुझे कुछ सज्जनोंने हालेंडमें सैर करनेके लिए निमंत्रित किया। इस सैरसे हम

दोनोंको बड़ी प्रसन्नता हुई। इस अवसर पर देहातमें रहनेवाले लोगोंकी वास्तविक दशा भी हम दोनोंने देखी। सैर करते करते हम दोनों राटरडमतक चले गये और फिर वहाँसे लौट कर हेगमें आये जहाँ उस समय शान्तिमहासभाका (Peace Conference) आधिवेशन हो रहा था। वहाँ उपस्थित अमेरिकन प्रतिनिधियोंने हम दोनोंका अच्छा स्वागत किया।

हालेंडकी कृषिविषयक उन्नतिका और पशुओंकी उत्कृष्टताका मुझ पर बड़ा अच्छा संस्कार हुआ। जमीनके एक ज़रासे टुकड़ेसे कितना अनाज पैदा किया जा सकता है, इसका अन्दाज़ मुझे इसी देशमें आकर हुआ! मैंने यहाँ यह देखा कि लोग जमीनका एक तिनकेके बराबर हिस्सा भी बेकाम नहीं रहने देते। हरे भरे घासके मैदानोंमें एक साथ तीन तीन चार चार सौ गौओंको चरते हुए देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

हालेंडसे हम दोनों बेलजियम गये। वहाँ ब्रुसेल्समें ठहरे और फिर वाटरलूका युद्धक्षेत्र देखकर बेलजियमसे सीधे पेरिसको गये। वहाँ मि० थिओडर स्टनटनने हमारे रहनेका प्रबन्ध कर दिया। शीघ्र ही यूनि-वार्सिटी क्लबने हम दोनोंको भोजनके लिए निमंत्रित किया। भोजमें भूतपूर्व प्रेसिडेंट बेंजामिन हैरिसन और आर्कबिशप आयर्लैंड भी सम्मिलित हुए थे। अमेरिकाके प्रतिनिधि जनरल होरेस पोर्टर उस अवसर पर अध्यक्ष थे। वहाँ मैंने एक छोटीसी वक्तृता दी जिससे लोग बड़े प्रसन्न हुए। जनरल साहबने टस्केजी-विद्यालयकी और मेरी बहुत प्रशंसा की। भोज-वक्तृताके बाद मेरे पास व्याख्यान देनेके लिए कई निमंत्रण आये; पर अपने शरीररक्षाके उद्देश्यमें बाधा पड़नेकी संभावना जानकर मैंने उन निमंत्रणोंको अस्वीकार कर दिया। तो भी रविवारके दिन अमेरिकन गिरजेमें मैंने व्याख्यान देना स्वीकार कर लिया। उस अवसर पर जनरल हैरिसन, जनरल पोर्टर तथा अन्य

कई बड़े बड़े लोग उपस्थित थे। इसके अनन्तर जनरल पोर्टरके यहाँ एक स्वागत-समारंभमें भी मैं सम्मिलित हुआ। यहाँ अमेरिकाके सुप्रीम कोर्टके दो जजोंसे मेरी भेंट हुई। पेरिसमें रहते समय अमेरिकन प्रतिनिधि, उनकी पत्नी और अन्य अमेरिकन सज्जनोंने हम दोनोंसे बड़े स्नेहका व्यवहार रक्खा।

पेरिसमें ही मेरा सुप्रसिद्ध अमेरिकन नीग्रो-चित्रकार मि. टैनरसे विशेष परिचय हुआ। अमेरिकामें इनसे भेंट हुई थी, पर इतना परिचय नहीं था। पेरिसमें इनके चित्रोंको लोग बड़े आदर और उत्सुकतासे देखते हैं। इनका बनाया हुआ एक चित्र देखनेके लिए हम दोनों लक्ष्मवर्गके राजप्रासादमें गये। वहाँके अमेरिकनोंको यह विश्वास न होता था कि किसी नीग्रोकी यहाँतक कदर हो सकती है! जब उन्होंने खुद जाकर उस चित्रको देखा तब उन्हें विश्वास हुआ। मैं अब तक पुकार पुकार कर अपनी जातिको और अपने विद्यार्थियोंको जो तत्त्व बतला रहा था उस तत्त्वकी, मि. टैनरके परिचयसे यथेष्ट पुष्टि हुई। वह तत्त्व यही था कि काम कोई हो—कितना ही मामूली क्यों न हो—उसमें जो मनुष्य कौशल लाभ करता है—औरोंसे अधिक अच्छा करके दिखाता है वह फिर किसी वर्णका ही क्यों न हो उसकी परख और कदर होती है। मेरी जातिके लोग एक मामूली कामको भी जितने ही अच्छे ढंगसे करना सीख लेंगे उतनी ही उनकी कीर्ति होगी। मुझे जब हैम्पटनमें पहले पहल कमरा साफ़ करनेका काम दिया गया था तब मैंने इसी तत्त्वसे प्रेरित होकर उसमें सफलता लाभ की थी। मैंने किसी कदर यह भी समझ लिया था कि मेरा भावी जीवन इसी झाड़ू देने पर ही निर्भर है, और इस लिए मैंने उस कामको इस खुबीके साथ करना निश्चय किया था कि उसमें कोई दोष न रह जाय। अस्तु। राजप्रासादके चित्रकी ओर देखते हुए मि०

टैनरके विषयमें किसीने यह पूछताँछ नहीं कि यह मनुष्य जर्मन है या फ्रेंच है, या काला नीग्रो है ! उनके विषयमें लोग इतना ही जानते थे कि वे एक कुशल चित्रकार हैं; किसीके मनमें उनके रूप-रंगका प्रश्न ही नहीं उठता था। बात यह है कि संसार अच्छी वस्तुओंको देखता है, उन वस्तुओंके बनानेवालोंकी जाति, रंग या इतिहास नहीं पूछता।

मैं समझता हूँ कि मेरी जातिका भविष्य केवल इसी प्रश्न पर निर्भर है कि वह अपने स्थानके तथा प्रान्तके समाजका सुख और वैभव बढ़ाती है या नहीं। जिस स्थान पर हम लोग निवास करते हैं, उस स्थानके लोगोंकी साम्पत्तिक, मानसिक और नैतिक उन्नतिमें यदि हम सहायता करते हैं तो उसका योग्य पुरस्कार हमें अवश्य मिलेगा। मानवी सृष्टिका यह अटल सिद्धान्त है।

फ्रेंच लोग कार्य करना और सुख लाभ करना बहुत पसन्द करते हैं। मेरे जातिभाई इस विषयमें अभी फ्रेंचोंसे पीछे हैं; परन्तु नीतिमत्तामें फ्रेंच मेरे जातिभाईयोंसे श्रेष्ठ नहीं। उन्होंने तीव्र जीवनसंग्राम और स्पर्धाके कारण विशेष अध्यवसायके साथ काम करना और हिसाबसे रहना सीख लिया है। कुछ कालमें मेरी जाति भी इतना कर लेगी। सचाई और उदारता नीग्रो जातिसे फ्रेंच जातिमें अधिक नहीं दिखाई दी। गूंगे जानवरोंसे स्नेह और ममता करनेमें मेरी जाति उनसे बहुत आगे बढ़ी हुई है। फ्रान्सके प्रवाससे नीग्रो जातिके अच्छे भविष्यके विषयमें मेरा विश्वास और भी दृढ़ हो गया।

पेरिससे चलकर जुलाईके आरंभमें हम दोनों लन्दन पहुँचे। उस समय पार्लियामेंटके अधिवेशन हो रहे थे। वहाँ पहुँचते ही मेरे पास जगह जगहसे आमंत्रण आने लगे; पर मुझे विश्राम करना था, इस लिए मैंने बहुतोंको अस्वीकार कर दिया; किन्तु अपने दो एक मित्रोंके अनुरोध करने पर मैंने

ऐक्सेक्स हालमें एक दिन व्याख्यान दिया । आनरेबल जोसेफ शोट सभापति थे । सभामें मि. ब्राइस तथा पार्लियामेंटके अन्य कई सदस्य सम्मिलित हुए थे। यहाँ मैंने जो व्याख्यान दिया वह इंग्लैंड तथा अमेरिकाके कई पत्रोंमें प्रकाशित हुआ । इस अवसर पर इंग्लैंडके कई सुविख्यात पुरुषोंसे मेरा परिचय हुआ । मार्क ट्वेनसे भी मेरी पहली भेंट यहीं हुई ।

रिचर्ड काबडेन नामक अँगरेज़ राजनीतिज्ञकी पुत्री मिसेस टी. फिशर अनविनके यहाँ हम दोनों कई बार मेहमान रहे । मिस्टर और मिसेस अनविनने हमें सुखी करनेमें कोई बात उठा न रक्खी । इसके बाद एक सप्ताह तक जान ब्राइटकी पुत्री मिसेस क्लार्कने हमारा आतिथि-संस्कार किया । मिस्टर और मिसेस क्लार्कने एक वर्ष बाद हम लोगोंको टस्केजीमें आकर दर्शन दिये । बरमिंगहममें हम दोनों मि० जोसेफ स्टर्जके यहाँ ठहरे थे । इनके पिता गुलामीको मेटनेवालोंमें अगुए थे । और भी ऐसे कई सज्जनोंसे भेंट हुई जो गुलामीके शत्रु थे । इन लोगोंने जिस सहानुभूतिके साथ गुलामोंको स्वतंत्रता दिलानेमें सहायता की थी, उसका अनुमान भी मैं इंग्लैंड आनेसे पहले न कर सका था ।

ब्रिस्टल नगरके लिबरल क्लबमें हम दोनोंने व्याख्यान दिये । अन्धोंके रायल कालेजमें उपाधि दानके अवसरपर मेरा मुख्य व्याख्यान हुआ । यह उत्सव क्रिस्टल पेलेसमें (शीश महलमें) हुआ था और वेस्टमिनिस्टरके स्वर्गीय ड्यूकने सभापतिका आसन ग्रहण किया था । इंग्लैंडमें ये सबसे धनी माने जाते थे । ड्यूक, उनकी पत्नी और कन्याको मेरा भाषण बहुत ही प्रिय हुआ और उन्होंने मुझे हार्दिक धन्यवाद दिये । लेडी अबरडानकी कृपासे हम दोनोंको और अनेक स्त्री-पुरुषोंके साथ महारानी विक्टोरियासे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ और इसके बाद हमें महारानीकी ओरसे चाय पीनेके लिए निमंत्रण भी मिला । इस समय मिस सुसान बी. एन्टनीसे भी भेंट हुई ।

एक ही समयमें दो अद्वितीय स्त्रियोंसे भेंट करके मैंने अपना बड़ा सौभाग्य समझा।

हम दोनों पार्लियामेंटकी कामन्स सभामें कई बार गये। वहाँ सर हेनरी एम. स्टानलेसे भेंट हुई और उनसे बहुत देरतक आफ्रिका और आफ्रिकाका अमेरिकन नीग्रो लोगोंसे क्या सम्बन्ध है, इस विषयमें बातचीत होती रही। इस बातचीतसे मेरा यह विश्वास हुआ कि यदि अमेरिकन नीग्रो आफ्रिकामें जाकर रहें तो वहाँ उनकी कोई उन्नति न होगी।

हम दोनों अनेक बार देहातोंमें जाकर अँगरेज़ोंके यहाँ मेहमान रहे हैं। अँगरेज़ोंकी रहनसहनका ठीक पता यहीं लगता है। मैंने यहाँ देखा कि कमसे कम एक बातमें अँगरेज़ लोग अमेरिकनोंसे बढ़े हुए हैं। अँगरेज़ लोग अपने जीवनको सुखी बनानेका ढंग बहुत अच्छी तरहसे जानते हैं। उनकी रहन-सहन और चालढालमें पूर्ण उन्नति हो चुकी है। उनका प्रत्येक कार्य ठीक समय पर होता है। नौकर चाकर अपने मालिक और मालकिनकी बड़ी इज्ज़त करते हैं। अँगरेज़ नौकर ही बना रहनेकी इच्छा करता है और इस लिए वह अपने काममें इतना पटु होता है कि कोई अमेरिकन नौकर उसकी बराबरी नहीं कर सकता; परन्तु अमेरिकामें नौकर खुद मालिक बननेकी इच्छा रखता है। इन दोनोंमें कौन अच्छा है सो कहनेका साहस मैं नहीं करना चाहता।

इंग्लेंडमें एक और बात बहुत अच्छी देखी। वहाँ लोग कानूनके बड़े पाबन्द हैं। हर कामको कायदेके साथ और पूरी तौरसे करते हैं। अँगरेज़ लोग भोजनमें बहुत अधिक समय लगाते हैं। परन्तु दौड़धूप करनेवाले सुदृढ़ अमेरिकन जितना काम करते हैं उतना ये कर सकते हैं या नहीं, इस विषयमें मुझे सन्देह है।

इंग्लेंडके अमीर उमरावोंके विषयमें मेरा ख़याल पहलेकी अपेक्षा बहुत अच्छा हो गया। इससे पहले मैं यह नहीं जानता था कि सर्वसाधारण

उन्हें किस आदर और प्रेमकी दृष्टिसे देखते हैं और परोपकारके तथा दूसरे अच्छे कामोंमें वे अपना कितना समय और धन खर्च करते हैं । पहले इस बातकी मुझे कल्पना भी न थी कि वे इन कामोंको बहुत ही जी लगाकर करते हैं । मैं यह समझता था कि ये लोग मौज उड़ाते हैं और धन बरबाद करते हैं ।

अँगरेज़ श्रोताओंके सामने व्याख्यान देकर उन पर प्रभाव डालनेमें मुझे बड़ी कठिनाई हुई । साधारणतः अँगरेज़ लोग इतने गंभीर और विचारशील होते हैं कि मेरे मुँहसे जिस बातको या चुटकिलेको सुनकर अमेरिकन लोग हँस पड़ते हैं उसको सुनकर अँगरेज़ोंके चेहरों पर मुस्कराहट भी नहीं आती ।

अँगरेज़ लोग जिनसे एक बार मित्रता कर लेते हैं उन्हें वे अपने हृदयसे दूर नहीं करते । ऐसे मित्र अन्यत्र कहीं न होंगे । लंदनके स्टैफर्ड-हाउसमें सदरलेंडके ड्यूक और डचेसने हम दोनोंको एक स्वागत-समारम्भमें बुलाया था । सदरलेंडकी डचेस इंग्लेंडकी स्त्रियोंमें सबसे सुन्दर हैं । इस समारंभमें अनुमान तीन सौ लोग उपस्थित थे । सन्ध्याके समय इतने बड़े समूहमें डचेसने हम दोनोंको दो बार ढूँढ़ निकाला, अच्छी तरह बातचीत की, और टस्केजी जाने पर वहाँका पूरा पूरा हाल लिख भेजनेके लिए कहा । मैंने भी उनके कथनानुसार वहाँसे पूरा हाल लिख भेजा । बड़े दिनों पर उन्होंने अपने हस्ताक्षरके साथ अपना एक फोटो भेज दिया । अब बराबर चिट्ठीपत्री हुआ करती है । मैं डचेसको अपने सच्चे मित्रोंमेंसे ही एक समझता हूँ ।

तीन महीने यूरोपमें भ्रमणकर हम दोनों सेंट लुई नामक जहाज़ पर सवार होकर साउथम्पटनसे रवाना हुए । इस जहाज़ पर लुई नगरके अधिवासियोंका दिया हुआ एक सुन्दर पुस्तकालय था । इस पुस्तकालयमें मुझे फ्रेडरिक डगलसका जीवनचरित मिला । उसे मैंने पढ़ना

आरंभ कर दिया। इस पुस्तकमें मि० डगलसने अपनी पहली और दूसरी इंग्लैंड-यात्राके समय जहाज़ पर उनके साथ जैसा सुलूक हुआ था उसका वर्णन किया था। यह वर्णन मैंने ध्यान देकर पढ़ा। उन्होंने लिखा था कि जहाज़के कमरेमें आनेकी मुझे मनाई की गई थी और इसलिए मुझे डेक पर ही रहना पड़ता था। जिस समय यह वर्णन मैं पढ़ चुका उसी समय जहाज़के कुछ यात्री (स्त्री-पुरुष दोनों) मेरे पास आये और सन्ध्यासमय होनेवाले उत्सव पर भाषण करनेके लिए कहने लगे! यह दशा होते हुए भी कुछ लोग यह कहते ही जा रहे हैं कि अमेरिकामें वर्णद्वेषकी मात्रा घट नहीं रही है! इस उत्सवमें न्यूयार्कके वर्त्तमान गवर्नर आनरेबल बेंजामिन बी. ओडेल सभापति हुए थे। सब लोगोंने बड़े ध्यानसे मेरा व्याख्यान सुना। कुछ यात्रियोंने टस्केजी–विद्यालयके विद्यार्थियोंको छात्रवृत्तियाँ दिलानेके लिए चन्दा भी इकट्ठा किया।

जब मैं पेरिसमें था तब वेस्टवर्जीनियाके निवासियोंकी ओरसे तथा जिस नगरमें मेरा बचपन बीता है उस नगरके निवासियोंकी ओरसे निम्नलिखित आमंत्रण पत्र पाकर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ:—

"चार्लस्टन, १६ मई १८९९.

प्रोफ़ेसर बुकर टी. वाशिंगटन, पेरिस–फ्रान्स।

प्रिय महाशय!

पश्चिम वर्जीनियाके अनेक सुयोग्य निवासियोंने आपके कार्य और योग्यताकी बहुत प्रशंसा की है, और उनकी यह इच्छा है कि यूरोपसे लौटने पर आप यहाँ पधारकर अपने वचनामृतसे उन्हें तृप्त करनेकी कृपा करें। हम लोग इस विचारसे पूर्ण सहमत हैं और चार्लस्टन निवासियोंकी ओरसे आपको यहाँ आनेकी प्रार्थना करते हैं। आपने अपने कार्योंसे हम लोगोंका गौरव बढ़ाया है और हमें

आशा है कि आप यहाँ पधारकर हम लोगोंको आपका सम्मान करनेका अवसर दे कृतार्थ करेंगे। भवदीय

डबल्यू. हरमन स्मिथ।"

इस पत्रके साथ एक और भी आमंत्रण पत्र था जिस पर चार्लस्टनके डेली गजट, डेली मेल ट्रिब्यून, जी. डब्ल्यू. एटकिनसन गबर्नर तथा कई वेंकोंके डायरेक्टरों तथा बड़े बड़े अधिकारियोंके हस्ताक्षर थे।

जिस शहरमें मेरा बचपन बीता और जिस शहरसे मैं अज्ञान और अनाथ अवस्थामें विद्यार्जनके लिए बाहर निकला उस शहरकी सिटी-कौंसिल, सरकारी अधिकारियों और दोनों जातियोंके अगुओंसे यह न्योता पाकर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ और मेरी बुद्धि चकरा गई।

मैंने दोनों आमंत्रण स्वीकार कर लिये और निश्चित समय पर मैं चार्लस्टन जा पहुँचा। रेलवे स्टेशनपर भूतपूर्व गवर्नर मि० मैक कारकल तथा अन्य कई बड़े बड़े लोगोंने मेरा स्वागत किया। सभा हुई और उसमें गवर्नर आनरेबल मि० एटकिनसनने सभापतिका आसन ग्रहण किया। स्वागतकी वक्तृता मि० मैक कारकलने दी। नीग्रो लोग भी इस स्वागत-समारंभमें सम्मिलित थे। सभास्थान दोनों जातियोंके लोगोंसे ठसाठस भर गया था। इस समय वे गोरे लोग भी उपस्थित थे जिनके यहाँ बचपनमें मैं काम कर चुका था। दूसरे दिन गवर्नर और उनकी पत्नी मिसेस एटकिनसनने राजप्रासादमें मेरा स्वागत किया।

इसके कुछ दिन उपरान्त, जार्जिया-राज्यान्तर्गत एटलांटाके नीग्रो लोगोंने मेरा स्वागत किया जिस समय उस राज्यके गवर्नर सभापति थे। न्यु आरलीन्समें भी मेरा स्वागत हुआ और उस अवसर पर वहाँके मेयर सभापति थे। और भी कितने ही स्थानोंसे मेरे पास निमंत्रण आये; पर मैं उन्हें स्वीकार न कर सका।

सत्रहवाँ परिच्छेद।

अन्तिम शब्द।

यूरोप जानेसे पहले मेरे जीवनमें कई आश्चर्यकारक घटनायें हुईं। यदि सच पूछिए तो मेरा जीवन आश्चर्यपूर्ण घटनाओंका भंडार है। मेरा विश्वास है कि जो मनुष्य अपने जीवनको शुद्ध, निःस्वार्थ और उपयोगी बनानेकी चेष्टामें लगा देगा उसका जीवन ऐसी ही अकल्पित और उत्साह बढ़ानेवाली घटनाओंसे पूर्ण हो जायगा। दूसरे प्राणियोंको अधिक सुखी और अधिक उपयोगी बनानेका प्रयत्न करनेसे जो आनन्द प्राप्त होता है, उसका अनुभव जिस मनुष्यको नहीं उसकी दशा पर मुझे बड़ी दया आती है।

लकवेकी बीमारीसे एक वर्ष तक पीड़ित रहनेके बाद और अपनी मृत्युसे छः महीने पहले जनरल आर्मस्ट्रांगने एक बार फिर टस्केजी-विद्यालय देखनेकी इच्छा प्रकट की। इस समय उनसे चला तक नहीं जाता था; पर उनकी इच्छा पूर्ण करनेके लिए वे टस्केजीमें लाये गये। वहाँकी रेलवेके गोरे मालिकोंने बिना कुछ लिए ही, पाँच मीलकी दूरीसे एक स्पेशल पर उन्हें ले आनेका प्रबन्ध कर दिया था। रातके नौ बजे जनरल आर्मस्ट्रांग विद्यालयमें आये। विद्यालयके फाटकसे उनके ठहरनेके स्थान तक एक हज़ार विद्यार्थी और शिक्षक हाथोंमें रोशनी लिये खड़े थे। उस अपूर्व दृश्यको देखकर जनरल आर्मस्ट्रांग बहुत ही प्रसन्न हुए। इसके बाद दो महीनेतक वे मेरे यहाँ मेहमानके तौर पर रहे। इस बीचमें वे बोलने चलने और उठने बैठनेमें असमर्थ होने पर भी सदा दक्षिणके लोगोंकी चिन्ता किया करते थे। उन्होंने मुझसे यह भी कई बार कहा कि नीग्रो लोगोंके साथ साथ गरीब और निर्धन गोरोंकी

भी उन्नतिका प्रयत्न करना देशका कर्तव्य है। इस पंगु अवस्थामें भी जनरल आर्मट्रांगको देशकी चिन्ता और कार्य करते देखकर मुझ पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा और मैंने यह निश्चय किया कि मैं उनके प्रिय कार्यमें ज़रूर हाथ बटाऊँगा।

कुछ ही सप्ताह पीछे जनरल आर्मस्ट्रांग इह लोकसे कूच कर गये। तब मुझे एक और ऐसे ही महात्मा मिले। ये वे ही डाक्टर हालीस बी. फ्रिसेल हैं जो जनरल आर्मस्ट्रांगके स्थान पर हैम्पटन-विद्यालयके प्रिन्सिपल हैं। ये भी साधुता और परोपकारमें जनरल आर्मस्ट्रांगके समान हैं। जनरल महाशयकी इच्छाके अनुसार इन्होंने विद्यालयको परमोन्नत बनानेमें कोई बात उठा नहीं रक्खी है। इतने पर भी ये अपनी प्रसिद्धि नहीं चाहते और विद्यालयकी उन्नतिका सारा यश जनरल आर्मस्ट्रांगको ही देते हैं।

लोगोंने मुझसे कई बार पूछा है कि तुम्हारे जीवनमें सबसे अधिक आश्चर्यजनक घटना कौनसी हुई। इसका उत्तर देनेमें मुझे कोई संकोच नहीं। वह घटना यों है कि रविवारके दिन सबेरे मैं अपनी पत्नी और बालबच्चोंके साथ अपने मकान पर बैठा हुआ था कि इतनेमें मुझे निम्न-लिखित पत्र मिला:-

" हारवर्ड यूनिवार्सिटी केंब्रिज।
ता. २८ मई, १८९६।

प्रोफेसर बुकर टी. वाशिंगटनकी सेवामें-

प्रिय महाशय, आगामी उपाधिदानके अवसर पर हारवर्ड-विश्वविद्यालय आपके प्रति अपना आदरभाव प्रकट करनेके लिए आपको एक उच्च उपाधि देना चाहता है। पर हम लोगोंका यह नियम है कि उपस्थित महाशयोंको ही उपाधि दी जाती है। उपाधिदान-समारंभ २४

जूनके दिन होगा। उस दिन दो पहरके बारह बजेसे संध्याके पाँच बजेतक आप उपस्थित रहें। क्या आप २४ जूनको कैंब्रिजमें आजानेकी कृपा करेंगे ?

आपका
चार्ल्स. डब्ल्यू. इलियट,
प्रेसिडेंट, हारवर्ड-यूनिवर्सिटी।"

मैंने कभी स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि मेरी यह प्रतिष्ठा होगी! पत्र पढ़कर मेरे नेत्रोंमें जल भर आया। गुलामाबादमें गुलामोंके काम, कोयलेकी खानोंके काम, बिना अन्न वस्त्रके बिताये हुए दिन, सड़ककी पटरी पर बिताई हुई रात, शिक्षा प्राप्त करनेकी उत्सुकता, टस्केजीके शुरू शुरूके कठिनाईके दिन, विद्यालय चलानेके लिए स्थानकी चिन्तामें करवटें बदलते हुए काटी हुई रातें, नीग्रोजाति पर होनेवाले अत्याचार और कष्ट, इन सबके चित्र मेरी आँखोंके आगे नृत्य करने लगे और दुःखसे मैं विकल हो गया।

मैंने न कभी नाम पानेकी इच्छा की और न उसका पीछा ही किया। नाम अथवा प्रतिष्ठाको मैं लोककल्याणका एक साधन मात्र समझता हूँ। मित्रोंसे बातें करते हुए मैंने कई बार कहा भी है कि यदि मैं अपनी प्रतिष्ठासे दूसरोंका हित कर सकूँ तो मुझे उससे सन्तोष होगा। धनकी तरह प्रतिष्ठा भी यदि देशसेवाके काम आती हो तो मैं उसे चाहता हूँ। बड़े बड़े योग्य धनवानोंसे मिलकर मैंने यही जाना है कि वे धनको परोपकारका एक ईश्वरदत्त साधन समझते हैं। सुप्रसिद्ध धनी और दानवीर मि. जान डी. राकफेलरके दफ्तरमें जाते ही मेरा यह विश्वास और भी दृढ़ हो जाता है। वे अपना प्रत्येक डालर सत्कार्यमें लगाना चाहते हैं और इसलिए वे हरेक कार्यकी बड़ी बारीकीसे परीक्षा करते हैं जैसे कोई व्यापारी पूँजी लगानेसे पहले लाभ

हानिका विचार कर लिया करता है। धनाढ्योंकी यह दशा देखकर चित्त बहुत प्रसन्न होता है।

२४ जूनको सबेरे नौ बजे मैं प्रेसिडेंट इलियट, बोर्ड आफ़ ओवर-सियर तथा अन्य निमंत्रित सज्जनोंसे निश्चित स्थान पर जा मिला। उपाधिदानका समारंभ सैंडर्स थिएटरमें होनेवाला था। जनरल नेल्सन, ए. माइल्स, बेल—टेलीफोनके आविष्कारक डाक्टर बेल, बिशप विनसेंट और पादरी सैवेज भी उपाधिदानके लिए बुलाये गये थे। प्रेसिडेंट इलियटके स्थानसे थिएटरतक हम लोगोंका एक जुलूस निकला। इस जुलूसमें सबके आगे प्रेसिडेंट इलियट, मैसेच्युसेट्सके गवर्नर और बोर्ड आफ़ ओवरसियरके लोग थे और उनके पीछे हम लोग। हमारे पीछे चोगा पहने हुए विश्वविद्यालयके प्रोफ़ेसरोंकी मंडली थी। इस ठाठसे हम लोग सैंडर्स थिएटरमें पहुँचे। आरंभिक कार्यक्रम समाप्त होने पर उपाधिदानका समारंभ आरंभ हुआ। उपाधिपानेवालोंके नाम पहले गुप्त रक्खे जाते हैं और फिर जिन लोगोंको उपाधियाँ मिलती हैं उनके नाम पर विद्यार्थी और दूसरे लोग उनकी प्रतिष्ठाके अनुसार जयघोष करते हैं। उस समय लोगोंके उत्साह और आनन्दका पारावार नहीं रहता।

जब मेरा नाम लिया गया; तब मैं उठकर प्रेसिडेंट इलियटके पास जा खड़ा हुआ। उन्होंने अपने प्रासंगिक और सुन्दर भाषणके साथ मुझे एम० ए०—मास्टर आफ आर्ट्स—की उपाधि दी। इसके उपरान्त और भी कई लोगोंको उपाधियाँ दी गईं। उपाधिदानका समारंभ हो चुकने पर हम लोगोंने प्रेसिडेंटके साथ जलपान किया और हम सब विश्वविद्यालयके चारों ओर घुमाये गये। स्थान स्थान पर लोग उपाधि-पानेवालोंके नाम लेकर जयघोष करते थे। चारों ओर घूम फिर कर हम लोग मेमोरियल हालमें पहुँचे। यहाँ सब विद्यार्थियोंके भोजनका

प्रबन्ध किया गया था। उस अवसर पर राज्य, धर्म, व्यापार और शिक्षा प्रभृति सब विभागोंके कितने ही लोग अपने कालेजके आभिमान और प्रेमसे उत्साहित होकर उपस्थित हुए थे। ऐसा आभिमान, ऐसा प्रेम और ऐसा जनाकीर्ण सुन्दर दृश्य केवल एक हारवर्डके ही विश्वविद्यालयमें दिखाई देता है जिसे देखकर कोई जल्दी भूल नही सकता!

भोजनके उपरान्त प्रेसिडेंट इलियट, गवर्नर रोजर बुलकाट, जनरल माइल्स, डाक्टर सैवेज, आनरेबल हेनरी लाज आदि महाशयोंके व्याख्यान हुए और अन्तको मेरा भी व्याख्यान हुआ। मेरे व्याख्यानका मुख्य अंश नीचे लिखे अनुसार था:—

"आप लोगोंने आज मेरी जो प्रतिष्ठा की है, यदि मैं अपने आपको किसी अंशमें भी उसका पात्र समझूँ तो मेरे मनका बोझ बहुत कुछ हलका हो जायगा। आप लोगोंने इस अवसर पर दक्षिणके मेरे गरीब भाइयोंमेंसे मुझे उपाधि ग्रहण करनेके लिए क्यों बुलाया है, यह बतलानेकी मुझे कोई आवश्यकता नहीं; परन्तु तो भी मेरे लिए यह कहना अनुचित या अप्रासंगिक न होगा कि अमेरिकन लोगोंके सामने आज मुख्य प्रश्न यह है कि विद्वानों, धनवानों और शक्तिसम्पन्नोंको, तथा मूर्ख, निर्धन और शक्तिहीन लोगोंको एक स्थान पर कैसे एकत्र किया जाय और ये दोनों ही परस्पर व्यवहार बढ़ाकर कैसे परस्परकी उन्नति करनेमें सहायक हों। बीकनस्ट्रीटकी बड़ी बड़ी हवेलियोंमें रहनेवाले धनवानोंको अलबामा और लुसियानाके खेतों पर काम करने-वाले तथा झोपड़ियोंमें रहनेवाले दरिद्रोंकी आवश्यकतायें कैसे मालूम हों? यही एक बड़ा भारी प्रश्न है। हारवर्ड विश्वविद्यालय आज, अपने आपको नीचे गिराकर नहीं, बल्कि निम्नश्रेणीके लोगोंको ऊपर लाकर—उनको उन्नत करके—इस प्रश्नका निर्णय कर रहा है।

" यदि मैंने अपने अतीत जीवनमें अपने जातिभाइयोंको उन्नत करने और अपनी और आपकी जातिका संबंध दृढ़ करनेके लिए, आपके विचारमें, कोई उद्योग किया हो तो, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आजसे मैं इस उद्योगको दूने परिश्रमके साथ करूँगा। ईश्वरके यहाँ प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक जातिकी सफलताका एक ही माप है। इस देशकी ऐसी स्थिति है कि यहाँ चाहे जो जाति हो उसे अपनी उन्नति अमेरिकन मापसे—कसौटीसे मापना चाहिए। केवल इच्छा या उद्देश्यका कोई अच्छा परिणाम नहीं होता। इसलिए आगामी पचास वर्ष या इससे भी अधिक समयतक हमारी जाति भी इसी अमेरिकन कसौटी पर कसी जायगी। यहीं हमारी सहनशीलता, अध्यवसाय, संयम, धैर्य और मितव्ययिताकी परीक्षा हो जायगी और यह भी मालूम हो जायगा कि हम लोग ऊपरी चमकदमकमें फँस जाते हैं या वास्तविक तत्त्वको स्वीकार करते हैं; विद्वान् होकर सादगी और विनयशीलतासे रहना सीखते हैं तथा प्रतिष्ठा पाकर देश और समाजकी सेवा स्वीकार करते हैं, या अपनी जातिको कलंकित करते हैं।"

यह बिलकुल पहला ही अवसर था जब किसी नीग्रोको ऐसी सम्मानसूचक उपाधि मिली हो, और इसलिए समाचारपत्रोंने इस विषयकी बड़ी चर्चा की। न्यूयार्कके एक समाचारपत्रके संवाददाताने लिखा कि,—

" जिस समय बुकर टी. वाशिंगटनका नाम पुकारा गया और जब वे इस सम्मानको स्वीकार करनेके लिए खड़े हुए, उस समय जितनी अधिक तालियाँ बजीं उतनी देशभक्त जनरल माइल्सके अतिरिक्त और किसीके नाम पर नहीं बजीं। केवल सहानुभूति दिखलानेके लिए, अथवा पहलेसे लोगोंको इस प्रकार पढ़ा दिया गया था इस लिए, तालियाँ नहीं बजीं, बल्कि लोगोंके आन्तरिक उत्साह और उल्लासका यह फल था। नीचेसे लेकर सबसे ऊपरकी गैलरीतकके सब लोग

इस जयध्वनिमें सम्मिलित थे और उन पर आश्चर्य तथा आनन्दकी आरक्त प्रभा प्रकट हो रही थी। इससे यह प्रमाणित होता है कि लोगोंने पहलेके गुलाम और अबके एक महान् कार्यकर्त्ताके कार्योंके लाभ और महत्त्वको भली भाँति समझ लिया है।"

बोस्टनके एक समाचारपत्रमें निम्नलिखित सम्पादकीय लेख निकला था:—

"टस्केजी–विद्यालयके प्रिन्सिपलको 'मास्टर आफ आर्ट्स' की उपाधि देकर हारवर्ड–विश्वविद्यालयने उनकी और अपनी दोनोंकी प्रतिष्ठा बढ़ाई है। प्रोफेसर बुकर टी. वाशिंगटनने दक्षिणमें अपने जातिभाइयोंको शिक्षित, सुयोग्य और उत्तम नागरिक बनानेमें जो परिश्रम किया है उसके कारण उन्हें हमारे राष्ट्रके महान् कार्यकर्त्ताओंमें स्थान मिलना चाहिए। जिस विश्वविद्यालयके सुपुत्रोंमें ऐसे योग्य पुरुषका नाम हो, उसे सचमुच ही अपने गौरवका अभिमान होना चाहिए।

"नीग्रो जातिमें पहले पहल मि० वाशिंगटनने ही एक अमेरिकन विश्वविद्यालयसे ऐसी सम्मानसूचक उपाधि पाई है। यह एक प्रतिष्ठाकी बात है। मि० वाशिंगटनको नीग्रो होने अथवा गुलामीमें पैदा होनेके कारण यह उपाधि नहीं मिली है, बल्कि उन्होंने जिस महान् बुद्धिबल और दीनवत्सलतासे अपने जातिभाइयोंकी उन्नति की है उसके बदलेमें ही उनका यह सम्मान किया गया है। जिस किसीमें ये दो बातें होंगी—वह चाहे किसी वर्णका हो—अवश्य उन्नत होगा।"

बोस्टनके एक दूसरे पत्रने यों लिखा:—

"अमेरिकामें हारवर्ड–विश्वविद्यालयने ही सर्व प्रथम एक काले आदमीको उपाधि दी। जिस मनुष्यने टस्केजी–विद्यालयके कार्य और इतिहासको देखा है वह बुकर टी. वाशिंगटनके धैर्य, दृढ़ उद्योग और उत्तम व्यावहारिक ज्ञानकी प्रशंसा किये बिना न रहेगा। हारवर्ड–

विश्वविद्यालयने एक ऐसे मनुष्यको–जो पहले गुलाम था–उपाधि दी, यह ठीक ही हुआ, परन्तु जातिसेवा और देशसेवाका पूरा महत्त्व तो भविष्यकाल ही बतलावेगा।"

'न्यूयार्क-टाइम्स' के संवाददाताने इस प्रकार लिखा:—

"सभी भाषण अच्छे हुए; पर उस काले मनुष्यके भाषणका भी बड़ा आदर हुआ। उसका भाषण समाप्त होने पर लगातार बहुत देरतक ज़ोर ज़ोरसे तालियाँ बजती रहीं।"

टस्केजी-विद्यालय खोलते समय मैंने मन-ही-मन यह संकल्प किया था कि मैं इसकी इतनी उन्नति करूँगा और इसे इतना उपयोगी बनाऊँगा कि किसी रोज संयुक्तराज्यके आधिपति (President) भी इसे देखने आवेंगे। यह मैं स्वीकार करता हूँ कि यह बड़े साहसका विचार था और इसमें अविचारकी मात्रा भी अधिक थी। इसी कारण मैंने इस विचारको अपने हृदयमें छुपा रक्खा था; परन्तु सौभाग्यसे मेरा संकल्प व्यर्थ नहीं गया।

१८९७ के नवंबर महीनेमें मैंने इस विषयमें पहला प्रयत्न किया और प्रेसिडेंड मैक् किनलेके मंत्रियोंमेंसे कृषिविभागके मंत्री आनरेबल जेम्स विलसनको मैं विद्यालय दिखलानेके लिए ले आया। उस समय विद्यालयमें कृषि तथा ऐसे ही दूसरे विषयोंकी शिक्षा देनेके लिए 'स्लेटर आर्मस्ट्रांग' नामक एक भवन बनवाया गया था और उसीके उद्घाटनके अवसर पर भाषण करनेके लिए विलसन महाशय निमंत्रित किये गये थे।

स्पेनिश–अमेरिकन युद्धमें अमेरिकनोंकी विजय हुई और इस विजय-सन्धिके उपलक्ष्यमें सर्वत्र आनन्दोत्सव मनाये जाने लगे। इसी अवसर पर, मैंने सुना कि प्रेसिडेंट मैक् किनले एटलांटाके उत्सवमें सम्मिलित होनेवाले हैं। गत अठारह वर्षोंसे मैं अपने सहयोगी अध्या-

पकोंके साथ एक ऐसी संस्था चला रहा था जिससे राष्ट्रकी बड़ी सहायता होनेवाली थी। मैंने यह निश्चय कर लिया कि जिस प्रकार होगा, मैं प्रेसिडेंट और उनके मंत्रि-मंडलको अपना विद्यालय दिखलानेके लिए ले आऊँगा। इस लिए सबसे पहले मैं वाशिंगटन नगरमें गया और वहाँ प्रेसिडेंटसे मिलनेके लिए 'श्वेतभवन (White house)' पहुँचा। उस समय वहाँ बहुतसे मनुष्योंकी भीड़ लगी हुई थी और इसलिए मुझे भय हुआ कि कदाचित् आज प्रेसिडेंट महाशयसे भेंट न हो सकेगी। तो भी मैं किसी प्रकार उनके सेक्रेटरी मि० पोर्टरसे मिला और मैंने उन्हें अपना उद्देश्य बतलाया। मि० पोर्टरने कृपाकर तत्काल ही मेरे नामका कार्ड प्रेसिडेंटके पास भेज दिया और शीघ्र ही मुझे उनके पास जानेकी आज्ञा मिल गई।

प्रेसिडेंट मैक् किनलेके पास नित्य कितने ही लोग मिलने आते थे। इसके अतिरिक्त उन्हें सैकड़ों सरकारी काम करना पड़ते थे। इसलिए मेरी समझमें यह बात न आती थी कि इतने सारे काम करके भी प्रेसिडेंट मैक् किनले क्योंकर इतने शान्त, स्थिर और प्रसन्न रहते हैं! मुझसे वे बड़ी प्रसन्नताके साथ मिले और सबसे पहले उन्होंने मेरे टस्केजीसंबंधी कार्य पर हर्ष प्रकट कर मुझे धन्यवाद दिया। इसके उपरान्त मैंने उन्हें अपने आनेका उद्देश्य बतलाया। मैंने उन्हें यह भली भाँति जना दिया कि आप राष्ट्रके सर्व प्रधान आधिकारी हैं और इस लिए आपके शुभागमनसे केवल हमारे विद्यार्थी ही उत्साहित न होंगे, बल्कि समस्त जातिकी बड़ी भारी सहायता होगी। यह बात उन्हें जँच तो गई; पर टस्केजी आनेका वादा उन्होंने न किया; क्यों कि उस समय एटलांटा जानेकी ही बात पक्की नहीं हुई थी और इसलिए उन्होंने मुझसे फिर किसी समय इस बातका स्मरण दिलानेके लिए कहा।

दूसरे महीनेके तीसरे सप्ताहके आरंभमें उनका उत्सवमें सम्मिलित

होनेका विचार दृढ़ हो गया। मैं फिर वाशिंगटनमें जाकर उनसे मिला। इस समय मेरे साथ टस्केजीके मि. हेअर नामक प्रधान गोरे अधिवासी भी गोरोंकी तरफ़से प्रेसिडेंट महाशयको निमंत्रित करनेके लिए मेरे साथ हो लिये थे।

इससे कुछ ही पहले दक्षिणके भिन्न भिन्न स्थानोंमें कई भारी दंगे हो गये थे जिसके कारण देशमें बड़ी अशान्ति फैल गई थी और नीग्रो लोग बहुत दुखी हो रहे थे। प्रेसिडेंट महाशयसे मिलने पर मैंने देखा कि वे इन झगड़ोंके कारण बहुत चिन्तित हैं। अन्य अनेक सज्जन उस समय उनसे मिलने आये थे; तो भी उन्होंने मुझे ठहरा लिया और मेरे साथ नीग्रो जातिके प्रश्नों पर बहुत देर तक बातें कीं। इस बीचमें उन्होंने कई बार यह भी कहा कि मैं आपकी जातिके विषयमें केवल मौखिक बातोंसे ही सन्तुष्ट नहीं हूँ—वास्तवमें भी कुछ करना चाहता हूँ। मैंने भी मौका पाकर उनसे कहा कि यदि इस समय आप अपने रास्तेसे १४० मील हटकर टस्केजीकी नीग्रो संस्थामें पदार्पण करें तो इसी एक बातसे जैसा उत्साह नीग्रो जातिमें फैल जायगा वैसा और किसी बातसे नहीं फैल सकता। मैंने ताड़ लिया कि यह बात उनके मनमें बैठ गई।

इसी समय एटलंटानिवासी एक सज्जन भी जो पहले गुलाम रक्खा करते थे—वहाँ पहुँच गये। टस्केजी जानेके विषयमें प्रेसिडेंट महाशयने उनसे भी राय ली। उन्होंने कहा, 'आप टस्केजी-विद्यालयमें अवश्य जायँ।' नीग्रो जातिके परम हितैषी डाक्टर करीने भी इस बात पर बड़ा ज़ोर दिया। बस, मेरा काम बन गया। प्रेसिडेंट महाशयने वादा किया कि 'मैं १६ दिसंबरके दिन आपका विद्यालय देखने आऊँगा।'

जब लोगोंको यह समाचार मिला तब विद्यालयके विद्यार्थी, अध्यापक और टस्केजीके समस्त अधिवासी बहुत ही प्रसन्न हुए। नगरके गोरे

निवासी नगरको सिंगारनेमें लग गये और विद्यालयके कर्मचारियोंसे मिलकर प्रेसिडेंटका यथायोग्य स्वागत करनेके लिए समितियाँ भी बनाने लगे। इससें पहले मुझे यह न मालूम था कि हमारे विद्यालयके विषयमें टस्केजी तथा आसपासके गोरे निवासियोंकी क्या राय है। प्रेसिडेंटके स्वागतकी तैयारियाँ करते समय कितने ही गोरे लोग मुझसे मिलकर कहते थे कि 'यदि हम लोगोंसे भी कुछ काम लिया जा सकता हो तो हम करनेके लिए तैयार हैं।' उस समय उनके भावसे यह मालूम होता था कि कहने भरकी देरी है कि ये लोग चाहे जो काम करनेके लिए मुस्तैद हो जायँगे। प्रेसिडेंटके आगमनसे और अलबामाके गोरे काले समस्त लोगोंने हम लोगोंके कार्य्यके प्रति जो स्नेह व्यक्त किया उससे, मेरा अन्तःकरण द्रवित हो गया।

१६ दिसंबरको सबेरे टस्केजीके छोटेसे गाँवमें इतनी भीड़ हुई जितनी पहले कभी न हुई थी। प्रेसिडेंटके साथ मि० मैक् किनले तथा प्रायः सभी मंत्री आये थे; बहुतोंके साथ उनके परिवारके लोग और रिश्तेदार भी थे। स्पेनिश–अमेरिकन युद्धमें विजय पाकर आये हुए जनरल शैफ्टर और जनरल जोसेफ वीलर आदि मुख्य मुख्य सेनापतियोंने इस समारंभमें योग दिया था। समाचारपत्रोंके संवाददाताओंकी भी कमी न थी। इन्हीं दिनों मांटगोमरीमें अलबामा राज्यकी व्यवस्थापक सभाके अधिवेशन होनेवाले थे; पर इस अवसर पर टस्केजीमें उपस्थित रहनेके लिए कार्यकर्त्ताओंने उनका समय बदल दिया था और वहाँके गवर्नर तथा अन्य अधिकारी प्रेसिडेंटके आनेसे पहले ही टस्केजीमें उपस्थित हो गये थे।

टस्केजीके अधिवासियोंने रेलस्टेशनसे विद्यालय तक सब मार्ग सिंगार रक्खे थे। हम लोगोंने ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा था कि थोड़े ही समयमें विद्यालयके सब काम प्रसिडेंट महाशयको दिखला दिये जायँ।

प्रत्येक विद्यार्थीके हाथमें एक एक ऊख दिया गया था जिसके सिरे पर कपासकी डोंड़ियाँ लगा रक्खी थीं। विद्यार्थियोंके पीछे विद्यालयके भिन्न भिन्न भागोंके पुराने और नये काम घोड़ों, खच्चरों और बैलों पर लदे हुए थे। मक्खन निकालने, जमीन जोतने और रसोई बनानेके तथा ऐसे ही अन्य सब कामोंके नये पुराने दोनों ढंग दिखलाये गये थे। इन सब कामोंको देखनेमें प्रेसिडेंटको डेढ़ घंटा खर्च करना पड़ा।

विद्यार्थियोंने हालहीमें एक नया प्रार्थनामन्दिर (गिरजा) बनाया था। उसीमें प्रेसिडेंट महाशयका व्याख्यान हुआ। उसका कुछ अंश इस प्रकार है:—

" ऐसे आनन्ददायक अवसर पर आप सब लोगोंसे मिलने और आपके कार्योंको देखनेसे मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई है। 'टस्केजी नार्मल और इडस्ट्रियल इन्स्टिटयूट' की स्थापना जिस उद्देश्यसे हुई है, वह अत्यन्त अनुकरणीय है। केवल इसी देशमें नहीं, विदेशोंमें भी इस विद्यालयकी कीर्ति फैलती जाती है।

" जिन्होंने इन विद्यार्थियोंको शिक्षा देकर इन्हें प्रतिष्ठित और समाजके लिए उपकारी बनानेका भार अपने ऊपर उठाया है, जिन्होंने इस विद्यालयको स्थापित कर अपनी जातिका कल्याण किया है, और जिन्होंने इस पवित्र कार्यमें हाथ बँटाये हैं उन सबको मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

" इस अनुपम शिक्षाकी प्रयोगशालाके लिए स्थान भी ऐसा अच्छा मिला है कि और कहीं शायद ही मिलता। इस विद्यालयने देशके ऐसे ऐसे दाताओंसे भी सहायता पाई है कि जो किसी नये काममें योग देना नहीं जानते!

" टस्केजी-विद्यालयकी चर्चा करते समय प्रो० बुकर टी. वाशिंगटनकी

असाधारण बुद्धिमता और उद्योगप्रियता स्वयं ही नेत्रोंके सामने आ जाती है। इस महान् कार्यको इन्होंने ही प्रारंभ किया है। इसके लिए हम सब लोग इनके कृतज्ञताभाजन हैं। इन्हींके उत्साह और साहससे विद्यालयकी इतनी उन्नति हुई है और उसकी पात्रता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। ये अपनी जातिके एक नेता समझे जाते हैं। देश देशान्तरके लोग इन्हें एक उत्तम अध्यापक, वक्ता और महात्मा समझते हैं, और इनके इन्हीं गुणोंके कारण ही सब लोग इन्हें मानते हैं।"

इसके उपरान्त नौ-सेनाविभागके मंत्री आनरेबल जान डी. लॉंगने भाषण किया। उसका कुछ अंश नीचे दिया जाता है:—

"आज मुझसे व्याख्यान नहीं दिया जाता! अपनी दोनों जातियोंके देशभाइयोंके संबंधमें आशा, आदर और अभिमानसे मेरा अन्तःकरण भर गया है। आपके कार्य देखकर मुझे कृतज्ञताके साथ बड़ा ही आश्चर्य और आनन्द प्राप्त हो रहा है। मुझे विश्वास है कि दिनोंदिन आपकी उन्नति होती जायगी और इस समय आपके सम्मुख जो प्रश्न उपस्थित है उसे हल कर डालनेमें आप समर्थ होंगे।

"नहीं नहीं, उस प्रश्नको आप हल कर चुके हैं। आज हम लोगोंके सामने जो चित्र उपस्थित है, वह वाशिंगटन (जार्ज) और लिंकनके चित्रोंकी पंक्तिमें रखने योग्य है। इस चित्रसे भावी सन्ततिको बड़ी भारी शिक्षा मिलनेवाली है। यह चित्र समाचारपत्रों द्वारा सर्वत्र प्रसिद्ध हो जाना चाहिए। इस चित्रमें क्या क्या दिखलाया गया है?—संयुक्त राज्यके प्रेसिडेंट प्लेटफार्म पर खड़े हैं, उनके एक तरफ़ अलबामाके गवर्नर हैं और दूसरे तरफ कुछ ही समय पूर्व जो गुलामीके अन्धकारमें छिपी हुई थी उस नीग्रो-जातिके प्रतिनिधि और टस्केजी-विद्यालयके काले प्रेसिडेंट हैं। इस प्रकारसे यह त्रिमूर्ति—(ब्रह्मा विष्णु महेश)—का चित्र है।

"ईश्वर उस प्रेसिडेंटका कल्याण करे कि जिसकी छायामें अमेरिकनोंने इस दृश्यको देखा ! ईश्वर उस अलबामा राज्यका कल्याण करे जो यह बतला रहा है कि हम स्वयं इस प्रश्नको हल कर लेंगे ! ईश्वर उस परोपकारी वक्ता बुकर टी. वाशिंगटनका कल्याण करे जो परमात्माका प्यारा शिष्य है ! यदि जगदीश्वर स्वयं इस संसारमें अवतीर्ण होता तो, आज वह भी यही कार्य करता ।"

अन्तमें पोस्टमास्टर-जनरल मि० स्मिथने अपना व्याख्यान समाप्त करते हुए कहा:—

" इधर कुछ दिनोंमें हम लोगोंने कई दृश्य देखे । हमने दक्षिणके प्रधान नगरोंका सौन्दर्य और वैभव देखा, वीर सैनिकोंका जुलूस देखा, और फूलोंसे सजी हुई पल्टनोंकी कवायद भी देखी; परन्तु आज प्रातःकाल जो दृश्य यहाँ देखा है उससे अधिक प्रभावशाली, उत्साहवर्द्धक और भविष्यके संबंधमें आशाजनक और कोई दृश्य हम लोगोंने नहीं देखा ! "

प्रेसिडेंट महाशयके वाशिंगटन चले जाने पर उनका निम्नलिखित पत्र मेरे पास आया:—

"सरकारी कोठी, वाशिंगटन,
ता. २३ दिसंबर १८९९.

प्रिय महाशय,

आजकी डाकसे उस स्मरणपत्रकी—जो मिलनसमयकी स्मृतिमें प्रेसिडेंटकी ओरसे विद्यालयको दिया गया था—मोटे अक्षरोंवाली कुछ प्रतियाँ आपकी सेवामें भेजी जाती हैं । इस पत्र पर प्रेसिडेंट महाशय और उन मंत्रियोंके हस्ताक्षर हैं जो वहाँ उपस्थित थे । टस्केजीमें आपने हम लोगोंका जो आतिथ्य किया, और सारा कार्यक्रम जिस सुन्दरताके साथ सम्पादन किया, उसके लिए मैं आपको हृद-

यसे बधाई देता हूँ। कार्यक्रमका प्रत्येक अंश भली भाँति सम्पादित हुआ और उससे प्रत्येक अतिथिने बड़ी प्रसन्नता लाभ की। भिन्न भिन्न कामों और धन्धोंमें लगे हुए विद्यार्थियोंकी आपने जो प्रदर्शनी दिखलाई वह अपूर्व थी और देखनेवालों पर उसका बड़ा असर पड़ता था। प्रेसिडेंट महाशय तथा मंत्रिमंडलने आपके कार्योंका जो आदर किया है वह बहुत ही उचित है और आपके विद्यालयकी भावी उन्नतिका सूचक है। अन्तमें मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि आपके शिष्टाचार और विनयसे सब लोग बहुत ही प्रसन्न हुए हैं। आपके उपयोगी और स्वदेशहितैषी विद्यालयकी दिनदूनी रातचौगुनी उन्नति होती रहे।

भवदीय,
जान एडिसन पोर्टर,
प्रेसिडेंट-सेक्रेटरी।"

उस जमानेको बीते आज बीस वर्ष हो गये जब पल्ले एक पैसा नहीं था और एक शिक्षक तथा तीस विद्यार्थियोंको लेकर एक पुरानी टूटी फूटी झोपड़ी और मुर्गीखानेमें पाठशाला आरंभ की गई थी। अब उसी पाठशालाके अधिकारमें तेईस सौ एकड़ जमीन है जिसमेंसे सात सौ एकड़में विद्यार्थी खेती करते हैं। इस समय टस्केजी–विद्यालयके छोटे बड़े सब मिलाकर चालीस भवन हैं जिनमेंसे चारको छोड़कर बाकी सब विद्यार्थियोंके ही बनाये हुए हैं। इन विद्यार्थियोंको खेतों पर खेती और इमारतोंमें–उनके बननेके समय–इमारतें बनानेकी सर्वोत्तम प्रणालीकी शिक्षा दी जाती है।

इस समय विद्यार्थियोंको मानसिक और धार्म्मिक दोनों प्रकारकी शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त शिल्प-शिक्षाके अट्ठाईस विभाग

हैं। इनमें विद्यार्थियोंको नाना प्रकारके हुनर सिखलाये जाते हैं। इन हुनरोंको सीखकर विद्यार्थी काम भी यहीं पा जाते हैं। दक्षिणकी दोनों जातियोंमें हमारे विद्यालयके ग्रेज्युएटोंकी इतनी अधिक माँग है कि हम आधी भी पूरी नहीं कर सकते हैं। विद्यालयमें भरती होनेके लिए भी इतने आवेदनपत्र आते हैं कि धन और स्थानके अभावसे हमें आधे आवेदनपत्रोंको अस्वीकृत कर देना पड़ता है।

शिल्पशिक्षाके संबंधमें हम लोग तीन बातोंका ध्यान रखते हैं:-(१) विद्यार्थियोंको ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए कि जिससे वे दक्षिणकी वर्तमान अवस्थामें उपयोगी हों; अर्थात् उन वस्तुओंको तैयार कर सकें जिनकी कि आजकल दक्षिणमें माँग है (२) हमारे विद्यार्थियोंमें इतना कौशल बुद्धिमत्ता और शुद्ध आचरण होना चाहिए कि वे अपना और दूस-रोंका, पुरुषार्थके साथ, निर्वाह कर सकें। (३) प्रत्येक विद्यार्थीको यह जानना चाहिए कि परिश्रमसे भागनेके बदले परिश्रमसे प्रेम करना ही मनुष्यत्व है; परिश्रम करनेमें कोई बुराई नहीं, सब तरहसे भलाई है। बाल-कोंको खेती और बालिकाओंको गृहस्थीके काम सिखलाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त प्रति वर्ष बहुतसी बालिकाओंको कृषिविद्या भी सिखलाई जाती है। बाग़ लगाना, फल उपजाना, दही मक्खन आदि तैयार करना, शहदकी मक्खियोंको पालना, बढ़िया बत्तख़ पैदा करना आदि काम बालिकाओंको सिखलाये जाते हैं।

हमारा विद्यालय किसी ख़ास धर्म या संप्रदायका अनुयायी नहीं है; तो भी उसके साथ 'फ़ेल्प्स हाल बाइबल ट्रेनिंग स्कूल' नाम की एक शाखा खोली गई है। इसमें विद्यार्थियोंको धर्म्मोपदेशकके तथा गाँव-देहातोंमें जाकर करने योग्य अन्य धार्म्मिक काम सिखलाये जाते हैं। इन विद्यार्थियोंको भी नित्य आधे दिन किसी न किसी शिल्प-शालामें अवश्य काम करना पड़ता है। जब ये विद्यार्थी विद्यालयसे

उत्तीर्ण होकर धर्मोपदेशके लिए बाहर निकलते हैं तब लोगोंको शिल्प-वाणिज्यका भी ढंग सिखला देते हैं ।

विद्यालयमें इस समय तीन लाख डालरकी सम्पत्ति है । इसके अतिरिक्त स्थायी फंडके हिसाबमें दो लाख पंद्रह हजार डालरकी सम्पत्ति है । इस समय हमें और कई भवन बनवाने हैं और नित्यव्ययके लिए भी धनकी आवश्यकता है । पर स्थायी फंडसे रुपया निकालना दूर रहा, हम उसे पाँच लाख डालर तक पहुँचानेकी चिन्तामें हैं । इस समय वार्षिक खर्च अस्सी हज़ार डालर है । इसका अधिकांश घर घर घूमकर संग्रह करता हूँ । विद्यालयकी सम्पत्ति रेहन-बै करनेका किसीको हक़ नहीं है । सब काग़ज़पत्र पंचोंके नाम हैं । इन पंचोंमें कोई किसी धर्मविशेष या संप्रदायका अनुयायी नहीं । विद्यालय इन्हीं पंचोंके अधीन है ।

विद्यार्थियोंकी संख्या तीससे ग्यारहसौ तक पहुँच गई है । अमेरिकाके २७ राज्य, आफ्रिका, क्यूबा, पोर्टोरिको, जमैका और अन्य दूर दूर देशोंसे विद्यार्थी आते हैं । अध्यापकोंकी संख्या ८६ है, और यदि उनके परिवारोंकी भी गिनती की जाय तो, विद्यालयमें हर समय १४०० लोग उपस्थित रहते हैं ।

कई लोगोंने मुझसे पूछा कि इतने आदमियोंके रहते हुए भी, तुम्हारी संस्थामें कभी कोई दंगाफ़साद नहीं होता इसका क्या कारण है । इसके उत्तरमें मुझे दो बातें कहनी हैं:–(१) यहाँ विद्याप्राप्तिके लिए जो स्त्रियाँ या पुरुष आते हैं वे बड़े श्रद्धालु होते हैं, और (२) वे सदा ही अपने अपने काममें लगे रहते हैं । नीचे दिये हुए कार्यक्रमसे यह बात स्पष्ट हो जायगी ।

कार्यक्रम ।

प्रातःकाल ५ बजे सोकर उठनेकी घंटी । ५ बजकर ३० मिनिट पर जलपानकी तैयारी । ६ बजे जलपान । ६–२० पर जलपानसे निवृत्ति ।

६–२० से ६–५० तक सब कमरोंको झाड़ू देकर साफ़ करना। ६–५० पर काम। ७–३० पर प्रातःकालकी पढ़ाई। ८–२० पर स्कूलकी घंटी। ८–२५ पर सब विद्यार्थियोंका एक कतारमें खड़े होना और उनके वस्त्रोंकी परीक्षा। ८–४० पर गिरजेमें प्रार्थना। ८–५५ पर पाँच मिनिटतक दैनिक पत्रोंका पढ़ना। ९ बजे स्कूलकी पढ़ाईका आरंभ। १२ बजे पढ़ाई बन्द। १२–१५ पर भोजन। दोपहर १ बजे कामकी घंटी। १–३० पर पढ़ाई शुरू। ३–३० पर पढ़ाई बन्द। ५–३० पर सब कामोंके समाप्त होनेकी घंटी। ६ बजे संध्याका भोजन। ७–१० पर सायंकालकी प्रार्थना। ७–३० पर रातकी पढ़ाई। ८–४५ पर पढ़ाई बन्द। ९–२० पर विश्रामकी घंटी। ९–३० पर सोनेकी घंटी।

हम लोग सदा इस बातका ध्यान रखते हैं कि विद्यालयकी योग्यता उसके ग्रेज्युएटोंसे जानी जाती है। इस समय टस्केजी–विद्यालयमें शिक्षा पाये हुए तीन हज़ार स्त्री–पुरुष दक्षिणके भिन्न भिन्न भागोंमें काम कर रहे हैं। ये लोग अपने जीवनसे लोगोंको सब प्रकारकी उन्नतिका मार्ग दिखला रहे हैं। इनके व्यावहारिक ज्ञान और आत्म-संयमके प्रभावसे दोनों जातियोंमें परस्पर मेलमिलाप बढ़ता जा रहा है और गोरोंको यह विश्वास होने लगा है कि नीग्रो-जातिमें विद्याका प्रचार होनेसे अनेक लाभ होंगे।

जहाँ जहाँ हमारे ग्रेज्युएट पहुँचते हैं, वहाँ वहाँ ज़मीन खरीदने, इमारतें बनाने, हिसाबसे रहने, लिखने पढ़ने और शुद्ध आचरण रखनेके संबंधमें विलक्षण परिवर्तन हो जाते हैं। हमारे ग्रेज्युएटोंके कारण समाजका रूपरंग बिलकुल बदलता जा रहा है।

कुछ वर्ष पूर्व मैंने टस्केजीमें नीग्रो-महासभा स्थापित की थी। अब प्रत्येक वर्ष इसका विराट् अधिवेशन होता है और आठ

नौ सौ नीग्रो-प्रतिनिधि टस्केजीमें आकर नीग्रो-जातिके आर्थिक नैतिक और मानसिक प्रश्नोंका विचार करते और उन्नतिके उपाय सोचते हैं। टस्केजीकी इस महासभाकी अब कितनी ही शाखायें भिन्न भिन्न राज्योंमें हो गई हैं और उनका भी यही काम है। गतवर्षकी सभामें एक नीग्रो प्रतिनिधिने इन सभाओंका परिणाम बतलाते हुए कहा था कि दस परिवारोंने धन देकर नये मकान खरीदे। नीग्रो महासभाके दूसरे दिन 'कामकाजियोंकी सभा—Workers' Conference—' होती है। दक्षिणके बड़े बड़े राज्योंमें काम करनेवाले राजकर्मचारी और अध्यापक इस सभामें एकत्र होते हैं। नीग्रो महासभामें लोगोंकी वास्तविक दशा देखनेका इन्हें बहुत अच्छा अवसर मिलता है।

हर काममें मेरी मदद करनेवाले मि० टी. टामस फारच्यून सरीखे कुछ नीग्रो सज्जनोंकी सहायतासे मैंने सन् १९०० के ग्रीष्ममें 'दि नेशनल नीग्रो बिजिनेस लीग' नामकी एक सभा स्थापित की है। इसका पहला अधिवेशन बोस्टनमें हुआ और उस अवसर पर संयुक्त राज्यके भिन्न भिन्न भागोंसे व्यापारी और कामकाजी लोग आये थे। कोई ३० राज्योंने अपने प्रतिनिधि भेजे थे। अब इस लीगकी अनेक स्थानोंमें शाखायें भी खुल गई हैं।

व्याख्यान देनेके लिए मेरे पास अनेक निमंत्रण आते हैं और यदि विद्यालयकी देखरेख तथा धनसंग्रहके कार्यसे मुझे अवकाश मिलता है तो मैं व्याख्यान देने जाता भी हूँ। इन व्याख्यानोंमें मेरा कितना समय चला जाता है, यह आपको एक समाचारपत्रके निम्नलिखित अवतरणसे मालूम हो जायगा। न्यूयार्क बफालोके नेशनल एजुकेशनल एसोसिएशनके सामने मैंने जो व्याख्यान दिया उसके संबंधमें यह लिखा गया था:—

" सुप्रसिद्ध नीग्रो अध्यापक बुकर टी. वाशिंगटन कल सन्ध्याको पश्चिम ओरसे यहाँ आ पहुँचे। जबसे वे यहाँ आये हैं, तबसे बराबर काममें लगे हुए हैं। यात्राकी थकावट भी दूर न होने पाई थी कि उन्हें कल सायं-भोजमें सम्मिलित होना पड़ा। इसके बाद इराकिसके सभामंडपमें आठ बजे तक उन्होंने अपने मिलनेके लिए आये हुए लोगोंकी एक सभा की। उस समय संयुक्त राज्यके दो सौसे अधिक अध्यापकोंने उनका स्वागत किया। इसके बाद गाड़ी पर सवार कराके वे म्यूजिक हालमें लाये गये और वहाँ उन्होंने डेढ़ घंटेतक 'नीग्रो शिक्षा'पर पाँच हज़ार श्रोताओंके सामने दो व्याख्यान दिये। यहाँसे रेवरेंड मि० वाटकिन्स आदि लोगोंकी मंडली उन्हें स्वागतके लिए दूसरे स्थान पर लिवा ले गई।"

इस व्याख्यान देनेके कामके अतिरिक्त एक और काम मुझे करना पड़ता है। दोनों जातियोंके स्वार्थसे संबंध रखनेवाली कुछ बातोंकी ओर दक्षिणके और साधारणतः सब देशके लोगोंका ध्यान दिलानेके लिए बिना समाचारपत्रोंमें लेख लिखे मुझसे नहीं रहा जाता। पत्र-संपादकोंने इस काममें सहानुभूतिके साथ मेरी सहायता भी की है।

ऊपरी और आकस्मिक बातोंसे किसीकी कैसी ही राय हो, मैं अब अपनी जातिके विषयमें पहलेकी अपेक्षा अधिक आशावान् हूँ। गुणोंकी परीक्षा और प्रतिष्ठा करनेवाला मानवी स्टाष्टिका श्रेष्ठ नियम सार्वत्रिक और सनातन है। दक्षिणके गोरे और उनके पहलेके गुलाम दोनों ही अपने अन्तःकरणमें वर्णद्वेषसे मुक्त होनेके लिए जो यत्न कर रहे हैं उसे बाहरके लोग न तो जानते हैं और न जानकर उसका मर्म ही समझ सकते हैं। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकारके प्रयत्न हो रहे हैं और इसीलिए मैं कहता हूँ कि सब लोग इनके साथ दया और सहानुभूतिका व्यवहार रखकर इनकी सहायता करें।

अन्तिम शब्द ।

इस समय जब कि इस आत्मचरितके ये अन्तिम शब्द लिखे जा रहें हैं मैं बर्जीनियाके रिचमंड शहरमें उपस्थित हूँ। यहाँ कुछ वर्ष पूर्व राजधानी थी और पचीस वर्ष पहले दरिद्रताका मारा हुआ मैं इसी शहरमें सड़ककी पटरीके एक चबूतरेके नीचे सोया था।

इस समय मैं यहीं नीग्रो लोगोंका मेहमान हूँ और उनके अनुरोधसे 'एकेडेमी आफ़ म्यूजिक' नामक अत्यन्त विशाल और वैभवशाली भवनमें दोनों जातियोंके सामने व्याख्यान देने आया हूँ। इस भवनमें नीग्रो–लोग आज पहले ही पहल आ सके हैं। मेरे आनेसे एक दिन पहले सिटीकौन्सिलने यह प्रस्ताव पास किया है कि मेरा व्याख्यान सुननेके लिए सब लोग मिलकर एक साथ जायँ। व्यवस्थापक सभाने (हाउस आफ़ डेलिगेट्स और सिनेट्स भी इसी सभामें शामिल हैं) भी एक रायसे यह निश्चय किया है कि सब सदस्य व्याख्यानके समय उपस्थित होंगे! सैकड़ों नीग्रो, कितने ही नामी गोरे रईस, सिटीकौंसिलके सदस्य, व्यवस्थापक सभाके सभासद और राज्यके सरकारी अधिकारी इस सभामें बड़े उत्साहके साथ एकत्र हुए हैं। इन सबोंको मैंने आशा और धैर्यसे भरा हुआ अपना सन्देश सुनाया, और जिस राज्यमें मेरा जन्म हुआ था वहीं मेरा इसप्रकार स्वागत हुआ इसलिए मैंने दोनों जातियोंको हार्दिक धन्यवाद दिया।

परिशिष्ट ।

जनरल आर्मस्टांगका मृत्युपत्र । *
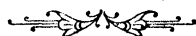
अब समय अच्छा और अनुकूल है । परिवार और विद्यालयका सब ठीक ठीक प्रबन्ध हो चुका है । भयकी कोई बात नहीं रही है । यह ईश्वरको धन्यवाद देनेका समय है । मेरा अन्तकाल समीप है । कब मृत्यु होगी, इसका कोई ठिकाना नहीं । इस लिए भावीकी ओर ध्यान देकर मैं जो कुछ उचित समझता हूँ, बतला देता हूँ ।

जब किसी विद्यार्थीकी मृत्यु होती है तब उसे जहाँ ले जाकर गाड़ते हैं, वहीं—विद्यालयके कब्रस्तानमें—मेरी भी लाश गाड़ी जाय । मेरी कब्र पर छतरी स्मारक अथवा और कोई आडम्बर न खड़ा किया जाय । केवल एक सादा पत्थर रहे । उस पर कोई अवतरण या विचार न खोदा जाय । केवल मेरा नाम और जन्ममृत्युकी तिथि लिखी रहे । मेरी उत्तरक्रियाके समय कोई उपदेश या वक्तृता न दे । युद्धमें मरनेवाले वीर सैनिकके समान मेरी उत्तरक्रिया हो ।

मुझे आशा है कि मेरे मित्र विद्यालयके प्रबन्धमें कोई त्रुटि न होने देंगे । कुछ लोग जबतक स्वार्थत्याग करनेके लिए तैयार न हों, तबतक विद्यालयका काम ठीक नहीं चल सकेगा ।

---

* यह पत्र आर्मस्ट्रांगके अन्य कागजोंके साथ हैम्पटनमें उनकी मृत्युके पश्चात् मिला है । आर्मस्ट्रांगके जिन जिन मित्रोंने इसे देखा वे इसे उनके भाव और अन्तःस्वरूपका परिचायक समझते हैं । ऐसे अमूल्य पत्रको प्रकाशित करना बहुत उचित मालूम होता है ।

—एच. बी. फ्रिसेल,
प्रिन्सिपल, हैम्पटन–विद्यालय ।

जिस कार्यमें स्वार्थत्यागकी आवश्यकता नहीं होती उस कार्यकी ईश्वरके यहाँ, कोई प्रतिष्ठा नहीं। परन्तु लोग जिसे स्वार्थत्याग कहते हैं वह, अपना और अपने साधनोंका उत्तम और शुभ उपयोग है—अपने समय, शक्ति और सामग्रीका सदुपयोग है !

जो मनुष्य इस प्रकारका स्वार्थत्याग नहीं करता, उसकी दशा बहुत ही शोचनीय है ! वह अधर्मी या नास्तिक है ! ईश्वरके विषयमें उसे कुछ भी ज्ञान नहीं !

विद्यालयके विषयमें इन बातोंको सदा ध्यानमें रखना चाहिए:— कोई किसीसे न झगड़े। सब लोग मिलकर काम करें। अधीर होकर अट्ट-सट्ट बातें या 'मनमाना घरजाना' कोई न करे। सब लोग बुद्धिमानी और उदारतासे सबका कल्याण करनेका यत्न करें। चतुर और विद्वान् होने पर भी, जो मनुष्य अपने दिमागको ठिकाने नहीं रख सकता और संयमी नहीं है, उसे विद्यालयसे निकाल देना चाहिए। दांभिक लोगोंकी अपेक्षा झगड़ालू लोग अधिक खराब होते हैं !

मेरा चरित कोई न लिखे। अच्छे मित्र मेरा सुन्दर चरित लिख डालेंगे; पर उसमें पूर्ण सत्य न रहेगा। जीवनका महत्त्व बहुत गहरे पानीमें रहता है। हम मनुष्योंको उसका बहुत ही कम ज्ञान होता है। केवल एक ईश्वर ही जानता है। ईश्वरकी दयालुता पर मुझे पूरा विश्वास है। जिसका धर्म या संप्रदाय जितना ही छोटा हो उतना ही अच्छा है। 'हे ईश्वर मैं अनन्य भक्तिसे तेरी शरण लेता हूँ।' बस, यह एक ही सिद्धान्त मेरे लिए बस है।

अपने मा-बाप, घरबार, युद्धका अनुभव, विलियम्स कालेजके दिन, और हैम्पटनका कार्य, इन सबके लिए मैं ईश्वरको धन्यवाद देता हूँ। हैम्पटनने मुझे अनेक प्रकारसे धन्य किया है। कारण, हैम्पटनके ही कार्यसे इस देशके सबसे अच्छे लोग मेरे मित्र और सहायक हुए हैं, और युद्धके कारण मुक्त हुए लोगोंका—नीग्रो लोगोंका—प्रत्यक्ष और जित लोगोंका—दक्षिणी गोरोंका—अप्रत्यक्ष कल्याण करनेका

अवसर मुझे मिला है । लाल इंडियनोंकी सेवाका भी सुयोग मुझे मिला है । बहुत थोड़े लोगोंको मेरा सा सुयोग प्राप्त होता होगा । सचमुच, मैंने अपने जीवनमें कोई बात नहीं छोड़ी । प्रत्येक कार्यमें मुझे उचित परामर्श मिलता रहा ।

प्रार्थना—उपासना–भक्ति भी संसारमें एक अद्भुत वस्तु है । वह हमें ईश्वरके समीप ले जाती है । मेरी प्रार्थना बहुत ही निर्बल और चंचल हुआ करती थी; पर मैंने यदि कोई कार्य किया है तो, वह प्रार्थना ही की है । मैं इसे सनातन तत्त्व समझता हूँ । सनातन और अनन्त तत्त्वके अतिरिक्त और किस बातसे आनन्द मिल सकता है ?

परलोक देखनेके लिए मैं बहुत ही उत्सुक हुआ हूँ । परलोक कैसा होगा ? मेरे विचारसे, वह बहुत सुन्दर और स्वाभाविक होगा । मृत्युसे डरनेका कोई प्रयोजन नहीं; वह तो हमारा मित्र है !

मृत्युका विचार आने पर मुझे जो कुछ दुःख होता है, वह अपनी प्रिय पतिव्रता स्त्री और उसकी दीन सन्तानोंके लिए होता है ! पर उन्हें भी धैर्यसे यह वियोग सहकर दृढ़ होना चाहिए । उन सबोंने मुझे बड़ा सुख दिया है ।

हैम्पटन-विद्यालयकी किसी प्रकार अवनति न हो ! इस देशके काले लाल बच्चोंके साथ सचाईका व्यवहार करनेवाले विद्यालयको नीचे न गिरने देना।

मेरे पुराने सिपाहियों और विद्यार्थियोंसे मुझे अकथनीय सुख मिला है।

अपनी अन्तः स्फूर्तिके अनुसार काम करने, निजको भूलकर देव और देशका विचार करने और देव और देशकी भक्ति करनेसे हमारा कल्याण होता है !

इसी समय अन्तकालकी घंटी बजी !

हैम्पटन, वर्जीनिया.
ता० 1 जनवरी १८९० ई०

एस. सी. आर्मस्ट्रांग ।

हिन्दीग्रन्थरत्नाकर-सीरीज़ ।

हिन्दी साहित्यको उत्तमोत्तम ग्रन्थरत्नोंसे भूषित करनेके लिए इस ग्रन्थमालाके निकालनेका प्रारंभ किया गया है। हिन्दीके नामी नामी विद्वानोंकी सम्मतिसे इसके लिए ग्रन्थ तैयार कराये जाते हैं। प्रत्येक ग्रन्थकी छपाई, सफाई, कागज, जिल्द आदि सभी बातें लासानी होती हैं। स्थायी ग्राहकोंको सब ग्रन्थ पौनी कीमतमे दिये जाते हैं। जो स्थायी ग्राहक होना चाहें, उन्हें पहले आठ आना जमा कराकर नाम दर्ज करा लेना चाहिए। अब तक इसमें जितने ग्रन्थ निकले हैं, उन सबहीकी प्रायः सब ही पत्रोंने एक स्वरसे प्रशंसा की है। नीचे लिखे ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं:—

१-२. स्वाधीनता ।

यह हिन्दी साहित्यका अनमोल रत्न, राजनैतिक, सामाजिक और मानसिक स्वाधीनताका अचूक शिक्षक, उच्च स्वाधीन विचारोंका कोश, अकाट्य युक्तियोंका आकर और मनुष्यसमाजके ऐहिक सुखोंका पथप्रदर्शक ग्रन्थ है। इसे सरस्वतीके धुरन्धर सम्पादक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदीने अँगरेजीसे अनुवाद किया है। साथमें मूल लेखक जानस्टुअर्ट मिलका बड़ा ही शिक्षाप्रद जीवनचरित है। इसे जैनहितैषीके सम्पादक नाथूराम प्रेमीने लिखा है। मूल्य दो रु० ।

३. प्रतिभा ।

मानवचरितको उदार और उन्नत बनानेवाला, आदर्श धर्मवीर और कर्मवीर बनानेवाला हिन्दीमें अपने ढंगका यह पहला ही उपन्यास है। इसकी रचना बड़ी ही सुन्दर, प्राकृतिक और भावपूर्ण है। मूल्य १) रु०

४. आँखकी किरकिरी ।

जिन्हें अभी हाल ही सवालाख रुपयेका सबसे बड़ा पारितोषिक (नोबल प्राइज) मिला है, जो संसारके सबसे श्रेष्ठ महाकवि समझे गये हैं, उन बाबू रवीन्द्रनाथ ठाकुरके प्रसिद्ध बंगला उपन्यास 'चोखेरबाली'का यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें मानसिक विचारोंके, उनके उत्थान, पतन और घात प्रतिघातोंके बड़े ही मनोहर चित्र खींचे गये हैं। भावसौन्दर्यमें इसकी जोड़का दूसरा कोई उपन्यास नहीं। इसकी कथा भी बहुत ही सरस और मनोहारिणी है। मूल्य १॥) रु०

५. फूलोंका गुच्छा ।

इसमें ११ खण्ड-उपन्यासों या गल्पोंका संग्रह है । इसके प्रत्येक पुष्पकी सुगन्धि, सौन्दर्य और माधुर्यसे आप मुग्ध हो जावेंगे । प्रत्येक कहानी जैसी सुन्दर और मनोरंजक है, वैसी ही शिक्षाप्रद भी है । मूल्य दश आने ।

६. चौबेका चिठ्ठा ।

वंगभाषाके प्रसिद्ध लेखक बाबू बंकिमचन्द्र चटर्जीके लिखे हुए ' कमलाकान्तेर दफ्तर'का हिन्दी अनुवाद । हँसी दिल्लगी और मनोरंजनके साथ इसमें ऊँचेसे ऊँचे दर्जेकी शिक्षा दी गई है । देशकी सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक बातोंकी इसमें बड़ी ही मर्मभेदी आलोचना है । मूल्य ग्यारह आने ।

७. मितव्ययिता ।

यह यूरोपके प्रसिद्ध लेखक डा० सेमुएल स्माइल्स साहबकी अँगरेजी पुस्तक ' थिरिफ्ट ' का हिन्दी अनुवाद है । इस फिजूल खर्ची और विलासिताके जमानेमें यह पुस्तक प्रत्येक भारतवासी बालक, युवा, वृद्ध और स्त्रीके नित्य स्वाध्याय करने योग्य है । इसके पढ़नेसे आप चाहे जितने अपव्ययी हों, मितव्ययी संयमी और धर्मात्मा बन जावेंगे । बड़ी ही पाण्डित्यपूर्ण युक्तियोंसे यह पुस्तक भरी है । इसमें सामाजिक, नैतिक, धार्मिक और राष्ट्रीय आदि सभी दृष्टियोंसे धन और उसके सदुपयोगोंका विचार किया गया है । स्कूलके विद्यार्थियोंको इनाममें देनेके लिए यह बहुत ही अच्छी है । मूल्य चौदह आने ।

८. स्वदेश ।

श्रीयुक्त डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी एक निबन्धमालाका अनुवाद है । सब मिलकर आठ निबन्ध हैं । इन्हें पढ़कर आप भारतवर्षका और उसकी सभ्यता, समाजरचना और राजनीतिका असली स्वरूप देख सकेंगे । प्रत्येक स्वदेशाभिमानीके अध्ययन करने योग्य ग्रन्थ है । मूल्य दश आना ।

९. चरित्रगठन और मनोबल ।

डाक्टर राल्फ वाल्डो ट्राइनके 'करेक्टर बिल्डिंग थाट पावर ' का सरल हिन्दी अनुवाद । मूल्य तीन आना ।

और कई अच्छे अच्छे ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं ।

मैनेजर, हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग पो० गिरगांव-बम्बई